41वाँ 41st

राष्ट्रीय फ़िल्म National

समारोह Film Festival

1994

संपादन
जेयम
(सुमेघा अग्रवाल तथा
के. गोपालाकृष्णन)

Editor
JAYEM
(Sumegha Aggarwal and
K. Gopalakrishnan)

हिन्दी आलेख
सुरेंद्र लाल मल्होत्रा

Hindi Text
S.L. MALHOTRA

समन्वय
अजीत गुप्ता

Co-ordination
AJIT GUPTA

उत्पादन
जी.पी. धुसिया
मनोज रंजन
ए.के. सिन्हा

Production
G.P. DHUSIA
(Manoj Ranjan
A.K. Sinha)

फ़िल्म समारोह निदेशालय के लिए विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आकल्पित और प्रकाशित।
मुद्रक: वीरेन्द्र प्रिंटर्स, करोल बाग, नई दिल्ली 110008

Designed and produced by the Directorate of Advertising & Visual Publicity, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India, for the Directorate of Film Festivals, Printed at Veerendra Printers, Karol Bagh, New Delhi 110005

विषय सूची

CONTENTS

	Page No.	
निर्णायक मण्डल	7	THE JURIES
कथाचित्र पुरस्कार	11	AWARDS FOR FEATURE FILMS
सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार	12	Best Feature Film
निर्देशक के प्रथम सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार	14	Indira Gandhi Award for Best First Film of a Director
लोकप्रिय एवम् मनोरंजन प्रदान करने वाले सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार	18	Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार	22	Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration
परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फ़िल्म	24	Best Film on Family Welfare
अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म	26	Best Film on Other Social Issues
पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम फ़िल्म	28	Best Film on Environment/Conservation/Preservation
सर्वोत्तम बाल फ़िल्म	30	Best Children's Film
सर्वोत्तम निर्देशक	32	Best Director
सर्वोत्तम अभिनेता	34	Best Actor
सर्वोत्तम अभिनेत्री	36	Best Actress
सर्वोत्तम सह-अभिनेता	38	Best Supporting Actor
सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री	40	Best Supporting Actress
सर्वोत्तम बाल-कलाकार	42	Best Child Artiste
सर्वोत्तम पार्श्व गायक	44	Best Male Playback Singer
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका	46	Best Female Playback Singer
सर्वोत्तम छायांकन	48	Best Cinematography
सर्वोत्तम पटकथा	50	Best Screenplay
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	52	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	54	Best Editing
सर्वोत्तम कला निर्देशन	56	Best Art Direction
सर्वोत्तम वेश-भूषा डिज़ाइनर	58	Best Costume Designer
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	60	Best Music Direction
सर्वोत्तम गीत	62	Best Lyrics
सर्वोत्तम निर्णायक मण्डल पुरस्कार	64	Special Jury Award
सर्वोत्तम विशेष प्रभाव पुरस्कार	66	Best Special Effects Creator
सर्वोत्तम नृत्य संयोजन	68	Best Choreography

सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र	70	Best Feature Film in Assamese
सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र	72	Best Feature Film in Bengali
सर्वोत्तम गुजराती कथाचित्र	74	Best Feature Film in Gujarati
सर्वोत्तम हिंदी कथाचित्र	76	Best Feature Film in Hindi
सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र	78	Best Feature Film in Kannada
सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र	80	Best Feature Film in Malayalam
सर्वोत्तम मणिपुरी कथाचित्र	84	Best Feature Film in Manipuri
सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र	86	Best Feature Film in Marathi
सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र	88	Best Feature Film in Oriya
सर्वोत्तम पंजाबी कथाचित्र	90	Best Feature Film in Panjabi
सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र	92	Best Feature Film in Tamil
सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र	94	Best Feature Film in Telugu
सर्वोत्तम उर्दू कथाचित्र	96	Best Feature Film in Urdu
सर्वोत्तम कोडवा कथाचित्र	98	Best Feature Film in Kodava
सर्वोत्तम तुलु कथाचित्र	100	Best Feature Film in Tulu
विशेष उल्लेख	102	**Special Mention**
गैर कथाचित्र पुरस्कार	105	**AWARDS FOR NON-FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम गैर कथाचित्र पुरस्कार	106	Best Non-Feature Film
निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम गैर कथाचित्र	108	Best First Non-Feature Film of a Director
सर्वोत्तम मानव शास्त्रीय, मानव जातीय फ़िल्म	110	Best Anthropological/ Etnnographic Film
सर्वोत्तम जीवनी फ़िल्म	112	Best Biographical Film
सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फ़िल्म	114	Best Arts/ Cultural Film
सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फ़िल्म	116	Best Environmental/Conservation/Preservation Film
सर्वोत्तम प्रोत्साहन देने वाली फ़िल्म	118	Best Promotional Film
सर्वोत्तम कृषि फ़िल्म	120	Best Agricultural Film
समाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म	122	Best Film on Social Issues
सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फ़िल्म	124	Best Educational/Motivational/Instructional Film
सर्वोत्तम गवेषण/साहसी फ़िल्म	126	Best Exploration/Adventure Film
सर्वोत्तम खोजी फिल्म	128	Best Investigative Film
सर्वोत्तम एनिमेशन फ़िल्म	130	Best Animation Film
विशेष निर्णायक मण्डल पुरस्कार	132	Special Jury Award
सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म	134	Best Short Fiction Film
सर्वोत्तम परिवार नियोजन फ़िल्म	136	Best Film on Family Welfare

सर्वोत्तम छायांकन	138	Best Cinematography
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	140	Best Audiography
सर्वोत्तम सम्पादक	142	Best Editor
सर्वोत्तम संगीत निर्देशक	144	Best Music Director
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	146	Awards Not Given
सिनेमा-लेखन पुरस्कार	147	**AWARDS FOR WRITING ON CINEMA**
सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक (1993)	148	Best Book on Cinema (1993)
सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक (1993)	150	Best Film Critic (1993)
कथासार : कथाचित्र	153	**SYNOPSES: FEATURE FILM**
अबर्तन	154	Abartan
आकाश दूतु	156	Akasha Dhootu
अंतरीन	158	Antareen
अरण्य रोदन	160	Aranya Rodana
बंगार पाटलर	161	Bangar Patlar
चराचर	163	Charachar
चिन्नरी मुथा	165	Chinnari Mutha
डर	167	Darr
देवरा काडु	169	Devara Kadu
हम हैं राही प्यार के	171	Hum Hain Rahi Pyar Ke
इन्द्रधनुराछाई	173	Indiradhanura Chhai
जननी	175	Janani
कचहरी	177	Kachehari
लपन्डाव	179	Lapandav
लावण्य प्रीति	181	Lavanya Preeti
महानदी	183	Mahanadhi
मंदरा पू	185	Mandhara Phu
मणिचित्राताड़	187	Manichitrathazhu
मानवीनी भवाई	189	Manvini Bhavai
मातृदेवोभव:	190	Mathrudevo Bhava
मिस्टर पेल्लम	192	Mr. Pellam

मुहाफ़िज	194	Muhafiz
नारायम्	196	Narayam
पतंग	198	Patang
पोंदन माड़ा	200	Ponthan Mada
संबल वांगमा	201	Sambal Wangma
सरदार	203	Sardar
सर	205	Sir
सोप्पनम्	207	Soopnam
शून्य थेके शुरू	209	Sunya Theke Suru
तिरूडा-तिरूडा	211	Thiruda Thiruda
उत्तरण	213	Uttoran
विधेयन	215	Vidheyan
वो छोकरी	217	Woh Chhokri

कथासार : गैर-कथाचित्र	219	**SYOPSES : NON-FEATURE FILMS**
एड्स	221	AIDS
अनुकंपन	222	Anukampan
बाजार सीताराम	223	Bazar Sitaram
बेनेफिट फार हूम एट हूज कास्ट?	224	Benefit For Whom At Whose Cost?
बिल्डिंग फ्राम बिलो	225	Building From Below
चेतक	226	Chetak
कलर्स आफ एब्सेंस	227	Colours of Absence
डेथ आफ ए प्रोडिगल सन	228	Death of A Prodigal Son
लद्दाख : लाइफ अलांग द इण्डस	229	Ladhakh : Life Along the Indus
मैहर राग	230	Maihar Raag
मोक्ष	231	Moksha
आर्किड्स आफ मणिपुर	232	Orchids of Manipur
सन्डे	233	Sunday
तावीज़	234	Taveez
द स्पलेंड्योर आफ गढ़वाल एण्ड रूपकुंड	235	The Splendour of Garhwal and Roopkund
द विमेन बिट्रेड	236	The Women Betrayed
टाईमलेस इंडिया	237	Timeless India
ट्रेजडी आफ एन इंडियन फार्मर	238	Tragedy of an Indian Farmer

कथाचित्र निर्णायक मण्डल

JURY FOR FEATURE FILMS

डॉ. टी. सुब्बारामी रेड्डी (अध्यक्ष)
Dr. T. Subbarami Reddy
(Chairman)

श्री गौतम बोरा
Gautam Bora

माधवी चक्रवर्ती
Madhabi Chakraborti

सलिल चौधरी
Salil Chowdhury

प्रो. बिदुभूषण दास
Prof. Bidhubhusan Das

हरिहरन
Hariharan

सीताकांत मिश्र
Sitakant Misra

नचिकेत पटवर्धन
Nachiket Patwardhan

जे.एल. रलहन
J.L. Ralhan

बी. नरसिंह राव
B. Narsing Rao

आर.सी. शक्ति
R.C. Sakthi

वलमपुरी सोमनाथन
Valampuri Somanathan

डा. विजया
Dr. Vijaya

गैर-कथाचित्र निर्णायक मण्डल

JURY FOR NON-FEATURE FILMS

के. बिक्रम सिंह (अध्यक्ष)
K. Bikram Singh
(Chairman)

गुलज़ार
Gulzar

परेश मेहता
Paresh Mehta

के.आर. मोहनन
K.R. Mohanan

तनुश्री शंकर
Tanushree Shankar

सिनेमा लेखन निर्णायक मण्डल

JURY FOR WRITING ON CINEMA

ख़ालिद मोहम्मद (अध्यक्ष)
Khalid Mohamed
(Chairman)

उदय तारा नायर
Udaya Tara Nayar

उमा वासुदेव
Uma Vasudev

कथाचित्र पुरस्कार

Awards for Feature Films

सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

चराचर (बंगला)

निर्माता : **मैसर्ज गोप मूवीज़ प्रा. लि.** को स्वर्ण कमल तथा 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **बुद्धदेब दासगुप्ता** को स्वर्ण कमल तथा 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार बंगला फ़िल्म **चराचर** को मुक्ति प्राप्त करने के लिए शाश्वत् मानवीय इच्छाओं और मनुष्य के प्रकृति से अलगाव के कवितामय तथा गीतिमय प्रस्तुतीकरण करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM

CHARACHAR (Bengali)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000 to the producer: **M/S GOPE MOVIES PVT. LTD.**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000 to the Director: **BUDDHADEB DASGUPTA**

Citation

The Award for the Best Feature Film of 1993 is given to the Bengali film **CHARACHAR** for its poetic and typical presentation of the eternal human longing for liberation and man's alienation from Nature.

बुद्धदेब दास गुप्ता : 1944 में जन्मे बुद्धदेब दास गुप्ता ने अर्थशास्त्र को अपनी मुख्य विधा के रूप में चुना। वे कलकत्ता विश्वविद्यालय में इसी विषय पर लेक्चरर रहे हैं। साथ-साथ वे मध्य पीढ़ी के मुख्य कवि के रूप में भी उभरे। उनकी कविताएं पत्र-पत्रिकाओं, संग्रहों और पुस्तकों के रूप में प्रकाशित हैं। उन्हें भारतीय तथा यूरोपीय भाषाओं में अनूदित किया गया है।

इसके पश्चात बुद्धदेब गुप्ता ने अपने सृजनात्मक कार्य का विस्तार कविता से फिल्मी विधा में किया। अपनी तीन फ़िल्मों-"दुरात्वा","गृहयुद्ध" और "अंधीगली" तक वे विश्व-स्तर पर विख्यात हो गए। उनकी "फेरा", "बाघ बहादुर" और "तहादेर कथा" और "चराचर" से उनमें निर्देशक के ऐसे गुण का पता चलता है जो मनुष्य की अन्तर कमियों की खोज करने में अपने कैमरे का बखूबी इस्तेमाल करते हैं।

BUDDHADEB DASGUPTA: Born in 1944, Buddhadeb Dasgupta took to economics as his main discipline. He had been a lecturer at the Calcutta University on the same subject. Side by side, he emerged as a major Bengali poet of the middle generation. His poems have appeared in magazines, anthologies and in book form. They have been translated into several Indian and European languages.

Then, Buddhadeb Dasgupta extended his creativity in poetry to the celluloid. The triology "Dooratwa," "Grihayudda" and "Andhigali" created a niche for him in the film world. His "Phera", "Bagh Bahadur" and "Thahader Katha" along with "Charachar" have revealed him as a director, who can use the camera to probe the inner recesses of individuals.

निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

शून्य थेके शुरु (बंगला)

निर्माता : **एच.दास, एम. मैत्रा और राम. दास** को स्वर्ण कमल तथा 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **अशोक विश्वनाथन** को स्वर्ण कमल तथा 25,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार बंगला फ़िल्म **शून्य थेके शुरु** को तीन दशकों से चले आ रहे हमारे समाज की सामाजिक-राजनैतिक स्थितियों को प्रदर्शित करने वाले संवेदनशील विषय को शानदार ढंग से चित्रित करने के लिए दिया गया है।

INDIRA GANDHI AWARD FOR THE BEST FIRST FILM OF A DIRECTOR

SUNYA THEKE SURU (Bengali)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000 to the Producers: **H. DAS, MADHUMANTI MAITRA and M. DAS**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000 to the Director: **ASHOKE VISWANATHAN**

Citation

The Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director is given to the Bengali film **SUNYA THEKE SURU** for its creative handling of a sensitive subject, exhibiting the socio-political situation of our society, spanning three decades.

अशोक विश्वनाथन : अशोक विश्वनाथन, कालेज लेक्चरर एन. विश्वनाथन के पुत्र हैं, जिन्होंने सत्यजीत राय की "कंचनचंगा" सहित तमिल तथा बंगला फ़िल्मों में अभिनय किया है। सेंट जेवियर कालेज, कलकत्ता के गणित स्नातक, अशोक ने भारतीय फ़िल्म तथा टेलीविजन संस्थान (1985) से फ़िल्म निर्देशन में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की है। अगले वर्ष, उन्होंने संस्थान में वीडियो-निर्माण में प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम पूरा किया। तब से, वे कार्यक्रम निर्देशक, पटकथा लेखक और प्रस्तुतकर्ता के रुप में फ़िल्म तथा वीडियो दोनों में ही सक्रिय हैं। "शून्य थेके शुरु" उनका प्रथम कथाचित्र है जिसे कलकत्ता में आयोजित आई. एफ.एफ. आई (1994) में प्रदर्शित किया गया।

विश्वनाथन ने कलकत्ता दूरदर्शन के लिए बंगला में अनेक टेली फ़िल्में बनाईं।

1. रामपद चौधरी उपन्यास पर आधारित "रुप" 2. पिरानडेलो के नाटक पर आधारित "हेनरी टीवी" 3. संजीव चट्टोपाध्याय की लघु कहानियों पर आधारित "अमलामधुर" 4. सत्यजीत राय के पिता सुकुमार राय की कहानियों पर आधारित "पगला दाशु"। उन्होने दूरदर्शन के लिए वृत-चित्र भी बनाए। इसके अतिरिक्त, उन्होंने शिक्षाप्रद माध्यम अनुसंधान केंद्र तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के लिए शिक्षाप्रद फ़िल्मों, केन मेकमुलन पर कई फ़िल्मों, डा. थॉमस मैथसन द्वारा निरुपित शैक्सपियर जॉन वाल्ट्स द्वारा निरुपित, लार्ड बायरन और बैरेट्स आफ विम्पल स्ट्रीट, जी.बी.शाह के नाटक "आर्क्स एण्ड द मैन", ओपन स्काई युनिवर्सिटी के लिए अंग्रेजी में भावुक कविता और सैम्युल बैकट पर फ़िल्मों सहित कुछेक औद्योगिक फ़िल्मों का निर्माण भी किया।

ASHOKE VISWANATHAN: Ashoke Viswanathan is the son of N. Viswanathan, the college lecturer, who has acted in Tamil and Bengali films, including "Kanchanjanga" of Satyajit Ray. A mathematics graduate from St. Xavier's College, Calcutta, Ashoke is a post-graduate in Film Direction from the Film and Television Institute of India (1985). Next year, he completed a certificate course in video production at the Institute. Since then, he has been active with both film and video as a programme director, screenplay-writer and presenter. "Surya Theke Suru" is his first feature film which was screened at the IFFI, Calcutta (1994).

Viswanathan has made a series of telefilms in Bengali for Calcutta Doordarshan:

1. "Roop", based on a Ramapada Chowdhury novel 2. "Henry IV" based on Pirandello's play. 3. "Amlamadhur" based on Sanjib Chattopadhyay's short stories. 4. "Pagla Dashu" based on the stories of Sukumar Ray, father of Satyajit Ray. Has also made Documentaries for Doordarshan.

Besides, he has made educational films for the Educational Media Research Centre and University Grants Commission a series of films on Ken Mcmullen, Shakespeare as explained by Dr. Thomas Matheson, Lord Byron and the Barrets of Wimpole Street, as interpreted by John Walts, G.B. Shaw's play, "Arms and the Man," English Romantic Poetry and Samuel Beckett for the "Open Sky University" as also some industrial films.

मधुमंती मैत्रा : स्नातक तथा मास्टर दोनों ही स्तरों पर प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर हैं। वे विश्व भारती, बर्दवान, जादवपुर तथा रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालयों में लेक्चरर रही हैं।

1988 से उन्होंने दूरदर्शन के लिए संगीत और लय पर अनेक कार्यक्रम बनाए हैं। 1975 में बाल कलाकार के रूप में शुरूआत के साथ उच्चकोटि की मुक्त सूचना सृजक बन जाने तक, मधुमंती ने दूरदर्शन के लिए 200 से भी अधिक कार्यक्रमों का संचालन, प्रस्तुतीकरण तथा पटकथा लेखन किया है।

कोमेन्टेटर के रूप में, मधुमंती ने 50 से अधिक विडियो फ़िल्मों के मंच प्रदर्शनों तथा आडियो कैसेटों के लिए अपनी आवाज दी है। वे 1989 से ''स्टेटमैन'' के लिए एक संगीत आलोचक के रूप में नियमित रूप से लिख रही हैं।

MADHUMANTI MAITRA, a post-graduate in English literature with a first class at both the Bachelor's and the Master's levels. She has been a lecturer at Viswa Bharati, Burdwan, Jadavpur and Rabindra Bharati Universities.

Since 1988, she has produced several programmes on music and melody for Doordarshan. Madhumanti has also compered, presented and scripted over 200 programmes for Doordarshan. since 1975, beginning as a child artiste, and going on to become a freelance newscaster with the maximum rating.

As a commentator, Madhumanti has given voice overs for over 50 video films, stage shows and audio cassettes. She has also been regularly writting as a music critic for ''The Statesman'' since 1989.

हिल्लोल दास व्यावसायिक तौर पर दवाईयां, रासायनिक और इंजीनियरी का सामान बनाने वाली तीन कम्पनियों के निदेशक हैं। दस बरसों से कला और संस्कृति से जुड़े हुए हैं। उन्होंने अपर्णा सेन और विक्टर बनर्जी के साथ "अकान्त अपन" और "पापी" जैसी बाक्स आफिस हिट फ़िल्मों का निर्माण किया है।

HILLOL DAS is professionally the Director of three companies manufaturing pharmaceuticals, chemicals and engineering goods. Das is associated with art and culture for long. He entered the film industry as a producer with 35 mm Bengali superhit He has produced box office hits "Akanta Apan" with Aparna Sen and Victor Banerjee and "Paapi". Das has also produced five TV serials for the Calcutta Doordarshan.

मृणाल कांतिदास व्यवसाय से इंजीनियर हैं, परन्तु वे कलकत्ता में कला तथा संस्कृति से जुड़े हुए हैं। वे एक विख्यात सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं। निर्माता के रूप में "शून्य थेके शूरू" उनका प्रथम प्रयास है।

MRINAL KANTI DAS is an engineer by profession, but is actually associated with art and culture in Calcutta. He is also a prominent social worker. As a producer he has made his debut with "Sunya Theke Suru".

लोकप्रिय एवम् स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाले सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार

मणिचित्राताड़ (मलयालम) तथा डर (हिन्दी)

निर्माता : **अप्पचन्** को (मणिचित्राताड़ के लिए) तथा **यश चोपड़ा** को (डर के लिए) स्वर्ण कमल तथा 40,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **फ़ाजिल** को (मणिचित्राताड़ के लिए) तथा **यश चोपड़ा** को स्वर्ण कमल 20,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

लोकप्रिय एवम् स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाले सर्वोत्तम कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार मलयालम फ़िल्म **मणिचित्राताड़** को रूढ़िवादी समाज में मनोवैज्ञानिक विपथन तथा अन्त में एक आधुनिक दृष्टिकोण अपनाने की एक असाधारण फ़िल्म को प्रदर्शित करने के लिए दिया गया। यही पुरस्कार हिन्दी फ़िल्म डर को भी प्रेम-विषय पर, जो अपने पिछले अनुभवों के साथ जुड़ जाने के कारण एक जटिल विषय बन जाता है, के उत्कृष्ट प्रस्तुतीकरण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST POPULAR FILM PROVIDING WHOLESOME ENTERTAINMENT

MANICHITRATHAZHU (Malayalam) and DARR (Hindi)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 40,000 to the Producers: **APPACHAN** (for **Manichitrathazhu**) and **YASH CHOPRA** (for **Darr**)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Directors: **FAZIL** (for **Manichitrathazhu**) and **YASH CHOPRA** (for **Darr**)

Citation

The Award for the Best Popular Film providing Wholesome Entertainment of 1993 is given to the Malayalam film MANICHITRATHAZHU for handling an unusual subject of psychological aberration in a conservative society and the ultimate acceptance of a modern approach and the Hindi film DARR for its convincing presentation of the theme of love, which has been rendered complex by its relationship with past experiences of fear.

अप्पचन् : कुछेक फ़िल्मों के निर्माता के रूप में अप्पचन् एक प्रसिद्ध निर्माता हैं जिन्होंने मलयालम फ़िल्म उद्योग में तहलका मचा दिया है। फ़ाजिल द्वारा 1985 में निर्देशित "पूविणु पुतिया पुन्तेन्नल" उनकी प्रथम फ़िल्म थी। फ़ाजिल ही के द्वारा निर्देशित "मणिवत्तू किले अयिरम् शिवरतिरल" उनकी दूसरी फ़िल्म है जिसमें मम्मूटी और सुहासिनी नायक-नायिका हैं। उसके पश्चात् "रामजीराव स्पीकिंग" आई जो एक विशुद्ध हास्य-व्यंग्य की फ़िल्म थी। 1991 में अप्पचन् ने "एन्ते सूर्या पुतारिक्कु" के निर्माण से अपने आप को सुरक्षित रूप में स्थापित कर लिया।

उनकी "गाड फादर" 1991-92 की रिकार्ड-तोड़ सफल फ़िल्म थी, जिसे मनोरंजन फ़िल्म का केरल राज्य का पुरस्कार मिला।

सिद्दीक लाल द्वारा निर्देशित "वियतनामकालोनी" अत्यधिक सफल फ़िल्म थी। इसके बाद सर्वोत्कृष्ट "मणिचित्रताल" आई।

अन्य फ़िल्म निर्माताओं के विपरित, अप्पचन अपनी फ़िल्मों में विस्तृत ब्यौरा देने के लिए अधिकतम ध्यान देता है।

APPACHAN : Is a noted producer as the Producer of some films which caused a break-through in the Malayalam film industry. Aged 42, he is residing at Calicut with his family. His first film was "Poovinu Puthiya Poonthennal" directed by Fazil (1985). His second was named "Manivathoo Kile Ayiram Sivarathiral" also directed by Fazil starring Mamootty and Suhasini. Then came "Ramjeeram Speaking", a pure comedy. In 1991, Appachan with his own production "Ente Soorya Puthrikku" established himself securely.

"Godfather" was a record breaking hit of 1991-92 winning the Kerala State Government's Award for most popular and entertaining movie.

One more super-hit was "Vietnamcolony" directed by Siddique - Lal. Then came the magnum opus, **Manichitrathazhu.**

Unlike other producers Appachan pays maximum attention to the minute details of his films.

यश चोपड़ा : जालंधर में 1932 में जन्मे यश चोपड़ा पिछले 25 वर्षों से भी अधिक समय से फ़िल्मों का निर्देशन और निर्माण कर रहे हैं, जिनमें से अनेक "जुबली" फ़िल्में हैं।

उनके द्वारा निर्देशित फ़िल्में हैं - "धूल का फूल", "धर्मपुत्र", "वक्त", "इत्तफाक", "आदमी और इंसान", "दीवार" और "परम्परा"।

यश चोपड़ा ने "दाग", "कभी-कभी", "काला-पत्थर", "लम्हे", और "डर" फ़िल्मों का निर्माण और निर्देशन किया है, जिनमें से अधिकांश स्मरणीय है। इन फ़िल्मों में से कुछ के गीत अभी भी गुनगुनाए जाते हैं। उन्होंने "दूसरा आदमी", "नूरी", "सवाल", "नाखुदा", और "आईना", का निर्माण भी किया। उनकी निर्माणाधीन फ़िल्म "ये दिल्लगी" है।

यश चोपड़ा को 1965, 1969, 1973, और 1975 में सर्वोत्तम निर्देशन के पुरस्कार तथा 1989 में फ़िल्म "चांदनी" के लिए लोकप्रिय तथा स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम फ़िल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। वे मुख्य व्यापार संगठनों और उदयोगिक-न्यासों से भी सहयोजित हैं।

YASH CHOPRA : Born in 1932 at Jullundhar, Yash Chopra has been directing and producing films for more than a quarter of a century, several of which have been "jubilee" films.

The films he has directed are: "Dhool Ka Phool", "Dharam Putra", "Waqt", "Ittefaq", " Aadmi aur Insaan" "Deewar", "Trishul" and "Parampara"

Yash Chopra has produced and directed "Daag", "Kabhi Kabhi", "Kaala Patthar", "Silsila", "Mashaal" "Faasle", "Chandni" and "Lamhe" and "Darr" several of which have been memorable. Songs from some of them are still being hummed. He has also produced "Doosra Aadmi" "Noorie", "Sawwal", "Nakhuda" and "Aaina". Under production is "Yeh Dillagi".

Yash Chopra is the recepient of the Filmfare Awards for Best Direction in 1965, 1969, 1973 and 1975 and National Award for Best Film providing Popular and Wholesome Entertainment for the film "Chandni" in 1989. He is also associated with the major trade organizations and industry trusts.

फाज़िल : फाज़िल ने 1980 में 30 वर्ष की आयु में ''मंजिल विरिंजा पूकल'' (मलयालम) के निर्माण से फ़िल्म उद्योग में प्रवेश किया, जिसे केरल राज्य का पुरस्कार मिला। 1983 में, ''एन्टे मामट्टिकुट्टी अम्मक्कु'' को सर्वोत्तम फ़िल्म तथा सर्वोत्तम निर्देशक का केरल राज्य का पुरस्कार मिला। इसे भारतीय पेनोरमा के लिए भी चुना गया। 1985 में ''नोकेतादूरतु कन्नुमनत्तु'' को केरल राज्य का पुरस्कार मिला तथा इसे भारतीय पेनोरमा के लिए भी चुना गया। ''पूवे पूचुडा वा'' (तमिल) को 1985 में सर्वोत्तम निर्देशक का फ़िल्म फेयर पुरस्कार मिला। ''एन्नेन्नुम कानेटटन्टे'' को लोकप्रिय अपील तथा सौंदर्यपरक मूल्य की सर्वोत्तम फ़िल्म का केरल राज्य का पुरस्कार मिला। 1990 में ''वर्षम् 16'' (तमिल) को सर्वोत्तम निर्देशक का सिनेमा एक्सप्रेस पुरस्कार मिला और 1993 में ''मणिचित्राताड़'' (मलयालम) को अनेक राज्य पुरस्कार मिल चुके हैं।

FAZIL : Fazil entered the film industry in 1980 at the age of 30 with ''Manjil Virinja Pookal'' (Malayalam) which won a Kerala State Award. In 1983, his ''Ente Mamattikutty Ammakku'' won the Kerala State Awards for Best Film and Best Director. It was also selected for Indian Panorma. ''Nokethadoorathu Kannum Nattu'' (1985) won the Kerala State Award and it was also selected for the Indian Panorama. ''Poove Poochuda Vaa' (Tamil) won the Filmfare award for Best Director in 1985. ''Ennennum Kanettante'' earned the Kerala State Award for Best Picture with Popular Appeal and Aesthetic Value. In 1990, ''Varsham 16'' (Tamil) won the Cinema Express Award the for Best Director. And ''Manichitrathazhu'' (Malayalam) in 1993 has already bagged many State awards.

राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार

सरदार (हिन्दी)

निर्माता : **एच.एम. पटेल** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **केतन मेहता** को रजत कमल तथा 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए 1993 का नरगिस दत पुरस्कार हिन्दी फ़िल्म **सरदार** को राष्ट्रवाद के उद्देश्यों को बताने के लिए अलग-थलग पड़ी सामग्री को संकलित करके और उसे महाकाव्य की शैली में भारतीय राष्ट्रवाद की सुसंगत गाथा में ढ़ाल कर संक्रमण काल में भारतीय इतिहास का परिदृश्य प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

NARGIS DUTT AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM ON NATIONAL INTEGRATION

SARDAR (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer: The late H.M. PATEL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director: KETAN MEHTA

Citation

The Nargis Dutt Award for the Best Feature Film on National Integration of 1993 is given to the Hindi film SARDAR for presenting a panoramic view of India in a period of transition to reveal the goals of nationalism by the integration of a mass of disparate materials and shaping them into a coherent saga of Indian nationalism in an epic style.

केतन मेहता : सुप्रसिद्ध गुजराती विद्वान चन्द्रकांत मेहता के पुत्र फ़िल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे के एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी हैं। वे एस.आई.टी.ई. कार्यक्रम तथा इसरो तथा थियेटर तथा नृत्य कार्यक्रमों से सहयोजित थे। उनकी गुजराती फ़िल्म "भवानी भवाई" को गुजरात सरकार के आठ पुरस्कारों के अलावा दो राष्ट्रीय पुरस्कार तथा यूनेस्को क्लब पुरस्कार मिले। उन्होंने "होली" (हिन्दी) का निर्माण तथा निर्देशन किया। केतन मेहता की "मिर्च मसाला" को भारत तथा विदेश से प्रशंसा मिली तथा पुरस्कार प्राप्त हुए। "हीरो हीरालाल" तथा दूरदर्शन धारावाहिक "मि. योगी" से उन्हें और भी प्रशंसा मिली। गुस्तावे फ्लाऊबर्ट्स की "मैडम बोवरी" से रुपांतरित की गई फ़िल्म "माया मेमसाब" को अत्यधिक सफलता मिली। "सरदार" के अलावा उन्होंने अनेक वृत-चित्र बनाए हैं।

KETAN MEHTA : Son of the well-known Gujarati scholar, Chandrakant Mehta, Ketan is an alumnus of the Film and Television Institute, Pune. He was associated with the SITE programme and ISRO as well as with theatre and dance programmes. His Gujarati film, "Bhavini Bhavai" earned for him two national awards and the UNESCO Club Award, apart from eight awards from the Gujarat Government. He produced and directed "Holi" (Hindi). Ketan Mehta's "Mirch Masala" created a sensation and earned for him acclaim and awards from India and abroad. "Hero Hiralal" and the TV serial, "Mr Yogi" notched further credits for him. "Maya Memsaab" adapted from Gustave Flaubert's "Madame Bovary" has been hailed an all-round success. Apart from "Sardar", he has several documentaries to his credit. He is a film-maker who has set his sights.

एच. एम. पटेल: द फाऊन्डेशन फार फिल्म्स आन इंडिपेन्डेन्स एक ऐसा न्यास है जिसे स्वर्गीय एच. एम. पटेल द्वारा भारत के स्वतंत्रता-संग्राम के विषय पर फ़िल्म निर्माण के लिए संचालित किया गया था। एच. एम. पटेल, सरदार के अत्यधिक विश्वासपात्र थे और उन्होंने उनके साथ विभाजन सचिव, रक्षा सचिव, मंत्रिमंडलीय सचिव तथा विभाजन के बाद दिल्ली में हुए दंगों के दौरान दिल्ली के प्रशासक आदि के अनेक पदों पर कार्य किया है। एच. एम. पटेल 1977 में वित्तमंत्री तथा 1979 में गृहमंत्री के प्रतिष्ठित पदों पर रहे।

H.M. PATEL : The Foundation for Films on India's War of Independence is a trust started by the late H.M. Patel to produce films on the subject of the fight for India's Independence .

H.M. Patel was a close confidante of the Sardar and worked in several capacities with him, as Partition Secretary, Defence Secretary, Cabinet Secretary, and Administrator of Delhi during the postpartition disturbance in Delhi and so on H.M. Patel was to crown his exceptional career as the Finance Minister in 1977 and the Home Minister in 1979.

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

आकाश दूतु (मलयालम)

निर्माता : **अनुपम सिनेमा** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **सिबी मलायिल** को रजत कमल तथा 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार मलयालम फ़िल्म **आकाश दूतु** को मानव प्रेम और सहानुभूति द्वारा परिवार कल्याण की आवश्यकता के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON FAMILY WELFARE

AAKASHA DOOTHU (Malayalam)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer: **ANUPAMA CINEMA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director: **SIBI MALAYIL**

Citation

The Award for the Best Film on Family Welfare of 1993 is given to the Malayalam film **AAKASHA DOOTHU** for the urgency of family welfare through human love and compassion.

सिबी मलायिल : ''आकाश दूतु'' केरल के 37 वर्षीय निर्देशक, सिबी मलायिल की 21वीं फ़िल्म है। कामर्स स्नातक, सिबी ने अपनी फिल्म ''मुतारम कुन्नु पी.ओ.'' के निर्माण के साथ इस व्यवसाय में प्रवेश किया। उनकी फ़िल्म ''दूरे-दूरे ओरू कोडू कोत्तम'' को 1987 में सामाजिक मुद्दो पर बनी सर्वोत्तम फ़िल्म का पुरस्कार मिला। 1991 की दूसरी सर्वोत्तम फ़िल्म का केरल राज्य का पुरस्कार ''भारतम'' को मिला। इसे ''फ़िल्म फेयर'' पुरस्कार भी मिला। सिबी मलायिल द्वारा निर्देशित ''किरीडम'' को मोहनलाल के लिए राष्ट्रीय विशेष उल्लेख पुरस्कार मिला। ''आकाश दूतु'' से सिबी केरल के बाहर के दर्शकों में और भी अधिक प्रसिद्ध हो गए हैं।

SIBY MALAYIL: ''Aakash Doothu'' is the 21st film of Siby Malayil, the 37year-old director from Kerala. A graduate in commerce, Sibi entered the profession with his film ''Muttaram Kummu P.O.'' His film ''Doore Doore Oru Koodu Kottam'' won the award for the best film on social issues in 1987. A Kerala state award for the second best film in 1991 went to his ''Bharatam''. It also bagged the Filmfare Award. ''Kireedom'' directed by Sibi Malayil won for Mohanlal the Special Mention National Award. With ''Aakkasha Doothu'' Sibi has become more popular with audiences beyond Kerala.

सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

जननी (बंगला) तथा नारायम् (मलयालम)

निर्माता : **सनत दासगुप्ता** को (**जननी** के लिए) तथा **राजू पिलाकट** को (**नारायम्** के लिए) रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **सनत दासगुप्ता** को (**जननी** के लिए) तथा **शशि शंकर** को (**नारायम्** के लिए) रजत कमल तथा 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

मद्यनिषेध, महिलाओं, बाल कल्याण, दहेज विरोध नशीले पदार्थों, विकलांग-कल्याण आदि जैसे सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म का 1993 का पुरस्कार बंगला फ़िल्म **जननी** को देश के कुछेक भागों में प्रचलित जादू-टोना जैसी दकियानूसी प्रथा के उत्कृष्ट चित्रण के लिए दिया गया है। यही पुरस्कार मलयालम फ़िल्म **नारायम्** को भी सामुदायिक सद्भावना को महसूस करने की दमित संभावनाओं का सजीव चित्रण करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON OTHER SOCIAL ISSUES

JANANI (Bengali) and NARAYAM (Malayalam)

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 30,000 to the Producers: **SANAT DASGUPTA** (for **JANANI**) and **RAJU PILAKAT** (for **NARAYAM**)

Rajat Kamal and a cash price of Rs 15,000 to the Directors: **SANAT DAS GUPTA** (for **JANANI**) and **SASI SHANKAR** (for **NARAYAN**)

Citation

The Award for the Best Film on other Social issues such as Prohibition, Women and Child Welfare, Anti-Dowry, Drug Abuse, Welfare of the Handicapped etc. of 1993 is given to the Bengali film **JANANI** for its delicate portrayal of an obscurantist practice like witchcraft, prevalent in certain parts of the country and to the Malayalam film **NARAYAM** for its subdued depiction of the possibilities of realising communal harmony.

सनत दासगुप्ता : मध्य भारत में रीवा में जन्म हुआ और औपचारिक शिक्षा रीवा तथा कलकत्ता में हुई। 1970 के शुरु में फ़िल्म-निर्माण में रूचि विकसित हुई। वे गौतम घोष की "हंगरी आटम" के सह निर्देशक तथा सह निर्माता थे।

भारतीय गलास तथा सेरामिक उद्योग पर सनत दास गुप्ता की "डुओ" को 1989 में 36 वें राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में सर्वोत्तम औद्योगिक फ़िल्म का पुरस्कार मिला। सुप्रसिद्ध बंगला कवि, जबीननदं दास के जीवन और कविता पर आधारित उनकी अगली मुख्य फ़िल्म "कवित्तर अनन्त जतरापते" 1992 में बेंगलूर में आयोजित भारतीय पेनोरमा में चुनी गई। इसे 1992 में सर्वोत्तम जीवनी फ़िल्म का एक ओर रजत कमल पुरस्कार मिला। बंगाल फ़िल्म पत्रकार संघ ने इसे 1991-92 का सर्वोत्तम वृत्त-चित्र माना है।

"जननी" महाश्वेता देवी द्वारा लिखित प्रसिद्ध लघु कहानी पर आधारित है और इस का निर्माण राष्ट्रीय फ़िल्म विकास संघ से प्राप्त वित्तीय सहायता द्वारा किया गया है। दासगुप्ता के प्रथम कथाचित्र को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। सनत दास गुप्ता ने निर्यात संवर्धन से चोरी-विरोधी अभियान तथा भ्रष्टाचार विरोध से बचत-प्रेरणा तक के विभिन्न प्रकार के वृत्त चित्रों का निर्माण किया है। उन्होंने दूरदर्शन धारावाहिक "बंगला गाल्पो बिचित्रा" का भी निर्देशन किया है।

SANAT DASGUPTA : Born at Rewa in Central India and had formal education at Rewa and in Calcutta. Developed interest in film-making in the early 1970's He was Associate Director and Co-producer of "Hungry Autumn" of Goutam Ghose.

Sanat Dasgupta's "Duo" on Indian glass and creamic industries, won the Rajat Kamal as the Best Industrial Film in the 36th NFFI (1989). His next major film "Kabittar Ananta Jatrapathe" a documentary film on life and poetry of the famous Bengali poet, Jibanananda Das was selected for Indian Panorama at Bangalore (1992). It earned for him yet another Rajat Kamal as the Best Biographical Film 1992. The Bengal Film Journalists' Association deemed it to be the Best Documentary Film for 1991-92.

"Janani" is based on a famous short story by Mahashweta Devi and it was produced with financial assistance from National Film Development Corporation. Dasgupta's debut feature film has bagged the National Award. Sanat Dasgupta has made a variety of documentary films ranging for export promotion to anti-pilferage campaign and from exposing corruption to promotion of glass. He has also directed the tele-serial, "Bangla Galpo Bichitra."

पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

देवरा काडु (कन्नड़)

निर्माता : **पट्टाभी रामा रेड्डी प्रॉडक्शन्स** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **टी.पी. रामा रेड्डी** को रजत कमल तथा 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार कन्नड़ फिल्म **देवरा काडु** को गाँव वापिस लौटने तथा पौराणिक कथाओं और दंत कथाओं के काल्पनिक उपयोग से प्रकृति के संरक्षण जैसे दो विषयों को प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON ENVIRONMENT/CONSERVATION/ PRESERVATION

DEVARA KADU (Kannada)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer: **PATTABHI RAMA REDDY PRODUCTIONS**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director: **T.P. RAMA REDDY**

Citation

The Award for the Best Film on Environment/Conservation/Preservation of 1993 is given to the Kannada film **DEVARA KADU** for presenting the two themes of "Back to the Village" and "Preservation of Nature" by an imaginative use of myths and legends.

टी.पी. रामारेड्डी : "पट्टाभी रामारेड्डी शांतिनिकेतन" के ऐसे विद्यार्थियों में से एक हैं जिन्होंने वहां उस समय अध्ययन किया था जब गुरुदेव टैगोर जीवित थे। उनसे प्रेरणा पाकर उन्होंने तेलुगु में कविता लिखनी शरू की। हाल ही में एक प्रसिद्ध तेलुगु कवि के रूप में उन्हें सम्मानित करने के लिए एक बधाई- समारोह का आयोजन किया गया। रामारेड्डी ने कोलम्बिया विश्वविद्यालय, यू. एस. ए में भी अध्ययन किया और आधुनिक-कला संग्रहालय, यू.एस.ए से फ़िल्म - पाठ्यक्रम पूरा किया। उनकी प्रथम फ़िल्म "संस्कार" यू. एस. अनन्तमूर्ति के उपन्यास पर आधारित है जिसे 1970 में राष्ट्रपति का स्वर्ण पदक और लोकार्नो में रजत तेंदुआ मिला। "देवरा-काडु" पर्यावरण तथा वन संरक्षण पर उनका चल चित्रीय योगदान है।

T.P. RAMA REDDY : Pattabhi Rama Reddy is one of the very few students of Shantiniketan alive who had studied when Rabindernath Tagore was the Guru there. Inspired by him, he took to writing poetry in Telugu. It was very recently that a felicitation function was held at Hyderabad in his honour as a noted Telugu poet. Rama Reddy had also studied at Columbia University, USA, and went through the film course at the Museum of Modern Art in New York. His debut film, "Samskara" based on a novel of U.R. Ananthamurthy, won the President's Gold Medal in 1970 and the Bronze Leopard at Locarno. "Devara Kadu" is his cinematic contribution for Environment Protection and Forest Preservation Campaigns.

सर्वोत्तम बाल कथाचित्र पुरस्कार

लावण्य प्रीति (उड़िया)

निर्माता : **राष्ट्रीय बाल एवं युवा चलचित्र केन्द्र** को स्वर्ण कमल तथा 30,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **ए.के. बीर** को स्वर्ण कमल तथा 15,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार उड़िया फ़िल्म **लावण्य प्रीति** को मनगढ़न्त बातों और प्रभावशाली दृश्यों द्वारा बचपन से किशोरावस्था तक पहुंचने की प्रक्रिया के उत्कृष्ट तथा मार्मिक प्रदर्शन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CHILDREN'S FILM

LAVANYA PREETI (Oriya)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer: **NATIONAL CENTRE OF FILMS FOR CHILDREN & YOUNG PEOPLE**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director: **A.K. BIR**

Citation

The Award for the Best Children's Film of 1993 is given to the Oriya film **LAVANYA PREETI** for its subtle and delicate exposition of the growing-up process from childhood to adolescence through the use of myths and striking visuals.

ए.के.बीर : स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के पश्चात् बीर ने 1966 में फ़िल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे में प्रवेश ले लिया। अनेक विज्ञापन तथा कथाचित्रों में काम किया तथा अनेक पुरस्कार प्राप्त किए। उन्हें कथाचित्रों के लिए तीन बार राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। सामाजिक सेवा फ़िल्मों का निर्माण तथा निर्देशन किया जिनके लिए उन्हें दो अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले।

''आदि मीमांसा'' उनका प्रथम कथाचित्र था जिसका उन्होंने निर्माण तथा निर्देशन किया था। फ़िल्म को राष्ट्रीय एकीकरण पर बनी सर्वोत्तम फ़िल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। फ़िल्म को टोक्यो (1992) में चुना गया और दर्शाया गया।

''लावण्य प्रीति'' उनका दूसरा कथाचित्र है। फ़िल्म को सर्वोत्तम फ़िल्म का अन्तर्राष्ट्रीय निर्णायक मण्डल समीक्षक पुरस्कार तथा उदयपुर में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय बाल फ़िल्म समारोह में सर्वोत्तम बाल कलाकार पुरस्कार मिला। फ़िल्म को बर्लिन (1994) में चुना गया और दिखाया गया। फ़िल्म को ओसाका में आयोजित टेलीविजन समारोह में एशिया की सर्वोत्तम फ़िल्म का पुरस्कार मिला।

A.K. BIR : After graduation Bir joined FTII pune in 1966. Received Diploma in Cinematography in 1969. Thrice he has received National Awards for feature films. Produced and directed some social service films for which he received two International Awards.

''Adi Mimansa'' was the first feature film which he produced and directed. The film received the National Award for the Best Film on National Integration. The film was selected and screened at Tokyo (1992).

''Lavanya Preeti'' is his second feature film. The film received the International Jury's Critics Award for the Best Film and the Best Child Actor Award at the International Children's Film Festival, Udaipur. The film was selected and screened at Berlin (1994). The film received the Best Asian Film Award at the TV Festival, Osaka.

सर्वोत्तम निर्देशन पुरस्कार

टी.वी. चन्द्रन

निर्देशन : **टी.वी. चन्द्रन** को स्वर्ण कमल तथा 50,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम निर्देशन का 1993 का पुरस्कार **टी.वी. चन्द्रन** को मलयालम फ़िल्म **पोंदन माड़ा** में मनुष्य के तमाम अनुभवों को फ़िल्म रूपी कविता में शानदार ढंग से प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST DIRECTOR

T.V. CHANDRAN

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000 to the Director: **T.V. CHANDRAN**

Citation

The Award for the Best Director of 1993 is given to **T.V. CHANDRAN** for the Malayalam film **PONTHAN MADA** for a masterly rendering of a whole range of human experience into celluloid poetry.

टी.वी.चन्द्रन : चन्द्रन, जिन्हें ''पोंदन माड़ा'' में अपने निर्देशन के लिए अत्यधिक प्रशंसा मिली है और 1993 के लिए सर्वोतम निर्देशक घोषित किया गया हे, तेल्लिचरी, केरल के हैं। उन्होंने ''कषयनकुट्टी'', हेमाविन कतालारगल'', और ''अलिसिन्टे अन्वेषणम्'' का निर्देशन किया था। ''अलिसिन्टे अन्वेषणम्'' को 1990 में कलकत्ता में आयोजित भारतीय पेनोरमा में प्रदर्शित किया गया और उसी वर्ष में लोकार्नो समारोह में यह एकमात्र भारतीय प्रविष्टि थी। वे स्वत: प्रशिक्षित निर्देशक हैं, जिन्होंने अपना व्यवसाय ढूंढ लिया है।

T.V. CHANDRAN : Chandran, who has been hailed for his direction of ''Ponthan Mada'' and declared the Best Director of 1993, hails from Tellicherry, Kerala. He has directed ''Krishanan Kutty'', ''Hemavin Kathalargal'' and ''Alicinte Anweshnam'', which was shown at the Indian Panorama, 1990 at Calcutta and was the sole Indian entry at the Locarno Festival the same year. He is a self-taught director, who has found his metier.

सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार

मम्मूटी

अभिनेता : **मम्मूटी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेता का 1993 का पुरस्कार **मम्मूटी** को मलयालम फ़िल्म **पोंदन माड़ा** में एक बाहरी व्यक्ति के रूप में उनके भावुक चित्रण तथा फ़िल्म **विधेयन** में अस्तित्वात्मक स्तर पर शक्ति और डर के संबंध को दर्शाने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ACTOR

MAMMOOTTY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Actor: **MAMMOOTTY**

Citation

The Award for the Best Actor of 1993 is given to **MAMMOOTTY** for his sensitive portrayal in the Malayalam film **PONTHAN MADA** of the role of an outsider and in **VIDHEYAN** for the depiction of the relationship of power and terror at an existential level.

मम्मूटी : 7 नवम्बर 1951 को जन्मे, मम्मूटी ने अपनी युवावस्था से ही अपनी नाटकीय प्रतिभा को प्रदर्शित किया। जब वे सातवीं कक्षा में ही पढ़ते थे, उन्होंने नाटकों में अभिनय करना शुरू कर दिया था। कालेज में पढ़ते हुए, उन्हें "सर्वोत्तम अभिनेता" का प्रथम पुरस्कार मिला। उन्होंने पहली बार "देवलोकम्" में अभिनय किया था। परन्तु यह फ़िल्म अभी तक प्रदर्शित नहीं हुई। इसलिए वे "विलक्कनुन्दु स्वप्नागल" में पहली बार पर्दे पर दिखाई दिए। वे विधि-स्नातक भी हैं। मम्मूटी को "सर्वोत्तम अभिनेता" के राज्य सरकार पुरस्कार सहित अनेक पुरस्कार मिले। वे अखिल भारतीय ख्याति के नाट्य-कलाकार हैं।

MAMMOOTTY : Born on November 7, 1951, Mammootty exhibited his histrionic talents right from young age. He took to acting in plays when he was studying in the seventh standard. While studying in college, he got the first prize for "Best Actor". The first film he acted was "Devalokam". But, this picture was never released at all.

Therefore, the film "Vilakkanundu Swapanagal" was his debut appearance on the screen. He is also a law graduate.

Mammootty is the winner of many awards, including state awards for the "Best Actor". He is a thespian of all India repute.

सर्वोत्तम अभिनेत्री पुरस्कार

शोभना

अभिनेत्री : **शोभना** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेत्री का 1993 का पुरस्कार **शोभना** को मलयालम फ़िल्म **मणिचित्राताड़** में मनुष्य की विभिन्न प्रकार की भावनाओं के पेचीदा सूक्ष्मभेद बताने की उनकी असाधारण क्षमता के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ACTRESS

SHOBHANA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Actress: SHOBHANA

Citation

The Award for the Best Actress of 1993 is given to SHOBHANA in the Malayalam film MANICHITRATHAZHU for her unusual capacity to reveal complex nuances of a variety of human emotions.

शोभना : ललिता, पद्मिनी, रागिनी जैसी शास्त्रीय नर्तकियों के परिवार में जन्मी शोभना (चन्द्रकुमार) ने भरत नाट्यम नर्तकी के रूप में अपना व्यावसायिक जीवन अपने गुरू चित्रा विश्वेश्वरन् के मार्ग दर्शन में शुरू किया। शोभना को अपना औपचारिक "अरंगत्रम्" मद्रास की प्रसिद्ध संगीत अकादमी से मिला।

15 वर्ष की आयु में उन्हें क्वीन्स, न्यूयॉर्क में गणेश मंदिर के राजागोपुरम् के लिए फंड इकट्ठा करने हेतु न्यूयॉर्क में आमंत्रित किया गया। तब से उन्होंने अन्य अमरीकी नगरों तथा यू.ए.ई, कुवैत, सिंगापुर और मलेशिया में नृत्य किया है।

शोभना ने चार दक्षिण भारतीय भाषाओं (मलयालम, तमिल, तेलुगु ओर कन्नड़) में बनी लगभग 150 फ़िल्मों में अभिनय किया है और अनेक पुरस्कार प्राप्त किए हैं। तमिल में के.भाग्यराज की "एतु नम्मा अल्लु" तथा मणिरत्नम् की "तालापती" उनकी प्रसिद्ध फ़िल्में हैं। मलयालम में, उनकी अधिकांश फ़िल्में सुपर हिट हुई हैं, उनमें से कुछ के नाम हैं "अप्रैल 18", "यात्रा" और "कन्नमरायतु"। "विक्रम" "अस्त्रम्", "अभिनन्दन" और "अल्लुडु गारा" जैसी तेलुगु फ़िल्मों से उन्हें बहुत प्रशंसा मिली।

SHOBANA : Born into a family of the classical dancers, Lalitha, Padmini, Ragini (The Travancore Sisters), Shobana (Chandra Kumar) started her career as a Bharata Natyam dancer under the guidance of her guru, Chitra Visveswaran. Shobana had her formal "arangetram" at the famous Music Academy of Madras.

At fifteen years, Shobana was invited to dance in New York to raise funds for the Rajagopuram of the Ganesha Temple at the Queens in New York. Since them she has danced in other American cities and in the UAE, Kuwait, Singapore and Malaysia.

Shobana has acted in about 150 films in the four South Indian languages (Malayalam, Tamil, Telugu and Kannada) and has earned several awards. In Tamil, her famous films were "Ethu Namma Allu" of K Bhaghyaraj and "Thalapathi" of Mani Ratnam. In Malayalam, most of her films were super hits. To mention a few "April 18", "Yatra" and "Kanamarayathu". Telugu films like "Vikram" "Astram", "Abinandana" and "Alludu Gara" have won her laurels.

सर्वोत्तम सह अभिनेता पुरस्कार

परेश रावल

सह अभिनेता : **परेश रावल** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेता का 1993 का पुरस्कार **परेश रावल** को हिन्दी फ़िल्म **सर** और **वो छोकरी** में बाहरी और आन्तरिक स्तरों पर मनुष्य की परस्पर विरोधी भावनाओं द्वारा उनके उत्कृष्ट निष्पादन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SUPPORTING ACTOR

PARESH RAWAL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Best Supporting Actor: **PARESH RAWAL**

Citation

The Award for the Best Supporting Actor of 1993 is given to **PARESH RAWAL** for his performance in the Hindi films **SIR** and **WOH CHHOKRI** to reveal contradictory human emotions at the outer and inner levels.

परेश रावल : परेश रावल ने ''अर्जुन'', ''नाम'', ''डकैत'', ''मिर्च मसाला'', ''मणि'' (तेलुगु), ''शनक शमक'' (तेलुगु) फ़िल्मों में अभिनय किया है। उन्होंने गुजराती फ़िल्मों में भी काम किया है।

आई पी टी ए तथा आई एण्ड टी द्वारा आयोजित अन्तर-कालेज पुरस्कार प्राप्त किया. उन्हें ''सर'' में सर्वोत्तम खलनायक के लिए ''फ़िल्म फेयर'' 1994 का पुरस्कार मिला।

PARESH RAWEL : Has acted in "Arjun", "Naam", "Dacait", "Mirch Masala", "Mani" (Telugu), "Shanak Shamak" (Telugu) Worked in Gujarati films.

Intercollegiate award for theatre organised by IPTA & INT. "Filmfare" 1994 Award for Best Villain won for role in "Sir".

सर्वोत्तम सह अभिनेत्री पुरस्कार

नीना गुप्ता

सह अभिनेत्री : **नीना गुप्ता** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह अभिनेत्री का 1993 का पुरस्कार **नीना गुप्ता** को हिन्दी फ़िल्म **वो छोकरी** में प्रेम, घृणा तथा उत्सुकता के कई नमूने पेश करते हुए एक प्रिय माँ और विश्वासघात से ग्रस्त पत्नी के वास्तविक चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SUPPORTING ACTRESS

NEENA GUPTA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Best Supporting Actress: **NEENA GUPTA**

Citation

The Award for the Best Supporting Actress of 1993 is given to **NEENA GUPTA** in the Hindi film **WOH CHHOKRI** for a realistic portrayal of a loving mother and a betrayed wife, revealing shades of love, hate and anxiety.

नीना गुप्ता : नीना गुप्ता फ़िल्म प्रेमियों और टी.वी. दर्शकों में एक जिन्दादिल नाट्य कलाकार, मंच संचालक, एकांतप्रिय, निर्माता और निर्देशक के रूप में बहुत प्रसिद्ध हैं। वे वास्तविक रूप में एक लेखिका है।

उन्होंने आधारशिला, मंडी, उत्सव, साथ-साथ, सुषमा, त्रिकाल, अंगार, यलगार, बलवान, तथा सूरज का सातवां घोड़ा जैसी फ़िल्मों में अभिनय किया, जिनका निर्देशन बड़ी-बड़ी हस्तियों ने किया था। इन फ़िल्मों से उनमें नाट्य कलाकार की प्रतिभा का पता चलता है जो उन्हें दिल्ली के राष्ट्रीय ड्रामा विद्यालय से विरासत में मिली थी, जहाँ से उन्होंने स्नातक की डिग्री प्राप्त की थी। उन्होंने गाँधी, डिसीवर्स और जयपुर जन्कशन जैसी अंग्रेजी फ़िल्मों में भी उत्साहपूर्व अभिनय किया है।

परन्तु दूरदर्शन धारावाहिकों ने उन्हें जन-समूह में अत्यधिक प्रसिद्ध बना दिया। खानदान, यात्रा, कबीर, बुनियाद, मृणाल सेन की कहानियां, सत्यजीत रे प्रेजेन्ट्स, दाने अनार के, अन्वेषण और दिल्लगी कुछेक धारावाहिक हैं जिनमें उन्होंने अभिनय किया।

परन्तु बहुत से लोग शायद यह नहीं जानते कि वे संस्कृत में एम.फिल हैं, उनके अपने शब्दों में वे 5'.4'' लम्बी हैं और उनका वजन 55 किलोग्राम है। इससे भी अधिक वे एक फ़िल्म निर्माता हैं और अन्य धारावाहिक निर्माता/निर्देशकों के बराबर की एक निर्माता/निर्देशक हैं, जिन्हें उनके कार्य के लिए याद किया जाता है।

NEENA GUPTA : Neena Gupta is widely known to film-buffs and TV watchers as a vivacious thespian, compere, anchorperson, producer and director. She is truly an *auteur*.

The roles she has played in films like ''Aadharshila'' ''Mandi'' ''Utsav'' ''Saath Saath'', ''Susman,'' ''Trikal'', ''Angaar'' ''Yalgaar'' ''Balwan'' and ''Suraj Ka Satwan Ghoda'' directed by stalwarts have revealed her thespian talent, nurtured at the Delhi National School of Drama, where she graduated. She has also acted in the English films, ''Gandhi'' ''Deceivers'' and ''Jaipur Junction'' with *elan*.

But it is the TV serials that have endeared her to the masses. ''Khandaan'' ''Yatra'', ''Kabeer'' ''Buniyad'' ''Mrinal Sen's Stories,'' ''Satyajit Ray presents'' ''Dane Anar Ke'' ''Anveshan'' and ''Dillagi''

But many may not know that she has an M.Phil in Sanskrit, ''her height is 5 feet 4 inches and her weight is 55 kg'', in her own words! What is more, she is a film-maker and serial-director/producer now on par with others, who can be remembered for their work.

सर्वोत्तम बाल कलाकार पुरस्कार

तारा शंकर मिश्रा

बाल कलाकार : **तारा शंकर मिश्रा** को रजत कमल तथा 5,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल कलाकार का 1993 का पुरस्कार **मास्टर ताराशंकर मिश्रा** को उड़िया फ़िल्म **लावण्य प्रीति** में बचपन से किशोरावस्था में पहुंचने के प्रक्रम और पहली बार कामवासना का आभास होने की स्थिति को सफलतापूर्वक दर्शाने में उनके अभिनय के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CHILD ARTISTE

TARASHANKAR MISHRA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000 to the Child Actor: **TARASHANKAR MISHRA**

Citation

The Award for the Best Child Artiste of 1993 is given to Master **TARASHANKAR MISHRA** for his work in the Oriya film **LAVANYA PREETI** for depicting successfully the process of growing up from childhood to adolescence and the first awareness of sexuality.

तारा शंकर मिश्रा : भुवनेश्वर के ताराशंकर मिश्रा ''किस्मत वाले'' युवा हैं, जिन्हें ए.के. बीर ने ''लावण्य प्रीति'' के लिए लगभग ऐसे 1000 लड़कों में से चुना जिनका उन्होंने उड़ीसा के स्कूलों में निरीक्षण किया था और साक्षात्कार लिया था।

बारह वर्षीय मिश्रा आठवीं कक्षा में पढ़ते हैं। अपने भेजे गये बायोडाटा में उन्होंने लिखा है कि वे तबला-वादन और शब्द-संयोजन सीख रहे हैं। वे क्रिकेट और बैडमिंटन पसंद करते हैं और आजकल वे सभ्यसाची महापात्र की हिंदी फ़िल्म ''सुक्की'' में अभिनय कर रहे हैं। वे मैकेनिकल इंजीनियर बनना चाहते हैं।

TARA SHANKAR MISHRA : Tara Shankar Mishra of Bhubhaneswar is the ''lucky'' youngster whom A.K. Bir chose for ''Lavanya Preeti'' out of nearly 1000 boys he had inspected and interviewed in schools of Orissa.

Twelve year-old Mishra is studying in Standard VIII. In the bio-data he has sent, he has said he is learning to play tabla and the synthesiser, he likes cricket and bandminton and that he is now acting in a Hindi film ''Sukki''. More, he wants to become a Mechanical Engineer.

सर्वोत्तम पार्श्व गायक पुरस्कार

के.जे. येशु दास

पार्श्व गायक : **के.जे. येशु दास** को रजत कमल तथा 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायक का 1993 का पुरस्कार **के.जे. येशु दास** को मलयालम फ़िल्म **सोपनम्** में मनुष्य की भावनाओं की दूरी और गहराई दोनों का चित्रण करने में समर्थ उनकी मनोरंजक तथा सुरीली आवाज़ द्वारा विभिन्न प्रकार के भाव प्रस्तुत करने की उनकी उत्कृष्ट क्षमता के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST MALE PLAYBACK SINGER

K.J.YESUDAS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Male Playback Singer: **K.J. YESUDAS**

Citation

The Award for the Best Male Playback Singer of 1993 is given to **K.J. YESUDAS** for his superb capacity to render a variety of moods by means of a rich and melodious voice, which is capable of delineating both the range and depth of human emotions in the Malayalam film SOOPANAM.

के.जे. येशुदास : ''के.जे. येशुदास'' ने आर.एल. वी. संगीत अकादमी, त्रिपुनितुरा तथा स्वातितिरुनल संगीत कालेज, त्रिवेन्द्रम में शास्त्रीय कर्नाटक शैली के संगीत में प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने मलयालम फ़िल्म ''कल्पदुकल'' में पार्श्व-गायक के रूप में अपना व्यावसायिक-जीवन शुरू किया। तबसे, उन्होंने कई भाषाओं में बनी फ़िल्मों में गाने गाए हैं और कई बार सर्वोत्तम पार्श्व-गायक के राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किए हैं।

K.J. YESUDAS : K.J. Yesudas received training in classical Carnatic Music at the R.L.V Music Academy in Tripunithura and the Swathi. Thirunal College of Music in Trivandrum. He began his career in playback singing in the Malayalam film ''Kalpadukal''. Since then, he has sung for films in several languages and has won the National Award for the Best Male Playback Singer many times.

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका पुरस्कार

अल्का याग्निक

पार्श्व गायिका : **अल्का याग्निक** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका का 1993 का पुरस्कार **अल्का याग्निक** को हिन्दी फ़िल्म **हम हैं राही प्यार के** में पात्रों के साथ अपना सांमजस्य स्थापित करने तथा नाजुक स्थितियों में मनुष्य की भावनाओं के सूक्ष्म भेदों को प्रस्तुत करने की उनकी प्रतिभा के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEMALE PLAYBACK SINGER

ALKA YAGNIK

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000 to the Female Playback Singer: **ALKA YAGNIK**

Citation

The Award for the Best Female Playback Singer of 1993 is given to **ALKA YAGNIK** for her ability to identify herself with the characters and render the delicate nuances of human feelings in complex situations in the Hindi film **HUM HAIN RAHI PYAR KE.**

अल्का याग्निक : अल्का याग्निक (कपूर) का संबंध एक संगीत परिवार से है। यद्यपि वे जादवपुर विश्वविद्यालय से गृह विज्ञान की स्नातक हैं, उन्होंने 8 वर्ष की उम्र में ही अपनी माता जी से संगीत सीखना शुरू कर दिया था, जो कि वाराणसी घराना में एक शास्त्रीय संगीत की गायिका थी। बाद में उन्होंने कल्याण जी आनन्द जी से शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने बसु चटर्जी की फ़िल्म में अपना पहला प्रयास किया और "लावारिस" फ़िल्म से उनकी पहचान बनी। उन्होंने अब तक 10,000 से भी अधिक गाने गाए और अनेक पुरस्कार प्राप्त किए हैं। "तेजाब", "कयामत से कयामत तक" "हम हैं राही प्यार के", "बाज़ीगर" तथा "खलनायक" जैसी फ़िल्मों से उन्हें ख्याति मिली।

ALKA YAGNIK : Alka Yagnik (Kapoor) hails from a musical family. Though a graduate from the Jadavpur University in Home Science, she took to music after her mother, a classical singer from the Varanasi gharana from the age of eight. Later, she was tutored by Kalyanji-Anandji. She made her debut in a Basu Chatterji film and won recognition through "Lawaris". She has to her credit of having sung 10,000 songs plus and has won several awards. Films like "Tejab", "Quyamat Se Quyamat Tak", "Hum Hai Rahin Pyar Ke" "Bazigar" and "Khalnayak" earned her fame.

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

वेणु

छायाकार : **वेणु** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

फ़िल्म प्रोसेसिंग करने वाली प्रयोगशाला : **प्रसाद कलर लेबोरट्री, मद्रास** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशास्ति

सर्वोत्तम छायांकन का वर्ष 1993 का पुरस्कार **वेणु** को मलयालम फ़िल्म **पोंदन माड़ा** में विषय की पृष्ठभूमि, सेटिंग, और वातावरण का आभास कराने तथा भाव संचारित करने के लिए प्रभावशाली दृश्यों का सदुपयोग करने में कैमरे के उत्कृष्ट उपयोग के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHER

VENU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Cinematographer: **VENU**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Laboratory processing the film: **PRASAD COLOUR LABORATORY**, Madras.

Citation

The Award for the Best Cinematographer of 1993 is given to **VENU** for the masterly use of the camera, in order to capture the feel of the background, setting, atmosphere of the subject and making use of striking visuals to communicate the theme in the Malayalam film **PONTHAN MADA**.

वेणु : वेणु ने 1973 में फ़िल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे से छायांकन में डिप्लोमा प्राप्त किया। वे जी. अरविंदन की "मास्क्स एण्ड मैन", मणि कौल की "माटी मानस" तथा राजीव विजय राघवन की "सिस्टर आल्फोंसा" सहित अनेक महत्वपूर्ण फ़िल्मों के छायाकार थे। जिन कथाचित्रों में उन्होंने छायाकार के रूप में काम किया है, उनमें जॉन अब्राहम की "अम्मा अरियन्", के.सी. जॉर्ज की इराकल, पामेला रुक्स की "मिस बेटीज़ चिल्ड्रन" और बुद्धदेब दासगुप्ता की "बाघ बहादुर" तथा "ताहदेर कथा" शामिल हैं। उन्होंने अलन बिर्किन शाह द्वारा निर्देशित दूरदर्शन फ़िल्म "जवाहरलाल नेहरू" पर भी काम किया है।

VENU : Venu obtained his Diploma in Cinematography from the Film and Television Institute, Pune, in 1973. He was the cinematographer for a number of important documentaries, including G. Aravindan's "Masks and Men", Mani Kaul's "Mati Manas" and Rajiv Vijay Raghavan's "Sister Alphonsa". The feature films he has worked as a cinematographer include John Abraham's "Amma Ariyan", K.C. George's "Irakal", Pamela Rooks' "Miss Beatty's Children and Buddhadeb Dasgupta's "Bagh Bahadur" and "Thadader Katha". In "Ponthan Mada" he has excelled himself. He also worked on a Doordarshan film "Jawaharlal Nehru", directed by Alan Birkinshaw.

सर्वोत्तम पटकथा पुरस्कार

सत्यजीत राय

पटकथा लेखक : **सत्यजीत राय** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशास्ति

सर्वोत्तम पटकथा का 1993 का पुरस्कार बंगला फ़िल्म **उत्तरण** में समग्र प्रभाव का उत्कृष्ट नियंत्रण रखने के साथ कल्पनात्मक और सौंदर्यपरक दृष्टिकोण से एक पटकथा की रूपरेखा बनाने और निर्माण करने के लिए स्वर्गीय **सत्यजीत राय** को दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SCREENPLAY WRITER

SATYAJIT RAY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Screenplay Writer : the late **SATYAJIT RAY**

Citation

The Award for the Best Screenplay of 1993 is given to the late SATYAJIT RAY for designing and structuring a screenplay from an imaginative and aesthetic angle, with a superb control over the unity of impressions in the Bengali film UTTORAN.

सत्यजीत राय भारतीय फ़िल्म जगत के दीपस्तम्भ थे। उन्होंने फ़िल्म कला के सभी पहलुओं में पूर्ण दक्षता का परिचय दिया। फ़िल्मों के निर्माण तथा निर्देशन के अलावा उन्होंने संगीत निर्देशन, सम्पादन, कहानी और पटकथा लेखन तथा सैट डिजाइनिंग और वेशभूषा तक में विशेष योग्यता के साथ काम किया। उनकी फ़िल्मों की कहानियां बहुत अधिक प्रभावशाली रही हैं। उनकी अनेक फ़िल्में साहित्यिक कृतियों पर आधारित हैं। उन्होंने सिनेमा के सम्बन्ध में कई निबंध भी लिखे। उनकी लगभग सभी फ़िल्मों को पुरस्कार मिले। 1984 में उन्हें फ़िल्म के क्षेत्र में देश का सर्वोच्च सम्मान **दादा साहेब फाल्के** पुरस्कार दिया गया। 1992 में सिनेमा जगत की श्रेष्ठ सेवा के लिए देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से अलंकृत किया गया। 1992 में ही उन्हें अकादमी ऑफ मोशन पिक्चर्स, यु.एस.ए. द्वारा जीवन प्रयंत उपलब्धि पुरस्कार भी प्रदान किया गया।
सत्यजीत राय का देहांत 23 अप्रैल 1992 को कलकत्ता में हुआ।

SATYAJIT RAY has been hailed as a genius in virtually every aspect of his craft. He wrote the screenplay, designed the set and costumes, scored the music, directed, mixed and edited the film. The result was a fluid and controlled product. Yet, his films make their greatest impact as stories. Many of Ray's films have arisen from works of literature, and he himself has written detective stories, science fiction and fairy tales, apart from essays on cinema. Almost every one of them has been an awardwinner. In 1984, he won the Dada Saheb Phalke Award. In 1992, the Government of India confered on him the Bharat Ratna for his excellent service to cinema. He also won the 1992 Lifetime Achievement Award of the Academy of Motion Pictures, USA. Saytajit Ray died on April 23, 1992, in Calcutta.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

श्रीधर तथा के.एम सूर्य नारायणन (मैसर्ज मीडिया आर्टिस्ट प्रा. लि.)

ध्वनि आलेखन : **श्रीधर** तथा **के.एम. सूर्य नारायणन (मैसर्ज मीडिया आर्टिस्ट प्रा. लि.)** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का 1993 का पुरस्कार **श्रीधर** तथा **के.एम. सूर्य नारायणन (मेसर्ज मीडिया आर्टिस्ट प्रा. लि.)** को तमिल फ़िल्म **महानदी** में श्रव्य-दृश्य कार्य के रूप में समग्र प्रभाव लाने के लिए तकनीक का इस्तेमाल करने की उनकी क्षमता के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHER

SRIDHAR & SURYA NARAYNAN OF M/s MEDIA ARTISTE PVT. LTD.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Audiographers: **SRIDHAR & SURYA NARAYNAN of M/S MEDIA ARTISTE PVT. LTD.**

Citation

The Award for the Best Audiography of 1993 is given to **SRIDHAR & SURYA NARAYNAN of M/S MEDIA ARTISTE PVT. LTD.** for their capacity to the use of technique to contribute to the total effect of the Tamil film **MAHANADHI** as an audio-visual **gestalt**.

फ़िल्म ''महानदी'' का एक दृश्य

Still from "Mahanadhi"

सर्वोत्तम सम्पादन पुरस्कार

रेणु सलूजा

संपादक : **रेणु सलूजा** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सम्पादन का 1993 का पुरस्कार **रेणु सलूजा** को विभिन्न और विषम घटनाओं को सफलतापूर्वक और कलात्मक ढंग से अविस्मरणीय महाकाव्यात्मक सिनेमा में जोड़ने के लिए हिन्दी फ़िल्म **सरदार** में उनके कार्य के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST EDITOR

RENU SALUJA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Editor: **RENU SALUJA**

Citation

The Award for the Best Editing of 1993 is given to **RENU SALUJA** for her work in the Hindi film **SARDAR** for combining expertise with artistry in a diverse and disparate series of sequences into a memorable experience of epic cinema.

रेणु सलूजा : रेणु सलूजा ने एल्फिस्टन कालेज बम्बई से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद भारतीय विद्याभवन के राजेन्द्र प्रसाद संचार संस्थान से पत्रकारिता में डिप्लोमा प्राप्त किया। 1976 में उन्होंने भारतीय फिल्म एवम टेलीविजन संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त किया। रेणु सूलजा ने अनेक हिन्दी कथाचित्रों तथा कई टेलीविजन धारावाहिकों का सम्पादन किया है। 1989 में हिन्दी फिल्म ''परिन्दा'' और ''धारावी'' के लिए उन्हे सर्वोत्तम सम्पादन का राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया। उन्होंने सैयद मिर्जा, कुंदन शाह, विजया मेहता, केतन मेहता, पामेला रूक्स और विधु विनोद चोपड़ा की फिल्मों का सम्पादन किया है।

RENU SALUJA graduated from Elephinstone College, Bombay, and holds a diploma in journalism from the Rajendra Prasad Institute of Communications, Bharatiya Vidya Bhavan, Bombay. She graduated from the FTII in 1976. She has edited many feature films in Hindi as well as a number of television serials. She has won the national awards for best editing for her work in the ''Parinda'' and ''Dharawi''. She has edited the films of Saeed Mirza, Kundan Shah, Vijaya Mehta, Ketan Mehta, Pamela Rooks and Vidhu Vinod Chopra.

सर्वोत्तम कला निर्देशन पुरस्कार

सुरेश सावंत

कला निर्देशक : **सुरेश सावंत** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला निर्देशन का 1993 का पुरस्कार **सुरेश सावंत** को अत्यधिक सौंदर्य और सिनेमा की समग्र वास्तुकला, भू-दृश्य तथा आन्तरिक भागों को पुनः सृष्ट करने के साथ-साथ एक बीमार संगीतज्ञ के काव्य की मुख्य-पात्र द्वारा खोज का शानदार निरूपण करने के लिए उर्दू फ़िल्म **मुहाफ़िज़** में उनके कार्य के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ART DIRECTOR

SURESH SAWANT

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Art Director: **SURESH SAWANT**

Citation

The Award for the Best Art Direction of 1993 is given to **SURESH SAWANT** for his work in the Urdu film **MUHAFIZ** for recreating architecture, landscape and interiors of exceptional beauty and cinematic integrity, synchronised to perfection with the thematic content of the protagonist's search for the poetry of an ailing maestro.

सुरेश सांवत : जे. जे. स्कूल आफ आर्टस, बम्बई से डिप्लोमा प्राप्त करने के पश्चात सुरेश सांवत ने फिल्म उद्योग में प्रवेश किया। पिछले 25 वर्षों से वे राजकपूर, मनमोहन देसाई, केतन मेहता, रणधीर कपूर, एन. चन्द्रा और अन्य व्यक्तियों द्वारा निर्मित कुछ फिल्मों के कला-निर्देशक रहे हैं। वे मर्चेन्ट आइवरी प्राडक्सन्स ''किम'' से सहयोजित रहे हैं। उनकी एक फिल्म ''हिना'' को ऑस्कर के लिए नामित किया गया। इससे पूर्व उन्हें फ़िल्म फेयर पुरस्कार मिला।

SURESH SAWANT, after acquiring a diploma from the J.J. School of art in Bombay entered the film industry. During the last quarter century the has been in charge of Art Direction for some films made by Raj Kapoor, Man Mohan Desai, Ketan Mehta, Randhir Kapoor. N. Chandra and others. He has been associated with two Merchant Irory productions and ''Kim''. One film of his was nominated for the Oscar ''Henna'' he has received a Filmfare Award.

सर्वोत्तम वेशभूषाकार पुरस्कार

लवलीन बैंस

वेशभूषाकार : **लवलीन बैंस** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम वेशभूषाकार का 1993 का पुरस्कार **लवलीन बैंस** को न केवल मुख्य अभिनेता, वयोवृद्ध साहित्यकार तथा उसकी ख्याली दुनिया के लोगों की वेश भूषा की समस्त रूपच्छटा तैयार करने बल्कि नगर तथा छोटे से कस्बे के समग्र वातावरण का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करने के लिए उर्दू फ़िल्म **मुहाफ़िज** में उनके कार्य के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST COSTUME DESIGNER

LOVLEEN BAINS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Costume Designer: **LOVLEEN BAINS**

Citation

The Award for the Best Costume Designer of 1993 is given to **LOVLEEN BAINS** for her work in the Urdu film **MUHAFIZ** for recreating an entire spectrum of costumes, representing not only the protagonist, the aging litterateur and his closeted world, but the entire milieu of the city and the small town.

लवलीन बैंस ने फ़िल्म निर्माण में अपना व्यावसायिक जीवन मर्चेन्ट आइवरी प्रॉडक्शन्स में वर्ष 1952 में "हीट एण्ड डस्ट" के निर्माण से शुरू किया। तबसे उन्होंने अधिकांश समय तक शशि कपूर की "उत्सव" और मर्चेन्ट आइवरी की एक अन्य फ़िल्म "द डिसीवर्स" जैसी फ़िल्मों में वेशभूषा डिज़ाइन करने का काम किया। बैंस ने पीटर शैफ्टर की "रायल हंट आफ द सन" में स्पेन के 16 वीं शताब्दी के सेट का डिजाइन बनाने के अलावा बम्बई में अंग्रेजी थियेटर के लिए वेशभूषा डिज़ाइन भी तैयार किए हैं।

LOVLEEN BAINS: Started her career in film production with Merchant Ivory Productions on their 1982 "Heat and Dust". Since then, she has worked on costumes for major period films such as Shashi Kapoor's "Utsav" and another Merchant Ivory film, "The Deceivers".

Bains has also designed costumes for the English theatre in Bombay, including Peter Shaffer's "Royal Hunt of the Sun" set in 16th-century Spain.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन पुरस्कार

जॉनसन

संगीत निर्देशक : **जॉनसन** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का 1993 का पुरस्कार **जॉनसन** को रुढ़िवादी संगीत से आधुनिक शैली के संगीत में कल्पना, क्षमता और प्रस्तुतीकरण की बदलती रूपरेखा में प्रदर्शित करने के लिए मलयालम फ़िल्म **पोंदन माड़ा** में उनके संगीत के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST MUSIC DIRECTOR

JOHNSON

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Music Director: **JOHNSON**

Citation

The Award for the Best Music Director of 1993 is given to JOHNSON in the Malayalam film **PONTHAN MADA** for his music, which exhibits imagination, competence and presentation of the changing contours of music from traditional to modern styles.

जॉनसन : जॉनसन ने अब तक 20 से भी अधिक फिल्मों को संगीत दिया है। उन्होंने "प्रेमगीतम" में अपना प्रथम प्रयास किया था। उनके कारण अनेक गायकों को पार्श्व गायन के राज्य पुरस्कार मिले हैं। उन्हें भी मलयालम में सर्वोत्तम संगीत निर्देशक का राज्य पुरस्कार मिला।

Johnson : Johnson has scored Music for more than 200 films till now. He made his debut with "Premageetham". He has been instrumental for several singers to get State Awards for play back singing. Has also received the State Award for Best Music Director in Malayalam.

सर्वोत्तम गीतकार पुरस्कार

वेतुरि सुंदर राममूर्ति

गीतकार : **वेतुरि सुंदर राममूर्ति** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गीत का 1993 का पुरस्कार **वेतुरि सुंदर राममूर्ति** को तेलुगु फ़िल्म **मातृदेवोभवः** में उनके गीत **रलिपाये पुव्वा** के लिए दिया गया है, जो उनके जीवन के गहन अनुभव और उसके पश्चात् सरलता से भाषा-प्रयोग में उनकी क्षमता द्वारा समृद्ध उनकी काव्यात्मक कल्पना को प्रदर्शित करता है।

AWARD FOR THE BEST LYRICIST

VETURI SUNDARA RAMA MURTHY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Lyricist: **VETURI SUNDARA RAMA MURTHY**

Citation

The Award for the Best Lyricist of 1993 is given to **VETURI SUNDARA RAMA MURTHY** for his lyric **RALIPOYE PUVVA** in the Telugu film, **MATRUDEVOBHAVA**, which demonstrates his poetic imagination, enriched by his deep experience of life and a consequential competence in using language with felicity.

वेतुरि सुंदर राममूर्ति : तेलुगु विद्वानों के परिवार में जन्मे तथा कवियों और गीतकारों द्वारा प्रशिक्षित वेतुरि सुंदर राममूर्ति विभिन्न पदों पर कार्यरत पत्रकार रहे हैं। परन्तु उन्होंने उपन्यासों और कविताओं के रूप में सृजनात्मक कार्य किए हैं जिसके लिए उन्हें देश-विदेश में सम्मानित किया गया है। वे 25 वर्षों से भी अधिक समय से एक मुख्य गीतकार के रूप में तेलुगु फ़िल्म उद्योग में कार्य कर रहे हैं।

VETURI SUNDARA RAMA MURTHY: Born in a family of Telugu scholars and trained under poets and lyricists, Veturi Sundara Rama Murthy had been a working journalist in different capacities. But the creative element burst out of him in the form of novels and poems, for which he has been honoured at home and more often abroad. For more than a quarter century ha has been involved in the Telugu Film Industry as a major lyricist.

निर्णायक मण्डल विशेष पुरस्कार

शशि कपूर तथा पल्लवी जोशी

अभिनेता : **शशि कपूर** को (**मुहाफ़िज** के लिए) अभिनेत्री : **पल्लवी जोशी** को (**वो छोकरी** के लिए)
रजत कमल तथा 25,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्णायक मण्डल का 1993 का विशेष पुरस्कार अभिनेता **शशि कपूर** को उर्दू फ़िल्म **मुहाफ़िज** में एक कवि की अनुभूति के मार्मिक चित्रण के लिए दिया गया है, जो कि लुप्त हो रही मानवीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके दौरान उसके काल्पनिक जीवन की नींव भौतिकवाद के मूल्यों के दबाव से खोखली हो जाती है। यही पुरस्कार अभिनेत्री **पल्लवी जोशी** को भी हिन्दी फ़िल्म **वो छोकरी** में क्षमतापूर्ण और वास्तविक अभिनय करने के लिए दिया गया है, जिसमें बचपन से यौवनावस्था तक एक महिला के जीवन को छूने वाले सभी प्रकार के अनुभवों और मनोभावों का उल्लेख किया गया है।

SPECIAL JURY AWARD

SHASHI KAPOOR and PALLAVI JOSHI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 25,000 to the actor, SHASHI KAPOOR (for MUHAFIZ) and actress PALLAVI JOSHI (for WOH CHHOKRI)

Citation

The Special Jury Award of 1993 is given to the actor SHASHI KAPOOR in the Urdu film MUHAFIZ for a sensitive portrayal of the feeling of the poet, who is a representative of a dying humanistic culture, in course of which the life of imagination is undermined by the pressure of materialistic values and to the actress, PALLAVI JOSHI in the Hindi film WOH CHHOKRI for enacting competently and realistically, a whole gamut of experiences and emotions, embracing a women's life from childhood to adulthood.

शशि कपूर : प्रसिद्ध फ़िल्म और रंगमंच अभिनेता पृथ्वीराज के तीसरे बेटे शशि कपूर का जन्म कलकत्ता में हुआ। बाल कलाकार के रूप में उन्होंने अपने पिता की थियेटर कम्पनी, पृथ्वी थियेटर में और अपने भाई राजकपूर के साथ काम किया। उन्होंने थियेटर का हिन्दी ओर अंग्रेजी में अध्ययन किया तथा ज्योफ्रे तथा लौरा केंडल द्वारा संचालित "शैक्सपीयराना" के साथ दो वर्षों तक भारत और विदेश का भ्रमण किया। उन्होंने उनकी बेटी जेनिफ़र केंडल से विवाह किया।

शशि कपूर ने लगभग 250 हिन्दी फ़िल्मों में अभिनय किया है और मर्चेन्ट आइवरी की पिछली पांच फ़िल्मों सहित अनेक अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्मों में भी अभिनय किया है।

शशि कपूर अब बम्बई में अपने पिता के पृथ्वी थियेटर और अपनी सफल फ़िल्म कम्पनी "फ़िल्म वालाज़" को चलाते हैं। उनकी इस कम्पनी द्वारा "चौरंगी लेन" जैसी अनेक पुरस्कार प्राप्त फ़िल्मों का निर्माण हुआ है। 1991 में शशि कपूर ने "अजूबा" शीर्षक की भारत-रुसी फ़िल्म का निर्माण तथा निर्देशन किया।

पल्लवी जोशी : 1969 में जन्मी पल्लवी जोशी ने अपना 25वां जन्मदिन 4 अप्रैल को मनाया था। तब तक, उन्होंने श्याम बेनेगल, गोबिन्द निहलानी, वेद राही, सुभाष घई, नबयेन्दु घोष, बी आर. इशारा जैसी अनेक हस्तियों द्वारा निर्देशित 34 फ़िल्मों में और अब शुभांकर घोष की फ़िल्म "वो छोकरी" में अभिनय किया है। उन्होंने 35 दूरदर्शन धारावाहिकों में भी अभिनय किया है, जिनमें से कई ऋषिकेष मुखर्जी, श्याम बेनेगल, कुंदन शाह, केतन मेहता, अमोल पालेकर, शुभांकर घोष और शाम रामसे द्वारा निर्देशित हैं। अपनी बहुमुखी प्रतिभा के कारण उन्होंने हिंदी, गुजराती, मलयालम, कन्नड़ फ़िल्मों और मराठी नाटकों में अभिनय किया है।

SHASHI KAPOOR was born in Calcutta, the third son of the famous film and stage actor, Prithviraj Kapoor. As a child, he worked with his father's theatre company, Prithvi Theatre, and for his brother Raj Kapoor. He toured India and abroad for two years with "Shakespeareana" the company run by Geoffrey and Laura Kendal. He married their daughter Jennifer Kendal. Shashi Kapoor has starred in about 250 Hindi films and has acted in many international films including five previous Merchant Ivory Films.

Shashi Kapoor now runs his father's company, the Prithvi Theatre in Bombay, and his own successful film company "Film Valas", which has produced several award winning films such as "36 Chowringhee Lane". In 1991 Shashi Kapoor produced and directed the Russian production, "Ajooba."

PALLAVI JOSHI, Born in 1969, Pallavi Joshi had celebrated her 25th birthday on April 4. By then, she has acted in 34 films directed by veterans like Shyam Benegal, Govind Nihalani, Ved Rahi, Subhash Ghai, Nabyendu Ghosh, B.R. Ishara - and now in Subhankar Ghosh's film, "Woh Chokri." She has also acted in 35 TV serials several of which have been directed by Hrishikesh Mukherjee, Shyam Benegal, Kundan Shah, Ketan Mehta, Amol Palekar, Subhankar Ghosh and Sham Ramsay. Her versatility being such she has acted in Hindi, Gujarati, Malayalam, Kannada films and Marathi plays.

सर्वोत्तम विशेष प्रभाव पुरस्कार

सेतू

निर्देशक : **सेतू** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम विशेष प्रभाव का 1993 का पुरस्कार **सेतू** को तमिल फ़िल्म **तिरुडा-तिरुडा** में उनके काम के लिए दिया गया है। बड़े पैमाने पर भव्य दृश्यों को पेशेवर रूप में प्रस्तुत करने तथा उपयुक्त संचालन से फ़िल्म के समग्र प्रभाव में महत्वपूर्ण योगदान हुआ है।

AWARD FOR THE BEST SPECIAL EFFECTS

SETHU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Creator: **SETHU**

Citation

The Award for the Best Special Effects of 1993 is given to SETHU for his work in the Tamil film **THIRUDA THIRUDA** for professional and apt handling of spectacular scenes on a large scale, contributing significantly to the overall impact of the film.

फ़िल्म ''तिरुडा-तिरुडा'' का एक दृश्य

Still from "Thiruda Thiruda"

सर्वोत्तम नृत्य संयोजन पुरस्कार

सुंदरम्

नृत्य संयोजक : **सुंदरम्** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम नृत्य संयोजन का 1993 का पुरस्कार नृत्य संयोजक **सुंदरम्** को तमिल फ़िल्म **तिरुडा-तिरुडा** में विराट सेटों, विलक्षण प्रकाश-प्रभाव और थिरकने वाले संगीत के स्वरैक्य में नर्तक-समूह के वाद्यवृंदकरण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CHOREOGRAPHER

SUNDARAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Choreographer: **SUNDARAM**

Citation

The Award for the Best Choreographer of 1993 is given to SUNDARAM for his work in the Tamil Film **THIRUDA THIRUDA**, for the orchestration of scores of dancers in unison, with massive sets, stunning light effects and foot-thumping music.

एम. सुन्दरम: कर्नाटक के एम. सुन्दरम ने बंगला और हिंदी फिल्मो के अलावा तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ की 20 से भी अधिक फिल्मों में नृत्य संयोजन किया। तमिलनाडु तथा आन्ध्र प्रदेश सरकारों ने उन्हे नृत्य-संयोजन के लिए पुरस्कृत किया।

M. Sundaram : Hailing from Karnataka, he has choreographed for more than 200 films - Tamil, Telugu, Malayalam and Kannada apart from Bengali and Hindi films. Tamil Nadu and Andhra Pradesh has given him award for Choreography.

सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र पुरस्कार

अबर्तन

निर्माता : **भूबेन्द्रनाथ सइकिया** को रजत कमल तथा 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **भूबेन्द्रनाथ सइकिया** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार **अबर्तन** को पात्रों के संबंध को वास्तविक रूप में प्रदर्शित करने के लिए नाटक के भीतर नाटक की नाटकीय तकनीक में सफल परीक्षण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN ASSAMESE

ABARTAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **BHABENDRA NATH SAIKIA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **BHABENDRA NATH SAIKIA**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Assamese of 1993 is given to **ABARTAN** for a successful experiment in the dramatic technique of a play-within-a-play to reveal the relationship of appearances to reality.

डा. भूबेन्द्रनाथ सइकिया : इम्पीरियल कालेज लन्दन से डिप्लोमा प्राप्त करने के साथ-साथ लंदन विश्वविद्यालय से भौतिकी में डाक्टरेट, सइकिया गुवाहाटी विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर विभाग में रीडर थे।

डा. सइकिया की साहित्य में सब से अधिक रुचि थी। उनकी 14 पुस्तकें प्रकाशित हैं जिनमें से लघु कहानियां और लघु उपन्यास, रेडियो नाटक और फ़िल्म पटकथाएँ शामिल हैं। उन्हें साहित्य अकादमी, असम प्रकाशन मंडल तथा बंगिया साहित्य परिषद द्वारा पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उन्हें मेगर शिक्षा न्यास द्वारा भी 1,00,000 रुपए पुरस्कार स्वरुप दिए गए। उनके नाटकों को भारत तथा विदेश में टेलीविजन पर दिखाया गया। असम के "गोबाइन थियेटर" ने उनके 14 नाटकों को अभिनीत किया।

उनकी दूसरी सर्वाधिक रुचि सिनेमा में रही। उन्होंने "संध्याराग", "अनीरबाण" "अग्निस्नान", "कोलाहल", "सरोथी" और "अबर्तन" नामक 6 फ़िल्मों का निर्देशन किया। उनकी फ़िल्मों को पटकथा के लिए "रजत कमल" पुरस्कार भी मिले। उनकी फ़िल्मों को भारतीय फ़िल्म समारोहों तथा कारलोवी वैरी, एल्जियर्स, नेन्टेस, पियोन्यांग, वेल्लोडोलिड और सिडनी सहित आठ विदेशी समारोहों में प्रदर्शित किया गया है।

डा. सइकिया अनेक सांस्कृतिक संगठनों से जुड़े हुए हैं। वर्षों तक, वे "प्रतीक" और "स्फुरा" प्रगतिशील पत्रिकाओं के मुख्य संपादक रहे हैं।

DR. BHABENDRA NATH SAIKIA

A Doctor of Philosophy from London University in Physics with a Diploma from the Imperial College, London, Saikia was a Reader in the Post-Graduate Department of Guwahati University.

Literature was Dr. Saikia's first great passion. He has 14 books to his credit: short stories and novelettes, radio plays and film scripts. He has been awarded prizes by the Sahitya Akademi, the Publication Board of Assam and Bangiya Sahitya Parishad; also Rs. 1,00,000 from the Magor Education Trust. His plays have been telecast in India and abroad. Assam's "Mobile Theatre" has put on board 14 of his plays.

Cinema became his second passion. He has directed six films: "Sandhya Raag", "Anirban", "Agnisnan", "Kolahal", "Sarothi" and "Abartan". His films have won several "Rajat Kamals". His popular films have been screened at Indian film festivals and eight foreign festivals, including Karlovy Vary and Algiers, Nantes and Pyongyong, Vallodolid and Sydney.

Dr. Saikia is connected with several cultural organisations. For years he has been the Chief Editor of "Pratik" and "Safura," both progressive journals.

सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र पुरस्कार

अन्तरीन

निर्माता : राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम तथा दूरदर्शन को रजत कमल तथा 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : मृणाल सेन को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार अंतरीन को आधुनिक मानव के एकाकीपन की संवेदनशील खोज और अमानवीकृत सभ्यता में मानव संप्रेषण की असफलता को प्रदर्शित करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN BENGALI

ANTAREEN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producers: NATIONAL FILM DEVELOPMENT CORPORATION and DOORDARSHAN

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000 to the Director MRINAL SEN

Citation

The Award for the Best Feature Film in Bengali of 1993 is given is ANTAREEN for a sensitive exploration of modern man's loneliness and the failure of human communication in a dehumanised civilization.

मृणाल सेन : मृणाल सेन का जन्म 14 मई 1923 को हुआ। शुरू में उन्हें सिनेमा से कोई विशेष लगाव नहीं था। सिनेमा में उनका प्रवेश अचानक ही हुआ। उनकी पहली फ़िल्म (1956) को गहरा धक्का लगा। फिर भी, सिनेमा के बारे में उनकी प्रथम पुस्तक बहुत पहले ही लिखी गई थी। वे नियमित तौर पर लिखते हैं परन्तु, आमतौर पर सिनेमा के सौन्दर्य पर आलोचनात्मक लेख लिखते हैं।

वे नियमित फ़िल्म निर्माता बने, उन्होंने विवाद पैदा किए तथा निर्भीक और निष्पक्ष समीक्षा की। उनमें सिनेमा की भाषा को प्रयोग करने की तीव्र इच्छा थी। ''मैं अब भी विवाद पैदा करने में विश्वास रखता हूं क्योंकि विवाद से ही सत्य अपनी कुछ ''गुणवत्ता'' प्राप्त कर सकता है।''

पुरस्कार: राष्ट्रीय : सर्वोत्तम राष्ट्रीय फ़िल्म के लिए अब तक चार बार स्वर्ण कमल।

सर्वोत्तम निर्देशन के लिए चार बार राष्ट्रपति का स्वर्ण कमल तथा रजत कमल।

अन्य वर्गों में प्रथम रहने पर रजत कमल।

पुरस्कार: अन्तर्राष्ट्रीय: केन्नेस, बर्लिन, मास्को, कारलोवी वैरी, शिकागो, मान्ट्रियल, वेल्लाडोलिड, कार्थेज तथा दिल्ली में कई छोटे-बड़े पुरस्कार।

अन्य पुरस्कार: नेहरू सोवियत भूमि पुरस्कार, पदम भूषण, डी. लिट (ऑनरिस काजा) (बर्दवान विश्वविद्यालय) कोमान्डयोर डे ला ओर्डे डेस आर्ट्स एट डेस लेटर्स (फ्रांस) समस्त विश्व में आयोजित अनेक अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों में अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्म निर्णायक मण्डलों के सदस्य रहे।

वे भारतीय फ़िल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे के अध्यक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्म सोसायटी महासंघ (लंदन) के प्रधान तथा सिनेमा एट लिबरेट (पेरिस) के उपाध्यक्ष रहे।

MRINAL SEN: ''Born: May 14, 1923. ''Initially had no special love for cinema. Was not even a habitual film goer. Entry into cinema was accidental. Had an uncomfortable jolt with the first film(1956). The first writings on Cinema, however, date further back. Used to write regularly, generally, critically on the aesthetics of Cinema. Became a regular film-maker, created controversies; viewed fearlessly and candidly. A passion for experimenting with the language of Cinema. Even now I believe in creating controversies because, only through controversies truth can attain a certain 'quality'.

''Awards: National : President's Gold Lotus for best National Film, four times so far. President's Gold & Silver Lotus for Best Direction four times.

''Silver Lotus for topping in other categories.

''Awards: International : Several awards, major and minor, from Cannes, Berlin, Moscow, Karlovy Vary, Chicago, Montreal, Valladolid, Carthage and Delhi. Other awards : Nehru Soviet Land Award, Padma Bhushan, D. Litt (*Honoris Causa*) (Burdwan University) *Commandeur de L'orde des Arts et des Letters* (France)

''Served on the International Juries at several International Film Festivals all over the world.

''Was Chairman of the Governing Council of FTII, Pune, President of the International Federation of Film Societies (London), and Vice President, Cinema et Liberate (Paris)''

सर्वोत्तम गुजराती कथाचित्र पुरस्कार

मानवीनी भवाई

निर्माता : **आशीष त्रिवेदी** तथा **उपेन्द्र त्रिवेदी** को रजत कमल तथा 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **उपेन्द्र त्रिवेदी** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गुजराती कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार **मानवीनी भवाई** को मुख्यपात्र के दृष्टिकोण के जरिए सूखाग्रस्त ग्रामवासियों के जीवन को प्रदर्शित करने के लिए दिया गया है।

BEST FEATURE FILM IN GUJARATI

MANVINI BHAVAI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producers: **AASHISH TRIVEDI** and **UPENDRA TRIVEDI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **UPENDRA TRIVEDI**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Gujarati of 1993 is given to **MANVINI BHAVAI** for depicting the drought-torn lives of villagers through the eyes of the protagonist.

आशीष त्रिवेदी सिनेमा के लिए एक समर्पित निर्माता हैं। यद्यपि कामर्स स्नातक हैं, परन्तु वे पन्ना लाल पटेल द्वारा लिखित और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित उपन्यास "मानवीनी भवाई" जैसे कलात्मक और सौंदर्यपरक विषयों को चुनते हैं। 1964 में जन्मे आशीष त्रिवेदी एक प्रसिद्ध ड्रामा निर्माता बने। "अभिनव सम्राट" "युद्ध" "अजात शत्रु" और "अफलातून" जैसी उनकी थियेटर-कृतियों ने नियमित रूप से थियेटर जाने वाले दर्शकों पर गहरा प्रभाव छोड़ा है।

AASHISH TRIVEDI is a producer committed to cinema. Though a commerce graduate, he selects subjects of artistic and aesthetic values like "Manvini Bhavai", a Gyanpeeth award-winning novel by the late Pannalal Patel.

Born on 1964, Aashish Trivedi, became a noted drama producer. His theatre productions like "Abhinayasamrat", "Yuddha", "Ajatshatru" and "Aflatun" have created an impact on the regular theatre-going audiences.

उपेन्द्र त्रिवेदी : लाहौर में 1937 में जन्मे उपेन्द्र त्रिवेदी गुजराती पर्दे तथा थियेटर के जीवित "आख्यान" हैं। उन्होंने नायक के रूप में 100 से भी अधिक फ़िल्मों में अभिनय किया है और लगभग 50 नाटकों में मंच अभिनय किया है। गुजरात सरकार ने उन्हें दस बार सर्वोत्तम अभिनेता का पुरस्कार दिया है और उन्हें प्रतिष्ठित सम्मान-पंडित ओंकारनाथ पुरस्कार से अलंकृत किया है। "जेर तो पिधान जानी जानी" फ़िल्म के लिए उन्हें सर्वोत्तम निर्देशक और सर्वोत्तम पटकथा लेख का पुरस्कार मिला।

उपेन्द्र त्रिवेदी गुजरात फ़िल्म विकास निगम के अध्यक्ष थे। अब वे पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर की वित्त समिति के अध्यक्ष हैं। वे दो बार एम.एल.ए. भी रह चुके हैं। आजकल वे गुजरात सरकार में पंचायत, युवा सेवाएं और सांस्कृतिक कार्यक्रम राज्य मंत्री हैं।

भारत सरकार ने 1989 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया है।

UPENDRA TRIVEDI : Born in 1937 at Indore, is a living "legend" of Gujarati screen and theatre. He has acted in more than 100 films as the hero and has staged about 50 plays. The Government of Gujarat has hailed him ten times over as the best actor and bestowed upon him the most prestigious honour: the Pandit Omkarnath Thakur Award. For the film "Zer the Pidhan Jani Jani" he has been awarded the best director and screenplay writer awards.

Upendra Trivedi was the Chairman of the Gujarat Film Development Corporation. Now he is Chairman of the Finance Committee of the West Zone Cultural Centre, Udaipur. He has also served as MLA for two terms. At present he is the Minister of State for Panchayat, Youth Services and Cultural Activities in the Government of Gujarat.

The Government of India bestowed on him the Padma Shri in 1989.

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र पुरस्कार

पतंग

निर्माता : **संजय सहाय** तथा **दुर्बा सहाय** को रजत कमल तथा 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **गौतम घोष** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार **पतंग** को प्यार और विश्वासघात तथा नैतिक भ्रष्टाचार के उन विभिन्न आयामों का नियंत्रित तथा प्रतीकात्मक चित्रण करने के लिए दिया गया है, जो सीधे-सादे लोगों के जीवन को अभिभूत करते हैं।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN HINDI

PATANG

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **SANJAY SAHAY** and **DURBA SAHAY**

Rajat Kamal and a cash prize of rs. 10,000 to the Director: **GOUTAM GHOSE**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Hindi of 1993 is given to **PATANG** for a restrained and symbolic portrayal of love and betrayal and of the various layers of moral corruption, which overpower the lives of innocents.

संजय सहाय तथा दुर्बा सहाय : यद्यपि संजय सहाय पूर्व निर्मित कंक्रीट स्लैबों के निर्माण में लगे हुए एक उद्योगपति हैं, फिर भी वे पटना और अन्य स्थानों पर थियेटर तथा सिनेमा की उन्नति के लिए लगे रहे हैं। उन्होंने अंग्रेजी तथा हिंदी में कविताएं लिखी हैं। उन्होंने "पतंग" के संवाद लिखे। उनका विवाह दुर्बा से हुआ, जो एक प्रसिद्ध अभिनेत्री और "पतंग" की सह निर्माता हैं।

SANJAY SAHAY and DURBA SAHAY : Though an industrialist engaged in the manufacture of pre-stressed concrete slabs, Sanjay Sahay has been engaged in promoting theatre and cinema in Patna and elsewhere. He has written poems in Hindi and English. He wrote the dialogues of "Patang". He is married to Durba, an actress of repute and co-producer of "Patang".

दुर्बा सहाय : गया कालेज की स्नातक, वे एक सृजनात्मक लेखिका, कवयित्री तथा अभिनेत्री हैं। अच्छे थियेटर तथा अच्छे सिनेमा के उत्थान में रूचि रखती हैं।

DURBA SAHAY : A graduate from Gaya College, she is a creative writer, poet and an actress. Keenly interested in promoting Good Theatre and Good Cinema.

गौतम घोष : इन का जन्म 24 जुलाई, 1950 में और लालन-पालन कलकत्ता में हुआ। कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। थियेटर में सक्रिय रुप में कार्य किया और कुछ समय तक फोटो-पत्रकार के रुप में भी कार्य किया। 1973 से वृत-चित्रों का निर्माण कार्य प्रारम्भ किया। उनकी "न्यू अर्थ" (1973) और हंगरी आटम" (1974) को ओबरहौजन और लाइप्सिग में पुरस्कृत किया गया। दो वर्ष बाद उन्होंने "चेन्ज आफ बान्डेज" का निर्माण किया।

शेष पृष्ठ 83 पर

GOUTAM GHOSE : Born on July 24, 1950. Brought up in Calcutta. Graduated from Calcutta University. Worked actively in the theatre and also for some time as photojournalist. Started making documentaries from 1973. His "New Earth" (1973) and "Hungry Autumn" (1974) have won awards at Oberhausen and Leipzig. Two years later he made "Chains of Bondage."

Continued on Page 83

सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र पुरस्कार

चिन्नरी मुथा

निर्माता : **नागिनी नागभरणा, सरोजा** तथा **नंदकुमार** को रजत कमल तथा 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **टी.एस. नागभरणा** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार **चिन्नरी मुथा** को मानव-जीवन के विस्तृत परिवेश के परिप्रेक्ष्य में बच्चे की विकास-प्रक्रिया का कल्पनात्मक चित्रण प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र पुरस्कार

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN KANNADA

CHINNARI MUTHA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producers: **NAGINI NAGABHARANA, SAROJA** and **NANDAKUMAR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **T.S. NAGABHARANA**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Kannada of 1993 is given to **CHINNARI MUTHA** for an imaginative rendering of a child's growing-up process, in terms of the widening ambience of human life.

नागिनी नागभरणा: कुच्चीपुड़ी तथा भरत नाटयम की विख्यात नर्तकी, अभिनेत्री और वेशभूषा-डिजाइनर, नागिनी का विवाह नागभरणा से हुआ है।

सरोजा : सरोजा मानव प्रेमी तथा सामाजिक कार्यकर्ता हैं जो कि गरीब बच्चों की सहायता करने में बहुत रूची लेती हैं।

नंद कुमार : नंद कुमार का जन्म गांव में एक कृषक परिवार में हुआ। अपनी प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त करने के बाद, उन्होंने भवन-निर्माण का व्यवसाय शुरू किया, जिसके कारण वे बेंगलूर आ गए। तबसे अपने प्रयत्नों और लगातार मिली सफलता के कारण वे कर्नाटक में प्रसिद्ध ठेकेदारों की श्रेणी में आ गए। उन्होंने खनन तथा ग्रेनाइट-संसाधन उद्योग में भी शुरूआत की और उन्हें सफलता मिली।

टी. एस. नागभरणा : बी.वी. कारंथ और गिरीश कर्नाड से फ़िल्म में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद नागभरणा ने फ़िल्मों में अपना व्यावसायिक जीवन "घराना" से शुरु किया जिससे उन्हें (राष्ट्रीय एकीकरण के लिए) राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। "अन्वेषण" से उन्हें कर्नाटक राज्य पुरस्कार मिला। आर.के. नारायण के उपन्यास पर आधारित "बैंकर मार्गेय" को एक और राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उन्हें "संत शुशुमाला शरीफ" तथा "मैसूर मालिगे" के लिए भी राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। नागभरणा आन्ध्रा फ़िल्म संस्थान के प्रिंसिपल हैं तथा वे दो सुप्रसिद्ध ड्रामा दलों से संबंधित है। उनके दूरदर्शन धारावाहिक "तेनाली रामा" से उन्हें सारे भारत में प्रसिद्धि मिली।

NAGINI NAGABHARANA : An accomplished dancer in Kuchipudi and Bharata Natyam, an actress and a costume designer, Nagini is married to Nagabharana.

SAROJA : Saroja is a philanthropist and a social worker, who takes keen interest in helping poor children.

NANDA KUMAR : Nanda Kumar was born in an agriculturist family in a village. After completing his early education, he ventured into construction business, which brought him to Bangalore. He has also ventured into the mining and granite processing industry with success.

T.S. NAGABHARANA : After apprenticeship in film-making under B.V. Karanth and Girish Karnad, Nagabharana embarked on his career with "Grahana," which secured for him a National Award (for National Integration). "Anveshane" got for him a Karnataka State Award. "Banker Margaye", based on a R.K. Narayan novel, earned yet another National Award as also for "Santha Shushumala Sharifa". "Mysore Mallige" was another super-hit. Nagabharana is the Principal of Adarsha Film Institute and is connected with two well-known drama troupes. His TV serial "Tenali Rama" earned for him all-India reputation.

विधेयन

निर्माता : के. रवि को रजत कमल तथा 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : अडूर गोपालाकृष्णन् को रजत कमल तथा 1; रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार **विधेयन** को दिया गया है जिसमें उन दो चरित्रों के मनोवैज्ञानिक विकास का गहन संचालन और सूक्ष्य चित्रण किया गया है जो आतंक का शक्ति में परिवर्तन और अस्तित्ववादी बाहरी शक्ति के जीवन पर अपने नियंत्रण का प्रतिनिधित्व करते हैं।

सर्वोत्तम मणिपुरी कथाचित्र पुरस्कार

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN MALAYALAM

VIDHEYAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **K. RAVI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **ADOOR GOPALAKRISHNAN**

Citation
The Award for the Best Feature Film in Malayalam of 1993 is given to **VIDHEYAN** for its in-depth handling and complex delineation of the psychological evolution of two characters, representative of the transformation of terror into power and its hold over the life of the existentialist outsider.

के. रवि : रवि के नाम से प्रसिद्ध के रविन्द्रनाथन नायर केरल के फ़िल्म निर्माताओं को अपना लगातार समर्थन देने के कारण केरल में नए सिनेमा के संचालन की प्रमुख हस्तियों में से एक हैं। वे बड़े भारतीय काजू निर्माता-निर्यातकों में से भी एक हैं। दिसम्बर, 1932 में जन्मे रवि ने विदेश में व्यापक भ्रमण किया है।

रवि ने मलयालम की 14 फ़िल्मों का निर्माण किया है। इन में से पांच फ़िल्में स्वर्गीय अरविंदन की, एक फ़िल्म एम. टी. वासुदेवन नायर की और चार फ़िल्में (इलिप्पतयम, मुख अमुखम, अनन्तरम् और विधेयन) अडूर गोपालाकृष्णन की हैं। वे बड़े भारतीय काजू निर्माता-निर्यातकों में से भी एक हैं।

K. RAVI : K. Ravindranathan Nair, Popularly known as Ravi, has been one of the prime forces behind the New Cinema in Kerala. He is also one of India's largest manufacturer-exporters of cashewnuts.

Ravi has produced fourteen films in Malayalam. They include five of the G. Aravindan, one of M.T. Vasudevan Nair and four of Adoor Gopalakrishana films.

अडूर गोपालाकृष्णन् : इनका जन्म 3 जुलाई, 1941 को केरल के अडूर गांव में कथकली को समर्पित परिवार में हुआ। स्नातक की डिग्री प्राप्त करने तक उन्होंने अनेक नाटकों का निर्माण कर लिया था, जिनमें आधा दर्जन नाटक स्वयं उन्होंने लिखे थे।

उन्होंने फ़िल्म तथा दूरदर्शन संस्थान, पुणे में प्रवेश लिया और 1965 में निर्देशन और पटकथा लेखन में डिप्लोमा प्राप्त किया। वे त्रिवेन्द्रम में अपनी चित्रलेखा फ़िल्म सोसायटी से केरल में फ़िल्म सोसायटी आन्दोलन के प्रवर्तक बने। उन्होंने एक स्टूडियो के साथ फ़िल्म को-आपरेटिव का संचालन भी किया। उन्होंने छः कथाचित्रों तथा दो दर्जन से भी अधिक वृत-चित्रों का निर्देशन किया। उन्हें सर्वोत्तम निर्देशन के लिए पाँच बार राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ब्रिटिश फ़िल्म संस्थान ने उन्हें उनकी ''एलिप्पत्थम्'' (रैट ट्रैप) के लिए अपना प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किया। नई दिल्ली, कार्लोवी वैरी और वीनिस में ''मुखअमुखम्'' (फेस टू फेस) ''अनन्तरम'' (मोनोलोग) और ''मदिलुकल'' (वाल्स) के लिए उन्हें फिपेस्की पुरस्कार प्राप्त हुए। सिनेमा पर लिखित उनकी मलयालम पुस्तक को भी राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उन्हें पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया।

अडूर गोपालाकृष्णन् के प्रथम कथाचित्र, ''स्वयंवरम्'' (चन्स ओन च्वाइस) को अनेक राष्ट्र और राज्य सरकारों के पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इसे प्रमुख फ़िल्म समारोहों में प्रदर्शित किया गया। उनकी अगली फ़िल्म ''कोडियात्तम्'' को अनेक पुरस्कार और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति मिली। उनकी फ़िल्मों के प्रदर्शनों का आयोजन पेसारो, हेल्सिन्की और ला रोचेल्ले में भी किया गया।

ADOOR GOPALAKRISHNAN : Born on July 3, 1941, at Adoor village, in Kerala in a family devoted to Kathakali. By the time he graduated, he had produced a score of plays, authoring half a dozen of them.

Joined the Film and Television Institute, Pune and got his Diploma in Direction and Scriptwriting in 1965. He pioneered the film society movement in Kerala with his Chitralekha Film Society at Trivandrum. He also started a film cooperative with a studio. He has directed six feature films and over two dozen documentaries.

Five times he has won the National Award for Best Direction. The British Film Institute gave its prestigious award for his ''Elippathyam'' (Rat Tap). The FIPRESCI prizes went to him for his ''Mukhamukham'' (Face to Face), ''Anantaram'' (Monologue) and ''Mathilukal'' (Walls) at New Delhi, Karlovy Vary and Venice. His Malayalam book on he Cinema has also won the National Award. He has been honoured with a ''Padmashri.''

Adoor Gopalakrishnan's debut feature ''Swayamvaram'' (One's Own Choice) won several national and state awards. It has made rounds of leading films festivals. ''Kodiyattam'' his next film, earned for him several awards and international recognition. Retrospectives of his films have been organised at Pesaro, Helsinki and La Rochelle.

पृष्ठ 77 का शेषांश

[गौत्तम घोष]

1979 में उन्होंने तेलंगाना में नक्सलवाद आंदोलन पर तेलुगु फ़िल्म "मा भूमि" (अवर लैंड) से कथाचित्रों का निर्माण कार्य प्रारम्भ किया, जिसे अगले वर्ष सर्वोत्तम तेलुगु फ़िल्म का पुरस्कार मिला। तब से आदिवासी लोगों का शोषण करने के बारे में निर्मित "धाकल" (द आकुपेशन) तक फ़िल्मों के निर्माण कार्य में नियमित प्रगति बनी रही है। इसे भारत में राष्ट्रपति का स्वर्ण कमल और स्ट्रासबुर्ग से मानव अधिकार पुरस्कार मिला तथा साथ ही केन्नेस समारोह में प्रवेश मिला।

घोष की "पार" से इसके "नायक" नसीरुद्दीन शाह को वीनिस में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति मिली, जहां उसे "सर्वोत्तम" अभिनेता पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। इस फ़िल्म को यूनेस्को एकता पुरस्कार दिया गया।

"अन्तरजलि यात्रा" (द वोएज बेयांड) को ताशकंत में ग्रेन प्रिक्स तथा सर्वोत्तम बंगला फ़िल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

घोष की अगली फ़िल्म "पदमा नदीर माझी" पश्चिम बंगाल सरकार तथा बंगलादेश के फाइनेन्सर द्वारा सह निर्मित फ़िल्म में उनको 1993 में राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में सर्वोत्तम निर्देशक तथा सर्वोत्तम कथाचित्र के पुरस्कार और केन्नस में यूनेस्को पुरस्कार मिले। इसके अतिरिक्त उन्हें फिप्रेसी और रेडक्रास पुरस्कार मिले और यू.एन. सर्टेन रिगार्ड की मान्यता मिली।

उनकी फ़िल्मों का महत्वपूर्ण पहलू यह है कि वे एक छायाकार भी है।

Continued from page 77

[GOUTAM GHOSE]

In 1979 he broke into feature films with the Telugu film "Maa Bhoomi" (Our Land) on the Naxalite movement in Telengana, which won the award at the Best Telugu film the next year. Since then, there has been a steady progress with "Dhakal" (The Occupation) about the exploitation of tribal people. It earned for him President's Golden Lotus in India and the Human Rights Award from Strassbourg and an entry into Cannes.

Ghose's "Paar" pushed its "hero" Naseeruddin Shah into international limelight at Venice, where he won the "Best Actor's Prize". The UNESCO Solidarity Award was awarded to this film.

"Antarjali Yatra" (The Voyage Beyond) got the Grand Prix at Tashkent and the National Award for Best Bengali Film.

Ghose's next film, a co-production between West Bengal Government and a Bangladesh financier. "Padma Nadir Majhi", earned for him the Best Director and Best Feature Film Awards at the NFF in 1993 and the UNESCO Award at Cannes. Besides he has won the FIPRESI and Red Cross Awards and Un Certain Regard recognition.

A remarkable aspect of his films is that he is the cinematographer as well.

सर्वोत्तम मणिपुरी कथाचित्र पुरस्कार

संबल वांगमा

निर्माता : **फ. शोबिता देवी** को रजत कमल तथा 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **के. इबोल शर्मा** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मणिपुरी कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार **संबल वांगमा** को मानव व्यक्तित्व के विकास के लिए मानव के साथ प्रकृति का सामंजस्य स्थापित करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN MANIPURI

SAMBAL WANGMA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: PH. SOBITA DEVI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: K. IBOHAL SHARMA

Citation

The Award for the Best Feature Film in Manipuri of 1993 is given to SAMBAL WANGMA, which correlates the integration of Man with Nature for the development of the human personality.

फ. शोबिता देवी : ''संबल वांगमा'' की निर्माता का जन्म 1963 में इम्फाल में हुआ था। वे नागपुर विश्वविद्यालय की स्नातक हैं। यद्यपि, वे फ़िल्म-निर्माण की कला में अपेक्षाकृत नई हैं, उन्होंने प्रथम प्रयास में ही अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है। उनकी अन्य रुचियों में मणिपुर थियेटर, शास्त्रीय नृत्य, ड्रामा और फोटोग्राफी शामिल हैं। एक विद्यार्थी के रूप में उन्होंने लघु उपन्यास और एकांकी लिखे हैं।

PH. SOBITA DEVI, producer of ''Sambal Wongma'' was born in 1963 at Imphal, She is a graduate of Manipur University. Though a relatively new entrant in the art of film-making, she has shown her versatality with her very maiden venture. Her other interests include the Manipur theatre, classical dance, drama and photography. As a student, she had written short one-act plays.

के. इबोल शर्मा : के. इबोल शर्मा मणिपुर में सिनेमा के प्रवर्तक हैं। छायाकर के रुप में अपना कार्य प्रारम्भ करने के साथ-साथ, सांस्कृतिक झुकाव होने के कारण, उन्होंने मईबिस जैसे अपने लोगों के जीवन पर लेख लिखे। उन्होंने अमुदन, अमुबी और अहुम जैसे स्थानीय गुरुओं पर मणिपुर राज्य कला अकादमी के लिए कई फ़िल्मों का निर्माण किया।

इबोल शर्मा ने ''इमेजी निन्गथेम'' का निर्माण किया। इस फ़िल्म के लिए उन्हें मणिपुर सरकार से मेडल तथा नकद पुरस्कार मिले। साथ ही फ़िल्म को मणिपुरी में सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह से भी नकद पुरस्कार मिला। मणिपुरी वासियों के रहन-सहन के ढंग का एक सूक्ष्म मानवीय प्रलेख होने के नाते ''इमेगी निन्गथेम'' को नेन्टेस (फ्रेंस) में ग्रेन प्रिक्स पुरस्कार प्राप्त हुआ। फ़िल्म के बाल कलाकार को भी राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। शर्मा ने लाकार्नो, हांगकांग, मान्ट्रियल, न्यूयार्क, डेनवेर और टोरोन्टो में आयोजित फ़िल्म समारोहों में भाग लिया और उनकी फ़िल्म को इन समारोहों में प्रदर्शित किया गया।

K. IBOHAL SHARMA : K. Ibohal Sharma is a pioneer of cinema in Manipur starting as a cinematographer, with a cultural bent of mind, he documented the life of his people like Maibis. He made a series of films for the Manipur State Kala Akademi on the local Gurus: Amudon, Amubi and Ahum.

Ibohal Sharma produced ''Imagi Ningthem'' and it earned for him medals and cash awards from Manipur, as also from the National Film Festival for the Best Feature Film in Manipuri. ''Imagi Ningthem'' being an intense human document of the life-style of Manipuris, won the Grand Prix at Nantes (France). The child artiste in the film also secured a national award. Sharma and his film have participated in Festivals at Locarno, Hongkong, Montreal, New York, Denver and Toronto.

सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र पुरस्कार

लपन्डाव

निर्माता : **सचिन पारेकर** तथा **संजय पारेकर** को रजत कमल तथा 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **श्रबोनी देवधर** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार निर्देशक के प्रथम प्रयास **लपन्डाव** को भ्रमजनित कामेडी के सफल चित्रण, पीढ़ी-अंतर को मिटाने तथा आज के युवक का कैम्पस और घर में पप्पी प्रेम के सुंदर चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN MARATHI

LAPANDAV

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the producers: **SACHIN PAREKAR** and **SANJAY PAREKAR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **SHRABONI DEODHAR**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Marathi of 1993 is given to **LAPANDAV** for its clever portrayal of a comedy of errors, cutting across the generation gap and for its charming depiction of puppy-love, extending from the campus to the homes of today's youth, in a refreshing directorial debut.

सचिन पारेकर : सचिन पारेकर ने संजय पारेकर के साथ "तिय्या", "शेजारी-शेजारी" और "लपन्डाव" के सह निर्माता थे जिन्हें सर्वोत्तम मराठी फ़िल्म के लिए इस वर्ष के राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह पुरस्कार सहित कई फ़िल्मों में संयुक्त पुरस्कार मिला। फ़िल्मों में आने से पूर्व सचिन ने थियेटर का अनुभव प्राप्त किया था।

SACHIN PAREKAR : Sachin Parekar has coproduced "Tiyya", "Shejari, Shejari" and "Lapandav" with Sanjay Parekar and has shared the honours, including this year's NFF State Award. Sachin has had theatrical background before he ventured into films.

संजय पारेकर : संजय पारेकर ने प्रख्यात "तिय्या" पर पी.एल. देशपांडे के तीन इंकाकियों पर आधारित एक वीडियो कार्यक्रम का सह निर्माण सचिन पारेकर के साथ मिलकर किया। उन्होंने 1991 में अपने प्रथम मराठी कथाचित्र "शेजारी-शेजारी" का संयुक्त रूप में निर्माण किया। इस फ़िल्म को महाराष्ट्र राज्य के दो पुरस्कार मिले। इन दोनों का निर्देशन दिलीप कोल्हाटकर ने किया था। उनकी दूसरी फ़िल्म "लपन्डाव" है जिसके लेखक मंगेश कुलकर्णी तथा निर्देशिका श्रबोनी देवधर हैं - जो इस वर्ष की सर्वोत्तम मराठी फ़िल्म है।

SANJAY PAREKAR : Sanjay Parekar co-produced with Sachin Parekar a video programme based on three short plays of the celebrated P.L. Deshpande, entitled "Tiyya". They jointly produced their first Marathi feature film "Shejari, Shejari" in 1991. It won two Maharashtra State Awards. These two were directed by Dilip Kolhatkar. Their second venture has been "Lapandav" with Mangesh Kulkarni as the writer and Shraboni Deodhar as the Director, this year's Best Marathi Film.

श्रबोनी देवधर : "श्रबोनी देवधर" ने सर्वप्रथम फ़िल्म तथा टेलीविज़न संस्थान, पुणे से फ़िल्म संबंधी पाठ्यक्रम पूरा किया और इसके पश्चात् लघुचित्रों, कथाचित्रों तथा टेलीविजन धारावाहिकों के निर्माण में अमोल पालेकर, नाना पाटेकर और देबु देवधर जैसी महाराष्ट्र की जानी मानी फ़िल्म हस्तियों के साथ सहायक निर्देशिका के रूप में कार्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने निर्देशिका के रूप में अपना प्रथम प्रयास पुरस्कार प्राप्त फ़िल्म "लपन्डाव" में किया जो लोगों में बहुत लोकप्रिय हुई।

SHRABONI DEODHAR : Shraboni Deodhar first attended the Film Appreciation Course of FTII, Pune and then apprenticed herself as an Assistant Director under well-known film personalities of Maharashtra like Amol Palekar, Nana Patekar and Debu Deodhar in the production of shorts, features and television serials. She has made her directorial debut in the award-winning "Lapandav", which has become popular with the masses as well.

सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र पुरस्कार

अरण्य रोदन

निर्माता : **प्रसन प्रुस्ती** को रजत कमल तथा 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **बिप्लब रे चौधरी** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार **अरण्य रोदन** को एक अनाथ बच्चे की आँखों से देखते हुए जनजातीय जीवन की जटिलताओं को समझने की एक शहरी पत्रकार की खोज के अतिसंवेदनशील फ़िल्म-चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN ORIYA

ARANYA RODANA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **PRASAN PRUSTI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **BIPLAB RAY CHAUDHURI**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Oriya of 1993 is given to **ARANYA RODANA** for its very sensitive and cinematic handling of an urban journalist's quest to understand the complexities of tribal life, seen through the eyes of an orphaned boy.

प्रसन प्रुस्ती : ''अरण्य रोदन'' (क्राई इन द विल्डरनेस) के निर्माता प्रसन प्रुस्ती का जन्म 1957 में हुआ। भुवनेश्वर के एक युवा व्यापारी ने ''अरण्य रोदन'' को एक ''ईमानदार'' फ़िल्म बनाने का प्रयास किया है। ऐसे बहुत कम लोग हैं जो ''समानान्तर सिनेमा'' पर अपना धन लगाना चाहते हों, परन्तु प्रसन्न पुस्ती ऐसी फ़िल्मों पर धन लागने वालों में से एक हैं। एक अच्छे सिनेमा-प्रेमी होने के नाते, उन्होंने एक दिन एक अच्छी फ़िल्म बनाने का स्वप्न देखा था जिसमें उन्हें सफलता मिली। उनके लिए एक पुरस्कार मात्र प्रोत्साहन का प्रतीक है।

PRASAN PRUSTI : Producer of ''Aranya Rodana'' (Cry in the Wilderness'') was born in 1957. A young businessman of Bhubaneswar, he has attempted to make an ''honest'' film in ''Aranya Rodana''. There are very few persons who stake their money on ''Parallel Cinema'', but Prasan Prusti is one of them. A lover of good cinema, he had a dream of making a good film some day and he has now succeeded. For him, the award is a sign of encouragement.

बिप्लब रे चौधरी : एक अनुभवी व्यक्ति, जो पिछले 30 वर्षों से फ़िल्म उद्योग में हैं। उन्होंने 50 से भी अधिक फ़िल्मों का सम्पादन किया, हालांकि उनमें उनकी अपनी फ़िल्में भी शामिल हैं और पुरस्कार प्राप्त फ़िल्में, कथाचित्र तथा गैर कथाचित्र हैं जिनका उन्होंने निर्माण तथा निर्देशन किया था। 1980 में, ''शोध'' के लिए उन्हें स्वर्ण कमल मिला तथा समीक्षकों की प्रशंसा मिली। ''स्पन्दन'' को सर्वोत्तम सामाजिक कल्याण फ़िल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। ''महापृथ्वी'' (बंगला) का निर्माण पश्चिम बंगाल सरकार के लिए किया गया। ''आश्रय'' (हिंदी) और ''चिल्का तीरे'' को अत्यधिक सफलता मिली और इनके लिए उन्हें कई पुरस्कार मिले। फ़िल्म प्रभाग के लिए बनाए गए उनके वृत्त-चित्रों को भी भारत तथा विदेश में पसंद किया गया। लगभग एक दर्जन संगठनों, निर्णायक मण्डलों तथा समितियों आदि से जुड़े होने के नाते, उन्होंने समग्र रूप में फ़िल्म उद्योग की सेवा की।

BIPLAB RAY CHAUDHURI : A veteran, who has been in the industry for 30 years, he has edited over 50 films, of course including his own and winning awards for the films, feature and non-feature that he has produced and directed. In 1980, his ''Shodh'' earned for him the Golden Lotus and critical acclaim. ''Spandan'' won a national award for the Best Social Welfare Film. ''Mahaprithivi'' (Bengali) made for the West Bengal Government, ''Ashray'' (Hindi) and ''Chilka Teeray'' have been received well and they have added more awards to him. His documentaries made for the Films Division have also been recognised in India and abroad. Through his association with about a dozen organisations, juries, committees, etc. he has rendered service to the film industry as a whole.

सर्वोत्तम पंजाबी कथाचित्र पुरस्कार

कचहरी

निर्माता : **विजय टण्डन** को रजत कमल तथा 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **रविन्दर पीपट** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पंजाबी कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार **कचहरी** को दिया गया है जिसमें न्यायिक पद्धति की त्रुटियों पर प्रकाश डाला गया है, जिसके अन्तर्गत कभी-कभी न्याय पर औचित्य हावी हो जाता है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN PUNJABI

KACHEHARI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **VIJAY TANDON**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **RAVINDER PEEPAT**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Punjabi of 1993 is given to **KACHEHARI**, which highlights the vulnerability of the judicial system, in which sometimes justification prevails over justice.

विजय टंडन

VIJAY TANDON

रविन्दर पीपट : ''कचहरी'' में निर्देशन के रूप में अपना प्रथम प्रयास करने वाले रविन्दर पीपट छः वर्षों तक राज कपूर के मुख्य सहायक रहे। उन्होंने राज कपूर की जिन फ़िल्मों के लिए उन्हें सहयोग दिया, वे हैं ''सत्यम् शिवम् सुन्दरम्'' और ''प्रेम रोग''। वे राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त पंजाबी फ़िल्मों ''चन्न परदेसी'' और ''लोंग दा लिशकारा'' में सहयोजित थे।

अंग्रेजी में एम.ए. तथा फ़िल्म टेलीविजन संस्थान, पुणे से पटकथा लेखन में डिप्लोमा प्राप्त, रविन्दर पीपट ने ''लावा'' (तारक-डिम्पल कपाड़िया और राज बब्बर) ''वारिस'' (स्मिता पाटिल, अमरीश पुरी और राज बब्बर) ''लाल दुपट्टा मल-मल का'' जैसी हिन्दी फ़िल्मों का निर्देशन किया। उन्होंने ''हम तो चले परदेस'', ''कैद में है बुल बुल'', ''घर आया मेरा परदेसी'' फ़िल्मों का निर्माण तथा निर्देशन किया है।

RAVINDER PEEPAT, who has made his directorial debut with ''Kachehari'' was Raj Kapoor's chief assistant for six years. Among the films he has assisted were : Raj Kapoor's ''Satyam, Shivam, Sundaram'', and Prem Rog.'' He has been associated with national Award winning Punjabi film ''Chann Pardesi'' and ''Long Da Lishkara''.

An MA in English and a Diploma-holder in screenplay writing from FTII Pune, Ravinder Peepat has directed Hindi films like ''Lava'' (starring Dimple Kapadia and Raj Babbar), ''Waris'' (with Smita Patil, Amrish Puri and Raj Babbar), ''Lal Dupatta Malmal Ka''.

The films he has producted and directed are ''Hum to Chale Paradesh'' ''Qaid Mein Hai Bul Bul'' ''Ghar Aaya Mora Pardesi''.

सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र पुरस्कार

महानदी

निर्माता : **एस.ए. राजकन्नु** को रजत कमल तथा 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **शांतना भारती** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार **महानदी** को दिया गया है। इसमें नायक की आकांक्षाओं और कुंठाओं, अपने बच्चों से अलग होने तथा फिर से मिलने का चित्रण विविध चलचित्रीय कौशलों के विस्तृत कैनवस के फैलाव से इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि यह अन्याय के विरूद्ध संघर्ष का महाकाव्य बन गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN TAMIL

MAHANADHI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **S.A. RAJKANNU**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **SANTHANA BHARATHI**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Tamil of 1993 is given to **MAHANADHI** for depicting the aspirations and frustrations of the protagonist, his separation from and reunion with his children, spanning a vast canvas of various cinema skills put together into an epic saga of a struggle against injustice.

एस. ए. राजकन्नु : "महानदी" के निर्माता एस.ए. राज कन्नु का जन्म 1943 में हुआ। उन्होंने 1976 में फ़िल्म-क्षेत्र में प्रवेश किया और अपनी प्रथम फ़िल्म "16 व्यतिनिले" (भारती राजा द्वारा निर्देशित) का निर्माण किया। यह फ़िल्म एक साल चली और इसे तमिलनाडु राज्य पुरस्कार मिला। इस फ़िल्म को एच.एम.वी. द्वारा स्वर्ण डिस्क पुरस्कार भी मिला। इस का निर्देशन भारती राजा द्वारा किया गया था। उनकी अगली फ़िल्म "किड़ाक्के पोगुरेल" थी जिसमें सभी कलाकार नए थे। यह फ़िल्म भी सारे तमिलनाडु में एक साल तक चली। उनकी अन्य सफल फ़िल्में हैं, "कन्निपाडुवातिले", जिसमें भाग्यराज को लिया गया था, "आरतांमल आपिरम्", "वालिबामे वा वा" और कुछेक अन्य फ़िल्में थीं।

बालागुरु द्वारा निर्देशित उनकी फ़िल्म "पू पूता नन्तावनम्" को राज्य सरकार का सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार तथा सर्वोत्तम अभिनेत्री के रुप में सरिता को पुरस्कार मिला।

राजकन्नु दक्षिण भारत फ़िल्म उद्योग में प्रसिद्ध निर्माता हैं जो लगातार नए चेहरों और तकनीशियनों को फ़िल्मों में स्थान दे रहे हैं। उनकी पहली फ़िल्म "16 व्यति निले" की पूरी बाह्य शूटिंग हुई और इसने उद्योग में नई प्रवृत्ति पैदा की।

शांतना भारती : शांतना भारती अभिनेता के रूप में कैमरे के सामने जितना रहना पसंद करते हैं उतना ही वह निर्देशक के रूपमें कैमरे के पीछे रहना चाहते हैं। उन्होंने 15 फ़िल्मों में अभिनय किया है। राजनीति के जानकार, उन्होंने "महानदी" से पूर्व "कदामई कन्निअम कट्टुपाडु", "पूवजी राजा", "कवलुक्कु केटिकरण", "एन्टामिल एन्माक्कल", "चिन्ना माप्पिलै" जैसी प्रसिद्ध फ़िल्मों का निर्देशन किया है।

S.A. RAJKANNU : S.A. Rajkannu, "Mahanadhi's" Producer was born in 1943. He entered the film field in 1976 and produced his first film "16 Vayathinile" (directed by Bharathiraja). This film ran for one year and won the Tamil Nadu State Award. This film also was awarded the Gold Disc by HMV. This was directed by Bharathirajaa. His next film "Kizakke Pogum Rail" with all new faces also ran for a year in all over Tamil Nadu. His other block-busters are "Kannipparuvathile", which introduced Bhagyaraj, "Arthangal Aayiram" "Vaalibame Vaa Vaa" apart from other films.

His film "Poo Pootha Nanthavanam" directed by Balaguru won the State Awards as the Best Film and for Saritha as the Best Actress.

Rajkannu is a well-known producer in the Southern film industry constently introducing new faces and technicians. His fist film "16 Vayathinile" was shot entirely outdoors and this created a new trend in the industry.

SANTANA BHARATHI : Santana Bharathi loves to be as much before the camera as an actor as behind it as the director. He has acted in as many as 15 films. Politically aware, he has directed popular films like "Kadamai Kanniam Kattupadu", "Poovizi Raja" "Kavalukku Kettikaran" "Entamil Enmakkal" "Chinna Mappilai" before "Mahanadhi".

सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र पुरस्कार

मिस्टर पेल्लम

निर्माता : **गवारा पार्थ सारथी** को रजत कमल तथा 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **बापू** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार **मिस्टर पेल्लम** को, पुरुष अहम्, महिला अहम् से श्रेष्ठ है, की इस मिथक को व्यंग्यात्मक खोज द्वारा प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN TELUGU

MISTER PELLAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **GAVARA PARTHA SARADHI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **BAPU**

Citation:

The Award for the Best Feature Film in Telugu of 1993 is given to **MISTER PELLAM** for its satirical exploration of the myth of the male ego, being superior to that of the female.

गवारा पार्थ सारथी : "मिस्टर पेल्लम" के निर्माता गवारा पार्थ सारथी कामर्स में स्नातकोत्तर हैं, जिन्होंने इस फ़िल्म से अपना प्रथम प्रयास किया। इन्हें स्वर्ण नंदी तथा आन्ध्र प्रदेश सरकार से पांच अन्य पुरस्कारों के अलावा अब राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला। वे एक अन्य कथाचित्र का निर्माण करने की योजना बना रहे हैं।

GAWARA PARTHA SARADHI : The Producer of "Mister Pellam", Gwara Partha Saradhi is a Master of Commerce, who made his debut with this film. It has already earned for him the Golden Nandi and five other awards from the Andhra Pradesh Government and a National Award now. He is planning yet another feature film.

बापू : यह दक्षिणी भारतीय "बापू" एक सुप्रसिद्ध ग्राफिक कलाकार हैं जो दक्षिण भारत में विज्ञापन एजेंसियों में कार्टूनिस्ट, चित्रकार और कला निर्देशक रहे हैं।

बापू ने निर्देशक के रुप में 42 कथाचित्रों का निर्माण किया जिनमें से 9 हिंदी कथाचित्र हैं। "बालराजू कथा" को आन्ध्र प्रदेश सरकार का पुरस्कार मिला। उनकी "सम्पूर्ण रामायण" को उनके समकक्ष व्यक्तियों, दक्षिण भारतीय फ़िल्म निर्देशक संघ द्वारा सर्वोत्तम निर्देशक का पुरस्कार मिला। "भक्त कन्नप्पा" को पुन: रिकार्डिंग का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। "सीता कल्याणम्" को बर्लिन से शिकागो तक और लंदन से डेन्वेर तक दिखाया गया जिसके लिए उन्हें फ़िल्म फेयर पुरस्कार मिला। "पेल्ली पुस्तकम्" और "मिस्टर पेल्लम" को आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा "सर्वोत्तम" पुरस्कार दिए गए। उन्हें आन्ध्र प्रदेश अकादमी तथा अन्य संस्थानों द्वारा अस्थान विद्वान तथा आनेरेरी डाक्टर की उपाधियों से भी सम्मानित किया गया।

BAPU : This South Indian "Bapu" is a well-known graphic artist, who has been a cartoonist, illustrator and art director in advertising agencies in South India.

Bapu has 42 feature films to his credit as a Director, with nine of them being in Hindi. "Balaraju Katha" got an Andhra Pradesh Government Award. His "Sampoorna Ramayanam" got the Best Director Award from his peers, the South Indian Film Director's Association. "Bhakta Kanappa" earned a National Award for Re-Recording. "Sita Kalyanam" has fetched for him a Filmfare Award. "Pelli Pusthakam" and "Mister Pellam" were honoured by the Andhra Pradesh Government with "Best" awards. He has also been honoured as an Asthana Vidwan and with an Honorary Doctorate by the Andhra Pradesh Academy and other institutions.

सर्वोत्तम उर्दू कथाचित्र पुरस्कार

मुहाफ़िज़

निर्माता : **वहीद चौहान** को रजत कमल तथा 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **इस्माईल मर्चेन्ट** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम उर्दू कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार विस्मयकारी फ़िल्म **मुहफ़िज** को दिया गया है। इसमें फ़िल्म संबंधी विभिन्न कलाओं, शिल्पों एवं तकनीकी कौशलों का एक मत प्राय: संस्कृति के स्थायी चित्रों का एकीकृत अनुभव के रूप में संयोजन हुआ है। एतद् द्वारा जीवन का मानवतावादी स्वरूप दर्शाया गया है जो कि लिप्सु व्यापारिकता से आक्रांत है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN URDU

MUHAFIZ

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **WAHID CHOWHAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **ISMAIL MERCHANT**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Urdu of 1993 is given to **MUHAFIZ** a breath-taking film, uniting the various film arts, crafts and technical skills into an integrated experience, with lasting images of a dying culture, in which a humanistic vision of life is being undermined by encroachment from acquisitive commercialism.

वहीद चौहान : मर्चेन्ट आइवरी प्रॉडक्शन्स के लिए "इन कस्टडी" वहीन चौहान की चौथी परियोजना है। वे इस्माईल मर्चेन्ट के निर्देशन में बनी उनकी पहली फ़िल्म "द कोर्टेसन्स आफ बम्बे" के सह निर्माता है और उन्होंने "द प्रफेक्ट मरडर" और "द स्ट्रीट म्युजीशियन्स" का निर्माण किया है। वे भवन-निर्माण व्यापार में लगे हुए हैं।

इस्माईल मर्चेन्ट : बम्बई में जन्मे इस्माईल मर्चेन्ट ने अपना अधिकांश जीवन पश्चिम में बिताया है। उन्होंने न्यूयार्क विश्वविद्यालय से व्यापार-प्रशासन में एम.ए. किया है। मर्चेन्ट की पहली फ़िल्म "द क्रिएशन आफ विमेन" थी जिसे 1961 में अकादमी पुरस्कार के लिए नामित किया गया और उसी वर्ष केन्नेस में आयोजित फ़िल्म समारोह में उसे सरकारी तौर पर प्रवेश मिला। समारोह में भाग लेने के लिए जाते समय रास्ते में मर्चेन्ट की जेम्स आइवरी से मुलाकात हुई जो अन्तर्राष्ट्रीय बाजार के लिए अंग्रेजी भाषा में थियेटर संबंधी फ़िल्में/कथाचित्र बनाने हेतु उनसे साझेदारी करने के लिए सहमत हो गए। "हाऊस होल्डर" ऐसा पहला कथाचित्र था जिसके बाद "शैक्सपीयर वाला", "द गुरु" और "बाम्बे टाक्री" नाम की तीन और भारतीय फ़िल्में बनीं।

तीस वर्षों से भी अधिक समय तक, मर्चेन्ट आइवरी प्रॉडक्शन्स ने एक सर्वाधिक निर्माण करने वाली कम्पनी के रूप में सिनेमा को पुष्ट किया है जिसने "आटो बायोग्राफी आफ ए प्रिन्सेस", "द वाइल्ड पार्टी", "सेवेज़िज", "रोजलैण्ड", "द यूरोपियन्स", "क्वार्टेट", "द बोसटानियन्स", "हीट एन्ड डस्ट", "ए रुम विद ए व्यू", "मौरिस", "द डिसीवर्स", "मिस्टर एण्ड मिसेज ब्रिज", "हावर्ड्स एन्ड", और हाल ही में "द रिमेन्स आफ द डे" जैसी फ़िल्मों का निर्माण किया है।

WAHID CHOWHAN : "In Custody" is Wahid Chowhan's fourth project for Merchant Ivory Productions. He was the Associate Producer on Ismail Merchant's directorial debut "The Courtesans of Bombay" and produced "The Perfect Murder" and "The Street Musicians". He is in the building constrection business.

ISMAIL MERCHANT: Born in Bombay, Ismail Merchant has lived for most of his life in the West. He has an M.A. in Business Administration from New York University. Merchant's first film was a theatrical short "The Creation of Woman" nominated in 1961 for an Academy Award and was an official entry in the Cannes Film Festival that same year. While en route to the festival, Merchant met James Ivory, who agreed to form a partnership to make English language theatrical/ features for the international market. "The Householder" was the first feature followed by three more Indian features; "Shakespearewallah" "The Guru" and "Bombay Talkie".

For more than thirty years, Merchant-Ivory Production has endured as one of the most productive collaborations in cinema, bringing forth such films as "Autobiography of a Princess", "The Wild Party", "Savages", "Roseland", "The Europeans," "Quartet" "The Bostonians" "Heat and Dust", "A Room with a View" "Maurice", "The Deceivers", "Mr and Mrs Bridge", "Howard's End" and "The Remains of the Day."

सर्वोत्तम कोडवा कथाचित्र पुरस्कार

(संविधान की आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भाषाओं के अलावा अन्य भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र)

मंदरा पू

निर्माता : **बी.एन. रवि शंकर** को रजत कमल तथा 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **एस.आर. राजन** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम **कोडवा** कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार **मंदरा पू** को दिया गया है। फ़िल्म में यह प्रदर्शित किया गया है कि किस प्रकार माता-पिता का असाधारण प्यार भी बच्चों के जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN KODAVA

(Best Feature Film in a Language other than those specified in Scheduled VIII of the Constitution).

MANDHARA PHU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **B.N. RAVI SHANKAR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **S.R. RAJAN**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Kodava of 1993 is given to **MANDHARA PHU** which depicts how unusual parental love affects children's lives adversely too.

बी.एन.रविशंकर : कोडवा फ़िल्म ''मंदरा पू'' के निर्माता बेंगलूर में रहने वाले एक उद्योगपति तथा व्यापारी हैं जिनकी कलाओं में भी अभिरूचि है। उन्होंने फ़िल्म में भी अभिनय किया है। उन्होंने दूरदर्शन धारावाहिकों में भी छोटी-छोटी भूमिकाएं निभाई हैं। उनकी दूसरी निर्मित फ़िल्म ''अरागिनी'' हैं जिसमें उन्होंने भी अभिनय किया है। वे एक ऐसे निर्माता हैं जो कैमरा के सामने होने में बिल्कुल भी नहीं झिझकते।

B.N. RAVISHANKAR : The producer of the Kodava film, ''Mandhara Phu'' is a Bangalore based industrialist-cum-businessman with a leaning towards the Arts. He has also acted in the film. He has played small roles in T.V. serials. His second production venture is ''Aragini'', in which also he is acting. He is a producer, who does not fight shy of being before the camera.

एस.आर. राजन : कोडवा फ़िल्म ''मदंरा पू'' के निर्देशक कर्नाटक से हैं और उनकी उम्र 51-52 के करीब है। उन्हें इस बात का गर्व है कि उन्होंने जिन कोडवा और तुलु भाषाओं की दो फ़िल्मों का निर्माण, निर्देशन और उसमें अभिनय किया है, उन दोनों को पुरस्कार मिले हैं। इससे पूर्व 1970 में उन्होंने एक प्रवर्त्तक के रूप में अपनी प्रथम तुलु फ़िल्म ''एन्ना तांगड़ी'' का निर्माण किया था। अगले वर्ष उन्होंने कोडवा फ़िल्म ''नाडा मन्ने नाडे कूल्लु'' का निर्माण किया। राजन ने कन्नड़ फ़िल्मों का निर्माण तथा निर्देशन भी किया है।

S.R. RAJAN : The Director of ''Mandhara Phu,'' the Kodava film from Karnataka, is in his early sixties. He is proud of the fact that he has produced, directed and acted in two languages, Kodava and Tulu films, both of which have won awards. Way back in 1970 he made his first Tulu film, ''Enna Thangadi'' with the spirit of pioneers. The next year he made the Kodava film, ''Nada Manne Nade Koolu''. Rajan has produced and directed Kannada films as well.

सर्वोत्तम तुलु कथाचित्र पुरस्कार

(संविधान की आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भाषाओं के अलावा अन्य भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र)

बंगारा पाटलर

निर्माता : **डा. रिचर्ड केस्टलीनो** को रजत कमल तथा 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **डा. रिचर्ड केस्टलीनो** को रजत कमल तथा 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम तुलु कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार **बंगारा पाटलर** को दिया गया है। फ़िल्म में यह प्रदर्शित किया गया है कि किस प्रकार डंडे तथा राजनीति के बल-प्रयोग से पैसे के बल पर एक भोले-भाले और सीधे-सादे ग्रामीण-समुदायों से सब कुछ छीन लिया जाता है।

BEST FEATURE FILM IN TULU

(Best Feature Film in a Language other than those specified in Schedule VIII of the Constitution)

BANGARA PATLER

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **Dr. RICHARD CASTELINO**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **Dr. RICHARD CASTELINO**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Tulu of 1993 is given to BANGARA PATLER, which depicts how money-power can take away everything from a simple and innocent community of villagers, using muscle power and political force.

डॉ. रिचर्ड केस्टलीनो : दक्षिण कर्नाटक के एक गांव में जन्मे, डॉ. रिचर्ड केस्टलीनो का संबंध एक कृषक परिवार से है। उन्होंने मेंगलूर में पीयूजी तक की शिक्षा पूरी की। 20 वर्ष पूर्व उन्होंने **''अरूण किरण'** नाम से एम ड्रामा-दल स्थापित किया था और तुलु तथा कन्नड भाषाओं में ड्रामा का निर्माण किया था जिन्हें कर्नाटक तथा दुबई में मंच पर अभिनीत किया गया।

48-49 वर्षीय आयुर्वेदिक डाक्टर, डॉ. केस्टलीनो ने सह-निर्माता के रूप में ''बोल्ली तोता'' और ''न्यायगाड एन बडुक'' जैसी तुलु फ़िल्मों के निर्माण के साथ 1977 में फ़िल्म उद्योग में प्रवेश किया। उनकी दूसरी फ़िल्म को काहिरा में आयोजित फ़िल्म समारोह में सरकारी तौर पर आमंत्रित किया गया।

1981 में उन्हें तीन वर्षों के लिए मेंगलूर में ''दक्षिण भारत सांस्कृतिक समारोह'' आयोजित करने का श्रेय जाता है। उन्हें ''बंगारा पाटलर'' के लिए कर्नाटक सरकार द्वारा ''सर्वोत्तम निर्देशक पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया।

DR. RICHARD CASTELINO : Born in a village in a Dakshina Kannada District, Dr. Richard Castolino hails from a family of agriculturists. Completed education in Mangalore upto PUG. About 20 years ago he established a drama troupe named ''Arun Kiran'' and produced dramas in Tulu and Kannada, which were staged in Karnataka and even overseas in Dubai.

Dr. Castelino, an Ayurvedic doctor, now in his late forties, entered film industry in 1977 with the Tulu film ''Bolli Thota'' and as a Co-Producer the film ''Nyayagad En Baduk''. The latter was invited as an Official Entry to the Cairo Festival of Films.

In 1981, he had the honour to conduct ''South India Cultural Festival'' at Mangalore for a period of three years. He has been bestowed the ''Best Director Award'' by the Karnataka Government for ''Bangara Patler''.

विशेष उल्लेख

ताहिर हुसैन तथा **महेश भट्ट** (**हम हैं राही प्यार के** के लिए)

जुगल देबता तथा **सुशांत मिश्रा** (**इन्द्रधनुरा छाई** के लिए)

वर्ष 1993 के लिए कथाचित्र निर्णायक मंडल ने **ताहिर हुसैन** (निर्माता) तथा **महेश भट्ट** (निर्देशक) की हिन्दी फ़िल्म **हम हैं राही प्यार के** का विशेष उल्लेख किया है जो आनंद तथा मनोरंजन से भरपूर एक निश्छल कॉमेडी है।

वर्ष 1993 के लिए कथाचित्र निर्णायक मंण्डल ने **जुगल देबता** (निर्माता) तथा **सुशांत मिश्रा** (निर्देशक) की उड़िया फ़िल्म **इंद्रधनुरा छाई** का भी विशेष उल्लेख किया है। इसमें समय के क्रूर प्रवाह के संदर्भ में एक नारी के एकाकीपन के संवेदनशील अन्वेषण का चित्रण किया गया है जिस की निष्पति सांकेतिक प्रतिबिम्बों के माध्यम से सकारात्मक रूप में होती है।

SPECIAL MENTION

TAHIR HUSAIN and **MAHESH BHATT** (for **HUM HAIN RAHI PYAR KE**)

JUGAL DEBATA and **SUSANT MISRA** (for **INDRADHANURA CHHAI**)

Citation

The Feature Film Jury makes Special Mention for 1993 of **TAHIR HUSAIN** (Producer) and **MAHESH BHATT** (Director) for their Hindi film **HUM HAIN RAHI PYAR KE**, an enjoyable and wholesome entertainment at the level of innocent comedy.

The Feature Film Jury also makes Special Mention for 1993 of **JUGAL DEBATA** (Producer) and **SUSANT MISRA** (Director) for their Oriya film **INDRADHANURA CHHAI**, a sensitive exploration of a woman's experience of loneliness in the context of the inexorable passage of time, culminating on a positive note of redemption throgh symbolic images.

ताहिर हुसैन "ताहिर हुसैन" ने 30 वर्षों से भी पहले जाने-माने निर्माता-निर्देशक नासिर हुसैन के सहायक निर्देशक के रूप में फ़िल्म उद्योग में प्रवेश किया था। 1971 में ताहिर हुसैन ने अपनी कम्पनी का संचालन किया। उन्होंने "कारवां", "अनामिका", "मदहोश", "जखमी", "फिर जन्म लेंगे हम", "खून की पुकार", और "लॉकेट" जैसी फ़िल्मों का निर्माण किया। हाल ही में "दुल्हा बिकता है", "हमारा खानदान", "तुम मेरे हो", "हम हैं राही प्यार के" (आमिर खान और जूही चावला के साथ) जैसी उनकी फ़िल्में आई हैं।

TAHIR HUSAIN : Tahir Husain entered the film industry over 30 years ago as the Assistant Director of the well-knwon Producer-Director, Nasir Hussain. In 1971, Tahir Husain started his own company. He has produced "Caravan", "Anamika", "Madhosh", "Zakmee", "Phir Janam Lenge Hum", "Khoon Ki Pukkar", and "Locket." In recent times his films like "Dulha Bikta Hai" "Hamara Khandan", "Thum Mere Ho", "Hum Hain Rahi Pyar Ke" (both with Aamir Khan and Juhi Chawla) have been released.

महेश भट्ट : महेश भट्ट नानाभाई भट्ट के पुत्र हैं। उनका जन्म 1948 में हुआ। वे "सारांश", "अर्थ", "जन्म", "कब्जा", "आशिकी", "डैडी", "सर", "हम हैं राही प्यार के", "गुमराह", और अन्य एक दर्जन मुख्यधारा की प्रसिद्ध फ़िल्मों के निर्देशक हैं। "द जेन्टलमैन", "कलयुग" और अन्य आठ फ़िल्में निर्माणाधीन हैं। इसके अतिरिक्त, वे मीडिया की एक हस्ती हैं। उन्होंने "जन्म" तथा "स्वयं" जैसी टेली फ़िल्मों का निर्माण भी किया। उन्होंने "टर्निंग प्वाइंट" के कई भाग बनाए हैं।

MAHESH BHATT : Mahesh Bhatt is the son of Nanabhai Bhatt, born in 1948. He is the director of such well-known mainstream films like "Saransh", "Arth", "Janam" "Kabza" "Aashiqui", "Daddy" "Sir", "Hum Hain Rahi Pyar Ke", "Gumrah" and a dozen more. They established his reputation. Under production are "The Gentleman", "Kalyug" and eight more films. What is more, he is a media personality. He has made the telefilms "Janam" and "Swayam" also. He has anchored may episodes of tele-serial "Turning Point."

जुगल देबता : "इंद्र धुनरा छाई" के निर्माता तथा छायाकार जुगल देबता का जन्म 1958 में कट्टक में हुआ था। लॉटरी में कैमरा मिलने से वे एक सृजनात्मक स्थिर फोटोग्राफर बने। उसके बाद उन्होंने फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे में अध्ययन किया।

देबता ने फ़िल्म तथा टेलीविजन संस्थान के पूर्व-विद्यार्थियों के साथ मिलकर उड़िया फ़िल्म

JUGAL DEBATA : Jugal Debata, the producer and cinematographer of "Indiradhanura Chhai" was born in Cuttack in 1958. He has been a creative still photographer ever since he got the prize of a camera in a lottery. The next

''अशारा आकाश'' का निर्माण किया। ''बधु निरुपण'' में उन्हें राज्य सरकार के चार पुरस्कार मिले। कथाचित्रों तथा लघु फ़िल्मों के साथ-साथ वे जैसे दूसरों के लिए कैमरे का उपयोग करते हैं, वैसे ही अपने लिए भी प्रयोग करते हैं।

सुशांत मिश्रा : ''इन्द्रधनुराछाई'' के निर्देशक सुशांत मिश्रा (''लुलु'') का जन्म 1965 में हुआ। उत्कल विश्वविद्यालय से कामर्स में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद वे चार्टर्ड अकाऊन्टेंट बनना चाहते थे, परन्तु उन्होंने अपना इरादा बदल लिया और फ़िल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे में फ़िल्म-निर्देशन के पाठ्यक्रम में प्रवेश ले लिया।

एकाकीपन के विषय पर आधारित उनकी डिप्लोमा फ़िल्म ''निश्चल बादल'' को 1989 में ओबरहाऊजन में आयोजित फ़िल्म समारोह के प्रतियोगी भाग में भारत की सरकारी प्रविष्टि के रूप में स्थान मिला। 1989 से चार वर्षों तक जब उन्होंने ''इन्द्रधनुरा छाई'' का निर्माण शुरू किया, वे अपने व्यक्तिगत ज्ञान के अनुसार फ़िल्में बनाने के लिए निर्जन स्थानों में जूझते रहे। दो वर्षों तक, उन्हें राष्ट्रीय फ़िल्म अभिलेखागार में मुक्त रूप में अनुसंधान कार्य किया। यह उनकी एक भुला देने वाली प्रक्रिया थी। जैसा कि वे कहते हैं, ''ऐसा लगता है कि एक कवि की भांति एक फ़िल्म-निर्माता भी शाश्वत बंधन में होता हैं, जो समय और स्थान के बाहरी तथा आन्तरिक द्वन्द्वों से स्वयं को मुक्त कराने की कोशिश करता है।

उन्होंने कुछ वास्तविक विशेषताओं अर्थात् नगर के बदलते हुए परिवेश के बारे में अपने अनुभव पर आधारित उड़िया में अपने पहले कथाचित्र ''इन्द्रधनुराछाई'' का निर्देशन किया

step was to study at FTII, Pune.

Debata produced the Oriya film, ''Ashara Aakaash'' as a cooperative venture of ex-students of FTII. His ''Badhu Nirupana'' earned him four State Awards. Between producing features and shorts, he wields the camera for his own films and those of others.

SUSANT MISRA : Susant Misra, (''Lulu'') director of ''Indradhanura Chhai'' was born in 1965. After graduating in commerce from Utkal University, he wanted to become a Chartered Accountant; but changed his mind and joined the Film Direction Course, at the Film and Television Institute of India, Pune.

His diploma film ''Nischal Badal'' based on the theme of loneliness was the official Indian entry in the competitive section of the Oberhausen Film Festival in 1989. From 1989 till he started ''Indradhanura Chhai'' for four years, he was in the wilderness in a struggle to make films according to his personal perceptions. For a couple of years, he did freelance research in cinema at the National Film Archives. This was for him an ''unlearning process. As he says ''A film-maker, like a poet, seems to be in eternal bondage, trying to free himself from external and internal conflicts of time and space.''

Based on his own observation of some real characters vis-a-vis the changing cityscape, he directed his first feature film ''Indradhanura Chhai (Shadows of the Rainbow) in Oriya.

गैर-कथाचित्र पुरस्कार

Awards for Non-Feature Films

सर्वोत्तम गैर कथाचित्र पुरस्कार

मैहर राग

निर्माता : **सुनील शानबाग** को स्वर्ण कमल तथा 15,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **अरुनभ भट्टाचार्जी** को स्वर्ण कमल तथा 15,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गैर कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार **मैहर राग** को हमारी इस विरासत के अपकर्ष का स्पष्ट और सरल चित्रण प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है, जो कि अनैतिक वाणिज्यवाद के बादलों से घिरा हुआ है।

AWARD FOR THE BEST NON-FEATURE FILM

MAIHAR RAAG

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Producer: **SETU FILMS : SUNIL SHANBAG**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director: **ARUNABH BHATTACHARJEE**

Citation

The Award for the Best Non-Feature Film of 1993 is given to **MAIHAR RAAG** for presenting a candid and spontaneous portrayal of the decay of our heritage, as it is being engulfed by clouds of heartless commercialism.

सुनील शानबाग : एल्फ़िन्स्टन कालेज, बम्बई के स्नातक सुनील शान बाग, श्याम बेनेगल की "यात्रा" तथा "भारत एक खोज" और सिद्धार्थ काक की सांस्कृतिक फ़िल्म पत्रिका "सुरभि" में सहयोजित रहे हैं। "मैहर राग" उनका प्रथम प्रयास है।

SUNIL SHANBAG, a graduate from Elphinstone College, Bombay, has been associated with Shyam Benegal's "Yatra" and "Bharat Ek" Khoj" as also Siddharth Kak's cultural film magazine, "Surabhi". "Maihar Raag" is his debut venture.

अरुनभ भट्टाचार्जी : एल्फ़िन्स्टन कालेज, बम्बई के स्नातकोत्तर अरुनभ भट्टाचार्जी गोविन्द निहलाणी की चार फ़िल्मों में सहायक निर्देशक के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने भिवंडी के दंगों, भारत में हेरोइन-व्यापार, "टाइम्स आफ इंडिया" अध्यर्धशतवर्षीय पर फ़िल्में बनाईं। वे दूरदर्शन से सम्बद्ध तथा "सुरभि" से सहयोजित हैं।

ARUNABH BHATTACHARJEE : An M.A. from Elphinstone College, Bombay, Arunabh Bhattacharjee apprenticed himself under Govind Nihalani. He has made films on the Bhiwandi riots, heroin trade in India, the "Times of India" sesquicentennial. He has been involved with TV and has been associated wit "Surabhi".

निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम गैर कथाचित्र पुरस्कार

बाज़ार सीताराम

निर्माता : **नीना गुप्ता** को (फ़िल्म प्रभाग के लिए) रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **नीना गुप्ता** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम गैर-कथाचित्र का 1993 का पुरस्कार **बाज़ार सीताराम** को व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित पुरानी दिल्ली की संस्कृति, परम्पराओं और वातावरण का सूक्ष्म और संवेदनशील चित्रण करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FIRST NON-FEATURE FILM OF A DIRECTOR

BAZAR SITARAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **NEENA GUPTA (FOR FILMS DIVISION)**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **NEENA GUPTA**

Citation

The Award for the Best First Non-Feature Film of a Director of 1993 is given to BAZAR SITARAM for presenting a delicate and sensitive portrayal of the culture, traditions and milieu of Old Delhi as a personalised experience.

नीना गुप्ता : नीना गुप्ता फ़िल्म प्रेमियों और टी.वी. दर्शकों में एक जिन्दादिल नाट्य कलाकार, निवेदक मंच संचालक, एकांतप्रिय, निर्माता और निर्देशक, के रुप में बहुत प्रसिद्ध हैं। वे वास्तविक रुप में एक निर्देशक है।

उन्होंने आधारशिला, मंडी, उत्सव, साथ-साथ, सुषमा, त्रिकाल, अंगार, यलगार, बलवान, तथा सूरज का सातवां घोड़ा जैसी फ़िल्मों में अभिनय किया, जिनका निर्देशन बड़ी-बड़ी हस्तियों ने किया था। इन फ़िल्मों से उनमें नाट्य कलाकार की प्रतिभा का पता चलता है जो उन्हें दिल्ली के राष्ट्रीय ड्रामा विद्यालय से विरासत में मिली थी, जहाँ से उन्होंने स्नातक की डिग्री प्राप्त की थी। उन्होंने गाँधी, डिसीवर्स और जयपुर जन्कशन जैसी अंग्रेजी फ़िल्मों में भी उत्साहपूर्व अभिनय किया है।

परन्तु दूरदर्शन धारावाहिकों ने उन्हें जन-समूह में अत्यधिक प्रसिद्ध बना दिया। खानदान, यात्रा, कबीर, बुनियाद, मृणाल सेन की कहानियां, सत्यजीत रे प्रेजेन्ट्स, दाने अनार के, अन्वेषण और दिल्लगी, कुछेक धारावाहिक हैं जिनमें उन्होंने अभिनय किया।

परन्तु बहुत से लोग शायद यह नहीं जानते कि वे संस्कृत में एम.फिल हैं, उनके अपने शब्दों में वे 5.4 लम्बी हैं और उनका वजन 55 किलोग्राम है। इससे भी अधिक वे एक फ़िल्म निर्माता हैं और अन्य धारावाहिक निर्माता/निर्देशकों के बराबर की एक निर्माता/निर्देशक हैं, जिन्हें उनके कार्य के लिए याद किया जाता है।

NEENA GUPTA : Neena Gupta is widely known to film-buffs and TV watchers as a vivacious thespian, compere, anchorperson, producer and director. She is truly an *auteur*.

The roles she has played in films like "Aadharshila" "Mandi" "Utsav" "Saath Saath", "Susman," "Trikal", "Angaar" "Yalgaar" "Balwan" and "Suraj Ka Satwan Ghoda" directed by stalwarts have revealed her thespian talent, nurtured at the Delhi National School of Drama, where she graduated. She has also acted in the English films, "Gandhi" "Deceivers" and "Jaipur Junction" with *elan*.

But it is the TV serials that have endeared her to the masses. "Khandaan" "Yatra", "Kabeer" "Buniyad" "Mrinal Sen's Stories," "Satyajit Ray presents" "Dane Anar Ke" "Anveshan" and "Dillagi".

But many may not know that she has an M.Phil in Sanskrit, "her height is 5 feet 4 inches and her weight is 55 kg", in her own words! What is more, she is a film-maker and serial-director/ producer now on par with others, who can be remembered for their work.

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फ़िल्म पुरस्कार

लद्दाख - लाइफ अलांग द इण्डस

निर्माता : **बप्पा रे** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **बप्पा रे** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फ़िल्म का 1993 का पुरस्कार लद्दाख - लाइफ अलांग द इण्डस को लद्दाख में सिंधु नदी के पास में रह रहे लोगों के जीवन-प्रतिरूपों के साथ पर्यावरण से प्रकट होने वाले समृद्र विवरणों का स्पष्ट और मोहक चित्रण प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ANTHROPOLOGICAL/ ETHNOGRAPHIC FILM

LADAKH—LIFE ALONG THE INDUS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **BAPPA RAY**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **BAPPA RAY**

Citation

The Award for the Best Anthropological/Ethnographic Film of 1993 is given to **LADAKH—LIFE ALONG THE INDUS** for a visually enchanting depiction of the life-patterns of the people living along the River Indus in Ladakh, with rich details emerging from their environment.

बप्पा रे : बप्पा रे एक वृत्त चित्र निर्माता है। जन-जातियों तथा जन-जातियों के विकास में उनकी गहरी रूचि रही है। इतना ही नहीं, वे जनजातियों से गहरा संबंध स्थापित करने में भी सफल रहे, भले ही वे दक्षिण भारत में हों, उत्तर-पूर्व में या उत्तर पश्चिम में हों। उन्होंने नृ-वैज्ञानिकों तथा मानव जातीय वैज्ञानिकों के सक्रिय सहयोग से अनेक फ़िल्मों का निर्माण किया। उनकी रचटों में एक अफ्रीकी समुदाय, सिद्दीस पर बनी फ़िल्म "अलन होम लैंड" है जो कुछ शताब्दियों पूर्व भारत में आकर बस गया था। अन्य फ़िल्मों में "चोला नाईकल आफ केरला" तथा शिकारी-समुदायों पर बनी फ़िल्म "कादर आफ कोचीन" शामिल हैं। "हाईन्नीव ट्रेप" मेघालय के खासी समुदाय पर बनी फ़िल्म है। "वांगला-ए गारो फेस्टिवल" में झूम जोताई के प्रभाव को दिखाया गया है, जिसे राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। "लद्दाख: लाईफ अलांग द इण्डस" में ऐसे विभिन्न लोगों के बारे में दर्शाया गया है जिनकी अपनी प्रथा और संस्कृति है और जो इस दूर-दराज के भू-भाग में रहते हैं।

BAPPA RAY is a documentary film-maker, with a keen interest in tribes and tribal development. So much so, he succeeeds in establishing warm rapport with tribals, be they in South India, the North East or the North West. He has made several films in close liaison with anthropologists and ethnographers. His repertoire includes "Alien Homeland" a film on the Siddis, an African community that had migrated to India a few centuries ago; "Cholanaiken of Kerala" and "Kadar of Cochin" focussed on the hunter-gatherer communities. "Hynniew Trep" is a film on the Khasis of Meghalaya; "Wangala; A Garo Festival" has looked at the impact of jhum cultivation and it recieved a National Award. "Ladakh: Life along the Indus" looks at the various peoples with tradition and culture of their own who inhabit this remote land.

सर्वोत्तम जीवनी फ़िल्म पुरस्कार

कलर्स आफ एब्सेंस (अंग्रेजी)

निर्माता : **शांता गोखले** तथा **अरुण खोपकर** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **अरुण खोपकर** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम जीवनी फ़िल्म का 1993 का पुरस्कार **कलर्स आफ एब्सेंस** (अंग्रेजी) को चित्रकार **जहाँगीर साबावाला** की जीवनी को उनकी कृतियों के माध्यम से सुंदर रूप में बना कर सफलतापूर्वक प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है। फ़िल्म की ध्वनि-अभिकल्पना की रचना भी अत्यधिक सावधानी से की गई है।

AWARD FOR THE BEST BIOGRAPHICAL FILM

COLOURS OF ABSENCE (English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producers: **SHANTA GOKHALE** and **ARUN KHOPKAR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **ARUN KHOPKAR**

Citation

The Award for the Best Biographical Film of 1993 is given to **COLOURS OF ABSENCE** for a beautifully crafted and successful presentation of the biography of the painter, Jehangir Sabawala, through his work. The sound design of the film has also been meticulously conceived.

अरुण खोपकर : अरुण खोपकर भारतीय फ़िल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे के जाने माने छात्र हैं, जहाँ से उन्होंने 1974 में फ़िल्म निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्होंने अनेक लघु फ़िल्मों का निर्देशन और निर्माण किया है। उनकी फ़िल्में ''टोबेक्को हैबिट्स एण्ड ओरल केंसर (1978), फ़िगर ऑफ थॉट'' (1991) भूपेन खकड़, शालिनी मालिनी और विवान सुदंरम् जैसे बड़ौदा पेंटरों पर आधारित हैं और संचारी (1992) लीला सेम्सन पर बनाई गई है। इन फ़िल्मों को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। इन फ़िल्मों में से कुछेक ''भारतीय पेनोरमा'' में भी दिखाई गई हैं। फ़िल्म निर्माता गुरुदत्त पर लिखी गई उनकी पुस्तक को भारतीय सिनेमा (1986) पर सर्वोत्तम पुस्तक का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उन्होंने भारत तथा विदेश में सौंदर्य शास्त्र पर आमतौर पर तथा फ़िल्मी सौंदर्यशास्त्र पर विशेषतौर पर व्यापक लेक्चर दिए और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में अनुसंधान संबंधी लेख प्रकाशित किए हैं। वे आइजनश्ताइन्न पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक मान्य हस्ती है। वे होमी भाभा के अनुयायी हैं। मराठी, हिन्दी और संस्कृत के अलावा उन्हें फ्रैन्च, रुसी, जर्मन और जापानी भाषाएं आती हैं। उनकी निर्माता **शांता गोखले** एक विख्यात मराठी साहित्यकार और अनुवादक हैं तथा उनकी ''घर में साथी'' हैं।

''कलर्स आफ एब्सेंस'' में एक बार फिर वे एक पेंटर--जहाँगीर साबावाला की ओर लौटे। वे कल्पनात्मक और उपयुक्त ध्वनि-आयोजन से सिनेमा के प्रतिबिम्बों के बारे में विभिन्न विधाओं के कलाकारों का निरुपण करने की विशेषता रखते हैं।

ARUN KHOPKAR : Arun Khopkar is a well known alumnus from the Film and Television Institute of India, from where he obtained his Diploma in Film Direction in 1974. He has directed and produced several short films. His films, ''Tobacco Habits and Oral Cancer'' (1978), ''Figures of Thought'' (1991) on the Baroda painters Bhupen Khakar, Nalini Malani and Vivan Sundaram and ''Sanchari'' (1992) on Leela Samson have won national and international awards. Some have been shown in the ''Indian Panorama.'' His book on the film-maker, Guru Dutt, earned for him the National Award for the Best Book on Indian Cinema (1986). He has lectured extensively on aesthetics in general and film aesthetics in particular in India and abroad and he has contributed research papers to national and international journals. He is an internationally recognised authority on Eisenstein. He is a Homi Bhabha Fellow. He knows French, Russian, German and Japanese languages, apart from Marathi, Hindi and Sanskrit. His producer Shanta Gokhale, an eminent Marathi litterateur and translator is his ''comrade at home.''

In ''Colours of Absence'' he has once again returned to a painter, Jehangir Sabawala. He specialises in interpreting artists of several disciplines in terms of cinematic images with imagination, and appropriate sound-track.

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फ़िल्म पुरस्कार

अनुकंपन (हिन्दी)

निर्माता : **बालका घोष** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **बालका घोष** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फ़िल्म का 1993 का पुरस्कार **अनुकंपन** (हिन्दी) को आकर्षित करने वाली अपरिष्कृत फ़िल्मों के प्रभाव से विलुप्त होने के खतरे से ग्रस्त शास्त्रीय और लोक नृत्य परंपराओं के बेजोड़ परस्पर मिश्रण पर ध्यान केंद्रित करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ARTS/CULTURAL FILM

ANUKAMPAN (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **BALAKA GHOSH**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **BALAKA GHOSH**

Citation

The Award for the Best Arts/Cultural Film of 1993 is given to ANUKAMPAN for focusing attention on a unique intermingling of classical and folk dance traditions which is in danger of extinction through an appealing film form.

बालका घोष : 20-21 वर्षीया बालका घोष कलकत्ता विश्वविद्यालय से अंग्रेजी आनर्स में स्नातक, फ़िल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे की छात्रा, निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त और विख्यात कथक नर्तकी हैं। अपनी फ़िल्म "अनुकंपन" (वाइब्रेशन) में उन्होंने नृत्य तथा फ़िल्म-निर्माण की अपनी दो प्रमुख रुचियों का विलय किया है। यह केवल एक और नृत्य फ़िल्म ही नहीं है बल्कि यह फ़िल्म मध्य भारत में छतीसगढ़ की कथक शैली पर बनी है जिसे बहुत कम लोग जानते हैं। बालका घोष निलोत्पल मजूमदार की दो फ़िल्मों- "डेज एण्ड नाईट्स इन सेटोज लैंड" की सह निर्देशक हैं, "द लैंड विद इन रिप्पल्स" सुन्दरवन में एक महाद्वीप पर पारिस्थितिक संबंधी एक फ़िल्म है तथा "58 शट्स" एक प्रयोगात्मक फ़िल्म है।

BALAKA GHOSH : Now in early twenties, Balaka Ghosh is an Honours graduate in English from the Calcutta University, an alumnus from the Institute of Film and Allied Arts, Calcutta, with a diploma in Direction and a Kathak dancer of repute. In her film, "Anukampan" (Vibrations) she has merged her two major interests dancing and making films. It is not one more dance film, but an introduction to a little known Kathak style from Chattisgarh in Central India.

Balaka Ghosh was an Associate Director of Nilotpal Mazumdar in his two films: "Days and Nights in Sato's Land" in which live action and animation have been blended and "The Land Within Ripples", an ecological film on an island in the Sunderbans. She has directed the experimental film, "58 shots".

सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फ़िल्म पुरस्कार

आर्किड्स आफ मणिपुर (मणिपुरी)

निर्माता : **तोम्चू सिंह** प्रधान मुख्य वन संरक्षक मणिपुर सरकार को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **अरिबम श्याम शर्मा** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फ़िल्म (जागरूकता समेत) का 1993 का पुरस्कार **आर्किड्स आफ मणिपुर** को मणिपुर के वन्य ऑर्किड की उन्नत समृद्धि का सौन्दर्यपरक चित्रण करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ENVIRONMENT/ CONSERVATION/PRESERVATION FILM

ORCHIDS OF MANIPUR (Manipuri)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **TOMCHOU SINGH**, Principal Chief Conservator of Forests, Government of Manipur

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **ARIBAM SYAM SHARMA**

Citation

The Award for the Best Environment/Conservation/Preservation Film (including Awareness) of 1993 is given to **ORCHIDS OF MANIPUR** for a colourful and extremely aesthetic presentation of the exalting abundance of the wild orchids of Manipur.

तोम्चू सिंह : तोम्चू सिंह पिछले तीन दशकों से मणिपुर के वनों से जुड़े हुए हैं। वे भारतीय वन सेवा के सदस्य हैं। उन्होंने सरकार के प्रबंध तथा पर्यावरण संबंधी संरक्षण के लिए कार्य-योजनाएं तैयार की हैं। वर्तमान में, वे मणिपुर सरकार में प्रधान मुख्य वन संरक्षक हैं। वे "आर्किड्स आफ मणिपुर" के निर्माता हैं, जो कि उनके जीवन-काल की खोज की एक सृजनात्मक व्याख्या है।

TOMCHOU SINGH : Tomchou Singh has been involved with forests in Manipur for three decades. A member of the Indian Forest Service, he has authored working plans for management of government forests and for environmental preservation. Currently the Principal Chief Conservator of Forests, Government of Manipur, he is the producer of "Orchids of Manipur", as a creative expression of his life-time pursuit.

अरिबम श्याम शर्मा : इन का जन्म 1939 में इम्फाल, मणिपुर में हुआ। शुरु में शर्मा ने विश्वभारती विश्वविद्यालय से भारतीय दर्शन शास्त्र में मास्टर की डिग्री प्राप्त की। मणिपुर में, थियेटर में उनकी रुचि और लगन थी। वे उससे प्रभावित हुए और मणिपुर थियेटर में एक अभिनेता तथा निर्देशक बने।

शर्मा ने 1974 से फ़िल्मों का निर्देशन शुरु किया। कथाचित्र "इमेगी निन्गथेम" (माईसन प्रोशियस) 1981 में पास हुई और फ़िल्मोत्सव" 82 (कलकत्ता) में इसे प्रदर्शित किया गया। इस फ़िल्म को न्यूयार्क में नए निर्देशक/नई फ़िल्म समारोह में तथा डेनबेर, लोकार्नो, टोरेन्टो, मान्ट्रियल, हांगकांग और नेन्टेस (फ्रांस) में आयोजित तीन उप-महाद्वीपों के समारोह में प्रदर्शित किया गया, जहाँ उन्हें ग्रेन प्रिक्स पुरस्कार मिला।

उनकी फ़िल्म "इशानू" (द चूजन वन) 1990 केन्नेस में 1991 में आयोजित "उन सर्टेन रिगार्ड" में "सेलेक्शन आफिशिअलो" रही।

ARIBAM SYAM SHARMA : Born in 1939 at Imphal. Manipur, Sharma originally mastered in Indian Philosophy from Vishwabharati University. In Manipur, his interest and involvement in the theatre has left a mark. He became an actor and director of note in Manipuri theatre. Sharma has directed films since 1974. The feature film "Imagi Ningthem" (My Son, Precious) released in 1981, was screened in Filmotsav'82 (Calcutta). This film has been screened in the New Directors/New Films, New York and International Festivals at Denver, Locarno, Toronto, Montreal, Hongkong and Festival Des Three Continents at Nantes (France), where he was awarded the Grand Prix.

His film "Ishanou" (The Chosen One) 1990 has been a "Selection Officialle" at Cannes 1991 in "Un Certain Regard".

सर्वोत्तम प्रोत्साहन देने वाली फ़िल्म पुरस्कार

टाईमलेस इंडिया (अंग्रेजी)

निर्माता : **ज़फर हई** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **ज़फर हई** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 1993 का सर्वोत्तम प्रोत्साहन देने वाली फ़िल्म (पर्यटन, निर्यात, शिल्प, उद्योग आदि समेत) का पुरस्कार **टाईमलेस इंडिया** को भारत भूमि के स्पष्ट और सुंदर अनुभव को विविध रंगों और रूपों में दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST PROMOTIONAL FILM

TIMELESS INDIA (English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000 to the Producer: **ZAFAR HAI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **ZAFAR HAI**

Citation

The Award for the Best Promotional Film (to cover Tourism, Exports, Crafts, Industry, etc.) of 1993 is given to **TIMELESS INDIA** for taking the viewer through a visually beautiful experience of the landmass called India, in all its varied colours and variety.

जफ़र हई : ज़फ़र हई ने अनेक वृत-चित्रों और प्रेरक फ़िल्मों का निर्माण तथा निर्देशन किया है, जिन्हें भारत में प्रदर्शित करने के अलावा दक्षिण पूर्व एशिया, अफ्रीका, मिडल ईस्ट, यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका में विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शित किया गया है। उन्होंने अनेक सिनेमा तथा टी.वी. वाणिज्यिक चित्रों का भी निर्देशन किया है। 15 वर्षों से भी अधिक समय से उनकी फ़िल्मों को अधिकांश महत्वपूर्ण भारतीय पुरस्कार तथा कुछेक को प्रतिष्ठित अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। इन पुरस्कारों में से मुख्य पुरस्कार भारत के राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह का सर्वोत्तम वृतचित्र का पुरस्कार (दो बार) वर्ष के सर्वोत्तम वृतचित्र के लिए फ़िल्म फेयर पुरस्कार (दो बार) विश्व विमानन फ़िल्म समारोह (रोम) उत्कृष्ट कार्य के लिए सिल्वर लीफ पुरस्कार, स्केंडिनाविया यात्रा तथा पर्यटन प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार तथा सान फ्रांसिस्को में यात्रा फ़िल्म पुरस्कार के साथ-साथ ब्योनेस आयरेस तथा मनीला में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों में प्राप्त पुरस्कार शामिल हैं।

1987 में उन्होंने विश्व-बाजार के लिए अंग्रेजी कथा चित्र "द प्रफेक्ट मर्डर" का निर्देशन किया, जो कि मर्चेन्ट आइवरी प्रॉडक्शन्स द्वारा निर्मित की गई है। इस्माईल मर्चेन्ट इस फ़िल्म के कार्यकारी निर्माता और आस्कर पुरस्कार विजेता कैमरामैन वाल्टर लस्साल्ली इस फ़िल्म के छायांकन निर्देशक हैं। इस फ़िल्म को यू.के., संयुक्त राज्य अमेरिका तथा भारत के प्रमुख नगरों में प्रदर्शित किया गया है और बी.बी.सी. तथा स्टार टी.वी. द्वारा टी.वी. पर दिखाया गया है।

1990 में ज़फ़र ने ताज होटल समूह के लिए अपनी चारित्रिक शैली में एक पर्यटन फ़िल्म का निर्देशन किया। हाल ही में उन्होंने भारत पर एक प्रतिष्ठित फ़िल्म को पूरा किया।

ZAFAR HAI : Zafar Hai has produced and directed documentaries and promotional films, which have been shot in various locations in South East Asia, Africa, the Middle East, Europe and the United States, besides, of course, India. He has also directed numerous cinema and TV commercials.

Over the last 15 years, his films have won him most of the significant Indian awards as well as some prestigious international awards. The major ones include Indian National Film Festival (NFF), Best Documentary (twice), Filmfare Award for the Best Documentary of the Year (twice), World Festival of Aviation Films (Rome), Silver Leaf Award for Excellence, first prize at the Scandinavian Travel and Tourist Exhibition and Best Travel Film Award in San Francisco, plus awards earned at International Film Festivals at Buenos Aires and Manila.

In 1987, he directed "The Perfect Murder", a feature film in English for the world market, which was produced by Merchant-Ivory Productions, with Ismail Merchant as the Executive Producer and the Oscar-winning cameraman, Walter Lassally, as the Director of Photography. It has been released in major cities in the UK and USA and India and was telecast by BBC and Star TV.

In 1990, with his characteristic style, Zafar Hai has directed a tourism film for the Taj Group of Hotels. He has recently completed a prestigious film on India for Ministry of Tourism.

सर्वोत्तम कृषि फ़िल्म पुरस्कार

बिल्डिंग फ्राम बिलो (अंग्रेजी)

निर्माता : **एन.जी. हेगड़े** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **विश्राम रेवांकर** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कृषि फ़िल्म (कृषि से संबंधित और संवृद्ध विषयों, जैसे पशुपालन, डेरी उद्योग आदि समेत) को 1993 का पुरस्कार **बिल्डिंग फ्राम बिलो** को बुनियादि कृषि विकास गतिविधियों के साथ मानव विकास के मुख्य महत्व को प्रदर्शित करने के लिए दिया गया है।

AWARD TO THE BEST AGRICULTURAL FILM
BUILDING FROM BELOW (English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **N.G. HEGDE**, President, BAIF Development Research Foundation

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **VISHRAM REVANKAR**

Citation

The Award for the Best Agricultural Film (including subjects related and allied to Agriculture, like Animal Husbandry, Dairying, etc.) of 1993 is given to **BUILDING FROM BELOW** for demonstrating the prime importance of human development along with basic agricultural development activities.

एन. जी . हेगड़े : अर्थशास्त्र (सामाजिक वन विद्या) में डाक्टर की उपाधि से सुशोभित हैं और बी. ए. आई. एफ. विकास अनुसंधान फाऊन्डेशन के प्रधान और प्रबंध न्यासी हैं। वे भारत सरकार अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा दी गई राशि से विभिन्न परियोजनाओं के द्वारा कृषि वन विद्या की उन्नति, बेकार पड़ी भूमि के विकास और पर्यावरण संबंधी प्रदूषण के नियंत्रण में लगे हुए हैं। उन्हें 1991 में एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा उनकी पुस्तक "मदर नेचर" पर बच्चों की सर्वोत्तम पुस्तक का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

DR. N.C. HEGDE: Doctrate in Economics (Social Forestry) is the President and Managing Trustee of BAIF Development Research Foundation. He is involved in the promotion of Agroforestry, Wastelands Development and control of environmental pollution through various projects funded by Government of India. He has received a National Award in 1991 for his book "Mother Nature" as best for children from National Council of Education Research and Training. He is also a member on various Advisory Committees of the State Governments.

विश्राम रेवांकर चित्त-चित्रों के निर्माता और निर्देशक हैं। उन्हें चार राष्ट्रीय और तीन अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। वे फ़िल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे में शिक्षात्मक टी.वी. के पूर्व सहायक प्रोफेसर थे।

VISHRAM REVANKAR is a producer and director of documentaries. He has won four National Awards and three International awards. He was formerly Asst. Professor, Educational TV. at Film & TV Institute of India, Pune.

सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार

द विमेन बिट्रेड (अंग्रेजी)

निर्माता : **सेहजो सिंह** तथा **अनवर जमाल** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **सेहजो सिंह** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सामाजिक मुद्दों, यथा मद्य-निषेध, महिला एवं बाल कल्याण, दहेज विरोध, दवाओं का दुरूपयोग, विकलांगों का कल्याण आदि का सर्वोत्तम फ़िल्म का 1993 का पुरस्कार द विमेन बिट्रेड (अंग्रेजी) को जनजातीय समुदाय के शोषण की प्रतीक अंदरूनी तथा बाहरी शक्तियों द्वारा उत्तेजित डाइनों और डाइनों को मारने के वातावरण के सजीव प्रस्तुतीकरण के लिए दिया गया है।

AWARD TO THE BEST FILM ON SOCIAL ISSUES

THE WOMEN BETRAYED (English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producers: **SEHJO SINGH** and **ANWAR JAMAL**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **SEHJO SINGH**

Citation

The Award for the Best Film on Social Issues such as Prohibition, Women and Child Welfare, Anti-Dowry, Drug Abuse, Welfare of the Handicapped, etc. of 1993 is given to **THE WOMEN BETRAYED** for a critical presentation of the phenomenon of witches and witch-hunting, provoked by forces within and outside, which is symbolic of the exploitation of a tribal community.

सेहजो सिंह : दिल्ली में जन्मी और राजनीति विज्ञान तथा जन-सम्प्रेषण में स्नातकोतर डिग्री प्राप्त, सेहजो सिंह ने दिल्ली विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान में पूर्व स्नातक पाठ्यक्रम में अध्यापन कार्य और भारत सरकार में मीडिया परामर्शदाता के रूप में कार्य किया है। वे 1967 से फ़िल्मों का निर्माण तथा निर्देशन कर रही हैं। उन्होंने महिलाओं की समस्याओं पर कुछेक अनुसंधान लेख भी प्रकाशित किए हैं तथा ''पावर रिलेशन्स इन द इंडियन फेमिली'' पर शोध निबंध भी किया है। वे नागरिक स्वतंत्रता लोक संघ की सक्रिय सदस्या हैं।

''द विमेन बिट्रेड'' उनका प्रथम 16 एम. एम. का स्वतंत्र रूप से बनाया गया वृत्तचित्र है। ये ''बाल-विवाह'', भारत में नर्सों के सामाजिक-आर्थिक स्तर, साक्षरता अभियान और सती-प्रथा पर बनी फ़िल्मों में घनिष्ठ रूप में जुड़ी रही हैं। वे अनवर जमाल के साथ विवाहित हैं।

SEHJO SINGH : Born in Delhi with Masters in Political Science and Mass Communication, Sehjo Singh has taught undergraduate courses in Political Science at the University of Delhi and served as Media Consultant to the Government of India. She has been producing and directing films since 1967.

She has also published a few research articles on women's issues and has written a dissertation on ''Power Relations in the Indian Family''. She is active member of People's Union for Civil Liberties.

''The Women Betrayed'' is her first independent documentary, on 16mm. She has been deeply involved in films on child marriages, the socio-economic status of nurses in India, literacy campaigns, and the practice of Sati. Married to Anwar Jamal.

अनवर जमाल : ''द विमेन बिट्रेड'' के सह निर्माता, अनवर जमाल हिंदी साहित्य में मास्टर-डिगी प्राप्त की है और फ़िल्म-निर्माण में प्रशिक्षण प्राप्त किया है। उन्होंने समकालिक सामाजिक समस्याओं जैसे विषयों पर अनेक वीडियो वृत्त-चित्रों और दूरदर्शन के लिए लघु-फ़िल्मों का निर्माण किया है।

उन्होंने लेख, लघु कहानियां और कविताएं भी प्रकाशित की हैं और वे थियेटर-आंदोलन से भी चिरकाल से जुड़े रहे हैं।

ANWAR JAMAL : The co-producer of ''The Women Betrayed''. He has a Master's degree in Hindi Literature and recieved training in film-making. He has produced a number of video documentaries and shorts for television on subjects of contemporary social concern.

He has also published articles, short stories and poems, and has had a long involvement with the theatre movement.

सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फ़िल्म पुरस्कार

एड्स (मलयालम)

निर्माता : **नूरनाद रामचन्द्रन, डा. गणब बेबी** और **ओचिरा स्तार** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **नूरनाद रामचन्द्रन** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फ़िल्म का 1993 का पुरस्कार **एड्स** को एड्स की बीमारी के संबंध में सरल, सीधे-सादे और प्रत्यक्ष ढंग से जानकारी देने के लिए दिया गया है।

AWARD OF THE BEST EDUCATIONAL/ MOTIVATIONAL/INSTRUCTIONAL FILM

AIDS (Malyalam)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producers: **NOORANAD RAMACHANDRAN, Dr. GANAB BABY and OCHIRA SATHAR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **NOORANAD RAMACHANDRAN**

Citation

The Award for the Best Educational/Motivational/Instructional Film of 1993 is given to **AIDS** for presenting information on this disease in a simple, straightforward and direct manner.

नूरनाद रामचन्द्रन : राजनीति विज्ञान में बी.ए. तथा इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा को छोड़ कर नूरनाद ने सिनेमा में प्रवेश किया। उन्होंने कुष्ठ रोग पर "हन्सेन्स डिजीज़" फ़िल्म और बच्चों के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध फ़िल्म "अचन पट्टलम" का निर्माण किया जिसे जयपुर में आयोजित बाल फ़िल्म समारोह में बच्चों और युवा-पीढ़ी के लोगों द्वारा बहुत पसंद किया गया। उन्हें केरल सरकार तथा फ़िल्म समीक्षकों से पुरस्कार मिले।

NOORANAD RAMACHANDRAN: Skipping over Political Science (B.A.) and Electrical Engineering (Diploma), Nooranad Ramachandran discovered cinema.. He has made a film on leprosy, "Hansen's Disease" and a much-acclaimed film for children "Achanpattalam" which was liked by children and grown-ups at the Jaipur Children's Film Festival. He has earned awards from the Kerala Government and the film critics.

सर्वोत्तम गवेषण/साहसी फ़िल्म पुरस्कार

द स्पलेंड्योर आफ गढ़वाल एण्ड रूपकुंड (अंग्रेजी)

निर्माता : द गढ़वाल मंडल विकास निगम को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक : विक्टर बनर्जी को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गवेषण/साहसी (खेल कूद सहित) फ़िल्म का 1993 का पुरस्कार **द स्पलेंड्योर आफ गढ़वाल एण्ड रूपकुंड** को गढ़वाल और रूपकुंड की खोज को कल्पनात्मक रूप में वर्णित करने तथा काव्यात्मक रूप में चित्रित करने के लिए दिया गया है।

AWARD TO THE BEST EXPLORATION/ ADVENTURE FILM

THE SPLENDOUR OF GARHWAL AND ROOPKUND (English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producers: **THE GARHWAL MANDAL VIKAS NIGAM**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **VICTOR BANERJEE**

Citation

The Award for the Best Exploration/Adventure Film (including Sports) of 1993 is given to **THE SPLENDOUR OF GARHWAL AND ROOPKUND** for an imaginatively told and poetically picturised exploration of Garhwal and Roopkund.

विक्टर बनर्जी : विक्टर बनर्जी ने सत्यजीत राय, श्याम बेनेगल तथा मृणाल सेन जैसे भारत के अत्यधिक विख्यात निर्देशकों के साथ एक प्रख्यात अभिनेता के रूप में काम किया है। अपने अल्पकालिक व्यावसायिक जीवन में उन्होंने सर डेविडलीन, ई.एम. फोस्टर की "पैसजिज टू इंडिया", रोमन पोलन्स्की, जेरी लंदन तथ जेम्स आइवरी जैसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के निर्देशकों के साथ भी काम किया है। उन्हें भारत तथा विदेश दोनों ही में अपने कार्य निष्पादन के लिए पुरस्कार प्राप्त हुए। प्रसिद्ध "यार्क मिस्टरी प्लेज" में "जेसस क्राईस्ट" का अभिनय करने के लिए निर्देशक स्टीफन पाइमलोट द्वारा यू.के. में आंमत्रित किए जाने वाले वे प्रथम गैर अंग्रेजी/अमरीकी हैं, जिन्हें यह सम्मान मिला है।

बनर्जी द्वारा निर्देशित प्रथम फ़िल्म "एन अगस्त रेक्यूएम" थी जिसे बर्लिन में आयोजित फ़िल्म समारोह में भारत की ओर से सरकारी तौर पर प्रवेश मिला। उनका प्रथम गैर कथाचित्र, जिसमें उन्होंने पहली बार छायाकार के रूप में काम किया था भारत में "वेयर नो जर्नी एन्ड्स" शीर्षक पर दूरदर्शन पर दिखाया गया, जो भारतीय रेलवे के लिए बनाया गया वृत-चित्र था। इसे राष्ट्रीय पुरस्कार मिला और हूस्टन, यू.एस.ए. में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय समारोह में 27 देशों से प्राप्त 3100 प्रविष्टियों में से इसे "गोल्ड अवार्ड" मिला। "द स्पलेन्ड्योर आफ गढ़वाल एण्ड रूपखंड" उनका दूसरा गैर कथाचित्र है। फ़िल्मों के अलावा वे नाटकों और समकालीन कला में रूचि रखते हैं।

VICTOR BANERJEE has worked as a thespian of repute with some of India's most eminent Directors including Satyajit Ray, Shyam Benegal and Mrinal Sen. During his brief career as a professional, he has also worked with Directors of international fame, like Sir David Lean in E.M. Forster's "A Passage to India", Roman Polanski, Jerry London and James Ivory. He has received awards for his performances both in India and abroad. In 1988, he received the honour of being the first non-English Amercian actor to be invited to the United Kingdom by Director Stephen Pimlott, to act in the famous "York Mystery Plays" as "Jesus Christ"

Banerjee's directorial debut was with "An August Requiem", which was India's official entry to the Berlin Film Festival. His first non-feature, which also marked his debut as a Cinematographer, was a documentary for the Indian Railways entitled "Where No Journeys End", telecast in India. It received a National Award, and went on to win the "Gold Award" out of 3100 entries from 27 countries at the Houston International Festival, USA. "The Splendour of Garhwal and Roop Kund," is his second non-feature film. Apart from films, he is interested in plays and contemporary art.

सर्वोत्तम खोज़ी फ़िल्म पुरस्कार

बेनेफिट फार हूम एट हूज कास्ट? (अंग्रेजी)

निर्माता : **दिनेश लखनपाल** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **दिनेश लखनपाल** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम खोजी फ़िल्म का 1993 का पुरस्कार **बेनेफिट फार हूम एट हूज कास्ट?** को दीर्घकाल से निलंबित बहु-उद्देशीय हाईडल परियोजना की छाया में रह रहे लोगों के भय और दुख: तकलीफों की व्यवस्थित खोज एवं विस्तृत छानबीन करने के लिए दिया गया है।

AWARD TO THE BEST INVESTIGATIVE FILM

BENEFIT FOR WHOM AT WHOSE COST? (English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **DINESH LAKHANPAL**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **DINESH LAKHANPAL**

Citation

The Award for the Best Investigative Film of 1993 is given to BENEFIT FOR WHOM AT WHOSE COST? for a well-researched and detailed investigation of the fears and tribulations of the people living under the looming shadow of a long-delayed multipurpose hydel project.

दिनेश लखनपाल : मूलत: एक सृजनात्मक लेखक और मुक्त रूप में लिखने वाले पत्रकार, दिनेश लखनपाल हिन्दी कथाचित्र ''अंतहीन'' के कार्यकारी निर्माता होने के साथ-साथ निर्देशक तथा पटकथा लेखक भी हैं। इस फ़िल्म में कलाकार ओमपुरी तथा रोहिणी हितांगड़ी हैं। इस फ़िल्म की अत्यधिक प्रशंसा की गई परन्तु इसका व्यापक प्रदर्शन नहीं किया गया।

लखनपाल ने अपनी पहले दो कथाचित्रों ''स्पर्श'' और ''चश्मे बद्दूर'' का निर्माण करने तथा अनेक वृत्त-चित्र बनाने में सई परांजपे के साथ मुख्य सहायक निर्देशक के रूप में काम किया है। दहेज और दुल्हन दहन समस्या पर बनाए गए कथाचित्र ''अग्निदाह'' में वे सह-निर्देशक तथा संवाद लेखक थे।

ईस्टर के लिए विशेष कार्यक्रम के रूप में उन्होंने 2 मिनट की अवधि के लघु कथाचित्र ''महान कर्ज'' की पटकथा लिखी और उसका निर्देशन किया। उन्होंने के. वी. आई. सी. के लिए ''वापस गांव चले'' का निर्देशन भी किया। उन्होंने दूरदर्शन के लिए ''चन्डी प्रसाद भट्ट की कहानी बनाम चिपको आंदोलन'' का निर्माण तथा निर्देशन किया है। उन्हें पर्यावरण-संरक्षण पर बर्लिन सेनेट का सर्वोत्तम कथाचित्र, 1992 तथा जर्मन टेलीविजन का विशेष पुरस्कार, 1993 मिला।

DINESH LAKHANPAL : Basically a creative writer and freelance journalist, Dinesh Lakhanpal was the Director and Screenplay writer for the Hindi feature film ''Antaheen'' starring Om Puri and Rohini Hattangadi, besides being Executive Producer for the same. This highly appreciated film has not been screened widely.

Lakhanpal has worked as Chief Assistant Director with Sai Paranjpye, in the making of her first two feature films ''Sparsh'' and ''Chashme Baddoor'' and a number of documentaries. Was Associate Director and dialogue writer for ''Agnidaah'' a feature film on the problem of dowry and bride burning.

He has written and directed ''Nahan Karz'' a 20-minute featurette as a special programme for Easter. Also ''Wapas Gaon Chalen'' for KVIC. Lakhanpal has produced and directed for Doordarshan ''Chandi Prasad Bhatt Ki Kahani Banam Chipko Andolan.'' This film got awarded Berlin Senate's Special Award for Best Film on Environment Protection, (1992) and German Television's special award, 1993.

''Benefit for Whom at Whose Cost?'' produced and directed by him was made for the Ministry of Environment and Forests, New Delhi.

सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म पुरस्कार

चेतक (हिन्दी)

निर्माता : **राष्ट्रीय बाल एवं युवा चलचित्र केन्द्र** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **वी.जी. सामंत** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

एनिमेटर : **वी.जी. सामंत** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म का 1993 का पुरस्कार **चेतक** को अत्यधिक मनमोहक ढंग से ऐतिहासिक घोड़े का सजीव चित्रण करने के लिए दिया गया है।

AWARD TO THE BEST ANIMATION FILM

CHETAK (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producers: **THE NATIONAL CENTRE OF FILMS FOR CHILDREN AND YOUNG PEOPLE**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **V.G. SAMANT**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Animator: **V.G. SAMANT**

Citation

The Award for the Best Animation Film of 1993 is given to **CHETAK** for bringing alive the legendary horse in a most charming manner.

वी. जी. सामंत : 60 वर्षीय "चेतक" के एनिमेटर, निर्देशक तथा पटकथा लेखक, कार्टून फ़िल्मों के अगुआ हैं। ड्राईंग तथा कला में प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात 1994 में वे फ़िल्म प्रभाग में आए और वहीं मुख्य एनिमेटर बन गए। उन्होंने ऐनिमेशन, टेबल-टाप, कठपुतलियों और पिक्सीलेशन में प्रयोग किए हैं। 1977 में एनिमेशन के लिए प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उनकी फ़िल्मों को विभिन्न समारोहों में प्रदर्शित किया गया तथा उन्हें पुर्तगाल व फ्रांस (एन्नेसी) में प्रशंसनीय पुरस्कार मिले। वे पूर्व भारतीय बाल फ़िल्म सौसायटी से और अब राष्ट्रीय बाल तथा युवा चलचित्र केंद्र से सहयोजित हैं। उन्होंने एनिमेशन के लिए समर्पित अनेक कार्यशालाओ का संचालन किया है।

V.G.SAMANT : The 60-year-old Chief Animator, Director and Script-writer of "Chetak" is a veteran of Animation Films. After training in drawing and art, he joined the Cartoon Unit of Films Division in 1959 and in 1987 became the Chief Animator there. He has experimented with animation, table top, puppets, pixillation, etc. He won the first ever National Award for Animation Films in 1978. His films have toured round the various festivals and earned acclaim and awards, as from Portugal and France (Annecy). He has been associated with the former Children's Film Society of India and now with the National Centre of Films for Children and Young People. He has also conducted several workshops devoted to Animation.

निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार

मुरली नायर तथा महेश टोटातिल

निर्देशक : **मुरली नायर तथा महेश टोटातिल** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

गैर-कथाचित्र फ़िल्म निर्णाक मंडल का 1993 का विशेष पुरस्कार **मुरली नायर** को सुविख्यात हृदयस्पर्शी मलयालम कविता का अत्यधिक संवेदनशीलता और सरसता के साथ **ट्रेजडी आफ एन इंडियन फार्मर** फ़िल्म के लिए दिया गया है।

गैर-कथाचित्र फ़िल्म निर्णायक मण्डल का 1993 का विशेष पुरस्कार **महेश टोटातिल** को भी नियंत्रित तथ सुरूचिपूर्ण छात्र फ़िल्म में मरणासन्न व्यक्ति के चेतना-प्रवाह की दिलचस्प खोज को प्रस्तुत करने में **डेथ आफ ए प्रोडिगल सन** फ़िल्म के निर्देशन के लिए दिया गया है।

SPECIAL JURY AWARDS

MURALI NAIR and MAHESH THOTTATHIL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to **MURALI NAIR** and **MAHESH THOTTATHIL**

Citation

The Non-Feature Film Special Jury Award for 1993 is given to **MURALI NAIR** and **MAHESH THOTTATHIL** for direction of the film **TRAGEDY OF AN INDIAN FARMER** and for transcreating a well-known and touching Malayalam poem into a celluloid poem, with great sensitivity and economy.

The Non-Feature Film Special Jury Award for 1993 is also given to **MAHESH THOTTATHIL** for his direction of the film **DEATH OF A PRODIGAL SON** for an interesting exploration of the stream-of-consciousness of a dying man in a restrained and stylised student film.

मुरली नायर : यदि मुरली नायर अपनी पहली विधा में टिके रहते, तो हो सकता है कि वे महाराष्ट्र में ध्वंसकारी भूकंप के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन कर रहे होते, क्योंकि वे कामराजार विश्वविद्यालय, मुदुरै से भू विज्ञान में प्रथम श्रेणी में एम.एस.सी हैं। परन्तु फ़िल्मों ने उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर लिया। सेंट जेवियर संचार संस्थान, बम्बई से फ़िल्म निर्माण में डिप्लोमा प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने कुछेक वाणिज्यिक और वृत-चित्र निर्देशकों के साथ सहायक के रुप में कार्य किया। ''ट्रेजडी आफ एन इंडियन फार्मर'' उनके निर्देशन में बनी पहली फ़िल्म है। इस की खोज, सिनेमा की भाषा में प्रतिभा का पता लगाने में, भारतीय निर्णायक मण्डल के चयन पैनल के औचित्य को पुष्ट करती है।

MURALI NAIR : If Murali Nair had stuck to his original discipline, may be he would be studying various aspects of the shattering earthquake in Maharashtra for he has an M.Sc with first rank in Geology from Kamarajar University, Madurai. But films lured him. After acquiring a Diploma in Film-making from St. Xavier's Institute of Communications, Bombay, he has worked with some commercial and documentary directors as an assistant. ''Tragedy of an Indian Farmer'' is his first directorial venture. Its discovery fortifies the rationale of the Selection Panels of Indian Juries in discovering talent through the language of the cinema.

महेश टोटातिल : 1968 में जन्मे महेश तोटातिल ने विश्वविद्यालय में भौतिकी का अध्ययन किया। उन्होंने फ़िल्म तथा टेलीविजन संस्थान पुणे में प्रवेश लिया। 1993 में फ़िल्म निर्देशन में पाठ्यक्रम पूरा किया। ''डेथ आफ ए प्राडिगल सन'' उनकी प्रथम डिप्लोमा फ़िल्म है।

MAHESH THOTTATHIL : Born in 1968, Mahesh studied physics at the university. Joined the Film and Television Insititute of India, Pune in 1991. Completed the course in Film Direction in 1993. "Death of A Prodigal Son' is his diploma film.

लघु कल्पित सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार

सन्डे (हिन्दी)

निर्माता : राष्ट्रीय बाल एवं युवा चलचित्र केन्द्र को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक : पंकज अडवानी को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

लघु कल्पित सर्वोत्तम फ़िल्म (70 मिनट से कम समय की) का 1993 का पुरस्कार सन्डे को तर्कों तथा अवरोधों को नजर अंदाज करके एक अत्यधिक मनोरजंक और हास्यास्पद काल्पनिक कथा का निर्माण करने के लिए दिया गया है, जो अपनी समस्त असंभव्यताओं के होते हुए भी दर्शकों को मंत्र मुग्ध करने में सफल होगी।

AWARD FOR THE BEST SHORT FICTION FILM

SUNDAY (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: NATIONAL CENTRE OF FILMS FOR CHILDREN AND YOUNG PEOPLE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: PANKAJ ADVANI

Citation

The Award for the best Short Fiction Film (not exceeding 70 minutes' duration) of 1993 is given to SUNDAY for taking a total holiday from logic and inhibitions and creating a most entertaining and humorous fantasy which, with all its improbabilities, will succeed in casting a spell on its audiences.

पंकज अडवानी : 28-29 वर्षीय पंकज अडवानी ने बड़ौदा विश्वविद्यालय से बी.ए. और फ़िल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे से संपादन में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की है।

संपादक के रूप में, उन्होंने स्वर्गीय जी. अरबिन्दन सहित अनेक निर्देशकों के साथ काम किया। उन्होंने संवाद और पटकथा लेखन भी किया। उनके मूल पटकथा लेखन में से एक को एन.एफ.डी.सी से पुरस्कार मिला।

अडवानी ने एकांकी से स्लाइड प्रोजेक्ट तक, निर्देशन से वीडियो प्रलेखन तक व्यापक क्षेत्रों में सफलतापूर्वक हाथ डाला। अब उन्होंने राष्ट्रीय बाल तथा युवा चलचित्र केन्द्र के कथाचित्रों के माध्यम से प्रथम-प्रयास किया है, जिसे इस वर्ष के प्रारम्भ में भारतीय पेनोरमा में दिखाया गया। अभी उनके लिए और बहुत कुछ करना बाकी है।

PANKAJ ADVANI : Now in his late twenties, Pankaj Advani is a B.A. in Painting from Baroda University with a Post-Graduate degree in Editing from FTII, Pune.

As an Editor, he has worked with several directors including the late G. Aravindan. He has tried his hand in dialogue and script-writing. One of his original scripts has won a prize from NFDC.

Advani has tried his hand successfully in a wide range of things, from one-act plays to slide-projects, from direction to video documentation. Now he has made his debut through the featurette for the National Centre of Films for Children and Young People, which was shown at the Calcutta Panorama earlier this year. And he has miles to go.

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार

तावीज़ (हिन्दी)

निर्माता : **राजीव मोहन** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **पुरुषोतम बर्डे**, फ़िल्म प्रभाग को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फ़िल्म का 1993 का पुरस्कार **तावीज़** (हिन्दी) को प्रत्यक्ष तथा प्रभावी ढंग से छोटे परिवार की मान्यता का संवर्धन करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON FAMILY WELFARE

TAVEEZ (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **RAJEEV MOHAN (FILMS DIVISION)**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10.000 to the Director: **PURSHOTTAM BERDE (FILMS DIVISION)**

Citation

The Award for the Best Film on Family Welfare of 1993 is given to TAVEEZ for promoting the small family norm in a direct and effective manner.

राजीव मोहन : उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी से ड्रामा-कलाओं में प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के पश्चात राजीव मोहन ने आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा फ़िल्म प्रभाग के कार्यक्रम में काम किया। फ़िल्म प्रभाग के लिए "तावीज़" का निर्माण करने से पूर्व उन्होंने परिवार नियोजन तथा ग्रामीण विकास पर फ़िल्में बनाई।

RAJEEV MOHAN : After acquiring a certificate in Dramatic Arts from the U.P. Sangeet Natak Academy, Rajeev Mohan has worked on programmes for All India Radio, Doordarshan and Films Division. He has made films on family welfare and rural development, before producing "Taveez" for Films Division.

पुरुषोत्तम बर्डे ने मराठी नाटक लिखे हैं और उनका निर्देशन किया है। "टूयर-टूयर" पिछले 11 वर्षों के दौरान 660 बार अभिनीत किया गया है। उन्हें "हमाल दे दयाल" आदि मराठी फ़िल्मों के लिए अनेक राज्य पुरस्कार मिले। वे पटकथा लेखक, निर्देशक, कला निर्देशक तथा निर्माता के रूप में जो भी कार्य करते हैं, उसमें पूरी तरह लीन हो जाते हैं। उनकी "घायल" का निर्माण एन. चन्द्रा द्वारा किया गया।

PURUSHOTTAM BERDE, has written and directed Marathi plays. His "Tour, Tour" has been performed on 660 evenings during the last 11 years. Has won several State Awards for his Marathi films, "Hamla De Dhamal" etc. In whatever he does he is fully involved as screenplay writer, director art director, and producer. His "Ghayal", was produced by N. Chandra.

सर्वोत्तम छायाकार पुरस्कार

पीयूष शाह

छायाकर : **पीयूष शाह** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रयोगशाला : **फ़िल्म प्रोसेसिंग लेबोरेट्री** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार
(चूंकि फ़िल्म का प्रोसेसिंग कार्य विदेश में हुआ इसलिए पुरस्कार नहीं दिया गया)

प्रशस्ति

गैर-कथाचित्र में सर्वोत्तम छायांकन का 1993 का पुरस्कार **पीयूष शाह** को एक दु:खद वास्तविकता को समस्त मनोस्थितियों और मनोभावों के साथ प्रदर्शित करने के लिए फ़िल्म **मोक्ष** (बंगला) में उनके कार्य के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHER

PIYUSH SHAH

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Cameraman: **PIYUSH SHAH**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Laboratory processing the film:
(Not awarded, as the film was processed abroad)

Citation

The Award for the Best Cinematography in a Non-Feature Film for 1993 is given to PIYUSH SHAH for his work in the film MOKSHA for documenting a tragic reality with all its moods and emotions.

पीयूष शाह : पीयूष शाह ने फ़िल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे से 1985 में छायांकन में डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्होंने मणि कौल, श्याम बेनेगल अरुण खोपकर, पंकज बुटालिया, कबीर मोहंती, दिनाज़ स्टैफोर्ड, नलिन पंड्या और अन्य के साथ छायाकार के रूप में काम किया। उनके द्वारा निर्मित और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय समारोहों में दिखाई गई लघु फ़िल्मों और कथाचित्रों में से कुछेक ये हैं : "बिफोर माई आईज", "नज़र", "सिद्धेश्वरी देवी", "इडियट", "सूरज का सातवां घोड़ा", "फिगर्स आफ थॉट", "संचारी", "कलर्स आफ एब्सेंस", "मोक्ष", "किसिस आन ए ट्रेन" तथा "रियाज़" हैं। उन्होंने "डिस्कवरी आफ इंडिया" के लिए अनेक हवाई शूटिंग भी की है।

PIYUSH SHAH : Piyush Shah obtained his Diploma in Cinematography from the Film and Television Institute of India, Pune (1985). He has worked as a cinematographer with Mani Kaul, Shyam Benegal, Arun Khopkar, Pankaj Butalia, Kabir Mohanty, Dinas Stafford, Nalin Pandya and others. Some of the short and feature films shot by him and shown at various national and international festivals are: "Before My Eyes", "Nazar", "Siddeshwari Devi", "Idiot", "Suraj Ka Satvan Ghoda", "Figures of Thought" "Sanchari", "Colours of Absence", "Moksha", "Kisses on a Train" and "Riyaz". He has also done aerial shooting for the serial "Discovery of India".

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

इन्द्रजीत नियोगी

ध्वनि आलेखक: **इन्द्रजीत नियोगी** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

गैर-कथाचित्र में सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का 1993 का पुरस्कार इन्द्रजीत नियोगी को **मैहर राग** (बंगला) फ़िल्म में मैहर वाद्यवृंद की ढहती विरासत को चित्रित करने में चित्रस्थल ध्वनियों का अत्यधिक काल्पनिक और वैचारिक उपयोग करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHER

INDRAJIT NEOGI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Audiographer: **INDRAJIT NEOGI**

Citation

The Award for the Best Audiography in a Non-Feature Film for 1993 is given to INDRAJIT NEOGI for his work in the film **MAIHAR RAAG** for extremely imaginative and conceptual use of location sounds to depict the crumbling heritage of the Maihar Orchestra.

फ़िल्म "मैहर राग" का एक दृश्य

Still from "Maihar Raag"

सर्वोत्तम सम्पादन पुरस्कार

राजेश परमार

सम्पादन: राजेश परमार को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

गैर-कथाचित्र में सर्वोत्तम सम्पादन का 1993 का पुरस्कार राजेश परमार को कलर्स ऑफ एब्सेंस (अंगेजी) में निर्बाध, सुस्पष्ट और उत्कृष्ट सम्पादन के लिए दिया गया है जो रूप विधान और विषय के अनुरूप होने के कारण फ़िल्म को अनूठी लय प्रदान करता है।

AWARD FOR THE BEST EDITOR

RAJESH PARMAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Editor: **RAJESH PARMAR**

Citation

The Award for the Best Editing in a Non-Feature Film for 1993 is given to **RAJESH PARMAR** for his work in the film **COLOURS OF ABSENCE** for smooth, precise and excellently edited work, which gives the film its unique rhythm, in keeping with its form and content.

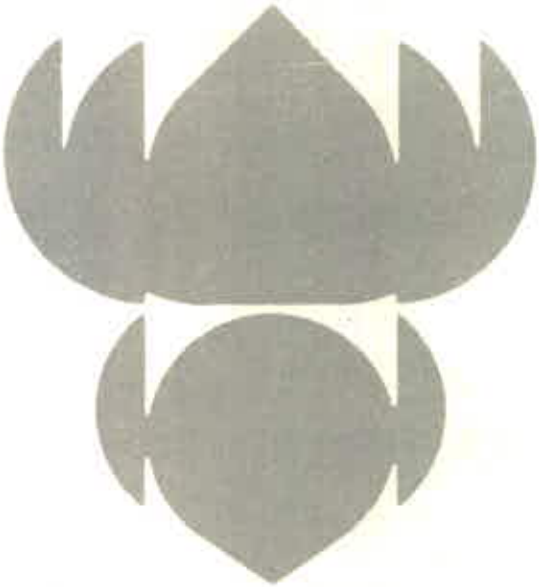

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन पुरस्कार

रजत ढोलकिया

संगीत निर्देशक : **रजत ढोलकिया** को रजत कमल तथा 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

गैर-कथाचित्र में सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का 1993 का पुरस्कार **रजत ढोलकिया** को **सन्डे** (हिन्दी) फ़िल्म में सर्वत्र व्याप्त स्फूर्तिदायक संगीत के साथ मानव ध्वनि का नवीन उपयोग करके अति काल्पनिक कथा के भाव को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST MUSIC DIRECTOR

RAJAT DHOLAKIA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Music Director: **RAJAT DHOLAKIA** .

Citation

The Award for the Best Music Direction in a Non-Feature Film for 1993 is given to **RAJAT DHOLAKIA** for his work in the film **SUNDAY** for contributing significantly to the mood of fantasy which pervades the film through refreshing music, with innovative use of the human voice.

रजत ढोलकिया : सुप्रसिद्ध गायक, रचयिता और संगीत निर्देशक दिलीप ढोलकिया के पुत्र रजत ढोलकिया वास्तव में स्वत: प्रशिक्षित संगीतज्ञ, रचयिता, गायक और संगीत निर्देशक हैं। पंडित राम प्रसाद शर्मा तथा फ्रांसीसी गिटारवादक मार्क सालन के अन्तर्गत मामूली प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद, रजत ढोलकिया ने 19 वर्ष की उम्र में अपना प्रथम प्रयास किया। जब 33 वर्षीय रजत ढोलकिया ने गुजराती अंग्रेजी और हिन्दी में 80 से भी अधिक नाटकों, फ़िल्मों, वृत-चित्रों वीडियो कार्यक्रमों के लिए संगीत दिया है। वे ''सिद्धेश्वरी'', ''परिन्दा'', ''माया मेमसाब'', ''सन्चारी'' और ''सन्डे'' जैसी फ़िल्मों के ''ध्वनि आलेखक'' है।

RAJAT DHOLAKIA : Son of the renowned singer, composer and music director, Dileep Dholakia, Rajat Dholakia is essentially a self-taught musician, composer, singer and music director. After brief stints of training under Pandit Ramprasad Sharma and the French guitarist, Mark Salan, Rajat Dholokia made his debut at the age of nineteen. Now at 33, he has scored music for over 80 plays, films, documentaries, video programmes in Gujarati, Hindi and English. He is the ''Sound Designer'' for films like ''Siddheswari Devi'', ''Parinda'', ''Maya Memsaab'', ''Sanchari'' and ''Sunday''.

पुरस्कार जो नहीं दिए गए

गैर कथाचित्र निर्णायक मण्डल ने सर्वोत्तम वैज्ञानिक तथा सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फ़िल्म का पुरस्कार नहीं दिया।

AWARDS NOT GIVEN

The Non-Feature Film Jury did not give awards for the best Scientific Film and for the Best Historical Reconstruction/Compilation Film.

सिनेमा लेखन पुरस्कार

Awards for Writing on Cinema

सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक का 1993 का पुरस्कार

नालु नेनु (तेलुगु)

लेखक : **डा. भानुमति रामकृष्णन**, को स्वर्ण कमल तथा 15,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रकाशक : **के.एन.टी. शास्त्री** को स्वर्ण कमल तथा 15,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक का 1993 का पुरस्कार **नालु नेनु** (तेलुगु) की लेखक **डा. भानुमति रामकृष्णन** को दिया गया है। इस आकर्षक आत्मकथा में उनकी मोहक जीवन तथा पेशे के वर्णन से तेलुगु फ़िल्म उद्योग के कार्य की पूरी जानकारी प्राप्त होती है। निष्पक्ष और अत्यधिक धाराप्रवाह शैली में लिखित यह पुस्तक फ़िल्म-व्यवसाय के अत्यधिक पुरुष-प्रधान समुदाय में एक महिला की स्वतंत्र आत्मा को रेखांकित करती है। इस क्षेत्र में जहाँ कलाकार अपने जीवन की कहानियाँ लिखने में अनावश्यक कतराते हैं, वहीं यह पुस्तक एक सजीव तथा आत्म विश्लेषणात्मक विवरण प्रस्तुत करने की दिशा में एक असाधारण कृति है।

AWARD FOR THE BEST BOOK ON CINEMA, 1993

NAALO NENU (Telugu)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Author: **Dr. BHANUMATI RAMAKRISHNA**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Publisher: **K.N.T. SASTRY**

Citation

The Award for the Best Book on Cinema of 1993 is given to **NAALO NENU** by **BHANUMATI RAMAKRISHNA**. Her riveting autobiography provides an insight into the working of the Telugu film industry, while tracing her fascinating life and career. Written with candour and in an imensely fluent style, the book underscores the independent spirit of a woman in an excessively male-dominated system of the show business. The lively and self-analytical work is a rare phenomenon in a field, where artistes seem to be unnecessarily hesitant to author their life-stories.

डॉ. भानुमति रामाकृष्णा : सुप्रसिद्ध नाट्य निर्देशिका, संगीत निर्देशिका, गायिका और लेखिका का जन्म 7 सितम्बर, 1925 को ओंगोले, आंन्ध्र प्रदेश में हुआ था। उन्हें संगीत अपने माता-पिता से विरासत में मिला। उसे अपने पिता, बोम्माराजू वेंकट सुब्बैया से संगीत तथा अभिनय कला में उच्च प्रशिक्षण मिला। तेलुगु फ़िल्मों के अग्रणी निर्माता- निर्देशक सी. पुल्लैया उसे उस समय तेलुगु पर्दे पर ले आए जब वह केवल 13 वर्ष की थी। श्री चमरिया द्वारा निर्मित दहेज-विरोधी फ़िल्म ''वरविरयम्'' उनकी प्रथम फ़िल्म थी। तब से उन्होंने लगभग सभी दक्षिण भारतीय भाषाओं और हिन्दी की भी 100 से भी अधिक फ़िल्मों में काम किया है।

डा. भानुमति समस्त विश्व में संभवत: एकमात्र ऐसी महिला हैं जो एक स्टूडियो की मालिक, निर्माता निर्देशिका, लेखिका, संगीत निर्देशिका और फ़िल्मों की महान गायिका हैं। उनका विवाह 1943 में फ़िल्म निर्माता, निर्देशक तथा संपादक पी.एस. रामाकृष्णा राव से हुआ।

उन्होंने 1953 में ''चांदी रानी'' की पटकथा स्वयं लिखी और उनका निर्देशन किया तथा तमिल तेलुगु और हिन्दी में बनी इस फ़िल्म में उन्होंने दोहरी भूमिका निभाई। उनका प्रथम कथाचित्र जेमनी का ''निशान'' था।

जब 1956 में आन्ध्र प्रदेश राज्य बना तो डा. भानुमति पहली महिला थी जिन्हें राज्य स्तर का सम्मान प्राप्त हुआ। ''अन्नाई (तमिल)'', ''अन्तसतुलु (तेलुगु)'' और ''पलान्ती युद्धम् (तेलुगु) में अभिनय के लिए उन्हें सर्वोत्तम अभिनेत्री के राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। ''रंगून

शेष पृष्ठ 152 पर

DR BHANUMATHI RAMA-KRISHNA the illustrious thespian/ directress, music director, singer and writer was born in Ongole Andhra Pradesh on September 7, 1925. Inheriting music from her parents, she received sound training in music and histrionics from her father Bommaraju Venkatasubbiah. Producer-Director C. Pulliah a pioneer of Telugu films introduced her to the Telugu screen when she was just thirteen in age. Her first picture was ''Varavirayam'' an anti-dowry flm produced by Mr. Chamaria. Since then she has worked in over 100 pictures in almost all the languages of South India and also in Hindi.

Dr. Bhanumathi is possibly the only lady in the whole world who is a studio owner, producer, director, writer, music director and also a great singer for films. She was married to P.S. Ramakrishna Rao, a film producer, director and editor in 1943.

In ''Chandi Rani'' written and directed by herself she acted a dual role in Tamil, Telugu and Hindi versions in 1953. Her first Hindi picture was Gemini's ''Nishan''.

Dr. Bhanumathi was the first lady receipient of State Honours in 1956, when Andhra Pradesh State was formed. She received the National Awards as Best Actress for her acting in ''Annai'' (Tamil), ''Anthastulu'' (Telugu) and ''Palanti Yuddham'' (Telugu). Dr. Annadurai of Tamil Nadu

Continued on page 152

सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक पुरस्कार

प्रीतिमान सरकार

समीक्षक: **प्रीतिमान सरकार** को स्वर्ण कमल तथा 15,000 रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक का 1993 का पुरस्कार **प्रीतिमान सरकार** को दिया गया है। उनके लेख गंभीर फ़िल्म समीक्षा के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। विद्वतापूर्ण और फ़िल्मों की सूक्ष्म बारीकियों के प्रति संवेदनशील इन लेखों में उन्होंने फ़िल्म समुदाय के अपने वर्षों के अनुभव का निचोड़ सोत्साह प्रस्तुत किया है। निर्णायक मण्डल, कला के रूप में सिनेमा के बारे में पूरी जानकारी देने तथा उसके प्रति उनके प्यार से बहुत प्रभावित हुआ है।

AWARD FOR THE BEST FILM CRITIC 1993

PRITIMAN SARKAR

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Critic: **PRITIMAN SARKAR**

Citation

The Award for the Best Film Critic of 1993 is given to PRITIMAN SARKAR. His articles are a fine example of serious film criticism. Scholarly and sensitive to minute details of films, he has distilled years of his experience as a film society enthusiast into his writing. The Jury was impressed by his insights and his love for cinema as an art form.

प्रीतिमान सरकार : जनवरी, 1940 में जन्मे प्रीतिमान सरकार ने प्रेसीडेंसी कालेज, कलकत्ता से भौतिकी का अध्ययन किया और वर्ष 1964 में आई. ए. एस. (उड़ीसा संवर्ग) में प्रवेश करने से पूर्व उन्होंने उसी कालेज में भौतिकी का अध्यापन कार्य किया।

उड़ीसा सरकार में अनेक पदों पर कार्य करने के अलावा वे लगभग 15 वर्ष की अवधि के लिए तीन बार प्रतिनियुक्ति पर दिल्ली में भारत सरकार में कार्यरत रहे। आजकल वे भुवनेश्वर में उड़ीसा सरकार में कार्यरत हैं।

20 वीं शताब्दी के सातवें दशक के शुरू में वे कलकत्ता फ़िल्म सोसायटी के सक्रिय सदस्य थे। बाद में राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी, मसूरी की फ़िल्म सोसायटी के सचिव (1964-65) बने। उन्होंने एक पत्रिका का प्रकाशन किया जिसमें केवल आई. ए. एस. परिवीक्षाधीन अधिकारियों के लेख शामिल हैं। आठवें दशक के शुरू में वे भारतीय फ़िल्म सोसायटी महासंघ (एफ. एफ. एस. आई.) दिल्ली के कोषाध्यक्ष रहे। सरकार ने इफसोन (भारतीय फ़िल्म सोसाइटी समाचार) भारतीय फ़िल्म सोसायिटी महासंघ, दिल्ली की पत्रिका प्रकाशित करना शुरू कर दिया। वे "भारतीय फ़िल्म कल्चर", "द रेडिकल हुमेनिस्ट", "डीप फोकस" तथा "स्पेशल इफेक्ट" के लिए फ़िल्म के विभिन्न पहलुओं पर भी लिखते रहे हैं। सरकार ने भारतीय टाकीज़ के 50 वर्ष मनाने के विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया है।

PRITIMAN SARKAR: Born in January 1940 Pritiman Sarkar studied Physics at Presidency College, Calcutta and then taught Physics at the same College before joining the IAS in 1964 (Orissa Cadre).

Apart from holding various assisgnments in Government of Orissa, he has worked in Government of India in Delhi on deputation thrice for a total period of about 15 years. Presently he is working at Bhubaneswar, with the Orissa Government.

An active member of Calcutta Film Society in the early sixties, he later became Secretary of the Film Society of the National Academy of Administration, Mussoorie (1964-65). Brought out a journal devoted exclusively to the articles written by IAS Probutioners. In the early seventies, he was the Treasurer of the Federation of Film Societies of India (FFSI) Delhi. Sarkar started bringing out IFSON (Indian Film Society News), the journal of FFSI, Delhi, He has also been writing on various aspects of film for "Indian Film Culture", "The Radical Humanist" and "Deep Focus" and "Special Effects." Sarkar organised a special programme to celebrate 50 years of Indian Talkies.

पृष्ठ 149 का शेषांश

राधा'' में उनके अभिनय के लिए तमिल नाडु के डा. अन्ना दुरै ने उन्हें ''नाडिप्पुक्कु इलक्कणम्'' की उपाधि से सम्मानित किया। उन्हें अन्य सम्मान भी मिले।

के.एन.टी. शास्त्री सिनेमा ग्रुप आफ पब्लिकेशन्स का संचालन करते हैं, जिसका मुख्य उद्देश्य सिनेमा पर ''**उच्च स्तरीय साहित्य**'' प्रकाशित करना है।

सिनेमा ग्रुप ने अरुद्रा वी.ए.के. रंगाराव, जी श्री हरि जैसे प्रसिद्ध व्यक्तियों और अन्य लोगों द्वारा लिखे गए लेखों का संक्षिप्त संग्रह प्रकाशित किया है जिसमें वर्ष 1986 में हैदराबाद में आयोजित फ़िल्म समारोह के समय के तेलुगु सिनेमा का विस्तृत विवरण मिलता है।

शास्त्री एक सुप्रसिद्ध पत्रकार, स्तम्भ लेखक और लेखक हैं। उन्हें 1989 में सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

Continued from page 149

[DR. BHANUMATHY RAMAKRISHNA] honoured her with a title ''Nadippukku Ilakkanam'' for her performance in ''Rangoon Radha''. In 1966, she was conferred the Padmashri by the Government of India. She has won other honours also.

K.N.T. SASTRY is managing Cinema Group of Publications, with the avowed objective of bringing out ''classy'' literature on Cinema.

The Cinema Group brought out a compendium of articles written by eminent people like Arudra, V.A.K. Ranga Rao, G. Srihari and others giving details of the Telugu Cinema at the time of the 1986 Film Festival held at Hyderabad.

Sastry himself is a well-known journalist, columnist, and writer. He received the National Award as the best film critic in 1989.

कथासार कथाचित्र	Synopses: Feature Films

अबर्तन

असमिया/रंगीन/105 मिनट

निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेखक: डा. भूबेन्द्र नाथ सइकिया। **मुख्य अभिनेता:** तपन दास। **मुख्य अभिनेत्री:** मृदुला बरूआ। **सह अभिनेता:** जयंत दास। **सह अभिनेत्री:** जूरी सरीना। **कैमरा-मैन:** कमल नायक। **ध्वनि आलेखक:** दुर्गा मित्रा/हिरेन्द्र प्रसाद भट्टाचार्य। **संपादक:** निकुंज भट्टाचार्य। **कला निर्देशक:** नुरूद्दीन अहमद **संगीत निर्देशक:** नारायण बरूआ/देवेश्वर सरीना। **नृत्य संयोजक:** हेमा कलीबा।

जयन्ती ने, जब वह अपने गांव के स्कूल में ही पढ़ती थी, नृत्य करना, ड्रामे में भाग लेना और कविता पाठ करना प्रारम्भ कर दिया था। जब उसने सारे राज्य में फैल गए राजनैतिक आन्दोलन में भाग ले लिया तो नगर में उसकी कालेज की पढ़ाई बीच में ही खत्म हो गई। सर्वप्रथम वह स्वैच्छिक कार्यकर्ता के रुप में लोगों से चंदा इकट्ठा किया करती थी। जब उसे बड़े नेताओं को चंदा देना पड़ा तो वह भी एक छोटी नेता बन गई।

धीरे-धीरे उसका जीवन दागदार हो गया। यहां तक कि, जब वह अपने गांव और अपने परिवार में लौटती थी, तो उसका कोई स्वागत नहीं करता था और उसे एक भ्रष्ट महिला समझा जाता था।

जयन्ती को अपनी जन्मजात प्रतिभा का सहारा लेना पड़ा। उसने एक ''मोबाइल थियेटर'' में काम करना शुरु कर दिया और स्वयं को थियेटर की एक अच्छी अभिनेत्री और प्रतिष्ठित तथा आकर्षक व्यक्तित्व के रुप में स्थापित किया।

जिस थियेटर कम्पनी में जयंती काम करती थी उस में 'निहार' 'नायक'' था। वह विवाहित था और उसकी एक पुत्री भी थी। परन्तु उसने कहा कि उसने जयंती के लिए ही थियेटर में काम करना स्वीकार किया है। जयंती ने जीवन को हमेशा उसी प्रकार स्वीकार किया था जिस प्रकार वह चल रहा है। उसने स्वयं पर नियंत्रण रखने की कोशिश नहीं की और निहार और उसके आगे बढ़ने की क्रियाओं के सामने उसने चुपचाप समर्पण कर दिया।

परन्तु अब तक जयंती के परिवार के सदस्य पूरी तरह उसकी आजीविका पर निर्भर करने लगे थे, इसलिए उन्होंने खुशी से उसके इस संबंध को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने अपना भविष्य और अपना आरामदायक जीवन बिताने की बात को ध्यान में रखते हुए उसका शोषण किया।

थियेटर कम्पनी के मालिक, जिनका भाग्य जयंती के आकर्षण और उसके निष्पादन पर निर्भर था, उसे कानूनी तौर पर केवल उनकी कम्पनी में ही रहने के लिए बाध्य करते थे।

जयंती परिमल नाम के एक इंजीनियर के संपर्क में आई, जिसने अभी तक अनुशासनहीन जीवन बिताया था। दोनों ने एक दूसरे में कुछ न कुछ असाधारण पाया। उनकी मित्रता ने अपने जीवन को नए सिरे से देखने के लिए उनके लिए रास्ते खोल दिए। एक दिन, परिमल ने महसूस किया कि वह थका हारा और अकेला है, इसलिए शायद वह जयंती ही है जिसे वह अपना जीवन साथी बनाकर अपने मन की शांति प्राप्त कर सकता है। उसने जयंती को विवाह-प्रस्ताव रखा, जो एकदम हैरान रह जाती है। उसने अपने आप को चारों ओर से पूरी तरह घिरा हुआ पाया।

जयंती की स्वतंत्रता का संघर्ष निहार के विरुद्ध शुरु हो जाता है, उसके पश्चात् यह संघर्ष ड्रामा कम्पनी तथा अंत में उसके परिवार के विरुद्ध होता है। बेहतर और उज्ज्वल जीवन देखने की उसकी इच्छा आखिर रंग लाई। जयंती ने परिमल के साथ बसर करने के लिए जीवन की नई शुरुआत की।

ABARTAN

Assamese/Colour/105 min
Producer/Director/Screenplay: Dr. Bhabendra Nath Saikia. **Leading Actor:** Tapan Das.. **Leading Actress:** Mridula Barua. **Supporting Actor:** Jayanta Das. **Supporting Actress:** Juri Sarina. **Cameraman:** Kamal Nayak. **Audiographer:** Durga Mitra/Hirendra Prasad Bhattacharya. **Editor:** Nikunja Bhattacharya. **Art Director:** Nuruddin Ahmed. **Music Director:** Narayan Barua/Deveswar Sarina. **Choreographer:** Hema Kaliba

Jayanti used to dance, act in drama and recite poems, while she was in school at her village. Her collegiate life, in the city, came to an end, when she joined a political movement, which engulfed the whole state. First, she used to collect donations from the people as a volunteer. Then she became a small leader when she had to give donations to the big leaders. Gradually, her life became stained. So much so, when she had to return to her home, for the whole village and her family, she was an unwelcome and a disgraced person.

Jayanti had to fall back upon her inherent talent. She joined a "mobile theatre" company and established herself as a good actress and a celebrated and glamorous personality of the theatre.

Nihar was the "hero" of the theatre company, for which Jayanti worked. He was already married and had a daughter. But he said that it was for Jayanti only that he had decided to work in the theatre. Jayanti had always been accepting life as came by to her. She did not try to control herself and submitted meekly to Nihar and his advances.

The proprietors of the theatre company, whose fortunes were dependent on Jayanti's glamour and performance, bind her legally to stay with their company only.

Then Jayanti came across Parimal, an engineer, who had spent an indisciplined life. Each discovered something extraordinary in the other. Their friendship opened new doors for them to look into their own lives afresh. One day, Parimal felt that he was tired and lonely and it was in Jayanti he could probably find his partner for life and peace of mind as well. He proposed to Jayanti, who at first was bewildered. She found herself closely fenced on all sides.

The struggle for Jayanti's freedom starts against Nihar, then the drama company and finally her family. An urge for seeing the better and brighter side of life ultimately triumphs. It helps Jayanti to start once again a new journey, with Parimal by her side.

आकाश दूतु

मलयालम/रंगीन/135 मिनट
निर्माता: अनुपमा सिनेमा। **निर्देशक:** सिबी मलायिल। **पटकथा लेखक:** डेनिस जोसेफ। **मुख्य अभिनेता:** माधवी। **बाल कलाकार:** सीना एन्थनी। **कैमरामैन:** आन्दकुट्टन। **संपादक:** भूमिनाथन। **कला निर्देशक:** कृष्ण नकुट्टी। **संगीत निर्देशक:** औस अप्पचन **गीतकार:** ओ. एम. टी. कुरूप। **पार्श्व गायिका:** चित्रा।

फ़िल्म की कहानी ईसाई पृष्ठभूमि की है जिसे पहाड़ी के साथ बसे एक गाँव में दर्शाया गया है, जहाँ एक सुखी परिवार रहता है। परिवार में एन्नी उसका पति जॉनी तथा उनके चार बच्चे हैं। उनकी बेटी मीनू सबसे बड़ी है, उसके बाद जुडवाँ बच्चे टोनी और रोनी हैं तथा एक बेबी है। रोनी अपंग है, परन्तु उसे परिवार के सभी सदस्य बहुत प्यार करते हैं।

एन्नी तथा जॉनी दोनों ही अनाथ थे। एक हितैषी और उनका भला चाहने वाले पादरी द्वारा वे शादी के बंधन में बंध जाते हैं। चूंकि वह शिक्षणालय का रेक्टर है, वह उन्हें नौकरी दे देता है। एन्नी वायलिन की शिक्षका है और उनका घर सुख-शांति का स्थान है। परन्तु एक छोटी सी कमी रह जाती है। जॉनी को शराब पीने की लत है यद्यपि परिवार के सभी लोग उसे प्यार करते है।

एक दिन जुड़वां भाईयों में एक की दुर्घटना हो जाती है। खून की जरूरत पड़ती है तो उस समय एन्नी की खून की जाँच करते समय डाक्टर को पता चलता है कि उसे लुकेनिया की बीमारी है। वह हिम्मत वाली महिला है और मृत्यु का उसे डर नहीं है। परन्तु वह अपने परिवार के बारे में चिन्तत है। जॉनी को भी काफी धक्का लगता है और वह यह शपथ लेता है कि वह भविष्य में कभी शराब नहीं पिएगा और वह अपनी शपथ कभी नहीं तोड़ता।

जब वह अंतिम क्षणों पर चल रही होती है तो जॉनी एक लड़ाई-झगड़े में अचानक मारा जाता है। एन्नी को गहरा आघात लगता है। बिना अपने किसी घर के और बिना किसी बचत के वह अपने बच्चों के लिए बेचैन रहने लगती है। पुन: पुजारी की सहायता से वह अपंग रोनी को छोड़कर, बाकी सभी के लिए पोषक माता-पिता ढूंढने में सफल होती है।

जिस घर में कभी ध्वनि, संगीत और हंसी के फौहारे छूटते थे अब उसमें अचानक केवल एन्नी और रोनी के रह जाने से वातावरण एकान्त और शांत हो जाता है।

क्रिसमस की पूर्व संध्या पर वह अपने बच्चों का बेचैनी से इंतजार करती है, जिन्हें उसने आंमत्रित किया था। वह उनसे पुन: मिलने के ख्याल में डूबी होती है जब उसे अचानक झटका लगता है और वह देखती है कि उसे तेज ब्लीडिंग हो रही है। वह उसी रात मर जाती है।

उसे दफनाने के बाद टोनी के पोषक माता-पिता रोनी को भी अपने साथ ले जाते हैं।

AAKASA DOOTHU

Malayalam/Colour/135 min.
Producer: Anupma Cinema. Director: Sibi Malayil. Screenplay: Dennis Joseph Leading Actor: Murali. Leading Actress: Madhavi. Child Artist: Seena Antony. Cameraman: Anandakuttan. Editor: Bhoominathan Art Director: Krishnankutty Music Director: Ousappachan. Lyricist: O.M.T Kurup. Female Playback Singer: Chithra.

The story with a Christian background is set in a village by the hillside where lives a happy family. It consists of Annie, her husband, Johny and their four children. The wisest is their daughter Meenu, then the twins, Tony and Rony a baby. Rony though handicapped is much loved by the family.

Both Annie and Johny had been orphans. They were joined in marriage by a benign priest, who is their well-wisher Rector of a seminary, he provides jobs. Annie is a violin teacher and Johny is a driver at an estate. Both of them are God-fearing and their house is a very happy place. But there is one little flaw. Johny has a weakness for liquor, though he is a very loving family man.

One day one of the twins has an accident. Blood is needed, and it is when examining Annie's blood for the purpose that the doctor realises she has luekemia. She is a woman of courage and death does not scare her. But she is worried about her family. Johny is shattered and he takes an oath that he will never touch liquor again, which he never breaks.

But she comes to a dead-end, when quite suddenly Johny gets accidentally killed in a fight. Annie is at a loss. With not even a house to call their own or savings to fall back, she starts worrying for her children. With the help of the priest, again, she is able to find foster-parents for them except Rony because he is handicapped.

The house that once bustled with sound and music and laughter suddenly becomes lonely and silent with just Annie and Rony.

On Christmas eve, she eagerly awaits her children whom she had invited. She jerks out of an vision of reunion only to find herself bleeding severely. She dies that night.

After the funeral, Tony's foster parents take Rony also with them.

अंतरीन

बंगला/रंगीन/ 91 एम.एम.
निर्माता: राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम। **निर्देशक:** मृणाल सेन। **कहानी :** सदात हसन मांटो। **पटकथा :** शशि आनन्द। **मुख्य कलाकार :** अंजन दत्त । **अभिनेत्री :** डिम्पल कपाड़िया। **छायाकार/संगीत :** शशि आनंद। **संगीत आलेखक :** सुदीसा बोस, अनूप मुखोपाध्याय। **संपादक :** म्रिनमॉय चक्रवर्ती । **कला निर्देशक:** गौतम बोस।

''. . . . फिर एक दिन रात ही नीरवता में मैंने किसी की दम घोटने वाली और हृदय-विदारक सिसकियां सुनीं, जैसे कि कोई शय्या के नीचे या फर्श पर हो। एक दयनीय चीखती हुई आवाज आई और मुझसे अनुनय-विनय करने लगी।''ओ, मुझे बचा लो! इन तीव्र भ्रममोह के दरवाजों, मौत की भांति नींद तथा बेकार सपनों को तोड़ डालो, मुझे अपने घोड़े की काठी पर अपने साथ बैठा लो, मुझे अपने दिल से लगा लो और पहाड़ों, जंगलों तथा नदी को पार करते हुए मुझे अपने ऊपर के धूप वाले कमरों की गरम दीप्ति में ले जाओ। मुझे बचा लो।'' (रवीन्द्र नाथ टैगोर के ''हंगरी स्टोन'' से उद्धृत)

अपनी ही इच्छा से एकान्त में रहने वाला व्यक्ति वीरान पड़े हुए और जीर्ण-शीर्ण हो रहे मेंशन के अंदर आता है। शांति और रहस्य के वातावरण में वह व्यक्ति किसी चीज़ की खोज में विस्मयकारी वीथियों की भूलभुलैया में एक कमरे से दूसरे कमरे में भटकता है। वह मर कर भी किसी का सामना करना चाहता है।

एक रात को फोन की घंटी बजती है। व्यक्ति उसे उठाता है। टेलीफोन करने वाला तुरंत फोन का चोगा रख देता है। केवल डायल टोन रह जाती है। फोन के दूसरी ओर एक महिला है, जो एक ऊंची इमारत के बहुत बड़े अपार्टमेंट में रहती है । वह बिल्कुल अकेली है और परिस्थितियों के वश में है।

इस महिला को आधी रात के समय फोन करना अच्छा लगता है और पुरुष भी उसे रूखा जवाब नहीं देता। पुरुष यह नहीं जानता कि वह कौन है। महिला भी उसके बारे में कुछ नहीं जानना चाहती।

दिन बीतते जाते हैं और उनकी बातें बढ़ती जाती हैं। धीरे-धीरे अनिवार्य रूप में एक असंदिग्ध खेल शुरू होता है। क्या यह खेल और तीव्र हो जाता है? अव्यवस्थित रूप में बढ़ते हुए महानगर में एक अपरिभाष्य दूरी बनाए रखते हुए, पुरुष और महिला अपनी एक निराली दुनिया बनाते हैं। ऐसी दुनिया जो संवेदनशीलता से परिपूर्ण है।

एक विनाशकारी मध्य रात को बनाई गई यह दुनिया अचानक टूट जाती है। परन्तु जीवन चलता रहता है। और इसमें क्षोभ रह जाता है और इसमें दर्द जाता है।

ANTAREEN

Bengali/Colour/91 min.
Produer : National Film Development Corporation. **Director :** Mrinal Sen. **Story :** Sadat Hasan Manto. **Screenplay:** Shashi Anand. **Leading Actor :** Arun Dutt. **Leadinig Actress:** Dimple Kapadia. **Cinematographer :**

Shashi Anand. Audiographer: Sudipta Bose, Anup Mukhopadhyay. Editor : Mrinmoy Chakraborty. Art Director: Gautam Bose.

"... That day again at dead of night I heard the stifled heart - breaking sobs of someone, as if below the bed, below the floor. A voice piteously cried and implored me: "Oh, rescue me! Break through these doors of hard illusion, death like slumber and fruitless dreams, place me by your side on the saddle, press me to your heart, and, riding through hills and woods and across the river, take me to the warm radiance of your sunny rooms above. Rescue me!" (From "Hungry Stones" by Rabindranath Tagore.)

A recluse by his own choice, the man walks into a crumbling mansion, all deserted. In silence and mystery, the man wanders from room to room among the bewildering maze of alleys in pursuit of something, some one he is dying to confront.

One night the phone rings. The man picks it up. The caller immediately hangs up. What remains is the dialtone. One the other side of the phone is a women, one living in a fairly large apartment of a high-rise building. She is dreadfully lonely and captive of circumstances.

The women loves calling in the middle of the nights and the man does not sound unfriendly. The man does not know who she is. The women does not care to know about him either.

Days roll and talks mutiply. A queer game to start with, slowly but inevitably. Does it grow intense? Keeping themselves at an undefinable distance in sprawling metropolitan city, the man and the woman build a weird world, a world replete with sensuality.

In the middle of a fateful night, the world thus built suddenly collapses. But life goes on. And there is passion in it, there is pain in it..

अरण्य रोदन

उड़िया/रंगीन/37 मिनट

निर्माता: प्रसन प्रुस्ति: **निर्देशक/पटकथा लेखक:** बिप्लब रे चौधरी। **मुख्य अभिनेता:** लालतेन्दु रथ। **मुख्य अभिनेत्री:** प्रियवंदा रे। **सह अभिनेता:** राम चरण दास। **बाल कलाकार:** रामदास मुरोनु। **कैमरामैन:**राजू मिश्रा। **ध्वनि आलेखक:** नागेन्द्रनाथ बारिद/संजय पाठक। **संपादक:** बिप्लब रे चौधरी। **कला निर्देशक:** रंजन परिदा **संगीत निर्देशक:** शान्तनु महापात्र। **गीतकार:** लक्ष्मण मरांडी **पार्श्वगायिका:** सरोजिनी हेमब्रुम।

उड़ीसा के दूरदराज के एक जनजातीय गांव में एक स्थानीय एम एल ए और उसके अनुचरों द्वारा एक महिला का बलात्कार किया जाता है और उसकी मृत्यु हो जाती है। बलात्कार की शिकार महिला का पति एम. एल. ए. की हत्या कर देता है और उसे जेल हो जाता है। दबा दिए गए जुर्म के पीछे की सच्चाई जानने की कोशिश में कल्याणी नाम के पत्रकार उस गांव में जाती है। वह अपने संपादक को सच्चाई की रिपोर्ट भेजती है, जो राजनैतिक परिणामों को मद्देनज़र रखते हुए किसी ठोस सबूत के बिना इसे प्रकाशित करने के लिए मना कर देता है। पत्रकार पुन: गांव आती है। वह बलात्कार की शिकार महिला के 10 वर्षीय इकलौते बेटे का भार संभाल लेती है।

स्थानीय महाजन और उसके अनुचर इस क्षेत्र में एक और निर्मम जुर्म करते हैं, जब जनजातीय ग्रामीणों द्वारा बेकार पड़ी खाली जमीन पर खून-पसीना एक करके उगाई गई फसल को वे अवैध रूप में काट लेते हैं। इस बार बड़े पैमाने पर हत्याएं की जाती हैं और कई जन-जातीय महिलाओं का सामूहिक बलात्कार किया जाता है और उन्हे प्रायश्चित करने के लिए निर्धारित धार्मिक-कृत्य करना होता है। कल्याणी इस मामले की रिपोर्ट अपने संपादक को भेजती है, परन्तु उसे पुन: तोड़-मरोड़ कर यह कहकर प्रस्तुत किया जाता है कि यह जुर्म आतंकवादियों ने किया है। पत्रकार को दूसरी बार भी निराश होन पड़ता है।

कल्याणी का अपना वैवाहिक जीवन भी काफी समय से डोलायमान है। अब उसे न्यायालय का निर्णय प्राप्त होता हैं जिसमें उसके पति द्वारा कुछ समय पहले तलाक के आवेदन-पत्र पर उसे तलाक मिल जाता है। गरीब लावारिस जनजातीय बच्चा अब भी एक मां की आस कर रहा होता है। पत्रकार और हैताश जनजातीय लोगों के लिए बस अरण्य रोदन ही रह जाता है।

ARANYA RODANA

Oriya/Colour/37 min.

Producer: Prasan Prusti. **Director/ Screenplay:** Biplab Ray Chaudhuri. **Leading Actor:** Lalatendu Rath. **Leading Actress:** Priyambaba Ray. **Supporting Actor:** Rai Charan Das. **Child Artist:** Ramdas Muronu. **Cameraman:** Raju Mishra. **Audiographers:** Nagendra Nath Barid/ Sanjoy Pathak. **Editor:** Biplap Ray Chaudhuri. **Art Director:** Ranjan Parida. **Music Director:** Shantanu Mohapatra. **Lyricist:** Laxman Marandi. **Female Playback Singer:** Sarojini Hembrun.

A woman in an interior tribal village in Orissa is raped to death by the local MLA and his henchmen. The husband of the raped victim murders the MLA and is jailed. In a bid to uncover the truth behind the hushed down crime, Kalyani, a journalist, visits the village. She reports the truth to her Editor, who, afraid of political implications, refuses to publish the same without concrete proof. The journalist visits the village again. She takes charge of the only child of the rape victim.

The local mahajan and his henchmen commit yet another ghastly crime in the area, while harvesting illegally the crops, raised so painstakingly by the tribal villagers on fallow lands. This time, it is mass killing and gang-raping of several tribal women. These women are banished from the village as per the tribal system and they undergo the prescribed penance rituals. Kalyani reports the matter to her Editor, but the same is drastically distorted again, attributing the crime to terrorists .

Kalyani's own married life had been on the rocks for a long time and now she receives the court judgement granting her husband the divorce sought by him sometime earlier. The poor orphaned tribal child is still looking for a mother. For the journalist and the suffering tribals, it all remains Aranya Rodana, a cry in the wilderness.

बंगार पाटलर

तुलु/रंगीन/155 मिनट

निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेखक: डा. रिचर्ड केस्टलीनो **मुख्य अभिनेता:** वामन राज। **मुख्य अभिनेत्री:** सुधा रानी। **सह अभिनेता:** रामदास देवडिगा/रमन्ना राय। **सह अभिनेत्री:** पदमा। **कैमरामैन:** सुन्दरनाथ सुवर्णा। **ध्वनि आलेखक:** मेनन **संपादक:** श्री निवास बाबू। **कला निर्देशक:** तम्मा लक्ष्मण। **वेशभूषा** डिजाइनर: डेनियल हेन्रिच। **संगीत निर्देशक:** "राघव" **गीतकार:** बी. रामा किर्डियन **पार्श्व गायक:** मनु/नरसिम्हा नायक। **पार्श्व गायिका:** मंजुला गुरूराज, छाया, नयना/**नृत्य संयोजक:** सतीश कमला।

पटेल और उसकी पत्नी गांव में एक हितैषी दम्पत्ति हैं। उनके दो बेटे हैं-- एक मेंगलूर में डाक्टर है जिसका नाम रामू है तथा दूसरा श्यामू, यू.एस.ए में एक कर्मचारी है।

स्कूल मास्टर सिक्वेरा, स्कूल मास्टर के रूप में अपनी नियुक्ति पर उस गांव के कल्याण के प्रति समर्पित है। उसका पटेल के साथ अच्छा मेल-जोल है।

एक पिछड़े समुदाय का चोमा और एक विधुर, पटेल की एस्टेट में नौकर है और उसके तीन बच्चे हैं--कार्गी-एक अविवाहित बेटी, नक्यूरा, जो मेंगलूर में रामू के आश्रय में विधि का छात्र है और लिंगप्पा, जो कि एक छात्र है।

एक अवैध शराब-व्यापार में लगे हुए नागप्पा की पुलिस इंस्पेक्टर रामकृष्ण द्वारा छानबीन की जाती है। नागप्पा जो कि स्थानीय एम.एल.ए के प्रभाव से जेल से बाहर आता है, रामकृष्ण का इस्तीफा प्राप्त करने का षड़यंत्र रचता है।

भूमि सुधार अधिनियम के अनुसार, ग्रामीणवासी उस भूमि को प्राप्त करने के लिए सरकार को घोषणापत्र दे रहे हैं जिस पर वे जोताई कर रहे हैं। पिछड़ी जाति का शेशा भी अपना घोषणा-पत्र देता है जिससे उसके नियोक्ता नागप्पा को फर्क पड़ता है और इस प्रक्रिया में उनका झगड़ा हो जाता है। शेशा इस घटना के बारे में पटेल को बताता है जो कि उससे सहमत होता है और उसका समर्थन करता है। क्रुद्ध होकर नागप्पा एक विख्यात व्यक्ति अंगारा को अपने घर से निकाल देता है परन्तु पटेल उसे आश्रय देता है।

युवा पीढ़ी को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से पटेल चुनाव से अपना नामांकन वापिस ले लेता है। पटेल, बाबू नाम के लावारिस को भी आवास प्रदान करता है और बाबू को कार्गी से प्यार हो जाता है जो पटेल के एस्टेट में एक अन्य कर्मचारी है। पटेल इस अन्तर-जाति विवाह को कराने का यत्न करता है।

गांव में आने पर चोमा के बेटे नक्यूरा को नागप्पा द्वारा लुभाया जाता है जो कि उसे पटेल के खिलाफ़ काम करने के लिए उत्तेजित करता है।

नागप्पा की दौलत की शक्ति के बावजूद भी पटेल का उम्मीदवार चुनाव जीत जाता है और नागप्पा अवैध शराब निर्माण में लग जाता है। एक झगड़े में, वह एक लॉरी दुर्घटना के जरिए पुलिस कर्मियों को मरवा देता है। नया सबइन्सपेक्टर विश्वनाथ भी उसके कार्यकलापों को नियंत्रित करने में असफल रहता है।

एक दिन, जब कार्गी घर में अकेली होती है तो उसके अकेलेपन का फायदा उठाकर नागप्पा कार्गी का बलात्कार करने की कोशिश कर ही रहा होता है कि उसका भाई नक्यूरा घर वापिस आ जाता है और उसे बचा लेता है। नागप्पा धमकी देता है कि वह कार्गी को बदनाम करेगा और वह गांव में उसे वेश्या करार देता

है और नक्यूरा कुछ नहीं कर सकता।

अगले दिन चोमा का मृत शरीर उस कुएं से मिलता है जिसमें वह नागन्ना की घटिया बात सुन के डूब मरा था। नक्यूरा, पटेल से माफी मांगता है। नक्यूरा, नागन्ना को सबक सिखाना चाहता है। नागन्ना, नक्यूरा की हत्या करना चाहता है और रात को गांव में आग लगा देता है। गरीब लोगों की सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। बापू भी इस आग में दूसरे लोगों को बचाते हुए जलकर मर जाता है।

स्कूल मास्टर के नेतृत्व में नागन्ना के व्यापारिक स्थान को नष्ट कर दिया जाता है और नागन्ना, पटेल के सामने आत्मसमर्पण कर देता है। नागन्ना के पैशाचिक कृत्य द्वारा सारा गांव राख के ढेर में बदल जाता है परन्तु पटेल भविष्य में गांववासियों की समृद्धि और कल्याण के लिए प्रार्थना करता है।

BANGAR PATLER

Tulu/Colour/155 min.

Producer/Director/Screenplay: Dr Richard Castelino. **Leading Actor**: Vaman Raj. **Leading Actress**: Sudha Rani. **Supporting Actor**: Ramdas Devadiga/Ramanna Rai. **Supporting Actress**: Padma. **Cameraman**: Sundernath Suvarna. **Audiographer**: Menon. **Editor**: R. Srinivas Babu. **Art Director**: Thamma Laxman. **Costume Designer**: Deniael Henrich. **Music Director**: "Ragdev". **Lyricist**: B. Rama Kirdian. **Male Playback Singers**: Manu/Narashimha Nayak **Female Playback Singers**: Manjula Gururaj, Chaya, Nayana **Choreographer**: Satish Kamala.

Patel and his wife are a benevolent couple in a village. They have two sons, one a Doctor by profession at Mangalore by name Ramu and the other, Shyamu, an employee in USA.

Sikvera the school-master dedicates himself to the welfare of that village, on his appointment as a school teacher. He has a good rapport with Patel.

Choma hailing from a backward community and a widower is employed in Patel's estate and he has three children, Kargi, a young unmarried daughter, Nakyura, studying law at Mangalore under Ramu's shelter and Lingappa, a student.

Naganna, who is engaged in illicit liquor business, is raided by a Police Inspector, Ramakrishna. Naganna after coming out from the jail with the influence of the local MLA plots the resignation of Ramakrishna.

In line with the Land Reforms Act, villagers are submitting declarations to the Government for owning the lands they were cultivating. Sesha, a backward community person also submits his declaration which affects his employer, Naganna, and in the process they have a brawl. Sesha relates to Patel the incident, who upholds his stand and supports him. Enraged Naganna vacates Angara, a well-known person from his house but Patel provides shelter to him.

Patel withdraws his nomination from the election contest to encourage the younger generation. Patel also provides accomodation to an orphan, Babu, and Babu falls in love with Kargi, who is also an employee in Patel's estate. Patel takes measures to arrange this inter-caste marriage.

Choma's son Nakyura on visiting the village is enticed by Naganna and makes him work against Patel.

Inspite of Naganna's money power Patel's candidate wins the election and Naganna indulges in illicit liquor manufacturing and in a scuffle he kills policemen in a staged lorry accident. One day, when Kargi in alone at home, taking advantage of her loneliness Naganna tries to rape Kargi; her brother Nakyura returns home and saves her. Naganna threatens that he would defame Kargi and brand her as a prostitute in the village and Nakyura becomes helpless.

Next morning Choma's dead body is found in a well in which he drowned after hearing of the intended wicked act of Naganna. Nakyura begs the pardon of Patel. Nakyura decides to teach a lesson to Naganna. Naganna tries to kill Nakyura and sets fire to the village in the night. The poor people loose their property. Kargi gets burnt. Babu also dies in the engulfing fire, while rescuing the innocent victims.

Naganna's business place is destroyed under the leadership of the school master and Naganna surrenders to Patel. The entire village is turned to ashes by the devilish act of Naganna, but Patel prays all the same for the prosperity and welfare of the villagers in the future.

चराचर

बंगला/रंगीन/86 मिनट
निर्माता : गोप मूवीज़ प्रा.लि.। **निर्देशक/पटकथा :** बुद्धदेव दासगुप्ता। **मुख्य अभिनेता :** रजत कपूर। **मुख्य अभिनेत्री :** लाबोनी सरकार। **सह अभिनेता :** साधु मेहर। **सह अभिनेत्री :** इन्द्राणी हलदर। **कैमरामैन :** सौमेन्दु राय। **ध्वनि आलेखक :** ज्योति चटर्जी, अनूप मुकर्जी। **संपादक :** उज्जल नंदी। **कला निर्देशक :** मित्रा। **संगीत निर्देशक :** विश्वदेव गुप्ता।

कई पीढ़ियों तक, लखिन्दर के परिवार के लोग दूसरे देशों से आने वाले पक्षियों को पकड़ कर और उन्हें बेचकर अपना जीवन-यापन करते थे। फिर भी, इस कार्य की प्रक्रिया के दौरान लखिन्दर को पक्षियों से प्रेम होने लगता है। वह सोचता है कि वे दूसरे ध्रुवों से आए हुए पर्यटक हैं।

चार वर्ष पूर्व, लखिन्दर ने अपने तीन वर्षीय बेटे नेताई को एक मरा हुआ पक्षी पकड़े हुए देखा था। जब उससे पूछा गया तो नेताई ने बताया कि वह उसे दफनाने जा रहा है ताकि वह खिलखिलाते पक्षियों की तरह वृक्ष के रूप में पैदा हो सके। उसके अगले ही दिन, नेताई भी मर जाता है। उसके पिता उसकी बात को सोचकर हैरान थे कि वह क्या बनेगा?

अपने पुत्र की मृत्यु, के पश्चात्, लखिन्दर पक्षियों से इतना प्रभावित होता है कि अब सदियों से चले आ रहे व्यापार में उसे कोई दिलचस्पी नहीं रह जाती। वह अपनी पत्नी सारी के नटबर के साथ विकसित हो रहे निकट संबंधों में भी कोई हस्तक्षेप

नहीं करता जो पकड़े हुए पक्षियों को इकट्ठा करता है और उन्हें शाश्मल नाम के बिचौलिए को बेच देता है। लखिन्दर का वरिष्ठ सहयोगी भूषण उसे सचेत करने का प्रयत्न करता है। परन्तु लखिन्दर उस की ओर ध्यान नहीं देता। वह पकड़े हुए पक्षियों में से आधिकांश को छोड़ देता है और शाश्मल के लिए कुछ ही पक्षी रख देता है। सारी अपने पति को चाहती है परन्तु पक्षियों के प्रति उसका अजीब आकर्षण उसे अपनी पत्नी से दूर कर देता है। सारी उससे दूर हो जाती है।

अन्त में जब लखिन्दर को यह लगता है कि कहीं वह उससे हमेशा के लिए वंचित न हो जाए, तो वह और पैसा कमाने के लिए कलकत्ता के एक पक्षियों के व्यापारी को सीधे ही पक्षी बेचने का दु:खद निर्णय लेता है। कलकत्ता में, उसे उस समय अपने जीवन का गहरा सदमा पहुंचता है, जब व्यापारी के घर में पक्षी पूजा के धार्मिक कृत्य के बाद दोपहर के भोजन में उन्हें उन्हीं पक्षियों का पका हुआ मीट परोसा जाता है जिन्हें वह अपने गांव से लाया था। लखिन्दर अब इस व्यक्ति के पास पक्षी लाकर बेचना बंद कर देता है। वह खाली जेब घर लौटता है। उसकी संवेदनशक्ति इतनी बिगड़ जाती है कि वह पूरी तरह सनकी हो जाता है, वह पक्षी पकड़ता है और बाद में उन्हें छोड़ देता है।

सारी के नटबर के साथ भाग जाने की खबर भूषण की बेटी गौरी, लखिन्दर को देती है। वह लखिन्दर के नम्र स्वभाव के लिए उसकी प्रशंसा करती है और सारी को खो देने का उसका दुख देखकर उसके प्रति अपना प्यार व्यक्त करती है। लखिन्दर उस के प्यार के प्रति कोई प्रतिक्रिया नहीं करता। भूषण उसे इस स्थिति से उबारने के लिए लखिन्दर को उकसाता है कि वह सारी को वापिस ले आए। नटबर के साथ उसकी मोटर साईकिल पर जाते हुए उसका लखिन्दर के साथ सामना हो जाता है। अचानक भावावेश में आकर वह सारी को उतरने का आदेश देता है और घर वापिस आने के लिए कहता है। वह अपने प्रतिद्वन्दी का गला लगभग दबा देता है, सारी अपने प्रेमी के जीवन की प्रार्थना करती है और वह लखिन्दर के साथ जाने के लिए राज़ी हो जाती है। कुछ कदम चलने के बाद सारी उससे पूछती है कि वह उसे क्यों चाहता है। लखिन्दर के पास इस

का कोई उत्तर नहीं होता, इसलिए वह उसे नटबर के पास वापिस जाने के लिए कहता है, जो कि उसकी प्रतीक्षा कर रहा होता है।

लखिन्दर अपनी खाली पड़ी झोपड़ी में वापिस लौट जाता है। उस रात, उसके कमरे में पक्षी ही पक्षी आते हैं, जो अपने पंखों से उसे अपना अंतिम आश्रय देते है।

CHARACHAR

Bengali/Colour/86 min
Producer : Gope Movies Pvt. Ltd.. **Director/Screenplay** : Buddhadeb Das Gupta. **Actor** : Rajat Kapoor. **Actress** : Laboni Sarkar. **Supporting Actor** : Sadhu Meher. **Supporting Actress** : Indrani Halder. **Cameraman** : Soumendu Roy. **Audiographer** : Jyoti Chatterjee, Anup Mukherjee. **Editor** : Ujjal Nundy. **Art Director** : Shatadal Mitra. **Music Director** : Biswadeb Das Gupta.

For generations, the men in Lakhinder's family had caught and sold migratory birds for a living. In the course of this work, however, Lakhinder comes to love the birds. He imagines that they are "Visitors from other Planets."

Four years earlier, Lakhinder had seen his three year old son, Netai, carrying a dead bird in his hands. When questioned, Netai replied that he was going to bury it so that it could grow into a tree full of blossoming birds. The very next day, he himself died. What did he become, his father wondered.

After the death of his son, Lakhinder, becomes so obsessed by birds that he no longer enjoys his ancestral trade. He does not even interfere the too-close relationship which his wife, Sari, was developing with Natabar, who collects the catch and sells them to a local middleman, Shasmal. Bhushan, Lakhinder's elderly colleague, tries to alert him, but Lakhinder's mind is elsewhere. He sets free most of the birds that he catches and keeps only a few for Shasmal. Sari is fond of her husband, but his strange attraction to birds alienates him from her. Sari drifts away from him.

When Lakhinder finally realises that he might lose her forever, he takes the painful decision to earn more money by selling birds directly to a Calcutta-based bird-dealer. In Calcutta, he gets the shock of his life when at lunch after the rituals of bird-workship at the trader's house, they are served the cooked meat of the very birds he had brought from his village. Lakhinder cannot bring himself to sell birds to this man any more. He returns home with empty pockets and a sensibility so shaken that he becomes completely obsessed and catches birds only to release them later.

The news that Sari has left him for Natabar is brought to Lakhinder by Bhushan's daughter, Gouri. She adores Lakhinder for his gentle nature and, seeing his grief over the loss of Sari, expresses her love for him. Lakhinder does not reciprocate.

Bhushan, in an effort to make him snap out of it, provokes Lakhinder to try to get Sari to return. Lakhinder encounters her travelling on a motorcycle with Natabar. In a sudden fit of rage, he orders Sari to get down and come home with him. He almost throttles his rival and, begging for her lover's life, Sari agrees to go with Lakhinder. After taking only a few steps, Sari asks him why he wants her. Lakhinder has no answer, and tells her to go back to Natabar, who is waiting for her.

Lakhinder returns to his empty hut. That night, birds and birds and birds fly into the room, giving him the final shelter of their wings.

चिन्नरी मुथा

कन्नड़/ रंगीन / 90 मिनट

निर्माता : नंदकुमार, सरोजा, नागिनी नागभरणा। **निर्देशक :** टी. एस. नागभरणा, सी. अस्वथ। **कहानी- संवाद-गीत:** डा. एच.एस. वेंकटेश मूर्ति। **छायांकन:** बी सी गौरीशंकर। **संगीत निर्देशक :** सी. अस्वथ। **संपादक:** सुरेश उर्स। **कला निर्देशक:** शशिधर अडपा, अप्पया। **वेशभूषा डिज़ाइनर:** नागिनी नागभरणा। **कलाकार :** विजय राघवेन्द्र, दत्तात्रेय, शांतम्मा, कृष्णे गोवदा, अविनाश, श्रीधर, सुधा रानी, शिवम्, सुंदरराज, नागिनी नागभरणा, बेबी स्मिता।

प्रत्येक बच्चा प्रच्छन्न प्रतिभा से भरपूर होता है। उचित समय पर तैयार करने, उचित प्रयोजन के लिए काम में लगाने और उचित मार्ग में चलाने से यह संभव है कि बच्चे के भीतर की ''शक्ति'' को जागृत करके उसे उत्कृष्टता की ऊचांइयों तक पहुँचा जा सके। उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए और मार्ग साफ होना चाहिए। यही बात चिन्नरी मुथा में दिखाने की कोशिश की गई है।

मुथा एक संवेदनशील युवक है। वह समाज के निम्न स्तर से सबंधित है। वह अपनी दादी के साथ रहता है जो जलाने की लकड़ियाँ बेचकर बड़ी मुश्किल से अपनी थोड़ी-सी कमाई में गुजारा करती है।

जीवन में तेज भागना मुथा का अभिन्न अंग था। लेकिन न ही वह और न ही उसके इर्द-गिर्द के लोग उसकी इस सहज प्रतिभा से अवगत थे। दादी के मरने के पश्चात् प्रसन्नचित मुथा अकेला हो गया। गाँव के मुखिया के घर में बंधुआ मजदूर बन गया। वह न केवल दादी के प्यार और देखभाल से बल्कि बाहर जाकर अपने मित्रों के साथ खेलने की स्वतंत्रता से भी वंचित हो गया। वह गाँव के मुखिया के पशुओं को जंगल में चराने के लिए ले जाने के लिए उसे तैयार कर लेता है। अब वह जंगल में अपने मित्रों से मिल जाता है। उसकी खुशी की सीमा नहीं रहती।

एक दिन जब वे खेल रहे थे, एक गाय भटक जाती है। इसके परिणामों से डरकर, वह गाँव से भागकर एक बड़े शहर में आ जाता है। यहाँ उसे हरेक चीज अजीब लगती है। वह वहाँ एक ऐसे युवा लड़कों के दल में फँस जाता है जो ''दादा'' की स्नेहपूर्ण देखभाल और योग्य मार्गदर्शन में जूते चुराने का काम अपनी जीविका कमाने के लिए करते हैं। वह अकेला बूढ़ा आदमी है जो अपनी खुशी इन युवा बच्चों के साथ रहने में पाता है।

एक दिन, जब स्टेडियम से चुराए हुए जूते लेकर मुथा भाग रहा होता है, दौड़ने का प्रशिक्षण दे रहे पेशेवर प्रशिक्षक सावंत द्वारा पीछा करके पकड़ लिया जाता है। मुथा को चोर समझने के स्थान पर सावंत उसमें महान् धावक के गुण देखता है। वह खुशी से पागल हो जाता है। अंत में, उसे एक ऐसा आश्रित मिल जाता है जिसकी वह लगातार खोज कर रहा था। सावंत, मुथा को अपनी देखरेख में ले लेता है और उसके दौड़ में भाग लेने के लिए प्रशिक्षित करना प्रारम्भ करता है। धीरे-धीरे और नियमित अभ्यास से मुथा एक सफल धावक बन जाता है और कठोर प्रशिक्षण और अध्यवसाय से राज्य-स्तर की प्रतियोगिता में 'स्वर्णपदक' जीत

लेता है। वह दादा के उन सभी बच्चों को भी सावंत के कैंप में लाना चाहता है ताकि वे भी उस प्रयोजन मूलक जीवन का अनुभव प्राप्त कर सकें जिसका अनुभव उसने किया है। वह दादा को इसके लिए राज़ी करता है और सावंत भी दादा को कायल करता है। बच्चे, मुथा के साथ आ जाते हैं। सावंत उन सभी को प्रशिक्षित करके रिले-दौड़ के लिए एक अच्छी टीम तैयार करता है। टीम अखिल भारतीय प्रतियोगिता में रिले-दौड़ में जीतती है।

इस फ़िल्म में गीत 8-12 आयु वर्ग के बच्चों द्वारा गाए गए हैं।

CHINNARI MUTHA

Kannada/Colour/90 min
Producers: Nanda Kumar/Saroja Nagini Nagabharana. **Director:** T.S. Nagabharana. **Screnplay:** T.S. Nagabharana, C. Aswath. **Story-Dialogue-Lyric:** Dr. H.S. Venkatesha Murthy **Cinematography** : B.C. Gowrishankar. **Music Director:** C. Aswath. **Editor:** Suresh Urs. **Art Directors:** Shashidhar Adapa, Appaia. **Costume Designers:** Nagini Nag Bharana **Cast:** Vijaya Raghavendra, Dattatreya, Shantamma, Krishnegowda, Avinash, Sreedhar Sudharani, Shivaram, Sunder Raj, Nagini NagBharana, Baby Smitha

Every child is full of potential talents. Tapped at the right time, harnessed for the right purpose and monitored in the proper path, it is possible to awaken the "achiever" inside the child, leading to great heights of excellence. In this process, just love and care not enough. The objective should be clear and the path must be cleared. This is what the film "Chinaari Mutha" tries to project.

Mutha is a vibrant young boy. He belongs to the lower strata of society. He lives with his grandmother, who is barely able to manage with small earnings by selling firewood.

Running fast was an integral part of Mutha. But neither he nor the people around him were aware of this innate talent.

The playful Mutha becomes a lonely soul after the grandmother dies and becomes a bonded labourer in the house of village-head. He is not only missing the love and care of grandmother, but also the freedom to go out and play with his friends. He manages to coax the village-head into permitting him to take the cattle to forest for grazing. Now he is back with his friends in the forest. His joy knows no bounds.

One day, while they were playing, one of the cows goes astray. Frightened of consequences, he runs away from the village and ultimately finds himself in a big city. Everything is a strange experience for him here. He gets into a group of young boys engaged in shoe-lifting as a livelihood under the loving care and able guidance of "Daada". He is a lonely old man, who finds his own happiness in the company of these young lads. One day, when Mutha is running away with stolen shoes from a stadium, he is chased and caught by Saavant, a professional coach training athletes in running. Instead of a thief,

Saavant sees the potential of a great runner in Mutha. Saavant takes Mutha under his care and starts training him for running race. Slowly and steadily, Mutha comes up as an acknowledged runner and with hard training and perseverence, goes on to win the Gold Medal in the state-level competition. He wants to bring all those Daada's boys also into Saavant's camp, so that they can also experience the thrill of a purposeful life as he has experienced. He persuades Daada and Saavant also convinces Daada. The boys join Mutha. Saavant trains them all and creates a fine team for the relay races. The team wins the relay race in an all-India competition.

The songs in this film are sung by children in the age group of 8-12 years.

डर

हिंदी /रंगीन /18 मिनट

निर्माता, निर्देशक : यश चोपड़ा। **पटकथा :** हनी ईरानी। **मुख्य अभिनेता:** सन्नी दिओल, शारुख खान। **मुख्य अभिनेत्री :** जूही चावला। **सह अभिनेता :** अनुपम खेर। **सह अभिनेत्री:** तनवी आज़मी। **कैमरामैन :** मनमोहन सिंह। **ध्वनि आलेखक :** अनुज माथुर। **संपादक :** केशव नायडु। **कला निर्देशक :** सुधेन्दु राय। **वेशभूषा डिज़ाइनर:** गौरी खान, नीता लुल्ला। **संगीत निर्देशक :** शिवकुमार शर्मा, हरि प्रसाद चौरसिया। **गीतकार :** आनंद बख्शी। **पार्श्व गायक :** हरिहरण, सुरेश भौंसले, उदित नारायण झा, विनोद राठौड़, अभिजीत। **पार्श्व गायिका :** लता मंगेशकर, पामेला चोपड़ा, कविता कृष्णामूर्ति, अल्का याग्निक। **नृत्य संयोजक :** सरोज खान, बी.एच. तरुणकुमार ।

डर यश चोपड़ा द्वारा बनाई गई सौंदर्यानुभूति विषयक फ़िल्मों की श्रृखंला में एक और फ़िल्म है।

डर, हर प्यार करने वाले के दिल में होता है। यह डर कि आपके प्यार को दूसरी ओर से प्यार नहीं मिलेगा, यह डर कि कहीं आप उसे खो न दें जिसे आप प्यार करते हैं, यह डर कि कहीं तुम्हारी प्रियतमा का दिल न बदल जाए। संक्षेप में, प्रत्येक प्रेम-कहानी में डर एक खलनायक के समान है। परन्तु डर में, डर अन्ततः इच्छा, सनक तथा बलिदान की व्याख्या है।

इस फ़िल्म का मुख्य पात्र है सुनील, जो एक बहादुर और ईमानदार युवक है जो कि जलसेना की सर्वोतोकृष्ट मेरीन कोमांडो फोर्स का एक अधिकारी है और दूसरा मुख्य पात्र राहुल है, जो कि मानसिक तौर पर विकृत युवक है। इन दोनों के बीच किरण है जो सुनील तथा राहुल के बीच झगड़े का कारण बनती है। सुनील, किरण को प्यार करता है जो बदले में उसे भी प्यार करती है और वे दोनों बड़ों के आशीर्वाद से शादी करना चाहते हैं।

परन्तु किरण को यह पता नहीं चलता कि राहुल को भी उनके कालेज के दिनों से उससे अत्यधिक प्यार है। परन्तु राहुल जो कि एक जटिल व्यक्तित्व में ढल जाता है, किरण को अपना प्यार व्यक्त नहीं कर सकता। जब उसे सुनील और किरण की शादी करने की योजना का पता चलता है तो उसकी सनक उस पर सवार हो जाती है और वह उन्हें अलग-अलग रखने की कोशिश करता है। वह ऐसा करने से अपने आप को रोक नहीं सकता। अपनी सनक में वह इस तथ्य को नज़र अंदाज कर देता है कि किरण उससे प्यार नहीं करती और वह सुनील को सच्चा प्यार करती है। अन्ततः, प्रशिक्षित कोमांडो के रूप में सुनील की समझ और निपुणता राहुल पर हावी होने में सफल होती है और उसकी तथा उसकी प्रियतमा का जीवन बच जाता है।

डर, किरण की कहानी है जो एक व्यक्ति के प्यार तथा दूसरे व्यक्ति की सनक के बीच फंस जाती है। वह एक के लिए और दूसरे के लिए डरती है। एक का मतलब प्यार तथा दूसरे का मतलब जीवन है। फिर भी, इस प्यार और जीवन की लड़ाई में प्रमुख जीत प्यार की होती है, क्योंकि प्यार जीवन और मृत्यु में हमेशा जीवित रहता है।

DARR

Hindi/Colour/180 min.
Producer/Director: Yash Chopra. **Screenplay** : Honey Irani. **Leading Actor** : Sunney Deol, Shah Rukh Khan. **Leading Actress** : Juhi Chawla. **Supporting Actor** : Anupam Kher. **Supporting Actress** : Tanvi Azami. **Cameraman** : Manmohan Singh. **Audiographer** : Anuj Mathur. **Editor**: Keshav Naidu. **Art Director** : Sudhendu Roy. **Costume Designer** : Gauri Khan, NeetaLulla. **Music Director** : Shiv Kumar Sharma, Hari Prasad Chaurasia. **Lyricist** : Anand Bakshi. **Male Playback Singers**: Hariharan, Sudesh Bhosle, Udit Narayan Jha, Vinod Rathod, Abhijeet. **Female Playback Singer** : Lata Mangeshkar, Pamela Chopra, Kavita Krishnamoorthy, Alka Yagnik. **Choreographer** : Saroj Khan, B.H. Tarun Kumar.

Darr is yet another in the line of aesthetically made films of Yash Chopra.

Darr is fear. And fear beats in every lover's heart. Fear that your love may not be reciprocated, fear that you may lose the one you love, fear that your beloved could have a change of heart, In short, Fear is the villain in every love story. But in "Darr" fear is the ultimate expression of passion, of obsession and of sacrifice.

The main protagonists in this film are Sunil, a brave, upright young man who is a officer of the elite Marine Commando Force of the Navy and the other is Rahul, a mentally disturbed youngster. Between the two is Kiran, who becomes the cause of the strife between Sunil and Rahul. Sunil loves Kiran, who reciprocates his love and they both plan to marry with the blessings of the elders.

But, unknown to Kiran, Rahul has also nursed an obsessive love for her since their college days. But, Rahul, a complex individual, who is unable to express his love to Kiran, when he finds out about Sunil and Kiran's plans to marry, the obsession comes to the forefront as he tries his best to keep them apart. He just cannot stop. In his obsession, he overlooks the fact that Kiran does not love him and that she truly loves Sunil. Ultimately, it is Sunil's intelligence and his skills as a trained Commando that help him to overpower Rahul and save his and his beloved's life.

Darr is Kiran's story, who is caught between one man's love and another man's obsession. She loves one and fears the other. One stands for love and the other for ruon. However, in this battle, the supreme victor is love, because love always lives, in Life and in Death.

देवरा काडु

कन्नड़/रंगीन/12 मिनट
निर्माता: पट्टाभी रामा रेड्डी। **निर्देशक/पटकथा लेखक:** टी. पी. रमा रेड्डी **मुख्य अभिनेता:** के. टी. अब्राहम **मुख्य अभिनेत्री:** कीर्तना कुमार। **बाल कलाकार:** कान्ता राय। **कैमरामैन:** नवरोज। **ध्वनि आलेखक:** कृष्णमूर्ति। **संपादक:** सुरेश उर्स। **कला निर्देशक/वेशभूषा डिजाइनर:** जी मूर्ति। **संगीत निर्देशक:** कोणार्क रेड्डी

मारा, केंची और उनका बेटा देवा जंगल की अपनी उन्मूलित मातृ-भूमि को छोड़कर देते हैं और ऐसे स्थान पर प्रवास करने लगते हैं जहां सरकार उन्हें पट्टे पर एक एकड़ बंजर भूमि और बीज आदि खरीदने के लिए कुछ नकदी देती है। वे एक दूरस्थ झील से पानी लाकर कड़ी मेहनत करते हैं और थोड़ी सी फसल उगा लेते हैं। परन्तु भयानक सूखा पड़ता है। मारा अपनी फसल को बचाने के चक्कर में मर जाता है और केंची तथा देवा नगर में चले जाने के लिए बाध्य हो जाते हैं।

केंची कुछेक घरों में पार्ट-टाईम काम ढूंढ लेती है और देवा पहले चीथड़े चुनता है और फिर बाद में साईकिल-रिक्शा चालक बन जाता है। उन पर नगर का व्यापक प्रभाव पड़ता है और वे एक-एक पैसा जोड़ने लगते हैं ताकि वे वापिस अपने घर जा सकें। केंची इस बात को स्वीकार करती है कि यदि उनकी भूमि में एक कुआं खोदा जाए तो वे सूखे के समय में भी जिंदा रह सकते हैं। जब वे काफी पैसा बचा लेते हैं, केंची का स्वास्थ्य ठीक न होने पर भी, वे वापिस अपने गांव जाने का निर्णय लेते हैं।

केंची बीमार पड़ जाती है और देवा उसे सरकारी अस्पताल में भर्ती करा देता है। केंची के नाक और मुहं में हर प्रकार की ट्यूबें डाली हुई हैं। वह चाहती है कि उसे अपने घर ले जाया जो और वह घुटन भरे अस्पताल से ले जाता है औ उसे अपने रिक्शा में लाद देता है और अपने भूमि के टुकड़े पर पहुंचने के लिए तेजी से रिक्शा चलाता है।

केंची रास्ते में ही मर जाती है। देवा का दिल टूट जाता है। वह उसकी अन्त्येष्ठी सड़क के किनारे कर देता है। वह उसकी भस्म इकट्ठा करता है और अपनी भूमि पर पहुँचने के लिए अपनी यात्रा जारी रखता है। रास्ते में वह स्वामी को अपने रिक्शा में बिठा लेता है जो पैदल ही कुंभ के मेले में जा रहा होता है। जब वह अपनी मातृ भूमि पर पहुँचता है तो वह अपने भूमि के टुकड़े को नहीं सकता और उसके पास जो पट्टा होता है उससे उसे कोई लाभ नहीं होता। स्वामी उसे यह सुझाव देता है कि उसे किसी पट्टे की जरूरत नहीं है और वह अपनी पसंद का कोई भी भू-भाग अधिग्रहण कर सकता है। वह कुएं के स्थान के लिए भी शगुन निकालता है और देवा से विदा लेता है।

देवा अकेला रह जाता है। वह कुआं खोदता है और उसे पानी मिल जाता है। वह जिंदा रहने के लिए फसल पैदा करता है। वह हर रोज़ बिना नागा पादगिरियों से इकट्ठा किए हुए बीजों में से एक सौ बीज चुनता है और उन्हें बो देता है तथा पानी देता है। वर्षा हो या गर्मी हो, वह हर रोज़, हर माह और हर वर्ष यह काम करता चला जाता है। जब स्वामी 2 वर्ष बाद लौटता है, तो केवल एक ही आदमी की मेहनत से एक शानदार वन पनपे हुए देखता है।

स्वामी भी कहता है कि अपने संन्यास के दौरान वह अपनी दिव्या मां को ढूंढता रहा परन्तु उसे सफलता नहीं मिली। देवा कहता है कि वह अपने अनुभव से यह महसूस करता है कि किसी की मां, भूमि मां और दिव्या मां एक ही हैं और उनमें कोई फर्क नहीं है।

देवा मर जाता है और वह वृक्ष उगाने को अपने मिशन का काम स्वामी पर छोड़ जाता है।

DEVARA KADU

Kannada/Colour/120 min.
Producer: Pattabhi Rama Reddy. **Director/Screenplay:** T.P. Rama Reddy. **Leading/Actor:** K.T. Abraham. **Leading Actress:** Kirtana Kumar. **Child Artist:** Kantaray. **Cameraman:** Navroze. **Audiographer:** Krishnamamurthy. **Editor:** Suresh Urs. **Art Director/Costume Designer:** G. Murthy. **Music Director:** Konarak Reddy.

Mara, Kenchi and their son Deva, leave their denuded forest homeland and migrate to a place, where the government gives them the **patta** of one acre of arid land and some cash to buy the inputs . They strive hard by fetching water from a far away lake and raise a meager crop. But there is a terrible drought. Mara dies in his efforts to save his crops, Kenchi and Deva are forced to migrate to the city.

Kenchi finds some part-time jobs in some houses and Deva becomes a ragpicker and later a cycle-rickshaw driver. The city has a traumatic effect on them and they save every paise so that they can return to their land. Kenchi is convinced that if a well is dug in their land, they can survive even in a drought year. After they save enough money, even though Kenchi's health is poor, the decide to return.

Kenchi falls ill and Deva admits her in a government hospital. All sorts of tubes are inserted into Kenchi's nose and mouth. She is keen that she should be taken to her land and not die in the "suffocating" hospital. Deva "steals" her from the hospital and puts her in his rickshaw and starts cycling all the way to their patch of land.

Kenchi dies on the way. Deva is heart-broken. He cremates her by the roadside. He gathers the ashes and continues his journey to his land. He gives a lift to Swamy, who is making his way on foot to the Kumbha Mela. When Deva reaches his homeland he is unable to identify his land and the **patta** he has with him is of no help at all. Swamy suggests to him that he does not need any **patta** and he can very well occupy any patch of land he desires. He also divines a spot for a well and takes leave of Deva.

Deva is all alone. He digs the well and strikes water. He raises a crop for his survival. After that, he decides to grow trees. Every day without fail he selects one hundred perfect seeds from those he collects in the foothills and plants them and waters them. In rain or heat, he continues to do this every week, every month and year after year. By the time Swamy returns, after 20 years, a magnificent forest has grown, by the sheer labour of one man.

Swamy also says that ever since his **sanyasa**, he has in vain been searching for the Divine mother. Deva says that from his experience, he feels, that the only Mother is the Mother Earth and she is the Divine Mother also.

Deva dies leaving Swamy to carry on his mission of growing trees.

हम हैं राही प्यार के

हिन्दी/रंगीन/163 मिनट

निर्माता: ताहिर हुसैन। **निर्देशक:** महेश भट्ट। **पटकथा लेखक:** आमिर खान, रोबिन भट्ट। **मुख्य अभिनेता:** आमिर खान। **मुख्य अभिनेत्री:** जूही चावला। **सह अभिनेता:** दलीप ताहिल। **सह अभिनेत्री:** नवनीत निशान। **ध्वनि आलेखक:** मनोहर के. बंगेरा। **संपादक:** संजय संकला। **कला निर्देशक:** गप्पा चक्रवर्ती। **संगीत निर्देशक:** नदीम-श्रवण। **गीतकार:** समीर। **पार्श्व गायक:** कुमार शानु। **पार्श्व गायिका:** अल्का याग्निक

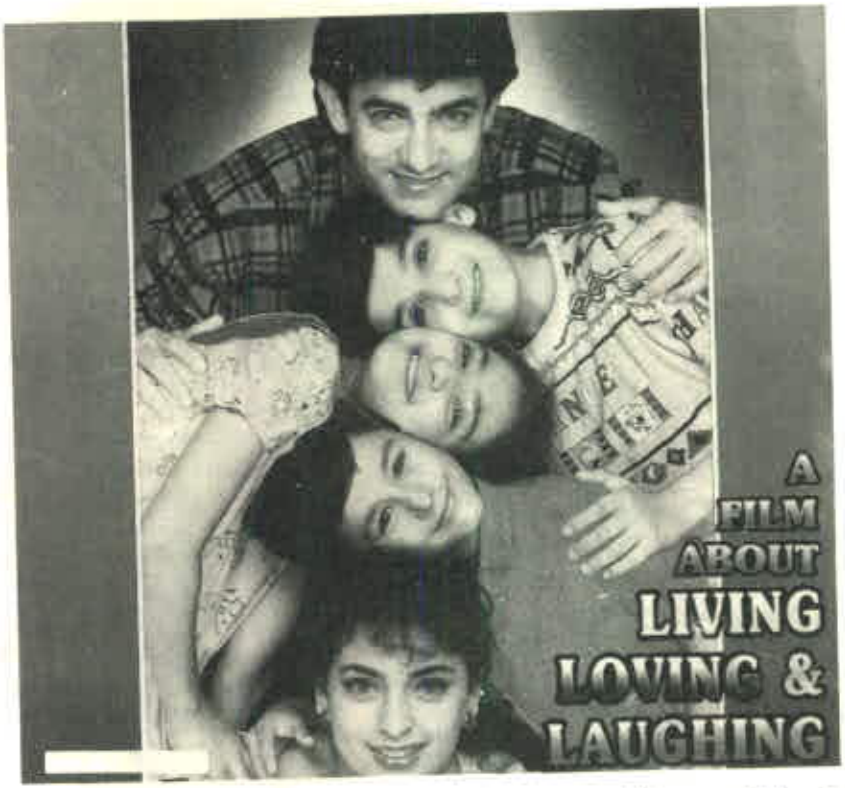

वर्ष 1993 को "अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष" घोषित किया गया। इसलिए बच्चों को प्यार और समझ से बर्ताव करने के लिए व्यस्कों में जागृति पैदा करने तथा बच्चों को जीवन की समस्याओं को हिम्मत और समर्पण से सामना करने की शिक्षा देने के लिए फ़िल्म "हम हैं राही प्यार के" का निर्माण किया गया।

राहुल, एक युवा अविवाहित, अपनी मृत बहन के छोटी उम्र के तीन बच्चों का अभिभावक बनने तथा उसकी वस्त्र-फैक्टरी के मामलों का प्रबंध करने के लिए बम्बई आता है। राहुल चूंकि स्वयं एक युवक है, इसलिए वह तीनों बच्चों द्वारा उसके साथ की जाने वाली चलाकियों को नहीं समझ पाता। वह अक्सर उनको डांट-फटकार करता है

एक रात, बच्चे (राहुल की आज्ञा न मान कर) मेला देखने के लिए घर से खिसक जाते हैं, जहां उनकी एक युवा लड़की विजयंती से भेंट होती है, जो एक अमीर दक्षिण भारतीय व्यापारी की बेटी है। विजयंती भी अपने पिता से तंग आकर, घर से भागी होती है जो उसे एक मूर्ख नर्तक के साथ शादी करने के लिए मजबूर करता है। मेले में तीनों बच्चे विजयंती को अपना मित्र बना लेते हैं और चूंकि उसके पास कोई आश्रय नहीं होता इसलिए वे उसे चुपके से अपने घर ले आते हैं। कुछ समय के लिए वे उसे छिपा देते हैं। कुछ प्रफुल्लित सिलसिलों के बाद राहुल उसे खोज लेता है। सुबकते हुए सुनाई गई उसकी कहानी पर विश्वास करते हुए वह उसे बच्चों की आया के रूप में रख लेता है। जल्दी ही राहुल और विजयंती एक दूसरे से प्रेम करने लगते हैं।

यहां विजयंती, बच्चों और मामा के बीच प्यार की कमी को महसूस करती है। वह बच्चों में अपने मामा के प्रति रवैये को बदलती है और उनके कार्य-कलापों में रुचि लेकर उनका विश्वास प्राप्त करने के लिए वह राहुल की सहायता भी करती है।

एक व्यापारी बिदनानी जिसके पास राहुल की फैक्टरी गिरवी पड़ी होती है, की बेटी माया उसके प्यार में पागल है। उसके पिता बिदनानी उससे यह सौदा करते हैं कि वह या तो उसकी बेटी से शादी कर ले या फिर अपनी बरबादी देखे। राहुल, विजयंती के अपने प्यार तथा अपनी फैक्टरी को बचाने के लिए माया से शादी करने की स्थितियों में फंस जाता है।

बच्चे राहुल की शादी विजयंती से होना बेहतर समझते हैं। वे 15 दिन में बिदनानी के एक लाख कमीजों के आर्डर को पूरा करने के लिए फैक्टरी में दिन-रात कड़ी मेहनत करते हैं। राहुल, विजयंती तथा बच्चे अपने लक्ष्य को पूरा करके फैक्टरी को बचा लेते हैं। यह फ़िल्म बच्चों और व्यस्कों के परस्पर अभिनय की एक शानदार फ़िल्म है।

HUM HAIN RAHI PYAR KE

Hindi/Colour/163 min.
Producer: Tahir Husain. **Director**: Mahesh Bhatt. **Screenplay**: Aamir Khan/Robin Bhatt. **Leading Actor**: Aamir Khan. **Leading Actress**: Juhi Chawla. **Supporting Actor**: Dalip Tahil. **Supporting Actress**: Nameet Nishan. **Audiographer**: Manohar K. Bangera. **Editor**: Sanjay Sankla. **Art Director**: Gappa Chakraborty. **Music Director**: Nadeem-Shravan. **Lyricist**: Sameer. **Male Playback Singer**: Kumar Sanu. **Female Playback Singer**: Alka Yagnik.

The year 1993 was declared as the "International Children's Year." So, "Hum Hain Rahi Pyar Ke" was conceived to create awareness in adults to treat children with love and understanding and to educate children how to face problems of life with courage and dedication.

Rahul, a young bachelor, leaving his studies, flies down to Bombay to be the guardian of his deceased sister's three children of tender age, and also to manage the affairs of her garment factory. Rahul, himself being young, cannot understand the pranks played on him by the three children. Frequently he rebukes them.

One night, the children sneak out of the house (disobeying Rahul) to visit a fair, where they meet youngish Vyjayanti, the daughter of a rich South Indian businessman. Vyjayanti too, fed up with her father, forcing her to marry a nincompoop dancer, has run away from her home. At the fair, the three children make friends with Vyjayanti and smuggle her into their house, as she has no shelter. For a while, they hide her. After some hilarious sequences, Rahul discovers her. Believing her sob story, he engages her as the governess for the children. Soon Rahul and Vyjayanti fall in love.

Here Vyjayanti realises the lack of love and affection between the uncle and the children. She reforms the children's attitude towards their uncle and she also helps Rahul to gain their confidence by taking interest in their activities.

Maya, the daughter of one Mr Bidnani, a businessman, to whom Rahul's factory is mortaged is madly in love with Rahul. Her father Bidnani, bargains with Rahul that either he marries his daughter or suffer his wrath. Rahul is caught between his love for Vyjayanti and saving the factory by marrying Maya.

The children prefer Rahul to marry Vyjayanti. They work hard day and night in the factory to meet the challenge of Bidnani's order of one lakh shirts in 15 days. Rahul, Vyjayanti and children achieve their target and save the factory. Here is fine interplay between children and adults.

इन्द्रधनुरा छाई

उड़िया /रंगीन / 112 मिनट

निर्माता : जुगल देवता । **निर्देशक/पटकथा:** सुशांत मिश्रा। **मुख्य कलाकार :** रवीनदास। **मुख्य अभिनेत्री :** विजनी मिश्रा । **सह अभिनेता :** देवा दास। **सह अभिनेत्री :** सोनिया महापात्र। **कैमरामैन:** जुगल देबता । **ध्वनि आलेखक :** हिमांशु खतुआ। **संपादक :** चक्रधर साहू। **कला निर्देशक :** असीम बसु। **कला निर्देशक:** विकास दास।

उड़िया में ''इन्द्र धनुरा'' का अर्थ है ''शेडोज़ आफ़ द रेनबो'' इस शीर्षक के साथ फ़िल्म में भुवनेश्वर के बदलते हुए परिवेश में कुछेक चरित्रों के जीवन के क्षणों को दर्शाया गया है।

एक युवा विधवा, विजया कभी न बदलने वाले भुवनेश्वर के एक पुराने मेंशन में कुछ परिवारों के साथ किराएदार के रूप में रहती है।

21-22 वर्षीया सोनिया भूमितल पर अपने माता-पिता के साथ रहती है। सोनिया का पिता किसी सरकारी दफ़्तर में काम करता है। कम्पनी एग्जेक्टिक देवा सामने रहता है और वह ऐसा पड़ोसी है ''जिसे कोई नहीं जानता'' । सोनिया और विजया सहेलियां हैं। विजया पुराने नगर में, पास के मठ में एक बूढ़ी विधवा नीला मौसी के पास काम करती है। विजया, प्रताप से प्यार करती है जो कि एक अतिवादी स्कूल-शिक्षक है। वह इस संघर्ष में उलझी हुई है कि क्या उसे फिर से विवाह कर लेना चाहिए या नहीं। उसे यह डर लगता है कि कहीं वह बूढ़ी विधवा की तरह ही न हो जाए और उसे मठ में ही जीवन बसर करना पड़ जाए। दूसरी ओर, प्रताप के साथ नए बंधन में बंधने से भी वह डरती है। प्रताप उसके निर्णय की प्रतीक्षा करता है। सोनिया, देवा पर मुग्ध हो जाती है। एकदिन, देवा को अपनी कम्पनी की सहयोगी, आशा के साथ उसके घर में देखा जाता है। सोनिया विचलित हो जाती है और समाज में महिला की भूमिका पर विजया के साथ कई बार विचार-विमर्श करती है।

एक दिन वह अपने घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर पुराने नगर की गलियों में साईकिल पर चक्कर लगाती है। सोनिया भी नीला मौसी के पास काम करने के लिए विजया के साथ जाती है। सोनिया इस स्थिर जीवन से तंग आ जाती है जिसे हर आदमी जी रहा है, देवा अपनी कम्पनी के उत्पाद को निर्धारित लक्ष्य के अनुसार बेचने में व्यस्त है। आशा भी इसी चक्कर में पड़ी है। सोनिया के पिता अपनी बेटी की उम्र की एक युवा और कार्यरत लड़की पर नज़र रखते हुए देखा जाता है।

सोनिया के पिता और उसके मित्र अपने आप को ''उत्तम पुरुष'' मानते हैं। सोनिया की मां आमतौर पर घरेलू कार्य और पूजा में व्यस्त रहती है और कभी-कभी वह पड़ोस की औरत से भी गप-शप करती है।

एक दिन सोनिया नगर में नए विस्तार-क्षेत्र में जाती है जहां हजारों खाली फ्लैट्स पड़े हुए हैं। वह एक अजनबी से मिलती है और उसके मिलने के बाद वह प्रोत्साहित हो जाती है। अजनबी ''भीमा भोई'' की दो एक कविताएं सुनाता है। सोनिया अजनबी को विजया के पास ले आती है। विजया, सोनिया और अजनबी पुराने भुवनेश्वर के वास्तुकला परक सौंदर्य के चारों ओर घूमते हैं। तब अजनबी गायब हो जाता है।

वर्षा आती है। अजनबी से प्रेरित हो कर विजया, प्रताप से शादी कर लेती है। नीला मौसी अकेली रह जाती है। अब उसकी देखभाल मठ की एक सेविका करती है। सोनिया अच्छे क्षणों की प्रतीक्षा करती है। समय का प्रवाह चलता रहता है।

INDRADHANURA CHHAI

Oriya/Colour/112min
Producer: Jugal Debata **Direction/ Screeenplay**: Susant Mishra **Leading Actor**: Rabin Das **Leading Actress**: Vijani Mishra **Supporting Actor**: Deba Dash **Supporting Actress**: Sonia Mahapatra **Cameraman**: Jugal Depata **Audiographer**: Himanshu Khatua **Editor**: Chakradhar Sahoo **Art Director**: Asim Basu **Music Director**: V. Kash Das.

"Indradhanura Chhai" in Oriya means "Shadows of the Rainbow" The film with this title tries to depict moments from the lives of a few characters in the changing world of Bhubaneshwar.

Vijaya, a young widow, stays as a tenant with a few families in an old mansion in the ever-changing town of Bhubaneswar.

Sonia, a girl in her early twenties stays with her father and mother in the ground floor. Sonia's father works in a government office. Deba, a company executive, stays in the front, as an "unknown" neighbour. Sonia and Vijaya are friends. Vijaya serves Nila Mausi, an old widow, in a nearby monastery in the old town. Vijaya is in love with Pratap, a radical school teacher. She is torn in conflict on whether they should marry. She has the fear of becoming like the old widow and ending up in a monastery. On the other hand, she is also scared of a new bondage with Pratap.

Pratap waits for her decision. Sonia is in infatuation with Deba. One day Deba is seen in his house with Asha, his company colleague. Sonia is disturbed and has a series of discussions with Vijaya regarding a woman's role in society.

One day, she moves out of the enclosed space of the house and cycles around the old town lanes. Sonia also accompanies Vijaya to serve Nila Mausi. Sonia is fed up with the static life every one is leading. Deba is on a target spree to sell his company's product. So is Asha. Sonia's father is seen eyeing a young, working girl of his daughter's age. Sonia's father and his friends consider themselves as "Uttama Purushas." Sonia's mother is mostly busy with household work and deities and sometimes in gossip with neighbourhood woman.

One day Sonia goes to the new extensions of the city, where there are thousands of empty flats. She meets a wanderer and she is excited after meeting him. The wanderer recites a couple of poems of "Bhima Bhoi." Sonia brings the wanderer to Vijaya. Sonia, Vijaya and the wanderer move around the architectural splendour of the old Bhubaneswar. But then the wanderer goes off to wander more!

Rain comes. Inspired by the wanderer, Vijaya decides to marry Pratap. Nila Mausi is left alone. She is now looked after by attendant of the Monastery. Sonia waits for better moments. The epic flow of Time continues.

जननी

बंगला/रंगीन/120 मिनट

निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेखक : सनत दास गुप्ता। **मुख्य कलाकार :** देवेश रॉय चौधरी। **मुख्य अभिनेत्री :** रूपा गांगुली। **सह अभिनेता :** ज्ञानेश मुकर्जी। **बाल कलाकार:** सुबोजित दास गुप्ता। **छायांकर:** अनिल घोष। **ध्वनि आलेखक:** चिन्मय नाथ, सुदिप्ता बोस, संजय मुकर्जी। **संपादक:** प्रशांता डे। **संगीत निर्देशक/गीतकार :** पार्था सेनगुप्ता। **कला निर्देशक:** अशोक बोस। **पार्श्व गायिका :** रूपा गांगुली।

फ़िल्म में ऐसे अंधविश्वासों को चित्रित करने का प्रयास किया गया है जो आज भी भारत के ग्रामीणवासियों के जीवन में आते हैं जबकि देश 21 वीं शताब्दी की ओर अग्रसर है। फ़िल्म में लाल बालों और बिल्ली जैसी आंखो वाली मनमोहक चांदी की कहानी बताई गयी है। उसका पिता कराली मरे हुए बच्चों को दफ़नाया करता था। इस नीरस काम से छुटकारा पाने के लिए वह शराब और "गांजा" पीने लगा जिससे उसकी मृत्यु हो गई। घोर आपत्ति होने के बावजूद भी कि महिलाएं ऐसे काम नहीं कर सकतीं, चांदी फिर भी अपने पिता का पेशा अपना लेती है।

एक दिन एक दु:साहसी युवक मलिन्दर चांदी के जीवन में आता है। वे एक-दूसरे को प्यार करने लगते हैं और शादी करने का निर्णय लेते हैं, यद्यपि मलिन्दर के रिश्तेदार इस बंधन के खिलाफ हैं। वे एक सुखी जीवन की शुरूआत करते हैं। चांदी गर्भवती होती है और एक बेटे को जन्म देती है। इस बच्चे का नाम भगीरथ रखा जाता है।

मूलत: एक मां होने के नाते चांदी मरे हुए बच्चों को भी बहुत पसंद करती है, जिनकी अंतिम क्रिया उसके हाथों से होती है परन्तु धीरे-धीरे गांववासी उससे नफ़रत करने लगते हैं और उसे बदनाम करने के लिए यह अभियान चला देते हैं कि उसके स्पर्श से नवजात शिशुओं का अनिष्ट हो जाएगा। चांदी पर मृत बच्चों को अपना दूध पिलाने का दोष भी लगाया जाता है जो एक डाइन के लक्षण की विशेषता है। इसलिए गांववासी उसे "डाइन" कहते हैं। मलिन्दर पहले अपनी पत्नी से जुदा नहीं होना चाहता परन्तु बाद में समुदाय के दबाव के आगे झुक जाता है। चांदी को गांव से निकाल दिया जाता है और उसे गांव की सीमा के बाहर मिट्टी की झोपड़ी में रहने के आदेश दिए जाते हैं। गांववासियों द्वारा उसके पास एक साप्ताहिक खैरात भेज दी जाती है।

सात वर्ष बीत जाते हैं। दया की भीख पर आधी भूखी रहने की जी रही जिंदगी के अपने घटिया अस्तित्व से चांदी तंग आ जाती है। भगीरथ बड़ा हो जाता है। मलिन्दर, भगीरथ और चांदी का एक-दूसरे से आमना-सामना होता है परन्तु केवल भावपूर्ण दृष्टि तथा हृदय विदारक आहें ही दोनों ओर से उठती हैं परन्तु उनमें कोई बात-चीत नहीं होती। मलिन्दर अपनी पत्नी की दयनीय स्थिति पर विचलित हो जाता है और उसकी सहायता करना चाहता है परन्तु वह सामाजिक-वर्जना के विरुद्ध नहीं जाना चाहता

भगीरथ को भी इस दुखी महिला पर दया आती है, जिसे पता चल जाता है कि वह उसकी मां है। चांदी के दिन घोर निराशा में कटते हैं।

जल्दी ही चांदी का गांव वापिस आने का दिन आ

जाता है। एक दिन चांदी कुछ लोगों को रेल के ट्रेक पर लकड़ी के गट्ठे रखते हुए देखती है। वह उन्हें पहचान लेती है कि वह डाकुओं का गिरोह है। डाकू, जो डाइन की नज़र से डरते हैं, भाग जाते हैं परन्तु वे रेल-ट्रेक को लकड़ी के गट्ठों से पहले ही अवरूद्ध कर चुके होते हैं। उसे एक ट्रेन आती हुई दिखाई देती है। चांदी ट्रेन को रोकने के लिए लालटेन हिलाती है। वह समझती है कि ट्रेन को रोकने के लिए उसके पास डाइन की आलौकिक शक्ति है। परन्तु वह डाइन नहीं होती, मात्र एक मानव ही है। ट्रेन आगे बढ़ती रहती है और उसके शरीर से लांघ जाती है। इस प्रकार, मृत्यु के द्वारा उसका उद्धार होता है।

चांदी को मरणोपरांत बहादुरी का पुरस्कार दिया जाता है। भगीरथ, चांदी की ओर से पुरस्कार प्राप्त करता है और गर्व से घोषित करता है कि चांदी उसकी मां है। फ़िल्म मानव-मूल्यों को पुनःस्थापित करते हुए और अंधविश्वास तथा धर्मान्धता का मृतक-नाद बजाते हुए समाप्त होती है।

JANANI

Bengali/Colour/120 min
Producer/Director: Sanat Dasgupta **Screenplay writer:** Sanat Dasgupta **Leading Actor:** Debesh Roy Chowdhury **Leading Actress** : Rupa Ganguly **Supporing Actor:** Gyanesh Mukherjee **Child Artist:** Shuvajit Dasgupta **Cameraman:** Anil Ghosh **Audiographers:** Chinmoy Nath **Editor:** Prasant Dey **Art Director:** Ashok Bose **Music Director/ Lyricist:** Partha Sengupta **Female Playback Singers:** Rupa Ganguly Sudipta Bose.

The film attempts to hit at the supersitions that stalk life in rural India even today, when the country is said to be geared up for a leap into the 21st Century. The film tells the story of Chandi, a seductive red-head, with the cat's eyes. Her father, Karali, used to bury dead babies. To find an escape from the drudgery of his living, he resorts to liquor and "pot" which lead to his death. Chandi takes up her father's profession despite violent objections that a women is not fit for such a job.

One day, Malindar, a daredevil man comes into Chandi's life. They fall in love and decide to marry, though Malinder's relatives are opposed to this union. They set up a happy home. Chandi becomes pregnant and gives birth to a son. The child is named Bhagirath.

Chandi, basically a motherly type, adores even the dead babies, who have their last rites at her hand. But the village folk gradually develop a hatred for her and start a smear campaign that her touch will bring evil to the new-born. Chandi is also accused of breast-feeding dead babies, the characterstic trait of a witch. So, the villagers brand her a "bayen" (witch). Malinder is, at first, unwilling to part with his wife, but finally has to succumb to community pressure. Chandi is banished from the village and ordered to live in a thatched hut outside the village boundary and a weekly food-dole is sent to her by the villagers.

Seven years roll by. Chandi ekes out her wretched existence, living a life of half-stravation on the pittance of the food-dole. Bhagirath has grown up. Malinder, Bhagirath and Chandi come across each other, but there is only an exchange of soulful looks and heart-rending sighs, hardly any dialogue. Malindar is moved by the hapless state of his wife and wants to help her, but he dare not go against social taboos.

Bhagirath also pines for this distressed woman, who, he comes to know, is his mother. Chandi's days are filled with muted despair.

The day of Chandi's redemption comes soon. One day, Chandi chances upon some men putting logs on the rail tracks. She recognizes them as a band of dacoits. The dacoits, who are scared by the sight of the bayen run away, but they have already blocked the tracks with logs. A train is seen coming. Chandi waves her lantern to stop the train. She believes that she has the witch's supernatural power to stop a train. But she is no witch; just a human being. The train rushes forward and speeds over her body. Thus, she redeems herself through death.

Chandi is awarded a posthumous gallantry award, Bhagirath receives the award on Chandi's behalf and proudly declares Chandi as his mother. The film ends with a reassertion of human values, ringing the death-knell of superstition and bigotry.

कचहरी

पंजाबी/रंगीन/165 मिनट

निर्माता/पटकथा लेखक: विजय टण्डन **निर्देशक:** रविन्द्र पीपट **मुख्य अभिनेता:** गुरदास मान। **मुख्य अभिनेत्री:** रमा विज। **सह अभिनेता:** योगराज सिंह। **सह अभिनेत्री:** मिठी। **बाल कलाकार:** गौतम टण्डन। **कैमरामैन:** एस. के. जौली। **ध्वनि आलेखक:** सुभाष सहगल। **कला निर्देशक:** ज्ञान सिंह। **वेशभूषा डिज़ाइनर:** रमसन्स टेलर्स। **संगीत निर्देशक:** वरिन्दर बच्चन/सुरिन्दर बच्चन। **गीतकार:** सुरजीत पाटर/शमशीर संधु। **पार्श्व गायक:** गुरदास मान। **पार्श्व गायिका:** सरबजीत कौर। **नृत्य संयोजक:** कनु मुकर्जी **विशेष प्रभाव सृजक:** दया भाई।

कचहरी (कोर्ट) न्यायिक प्रणाली की अन्तर्निहित त्रुटियों, असफलताओं और दोषपूर्णता का उल्लेख करती है, जहां अक्सर औचित्य न्याय पर हावी हो जाता है।

जेल का जल्लाद बुद्धसिंह आतंकवादियों को एक जेल से दूसरी में हस्तांतरित करते समय उनके द्वारा मारा जाता है। इस निर्मम हत्या से उत्तेजित होकर उसका बेटा शमशीर हत्यारों की हत्या करने वाला होता है, परन्तु अपने मरते हुए पिता की सलाह पर वह हत्यारों को पुलिस के हवाले कर देता है। इन हत्यारों को स्वयं फांसी पर चढ़ाने की उसी तीव्र इच्छा से शमशीर अपने पिता के खाली पद पर जल्लाद के रूप में नियुक्त हो जाता है।

जेल में वह गुरदास से मिलता है जिसे हत्या के जुर्म में फांसी पर चढ़ाया जाता होता है, जो हत्या उसने की ही नहीं होती। शमशीर, गुरदास का दोस्त बन जाता है जो न केवल भोला-भाला है परन्तु उन सभी चीजों के लिए आदर्श है जो अच्छी और महान हैं। बिना कोई शिकायत किए वह सर्वशक्तिमान ईश्वर की इच्छा को स्वीकार करता है। गुरदास की मानवता और सज्जनता से प्रभावित होकर शमशीर मरते हुए गुरदास से वायदा करता है कि वह जीतो (गुरदास की पत्नी) के पास जाएगा उसकी देख-भाल करेगा तथा जेलदार, खलनायक से बदला लेगा। अपने पिता के हत्यारों को फांसी पर चढ़ाने और अपना पहला मिशन पूरा करने के बाद अपनी नौकरी से इस्तीफा दे देता है। शमशीर जीतो के पास जाता है और उसे अपना बदला लेने के लिए प्रेरित करता है। वह जीतो की बहन प्रीतो से शादी कर लेता है।

जीतो अपने पति की मृत्यु के बाद गुरदास के बच्चे को जन्म देती है जिसका नाम अजीत रखा जाता है। अजीत का पालन-पोषण उसका चाचा शेरसिंह करता है। अजीत बड़ा होकर एक बहादुर और साहसी पुलिस आफिसर बनता है। जब वह अपनी मां से मिलने आता है, वह देखती है कि उसकी शक्ल अपने से हू-ब-हू मिलती है।

आखिरकार अजीत को वास्तविक कहानी का पता लगता है और कानून का संरक्षक होने के नाते अपनी मां को सलाह देता है कि वह खलनायक को न मारे और उसे कानून के हवाले कर दे। अपने इरादे पर अटल, वह उससे सहमत नहीं होती और अन्ततः खलनायक को अपनी ही कचहरी में लाती है। जिस रस्सी से गुरदास को फांसी के फंदे पर लटकाया गया था, वह जेलदार को उसी रस्सी से फांसी देकर स्वयं ही उसकी किस्मत का फैसला करती है।

KACHEHARI

Punjabi/Colour/165\ min.

Producer/Screenplay: Vijaya Tandon. **Director:** Ravinder Peepat. **Leading Actor:** Gurdas Maan **Leading Actress:** Rama Vij. **Supporting Actor:** Yograj Singh. **Supporting Actress:** Nithi. **Child Artist:** Gautam Tandon. **Cameraman:** S.K. Jolly. **Audiographer:** Subhash Sehgal. **Art Director:** Gyan Singh. **Costume Designer:** Raisons Tailors. **Music Director:** Varinder Bachan/Surinder Bachan. **Lyricist:** Surjit Patar/ Shamsher Sandhu. **Male Playback Singer:** Gurdas Maan. **Female Playback Singer:** Sarabjit kaur. **Choreographer:** Kanu Mukherjee. **Special Effects Creator :** Daya Bhai.

Kachehari (The court) highlights the inherent imperfections, failings and vulnerability of the judicial system, where often justification prevails over justice.

Budh Singh, the hangman of a jail gets killed by terrorists, while transfering them from one to another jail. Inflamed by the brutal murder, Shamsher, his son, is about to kill the killers, but on the advice of his dying father, he hands the killers over to the police. Now with the ardent intention to hang those killers himself, Shamsher fills the vacant post of his father as the hangman.

In the jail, he meets a prisoner, Gurdas, who is going to be hanged soon for a murder he did not commit. Shamsher

becomes friendly with Gurdas, who is not only an innocent man, but the personification of all that is good and noble. Uncomlainingly Gurdas accepts the will of the Almightly.

Touched by the humanity and gentleness of Gurdas, Shamsher promises Gurdas that he would go to Jeeto (Gurdas's wife) and look after her and also take revenge on the Zaildar, the villain. Shamsher resigns from his job, but after hanging the killers of his father, accomplishing his first mission. Shamsher goes to Jeeto to reinforce her resolve of revenge. He marries Preeto, sister of Jeeto.

Jeeto posthumously gives birth to Gurdas's child, who is named Ajit. Ajit is brought up by his uncle Sher Singh. Ajit grows into a brave and valiant police officer. When he comes to meet his mother, she sees that her son resembles her husband.

Ajit comes to know the real story in the end and being a law-protector urges his mother not to kill the vallain but to hand him over to the law. Adamant in her resolve, she does not agree and eventually brings the villain to her own KACHEHARI. She hereself decides the fate of the Zaildar by hanging him with the same rope with which Gurdas was hanged. She also dies in the end.

लपन्डाव

मराठी/रंगीन/140 मिनट

निर्माता : सचिन पोरेकर, संजय पोरेकर। **निर्देशक:** श्रबोनी देवधर। **पटकथा :** मंगेश कुलकर्णी। **मुख्य अभिनेता :** अशोक सराफ, विक्रम गोखले। **मुख्य अभिनेत्री :** सविता प्रभुने, वंदना गुप्ते। **सह अभिनेता :** सुनील बर्वे, अजिक्यू देव। **सह अभिनेत्री :** पल्लवी रानाडे, वर्षा उसगांवकर, दूलु देवधर। **ध्वनिआलेख :** प्रदीप देशपाण्डे। **संपादक:** जफर सुलतान, दिलीप कोटालगी। **कला निर्देशक:** गुरूजी ब्रादर्स। **संगीत निर्देशक :** आनन्द मोडक। **गीतकार :** सुधीर मोघे। **पार्श्व गायक :** सुरेश वाडकर, प्रभंजन जयश्री शिवराम, रंजनू जोगलेकर। **नृत्य संयोजक :** सुबल सरकार, लक्ष्मी।

अभिजीत समर्थ एक धनी और सज्जन व्यक्ति है। वह अपनी आजीविका दूसरों के पसीने से कमा रहा है, क्योंकि वह "समर्थ जिम्नाज़ियम" का मालिक है और जिम्नाज़ियम में भाग लेने वाले लोग पसीना बहा रहे हैं और समर्थ को इसकी फीस दे रहे हैं। समर्थ की पत्नी अश्वरी एक विधि-स्नातक है। चूंकि वह काफी धनी है, इसलिए वह कानून की प्रेक्टिस नहीं करती परन्तु विवाह-सलाहकार के रूप में न्यायालय में जाती है और परेशान जोड़ों (पति-पत्नी) की सहायता करती है। रसिका उनकी किशोरावस्था बेटी है।

आनन्त महाशब्दे समर्थ का पारिवारिक मित्र है। वह वकील है। उल्का उसकी पत्नी है। वह एक अच्छी गृहिणी है जो कि अपने बच्चों और पारिवारिक काम-काज में पूरी तरह लगी रहती है। आनन्त और उल्का के दो बच्चे हैं। चिन्मयी (चिनू) एक सुंदर और नटखट बेटी है तथा असीम कालेज जाने वाला लड़का है।

असीम रसिका से प्यार करता है। परन्तु यह प्यार इकतरफा है क्योंकि रसिका विक्रांत में बहुत अधिक दिलचस्पी लेती है और उसका विक्रांत के साथ ठीक-ठाक चल रहा है। विक्रांत म्युनिसिपल कमिश्नर बाबूराव मालगुडे का बेटा है। इसलिए विक्रांत की कालेज में चलती है और वह रसिका से दिल्लगी करता है।

असीम, हाथ धोकर रसिका के पीछे पड़ा रहता है। एक मध्यवर्गीय लड़की मुग्धा, असीम पर फिदा है परन्तु इसका किसी को पता नहीं चलता। मुग्धा, असीम को प्रेम-पत्र लिखती है परन्तु डर के मारे यह पत्र हस्ताक्षर किए बिना छोड़ देती है। वह इस बात का ध्यान रखती है कि उसका बिना हस्ताक्षर किया हुआ पत्र असीम के पास पहुंच जाए। पत्र असीम के मित्र के पास पहुंचता है, जो इसे रसिका का पत्र होने का ढिंढोरा पीट देता है।

असीम इस पृष्ठभूमि के साथ चुपके से रसिका को मिलता है और उसे अपनी ओर प्रेरित करने की कोशिश करता है परन्तु दुर्भाग्यवश वहां विक्रांत आ पहुंचता है और वह असीम को बुरा-भला कहता है। दोनों में घूसे-बाजी होती है।

असीम और मुग्धा वास्तव में अच्छे दोस्त होते हैं। वह मुग्धा के अपनी ओर झुकाव के बारे में बिल्कुल नहीं जानता। इसलिए, वह रसिका के बारे में अपने दिल की बात उसे बताता है। वह उसे रसिका को अपने दिल की बात बताते हुए पत्र लिखने के लिए प्रेरित करता है। वह रात देर तक बैठती है, पत्र लिखती है और उसी पर सो जाती है। परन्तु यह पत्र चिन्मयी के हाथ लग जाता है। असीम की शरारती बहन के हाथ लगता है और यह पत्र एक पुस्तक के द्वारा जिसमें यह पड़ा होता है आनन्त के पास पहुंच जाता है।

असीम, रसिका को देने के लिए, मुग्धा को एक और पत्र देता है। जिज्ञासावश, मुग्धा पत्र खोलती है और उसे पढ़ती है। यह पत्र भी बिना हस्ताक्षरित होता है।

पत्र को पढ़ने के बाद रसिका आसक्त हो जाती है और वह इस पत्र के लेखक से मिलने की अपनी इच्छा के बारे में मुग्धा को बताती है। यह पत्र रसिका के पिता अभिजीत के पास पहुँचता है। अभिजीत को शक का भूत सवार होता है।

इस बीच कई घटनाएं घटती हैं। इन घटनाओं के बीच में ही अभिजीत और उल्का एक दूसरे को मिलते हैं। मुग्धा-विक्रांत, आनंत-अश्वरी और असीम-रसिका के बीच कई अन्य मुलाकातें होती हैं जिससे यह पता चलता है कि इन पत्रों से बहुत अधिक गलतफहमी तथा भ्रांति के साथ-साथ क्या नहीं हुआ, जिससे फ़िल्म अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच जाती है।

LAPANDAV

Marathi/Colour/140 min.

Producers: Sachin Parekar, Sanjay Parekar. **Director:** Shraboni Deodhar **Screenplay** : Mangesh Kulkarni. **Leading Actor** : Ashok Saraf, Vikram Gokhale. **Leading Actress** : Savita Prabhune, Vandana Gupta. **Supporting Actor** : Sunil Barve, Ajinkya Dev. **Supporting Actress** : Pallavi Ranade, Varsha Usgaonkar. **Child Artist** : Sai Deodhar. **Cameraman** : Debu Deodhar. **Audiographer** : Pradeep Deshpande. **Editors** : Jafar Sultan, Dilip Kotalgi. **Art Director** : Guruji Brothers. **Music Director** : Anand Modak. **Lyricist** : Sudhir Moghe. **Male Playback Singers:** Suresh Wadekar, Prabhanjan Marathe, Rahul Ranade. **Female Playback Singers** : Jayashree Shivram, Ranjanu Joglekar. **Choreographer** : Subal Sarkar, Laxmi.

Abhijit Samarth is a gentleman of means. He is earning his livelihood by sweat of others literally, because he owns "Samarth Gymansium" and the participants in the gymnasium are sweating and paying fees to Samarth. Samarth's wife, Aswari is a law graduate. Since she is well-off, she is not practising Law but attends the Court as a marriage counsellor, helping distraught couples. Rasika is their teenaged daughter.

Anant Mahashabde is a family friend of Samarth. He is lawyer, Ulka is his wife. She is a good housewife, quite involved with her children and family chores. Anant and Ulka have two kids: Chinmayi (Chinu) is a sweet naughty daughter and Asim, a college going boy.

Asim is in love with Rasika. But this love is one-sided and because Rasika is very much interested in and is going steady with Vikrant. Vikrant is a son of Baburao Malgude, a Municipal Councillor, consequently Vikrant has his say in his college and he plays with Rasika.

Asim is very much after Rasika. Mugdha, a simple middle-class girl is interested in Asim, but very silently. Mugdha writes a love letter to Asim, but out of fright it is left unsigned. She takes care to see that the unsigned letter is delivered to Asim. It reaches Asim's friends, who publicise it as Rasika's letter.

Asim confidently meets Rasika with this background and tries to woo her but unfortunately Vikrant appears on the scene and abuses Asim. Blows are exchanged between the two.

Asim and Mugdha are really good friends. He is totally unware of the feelings of Mugdha towards him. So, he expresses his feelings about Rasika to her. She induces him to write a letter to Rasika, expressing his feelings. She sits late at night, drafts the letter, and sleeps over it. But it falls in the hands of Chinmayi, Asim's mischievous sister and reaches Anant through a book in which it is kept.

After seeing the letter, Rasika gets enamoured and expresses to Mugdha her desire to meet the author. This letter reaches the hands of Abhijit, father of Rasika. The ghost of suspicion tries to inflame Abhijit towards his wife.

Many things happen in between. Abhijit and Ulka meet each other in the course of things. Many other meetings between Mugdha-Vikrant. Anant-Asawari, Asim-Rasika gives the result that the letters bring about lot of confusion and misunderstandings and what not, which results in a climax.

लावण्य प्रीति

उड़िया/रंगीन/82 मिनट

निर्माता : प्रतिवा बीर/ए.के. बीर प्रॉडक्शन। **निर्देशक/छायांकन/पटकथा:** ए.के. बीर। **मुख्य कलाकार :** लालतेन्दु रथ। **मुख्य अभिनेत्री :** सौम्य श्री रथ। **सह अभिनेता :** श्यामचरण पाथी। **सह अभिनेत्री :** श्रीमती जगत, लक्ष्मी बनर्जी। **बाल कलाकार :** तारशंकर मिश्रा तथा आदिति बीर। **ध्वनि आलेखक :** मनोज सिक्का। **संपादक:** दिलीप पंड्या। **संगीत निर्देशक :** भावदीप जयपुरवाले।

''बच्चों और युवकों'' की रुचि के लिए और उनके ध्यान को केंद्रित करने के लिए पटकथा लेखक ए.के. बीर, जिसने इस फ़िल्म की शूटिंग तथा निर्देशन किया है, ने कहानी के अन्दर ही कहानी की परम्परागत युक्ति का इस्तेमाल किया है। एक प्रेम कहानी है जिस का अंत दु:खद है, जो कि मूल कहानी के तौर पर जात्राओं में बहुत लोकप्रिय है परन्तु दूसरी कहानी का अंत ज्यादा दु:खद नहीं है।

दन्त कथा से ली गई फ़िल्म की कहानी केदार और गौरी की है, जो बचपन के दोस्त हैं, जो बड़े होकर घनिष्ठ प्रेमी हो जाते हैं। परन्तु ''खलनायक'' के प्रतिनिधित्व में गांव के बड़े-बूढ़े उनकी शादी तथा सहवास के विरुद्ध हैं। इसलिए, वे भाग जाते हैं और कहीं और चले जाते हैं। जब वे एक जंगल से गुजर रहे होते हैं तो गौरी थक जाती है और उसे प्यास लगती है और केदार स्वयं उसके लिए पानी लेने चला जाता है। होनी को जैसा मंजूर था, एक चीता गौरी के पास आकर गरजता है जिससे गौरी डर जाती है और भाग जाती है परन्तु वह अपने पीछे खून के कुछ धब्बे (रास्ते में कांटे होने के कारण) और झाड़ियों पर अपनी साड़ी के फटे हुए टुकड़े छोड़ जाती है। केदार वापिस लौटता है परन्तु गौरी को न देखकर हैरान हो जाता है और सबूत देखकर सब कुछ समझ जाता है। उसका संसार बिखर जाता है और वह छुरा भौंक कर आत्महत्या कर लेता है। गौरी उस जगह पर वापिस आती है और उसी तरह मरने का निर्णय लेती है ताकि वह दूसरे लोक में जाकर अपने प्रेमी से मिल सके।

दन्त कथा वर्तमान समय के दो प्रेमियों, गोपाल और विद्युलता तथा गोपाल के मित्र मायाधर के चारों और घूमती है। वे सभी एक ही क्लास में पढ़ते हैं। गोपाल प्रतिभाशाली, कल्पनाशील और कवि सुलभ है। मायाधर उसका विश्वासपात्र तथा परामर्शदाता है। विद्युलता एक स्थानीय कम्पाऊन्डर की बेटी है, जिसे गोपाल और मायाधर को मिलने के बाद अपने दोनों कक्षा सहयोगियों द्वारा उसे बताई गए नई दुनिया के बारे में पता लगता है। वे सभी अलग-अलग और मिलकर, बड़े होते हैं, फ़िल्म में एक घटना यह भी है, जिसमें एक मंदिर है जहां इच्छा पूरी करने वाले ईश्वर हैं (पुजारी के अनुसार), एक कुआं है और एक व्यक्ति जो सोने की अंगूठी चाहता है, सब सम्मिलित हैं। पुजारी को लोगों की अवमानना से बचाने के लिए गोपाल अपने घर से अंगूठी ''चुरा'' लेता है और पुजारी को अपना मुँह छिपाने से बचा लेता है। परन्तु अगूंठी के खो जाने से गोपाल के परिवार में समस्या उत्पन्न हो जाती है।

इस घटना से दोनों प्रेमी अलग-अलग हो जाते हैं,

गोपाल घर से भागने की कोशिश करता है परन्तु उसका पिता उसे रात में पकड़कर उस की चाल को विफल कर देता है। अगले दिन विद्युलता गायब हो जाती है। जब गोपाल उसकी मां के पास जाता है तो वह उसे एक पत्र देती है। विद्युलता के पत्र से गोपाल को पता चलता है कि वह अपने जन्म स्थान पर जा रही है क्योंकि उसकी पालतू बिल्ली बीमार है। गोपाल इसे पढ़ता है और भागता है। मोह और सनक से ग्रस्त यह लड़का पूरी तरह हक्का-बक्का हो जाता है। परन्तु विद्युलता, गौरी नहीं हो सकती और वह केदार नहीं हो सकता।

LAVANYA PREETI

Oriya/Colour/82 min
Producer: Prativa Bir/A.K. Bir Production **Direction/Cinematography/Script:** A.K. Bir **Leading Actor:** Laltendu Rath **Leading Actress:** Saumyarri Rath **Supporting Actress:** M.S. Jagtlakshmi Banerjee **Child Artist:** Tara Shankar Misra **Audiographer:** Manoj Sikka **Editor:** Dilip Panda **Music Director:** Bhavdeep Jaipurwalle

To interest "children and young people" and to hold their attention, A.K. Bir, the screenplay-writer who has shot and directed the film, has used the traditional device of a story within a story. One is a love story with a tragic ending, so popular with jatras as the core story and the other story with not so sad ending.

The legendary story is that of Kedar and Gouri, childhood friends, who mature into intense lovers. But the adults in the village representing the "villain" are against their marriage and consumation. So, they run away venturing into the wide world. While passing through a forest, Gouri feels tired and thirsty and Kedar goes by himself to fetch some water. As things would happen, a tiger roaming nearby frightens Gouri, who runs away, leaving traces of blood (due to thorns on the way) and bits and pieces of her sari on the bushes. Kedar returns, but is dismayed by the absence of Gouri and tell-tale evidence. His world collapses and he commits suicide by stabbing himself. Later, Gouri returns to the spot and decides to die likewise of her own hand to unite with her lover in the other world.

This legendary story haunts the two adolesocent lovers of the present time, Gopal and Vidyulata, as also Gopal's friend, Mayadhar. They all study in the same class. Gopal is talented, imaginative, even poetic. Mayadhar is his confidante and mentor. Vidyulata is the local compounder's daughter, who after meeting Gopal and Mayadhar finds a new world revealed to her by her two classmates. They all grow up, separately and together, but always interacting. Incidents, big and small happen, including one in which a temple with a wish-granting god (according to the priest), a well, a man who desires a golden ring are all involved. To save the priest from public humiliation, Gopal "steals" a ring from home and enables the priest to save his face. But the missing ring creates problems in Gopal's family.

All this leads to the separation of the two lovers. Gopal tries to run away from home, but his father thwarts him by catching him in the night. The next day, Vidyulata disappears. When Gopal goes to her mother. he is given a letter. Vidyulata's letter tells Gopal that she is going back to her native home as her pet cat is sick! Gopal reads and runs. A boy of fantasies and whims, he is absolutely lost. But Vidyulata is no Gouri and Gopal is no Kedar.

महानदी

तमिल/रंगीन/165 मिनट

निर्माता: एस. ए. राजकन्नु। **निर्देशक:** शांतन भारती। **पटकथा लेखक/मुख्य अभिनेता:** कमल हासन। **मुख्य अभिनेत्री:** सुगन्या। **सह अभिनेता:** पूर्णम विश्वनाथन। **बाल कलाकार:** बेबी शोभना। **कैमरामैन:** एम. एस. प्रभु। **संपादक:** एन. पी. सतीश। **कला निर्देशक:** जयकुमा **संगीत निर्देशक:** इल्याराजा। **गीतकार:** वली। **पार्श्व गायिका:** शोभना। **नृत्य संयोजन:** रघुराम।

कृष्णामूर्ति विधुर हैं और कावेरी तथा भवानी उनके दो बच्चे हैं। वे तंजोर में बीटल नट फैक्ट्री के मालिक हैं। परिवार में एकमात्र बुजुर्ग सास सरस्वती अम्मल है। घर वापिस आए कुछ गैर प्रवासी भारतीयों (एन आर आई) को देखकर, कृष्णामूर्ति व्यापक समृद्धि की कामना करता है।

एक अर्द्ध मलयाली भरोसेमंद व्यक्ति धनुषकोडी मद्रास में चिटफंड स्थापित करने के लिए कृष्णा को प्रलोभित करता है। कृष्णा अपना सारा व्यक्तिगत भाग्य भूषण के आडम्बरपूर्ण चिटफंड पर लगा देता है, जिसका उद्घाटन एक बड़े व्यापारी वेंकाचलन द्वारा किया जाता है। इसी बीच, उनकी सास अपने विधुर दामाद के लिए दुल्हन हेतु समाचार-पत्र में विज्ञापन देती है। धीरे-धीरे कृष्णा को धनुष द्वारा पैसे के मामले में गडबड़ी करने का शक हो जाता है। दुर्बल तथा शराब के नशे में धुत कृष्णा द्वारा पावर आफ अटार्नी दे देने से धनुष उसका सब कुछ लूटकर भाग जाता है। नाराज ग्राहकों की भीड़ कृष्णा को पीटती है। कृष्णा भारतीय पैनल कोड 420 के तहत जेल जाता है। जेल में पंजपकेशन नामक एक बूढ़े ब्राह्मण से उसकी दोस्ती हो जाती है। विज्ञापन के उत्तर में कई अभ्यर्थियों में से उसकी बेटी यमुना भी होती है। वह एक नर्स होती है जो कि उसके घर में परिवार का एक हिस्सा बन जाती है। कृष्णा का उसका ओर झुकाव हो जाता है। इसी बीच कृष्णा वार्डन बने हुए एक कैदी के साथ हुए झगड़े में उलझ जाता है। प्राधिकारियों द्वारा उसकी क्षमा में कमी कर दी जाती है और जेल में उसकी अवधि को बढ़ा दिया जाता है।

सरस्वती बहुत ज्यादा बीमार हो जाती है और 13 वर्ष की लड़की कावेरी कुछ न जानते हुए, धनुष के पास सहायता के लिए जाती है। धनुष जोकि धनी लोगों को लड़कियां भेजने में माहिर है, कावेरी को भी वेंकाचलम के पास ले जाता है जो जवान लड़कियों का शौकिन है।

सरस्वती की अस्पताल में मृत्यु हो जाती है। लड़का भवानी खो जाता है। जब कृष्णा वापिस आता है तो उसे पता चलता है कि उसका परिवार नहीं है। किस्मत से अचानक वह अपने बेटे को एक सर्कस में काम करते हुए और वहां रहते हुए ढूंढ लेता है। उसे यह सूचना भी मिलती है कि उसकी बेटी कलकत्ता में ''सोनागाची'' ''वेश्यालय'' में है। कृष्णा अपनी बेटी को वेश्यालय के अन्य लोगों के साथ रहते हुए ढूंढ लेता है। कृष्णा की परिस्थिति को पहचानते हुए, अधेड़ उम्र की वेश्याबाई गंगा कावेरी को वेश्यालय से ले जाने के लिए 5,000/- रू. की मांग करती है।

वेंकाचलम और धनुष की हत्या के लिए कृष्णा

को एक बार फिर जेल हो जाती है। कछ वर्षों के बाद , कृष्णा अपनी पत्नी यमुना और बच्चों के साथ कावेरी नदी के तट के पास बस जाता है। कृष्णा का जीवन, नदी की तरह, एक पूरे चक्र के समान है जो समुद्र में जा कर गिरती है और फिर वर्षा के रूप में आती है और पुन: नदी बन जाती है।

MAHANADHI

Tamil/Colour/165 min.
Producer: S.A. Rajkannu. **Director:** Santhana Bharathi. **Screenplay/ Leading/Actor:** Kamal Hassan. **Leading Actress:** Suganya. **Supporting Actor:** Poornam Viswanathan. **Child Artiste:** Baby Shobana. **Cameraman:** M.S. Prabhu. **Editor:** N.P. Satish. **Art Director:** Jaya Kumar. **Music Director:** Illayaraaja. **Lyricist:** Valee. **Female Playback Singer:** Shobana. **Choreographer:** Raghuram.

Krishnaswamy, a widower with two children, Kaveri and Bharani, is the proprietor of a betel-nut factory in Tanjore, Tamil Nadu.The only elder person in the family is his mother-in-law, Saraswathi Ammal. Seeing some NRIs, who had returned home, Krishnaswami aspires for abundant prosperity.

A Malayali con-man, Dhanushkodi, lures Krishna (as he is better known) to set up a chit fund in Madras. Krishna invests all his personal fortune into Dhanush's pompous chit fund, which is inaugurated by a big business magnate Venkatachalam. Krishna and his family settle down in a bungalow in a lonely suburb. Meanwhile the mother-in-law advertises in the newspaper for a bride for her widowed son-in-law. Krishna slowly smells trouble in Dhanush's fiscal dealings. Dhanush disappears with the loot by virtue of a power of attorney given in a weak and drunken moment by Krishna, who is physically beaten up by an angry mob of clients. Krishna goes to jail under IPC 420. He befriends an old Brahmin, Panjapakesan in jail. His daughter Yamuna is one of the many who had responded to the advertisement. A nurse, she becomes part of the family at home. Krishna falls for her. Meanwhile Krishna gets embroiled in a brawl with one of the prisoners turned warden. Krishna's remission is cut by the authorities and his prison sentence is extended.

Saraswathi falls critically ill and the little girl Kaveri, now 13, in her ignorance, goes to Dhanush for help. Dhanush who is good in "supplying" girls to rich men, takes Kaveri to Venkatachalam, who has a fetish for young girls.

Saraswathi dies in the hospital. The boy Bharani gets lost. When Krishna comes out, he realises he has no family. By strange luck, he finds his son working and living with a street circus. He also gets information that his daughter is in Calcutta in a place called "Sonagaachi" the "land of the prostitutes."

Krishna finds his dauther there among the brothel inmates. Realizing Krishna's plight, the prostititues led by a middle-aged prostitute, Ganga, pool in Rs. 5,000 for the relase of Kaveri from the brothel.

Krishna goes to jail once again for the murder of Venkatachalam and Dhanush. Years later, the aged Krishna with Yamuna and his children settle down by the banks of River Kaveri. Krishna's life has come a full circle, like the river which goes to the sea and then comes back as rain to become the river again.

मंदरा पू

कोडवा/रंगीन/120 मिनट
निर्माता: बी.एन. रवि शंकर। **निर्देशक/ पटकथा** : एस.आर. राजन। **मुख्य अभिनेता:** जियोफ्री चेनगप्पा। **मुख्य अभिनेत्री:** श्याला। **सह अभिनेता:** बी.एन. रवि शंकर। **बाल कलाकार:** अंजीली। **बाल कलाकार** : मास्टर राकेश, मास्टर रवि। **छायाकार** : के. मलिक। **ध्वनि आलेखक** : अलाग सेन। **संपादक:** सुरेश उर्स। **वेशभूषाकार:** मूर्ति। **संगीत निर्देशक:** साधु। **गीतकार:** जियोफ्री चेनगप्प। **पार्श्व गायक** : विष्णु। **पार्श्व गायिका:** छाया।

देवय्या कुर्ग की एक कॉफी-एस्टेट का मालिक है। उसका विवाह लक्ष्मी से हुआ और वे दोनों सुखी हैं। रवि और राजा उनके दो बेटे हैं। रवि अध्ययनशील और अच्छा है परन्तु राजा कभी नहीं पढ़ता और बुरी संगत में समय बिताता है। मां को उसके प्रति अगाध प्यार है और वह उसकी पैसे की कभी न खत्म होने वाली मांग को पूरा करके उसका समर्थन करती है।

रवि एम. एस. सी. में प्रथम श्रेणी में पास होता है और बेंगलूर में उसे एक अच्छी नौकरी मिल जाती है जबकि राजा अपनी बुरी आदतों के कारण शराबी और जुआरी बन जाता है। इस बीच देवय्या अपने बड़े बेटे रवि की शादी अपने एक अमीर और इज्जतदार मित्र की बेटी निर्मला से तय कर देता है। रवि एक खूबसूरत अनाथ लड़की लीला से शादी कर लेता है और इसके बारे में अपने मां-बाप को सूचित नहीं करता।

इस बीच लक्ष्मी दिल की मरीज़ हो जाती है। एक दिन नशे में धुत राजा अपने भाई की पत्नी लीला के साथ छेड़खानी करता है। लक्ष्मी को इस घटना से सदमा पहुंचता है और वह गिर जाती है और मर जाती है।

रवि की पत्नी लीला रवि को अपने पिता की जायदाद में से हिस्सा मांगने के लिए उकसाती है। देवय्या जायदाद को अपने बेटों में बांट देता है। रवि अपनी जायदाद बेच देता है और अपनी मां की अंतिम क्रिया में भाग लिए बिना ही बेंगलूर चला जाता है। अपना ऋण चुकाने के लिए राजा भी अपना हिस्सा बेच देता है। हत्या करने के जुर्म में पुलिस राजा को पकड़ लेती है। देवय्या इन घटनाओं से बहुत उदास, लज्जित और दुखी होता है। एक दिन एक मित्र के खेत में काम करते हुए देवय्या को अधरंग मार जाता है और वह मर जाता है।

सात वर्ष बाद, पूरी तरह से बदला हुआ राजा जेल से बाहर आता है और उसे मिलने जाता है। परन्तु अब काफी देर हो चुकी होती है। देवय्या कुछ समय पूर्व मर चुका होता है। तब राजा अपने भाई रवि की तरह शालीन और सम्मानजनक जीवन बिताने की शपथ लेता है।

MANDHARA PHU

Kodava/Colour/120 min.
Producer: B.N. Ravi Kumar. **Director/ Screenplay** : S.R. Rajan. **Leading Actor** : Geoffry Changappa. **Leading Actress** : Shyala Bopaiah. **Supporting Actor**: B.N. Ravi Shankar. **Supporting**

Actress : Anjali. **Child Artist** : Master Rakesh, Master Ravi. **Cameraman** : K. Malik. **Audiographer** : Audiographers. **Editor** : Suresh Urs. **Costume Designer** : Murthy. **Music Director** : Sadhu. **Lyricit** : Geoffry Changappa. **Male Playback Singers**: Vishnu. **Female Playback Singer** : Chaya.

Devaiah is owner of a coffee estate in Coorg. He is happily married to Lakshmi and has two sons, Ravi and Raja. Ravi is very studious and good. But Raja never studies and spends his time in bad compnay. The mother with blind love supports him by attending to his never-ending demands of money.

Ravi secures first class in M. Com. and gets a good job in Bangalore, while Raja with his bad habits, becomes a drunkard and gambler. Davaiah meantime arranges the marriage of Ravi with his rich and respectable friend, Karyappa's daughter Nirmala. But, Ravi marries a beautiful orphan girl, Leela without even informing his perents. They are disappointed.

Meanwhile Lakshmi becomes a heart patient. One day, an intoxicated Raja tries to molest his own brother's wife, Leela. Shocked by the incident Lakshmi collapses and dies.

Ravi's wife Leela instigates Ravi to get his share from his father's property. Devaiah divides the property between his sons. Ravi sells his property and goes to Bangalore, not even waiting to attend his mother's death ceremonies. Raja also sells his share to clear his debts. Raja gets arrested by the police for murder. Devaiah is very sad, embarrassed and hurt by such incidents. One day, while working in a friend's field Devaiah gets a paralytic stroke and dies.

After seven years in jail a metamorphosed Raja comes out of the jail goes to meet his father. But it is too late. Devaiah had died some time before. Then Raja takes the oath of living a decent and respectable life like his brother Ravi.

मणिचित्राताड़

मलयालम/रंगीन/170 मिनट

निर्माता: अप्पचन। **निर्देशक:** फाज़िल **पटकथा लेखक:** मधुमोतम। **मुख्य अभिनेता:** मोहन लाल। **मुख्य अभिनेत्री:** शोभना। **सह-अभिनेता:** सुरेश गोपी। **सह अभिनेत्री:** विनया प्रसाद। **कैमरामैन:** वेणु आनन्द कुट्टन। **ध्वनि आलेखक:** के. डी. शतीसन। **संपादक:** टी. आर. शेखर **कला निर्देशक:** मणि सुचित्रा। **वेशभूषा डिजाइनर:** वेलायुधन, कीड़िल्लम **संगीत निर्देशक:** एम. जी राधाकृष्णन। **गीतकार:** बिचु तिरूमाला। **पार्श्व गायक:** के. जी. येशुदास। **पार्श्व गायिका:** के. एस. चित्रा। **नृत्य संयोजक:** शांति कुमार। **विशेष प्रभाव सृजक:** दाणु कुमार।

नकुलन् एक इंजीनियर हैं जो कलकत्ता में काम करता है। गंगा उसकी पत्नी है जो कि वास्तुकला में प्रशिक्षित है। उनके साथ सरदम्मा रहती है जो किसी समय केरल में एक महल की मालिक थी जो कि अब वीरान और बंद पड़ा है।

नकुलन् को दक्षिण भारत में एक कार्य मिलता है। वह और उसकी पत्नी जाने और अपने पूर्वजों की जायदाद भी देख आने का निर्णय लेते हैं। जब वे वहां पहुंचते हैं तो नकुलन् का चाचा माधवन तम्पी यह कह कर उसे महल में जाने के लिए मना करता है कि महल में भूत रहता है। परन्तु पति-पत्नी केवल "मणम्पिल्ली महल" में ही रहने का निर्णय लेते हैं।

गंगा महल में एक कमरे में ताला पड़ा हुआ देखती है परन्तु उसकी चाबी नहीं होती। उसे यह कमरा खोलने के लिए मना किया जाता है। इस ताला लगे कमरे के बारे में एक कहानी है। एक शताब्दी पूर्व, एक धूर्त व्यक्ति शंकरन् तम्पी इसका "कर्ता" था जो वहीं रहता था। वह तंजौर की एक नर्तकी, नागवल्ली को प्रेम करने लगा और उसे अपनी पत्नी बनाना चाहा। परन्तु उसकी मंगनी रामनाथन के साथ हो चुकी थी और शादी होनी तय थी। दोनों प्रेमी भाग जाना चाहते थे। परन्तु शंकरन् तम्पी नागवल्ली की हत्या कर देता है। उसका भूत शंकरन को सताता है जो अन्ततः आत्महत्या कर लेता है, उनके भूत अब कमरे में बंद हैं।

गंगा कहानी को सुनते हुए ऊहूं-ऊहूं करती है और उसे बंद कमरे के अंदर कीमती पैतृक संपत्ति होने का संदेह होता है। वह चाबी बनवाती है और कमरा खोलती है। कमरे में "कर्ता" और नर्तकी के चित्रों के अलावा नागवल्ली के आभूषण भी मिलते हैं।

इसके बाद सब कुछ गड़बड़ होने लगता है। स्थानीय निवासी परेशान हो जाते हैं। अजीबोगरीब घटनाएं घटती हैं। नकुलन् को यह शक होता है कि यह सब मन्त्र-तन्त्र उसकी चचेरी बहन के कारण हो रहे हैं जोकि मानसिक असंतुलन से पीड़ित है। इसलिए, वह स्वर्ण मैडल प्राप्त एक मनोचिकित्सक डा. सन्नी को महल में बुलाता है।

थोड़ी देर बाद डा. सन्नी अपना ध्यान उसके "मानसिक कंपन" के कारण गंगा पर केंद्रित करता है। वह इस नतीजे पर पहुंचता है कि उसका बचपन नाखुश, अकेलेपन और कुण्ठा में गुज़रा था। कलकत्ता में आकर उसकी स्थिति और भी बिगड़ गई थी। अब मृत नागवल्ली की असाधारण कहानी का पता लगाने से उसे "बिखरा हुआ

व्यक्तित्व'' मिल जाता है। सन्नी इस बात के लिए परेशान है कि वह या तो आत्महत्या कर लेगी- या फिर किसी की हत्या कर देगी।

यहां से फ़िल्म आगे बढ़ती है और अनेक घटनाएं होती हैं।

मनोचिकित्सक उसे ठीक करने के लिए शल्य चिकित्सा करने का सहारा लेता है। शंकरन् तम्पी और नागवल्ली की कहानी रामनाथन के पुन: आने से पूरी होती है जो गंगा को उसके बचपन के सदमे से मुक्त करता है। यह सब देखते ही विश्वास होता है।

MANICHITRATHAZHU

Malayalam/Colour/170 min.
Producer: Appachan. **Director:** Fazil. **Screenplay:** Madhumotten. **Leading Actor:** Mohan Lal. **Leading Actress:** Shobana. **Supporting Actor:** Suresh Gopi. **Supporting Actress:** Vinayaprasad. **Cameraman:** Venu Ananda Kuttan. **Audiographer:** K.D. Satheesan. **Editor:** T.R. Sekhar. **Art Director:** Mani Suchitra. **Costume Designers:** Velayudham, Keezhillam. **Music Director:** M.G. Radhakrishnan. **Lyricist:** Bichu Thirumala. **Male Playback Singer:** K.J. Yesudas. **Female Playback Singer:** K.S. Chitra. **Choreographer:** Shanthi Kumar. **Special Effect Creator:** Danu Kumar.

Nakulan is an engineer working in Calcutta. Ganga is his wife trained in archaeology. With them lives Saradamma, the owner of a one-time palace in Kerala now deserted and locked up.

Nakulan gets an assignment down South. He and his wife decide to go and inspect their ancestral property. When they land there, Nakulan's uncle Madhavan Thampi discourages him saying that the palace is haunted. But the couple decide to stay in the ''Manampilly Palace'' only.

Ganga finds a locked room but no key. She is dissuaded from opening it. There is a story behind the locked doors. A century ago, Shankaran Thampi, a wicked man was the ''Kartha'' living there. He fell in love with Nagavalli, a dancer from Tanjore and decided to have her as his mistress. But she was engaged to be married to Ramanathan. The lovers decide to elope but Shankaran Thampi kills Nagavalli. Her ghost haunts Shankaran, who finally commits suicide. Their ghosts are enticed and locked up in the room.

Ganga pooh-poohs the story and suspects precious heirlooms must be locked up. She gets a key made and opens the room. Portraits of the ''Kartha'' and the dancer are there as also the jewellery of Nagavalli.

From then on things go awry. The local residents are upset. Mysterious things happen. Nakulan suspects that all the hocus pocus is due to his uncle's daughter suffering from psychotic disorder. So he invites to the Palace, Dr. Sunny, a psychiatrist (with a gold medal).

After a while Dr. Sunny shifts his attention to Ganga because of her ''psychic vibrations.'' He discovers she has had an unhappy childhood, loneliness and frustration. Calcutta worsened her case. Now she had acquired the ''split personality'' with an unusual identification with the dead Nagavalli. Sunny is worried that she may attempt suicide—or may even murder.

From then on the film gains tempo as a series of developments take place.

The psychiatrist resorts to an operational strategy to set right the situation. The story of Shankaran Thampi and Nagavalli, complete with Ramanathan is re-enacted to liberate Ganga from her childhood trauma, which is to be seen to be believed. Suspense, mystery and shocks create a cinematic reality all its own.

मानवीनी भवाई

गुजराती/रंगीन/151 मिनट
निर्माता: आशीष त्रिवेदी/उपेन्द्र त्रिवेदी **निर्देशक:** पटकथा लेखक/**मुख्य अभिनेता** उपेन्द्र त्रिवेदी **मुख्य अभिनेत्री:** अनुराधा पटेल /सह अभिनेता: चन्द्रकांत पंड्या। कैमरामैन: चंदु देसाई। ध्वनि आलेखक: सुरेश नायर। **संपादक:** आई. एन. कुनु। कला निर्दशक: कंचन लाल नायक। **वेशभूषा डिजाइनर:** सुंदरलाल नायक। **संगीत निर्देशक:** गौरव व्यास। **नृत्य संयोजक:** चिनु शिकारी।

''मानवीनी भवाई'' पन्नालाल पटेल द्वारा लिखे इसी नाम के ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित गुजराती उपन्यास पर आधारित है। यह उत्तरी गुजरात के किसी ग्रामीण क्षेत्र में घटित पुरुष और महिला के अपराजित तथा चिर-स्थायी प्रेम की कहानी है। इसमें एक छोटे से गांव के जीवन को चित्रित किया गया है जिसमें विभिन्न वर्गों के लोग रहते हैं जिससे उनके सांस्कृतिक तथा सामाजिक वातावरण को बखूबी दर्शाया गया है। यह एक ऐसी सच्ची मानव गाथा है जिसमें मनुष्य और प्रकृति अविच्छेद्य रूप में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं-- जिसमें मनुष्य को निराशा होती है परन्तु अन्ततः वह नहीं हारता।

MANVINI BHAVAI

Gujarati/Colour/151 mins.
Producer: Aashish Trivedi/Upendra Trivedi. **Director/Screenplay/ Leading Actor:** Upendra Trivedi. **Leading Actress:** Anuradha Patel. **Supporting Actor:** Chandrakant Pandya. **Supporting Actress:** Kalana Diwan. **Child Artist:** Master Bargav. **Cameraman:** Chandu Desai. **Audiographer:** Suresh Nair **Editor:** I.N. Kunu. **Art Director:** Kanchanlal Nayak. **Costume Designer:** Sunderlal Nayak. **Music Director:** Gaurang Vyas. **Choreographer:** Chinu Shikari

''Manvini Bhavai'' based on the Jnanpeeth award-winning Gujarati novel of the same name by Pannalal Patel, is a story of undefeated and abiding love between a man and a woman, with the authentic rural setting in north Gujarat. It depicts the life in a small village with its varied hues, bringing out convincingly its cultural and social milieu. This is the story of a true human saga, in which man and nature have been inseparably interlocked in which man despairs, but is not defeated in the end.

मातृदेवोभव:

तेलुगु/रंगीन/140 मिनट

निर्माता: के एस. रामाराव। **निर्देशक/पटकथा लेखक:** के. अजय कुमार **मुख्य अभिनेता:** नज़र। **मुख्य अभिनेत्री:** माधवी। **सहअभिनेता:** तणिकेल्ला भलाणी। **सह अभिनेत्री:** निर्मलम्मा। **बाल कलाकार:** मास्टर मार्टिन। **कैमरामैन:** छोटा के नायडू। **संपादक:** निवास। **कला निर्देशक:** अशोक कुमार। **वेशभूषा डिजाइनर:** शिवा। **संगीत निर्देशक:** एम. एस. किवानी। **गीतकार:** वेतुरि सुंदर राममूर्ति। **पार्श्व गायक:** एस. पी. बालासुब्रह्मणियन्। **पार्श्व गायिका:** चित्रा। **नृत्य संयोजक:** डी. के. एस. बाबू

शारदा और सत्यम् अनाथ हैं जिनका पालन-पोषक एक अनाथालय द्वारा होता है। जब वे अनाथालय में थे तो दोनों का एक-दूसरे से प्यार हो गया था और अनाथालय के स्वामीजी के आशीर्वाद से उनकी शादी हो गई थी।

सत्यम् एक जीप ड्राईवर के रूप में काम कर रहा है। उन के चार बच्चे हैं। ड्राईवर के रूप में सत्यम् और संगीत की अध्यापिका के रूप में शारदा की आमदनी से उनका जीवन सुख-पूर्वक व्यतीत हो रहा था। सत्यम् को शराब पीने की लत है। परन्तु वह अपनी पत्नी को वायदा करता है कि वह पीना छोड़ देगा।

अप्पाराव नाम का उनका एक पड़ौसी, जो ड्राईवर है, शारदा पर बुरी नज़र रखता है। जब श्याम घर से बाहर जाता है, वह घर में आकर शारदा से छेड़खानी करने की कोशिश करता है। परन्तु वह और उसके बच्चे उसकी पिटाई करके उसे घर से निकाल देते हैं। घर वापिस आने पर सत्यम् भी अप्पाराव की अच्छी-खासी धुमाई करता है। अप्पाराव बदला लेने की योजना बनाता है।

जब शारदा का बेटा सड़क पर चल रहा होता है, अप्पाराव दुर्घटना करके बच्चे को अस्पताल भेजने के लिए मजबूर कर देता है। डाक्टर कहता है कि यदि बच्चे को खून मिल जाए तो बच्चा बच जाएगा। शारदा खून देती है जो कि उसके बेटे के लिए उपयुक्त है। परन्तु खून चढ़ाते समय पता चलता है कि उसका खून बेकार है क्योंकि उसे कैंसर है। डाक्टर कहता है कि वह ज्यादा देर जीवित नहीं रहेगी।

सत्यम् जो नगर के बाहर गया होता है, इस तथ्य को जान लेता है और प्रतिज्ञा करता है कि वह अब पीना बंद कर देगा। जब वह अपनी पत्नी के लिए दवाएं ला रहा होता है, अप्पाराव एक और दुर्घटना करता है और छुरा घोंप कर उसकी हत्या कर देता है।

अपने पति की मृत्यु के बाद शारदा अनाथालय के स्वामी जी से निवेदन करती है कि वे उसके बच्चों को किसी ऐसे व्यक्ति को दे दें जो उनका पालन-पोषण भली-भांति कर सके। स्वामीजी, दुर्घटनाग्रस्त बच्चे को छोड़कर, बाकी बच्चों के गोद लेने का प्रबंध करा देते हैं।

जब शारदा की मृत्यु होने वाली होती है, वह अपनी बेटी राधा को पत्र लिख कर दीवाली पर आने का निमंत्रण देती है क्योंकि हो सकता है कि यह उसका अंतिम उत्सव हो। सभी बच्चे दीवाली पर उसके पास आते हैं और जबकि सभी खुश दिखाई देते

हैं, शारदा अपने प्राण त्याग देती है। शारदा अपनी मां की मृत्यु के बाद अपने अपंग भाई को अपने साथ ले जाती है।

MATRUDEVO BHAVA

Telugu/Colour/140 mins.
Producer: K.S. Ramarao. **Director/ Screenplay:** K. Ajai Kumar. **Leading/ Actor:** Nazar. **Leading Actress:** Madhavi. **Supporting Actor:** Tanikella Bhalani. **Supporting Actress:** Nirmalamma. **Child Artist:** Master Martin. **Cameraman:** Chota K. Naidu. **Editor:** Nivas. **Art Director:** Ashok Kumar. **Costume Designer:** Siva. **Music Director:** M.M. Keevani. Lyricist: Veturi Sundra Ramamurthy. **Male Playback Singer:** S.P. Balasubramanyanm. **Female Playback Singer:** Chitra. **Choreographer:** D.K.S. Babu.

Sarada and Satyam are orphans brought up by an orphanage. While they were in orphanage they fell in love with each other and were married with the blessings of Swamiji of the orphanage.

Satyam is working as a jeep driver. The couple are having four children. They are leading a happy life with the earnings of Satyam as driver and Sarada as music teacher. Satyam is habituated to drinking, but promises his wife that he will give it up.

One Apparao, a neighbour, who is also a driver, is having an eye on Sarada. When Satyam is out of station, he tries to molest Sarada. But she and her children beat him and send him out. Satyam on his return beats Apparao black and blue. Apparao plans revenge.

When Sarada's son is going on the road. Apparao stages an accident resulting in the boy being admitted in the hospital. The Doctor tells the boy will survive if blood is given to him. Sarada gives her blood, which is suitable to her son. But at the time of transfusion her blood is found useless because she is having cancer. The doctor declares that she will not survive for long.

Satyam who was out of the town comes to know the fact and promises that he will now stop drinking. While he is bringing medicines for his wife, Apparao stages yet another accident and stabs him to death.

After her husband's death, Sarada requests the Swamiji of the orphanage to give her children in adoption to those who can look after them. The Swamiji arranges their adoption, except the boy who was injured in the accident.

While Sarada nears her end, she writes a letter to her daughter Radha to come on Diwali at it may be her last festival All the children come to her for Diwali and while they are happy Sarada breathes her last. Radha takes the disabled boy with her after her mother's death.

मिस्टर पेल्लम

तेलुगु/रंगीन/130 मिनट

निर्माता: गवारा पार्थ सारथी। **निर्देशक:** बापू। **पटकथा लेखक:** एम. वी. रामन्ना। **मुख्य अभिनेता:** राजेन्द्र प्रसाद। **मुख्य अभिनेत्री:** आमणि। **सह-अभिनेता:** ए. वी. सुब्रह्मणियन्। **बाल कलाकार:** मास्टर उदय। **कैमरामैन:** आर. के. राजू। **ध्वनि आलेखक:** रवि। **संपादक:** के. एन. राजू **कला निर्देशक:** मास्टर राजू। **वेशभूषा डिजाइनर:** प्रसाद। **संगीत निर्देशक:** एम. एम. कीरवानी **गीतकार:** श्री औस्ट्रा वेतुरि। **पार्श्व गायक:** एस. पी. बालासुब्रह्मणियन्। **पार्श्व गायिका:** चित्रा

तेलुगु में "**मास्टर पेल्लम**" का अर्थ है "**मिस्टर वाइफ**"। यह एक उद्देश्यपूर्ण और हास्यजनक फ़िल्म है। यह स्वर्ग और धरती-दोनों स्तरों पर घटित होती है।

एक दिन जब भगवान विष्णु और उनकी पत्नी लक्ष्मी विचार-विमर्श कर रहे होते हैं तो वह पृथ्वी पर उनके विभिन्न अवतारों के दौरान अपने योगदान के बारे में बताती है। विष्णु इस पर हंसते हैं। परन्तु नारद मुनि इस विवाद को सुलझाने के लिए कहते हैं।

पृथ्वी पर, एक साधारण गृहिणी झांसी अपने प्रिय पति बालाजी तथा अपने बच्चों के साथ रहता है। परन्तु बालाजी कुछ पुरुष-प्रेमी हैं। इससे झांसी नारी के पक्ष का समर्थन करती है।

जब बालाजी एक टी.वी. सेट खरीदते हैं तो हास-परिहास की परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं। उसके पड़ौसी कार्यक्रम देखने के लिए उनके घर आ धमकते हैं और उसके घर का सामंजस्य बिगड़ जाता है। जब उनके घर में टेलीफोन लग जाता है तो पड़ौसी उसे इतना व्यस्त रखते हैं कि बाहर से आने वाली टेलीफोन कालों के लिए समय ही नहीं रहता। टी.वी. सेट और टेलीफोन बालाजी के लिए गर्व की सफलताएं हैं।

एक दिन वह अपने बैंक में मैनेजर और अपने एक संदिग्ध मित्र के षड्यंत्र का शिकार हो जाता है। बालाजी (रोकड़िया) द्वारा कुछेक घंटों के लिए एक लाख रुपये उधार दिए जाते हैं। परन्तु रुपया लेने वाला वापिस ही नहीं आता जिसके कारण उसकी नौकरी चली जाती है।

तब झांसी बीड़ा उठाती है और परिवार चलाने के लिए एक कामकारी महिला के रूप में अन्नपूर्णा फूड्स में नौकरी करने लगती है। वह अपने कालेज के दिनों के एक मित्र के पास भी जाती हैं जो नगर के समृद्ध लोगों के साथ मिलने में उसकी सहायता करता है।

अब बालाजी के पुरुष प्रेम को धक्का लगने लगता है। अब बिना नौकरी के घर पर रहने के कारण वह "घरेलू पति" की कर्तव्य-परायण भूमिका निभाता है और बच्चों तथा घर की देख-भाल करता है।

घरेलू असामन्जस्य पैदा होता है। अपने पति को खुश करने के लिए एक दिन झांसी नौकरी पर जाने के लिए मना कर देती है। परन्तु वह उसे दफ्तर जाने के लिए कहता है। फिर भी बालाजी अपनी पत्नी की लोकप्रियता और प्रगति के प्रति ईर्ष्या करता है।

परन्तु झांसी को बोनस मिलता है। वह अपने मित्र से कुछ रुपया उधार लेती है। इस राशि में अपनी बचत को मिलाकर वह एक लाख रुपया इकट्ठा करती है ताकि बालाजी इसे बैंक को वापिस कर सकें।

बच्चे अपने माता-पिता के उतार-चढ़ाव से परेशान होकर घर से भाग जाते हैं। परन्तु बालाजी उन्हें उस समय बचा लेते हैं जब एक बच्चे को सांप काटने ही वाला होता है। अंत में, बैंक मैनेजर के षड्यंत्र का भंडा फूट जाता है।

पति-पत्नी फिर से मिल जाते हैं। बच्चो को अपनी सुख-सुविधा मिलने लगती है और हंसी-खुशी में फ़िल्म का अंत होता है।

नारद टिप्पणी करते हैं- "विष्णु माया"।

MISTER PELLAM

Telugu/Colour/130 min.
Producer: Gavara Partha Saradhi. **Director**: Bapu. **Screenplay**: M.V. Ramanna. **Leading Actor**: Rajendra Prasad. **Leading Actress**: Aamani. **Supporting Actor**: A.V. Subramanyan. **Child Artist**: Master Uday. **Cameraman**: R.K. Raju. **Audiographer**: Ravi. **Editor**: K.N. Raju. **Art Director**: Baskar Raju. **Costume Designer**: Prasad. **Music Director**: M. Keeravani. **Lyricist**: Sri Aurudra/Veturi. **Male Playback Singer**: S.P. Balasubramanyanm. **Female Playback Singer**: Chitra. **Choreographer**: Srinivas.

"Mister Pellam" in Telugu means "Mister Wife" and it is a purposeful, humorous film. It operates at the heavenly and earthly levels.

One day while Lord Vishnu and his consort Lakshmi have a discussion, Lakshmi points out her own contribution during the various avatars she had taken on earth. Vishnu laughs it off. But Sage Narada urges them to settle the issue.

On earth, there is Jhansi, a simple housewife with her loving husband Balaji and two children. But, Balaji is a bit of a male chauvnist. This leads to the assertion of feminism in Jhansi.

Humorous situations arise as for instance when Balaji buys a TV set. His neighbours invade the home to see the programmes upsetting domestic harmony. Then when the telephone is installed it is kept so busy by neighbours that it is never left free for incoming calls.

One day he falls a victim to the machinations of his Bank Manager and a mysterious friend of his. A lakh of rupees is lent for a few hours by Balaji (the cashier) but the borrower never turns up with the ultimate result that Balaji loses the job.

Then Jhansi takes up the challenge and joins Annapurna Foods as a working woman to keep the family going. She also runs into a long-time friend of her from her college days who helps Jhansi to meet the top people in the city.

It is now that Balaji's male chauvinism begins to get hurt. Now without a job at home, he plays the dutiful role of a "house-busband" looking after the children and home.

Domestic disharmony is created. To please her husband, Jhansi one day refuses to go but he coaxes her to attend office. However Balaji feels jealous of his wife's popularity and steady progress.

But Jhansi earns a bonus. She borrows some money from her friend. And with savings added she raises one lakh of rupees to be reimbursed by Balaji to the bank.

The children are torn by the ups and downs of their parents, and they run away. But they are rescued by Balaji in time before a cobra is about to bite the boy. In the end, the machinations of the bank manager are exposed.

The husband and wife are reconciled. The children seek their comfort. And there is a happy ending.

Narada's comment is "Vishnu *Maya*."

मुहाफ़िज

उर्दू/रंगीन/125 मिनट

निर्माता: वहीद चौहान। **निर्देशक:** इस्माईल मर्चेन्ट। **पटकथा लेखक:** अनिता देसाई, शारुख हुसैन। **मुख्य अभिनेता:** शशि कपूर, ओमपुरी। **मुख्य अभिनेत्री:** शबाना आजमी। **सह अभिनेत्री:** सुषमा सेठ। **कैमरामैन:** टेरी पाईयर ध्वनि आलेखक: माईक शोरिंग। **संपादक:** रोबर्टो सिल्वी। **कला निर्देशक:** सुरेश सावंत। **वेशभूषा डिजाइनर:** लवलीन बैंस **संगीत निर्देशक:** जाकिर हुसैन, उस्ताद सुलतान खान, **गीतकार:** स्वर्गीय फैज अहमद फैज, स्वर्गीय भाईजाब लखनवी। **पार्श्व गायक:** हरिहरण, सुरेश वाडकर **पार्श्व गायिका:** कविता कृष्णमूर्ति, **नृत्य संयोजक:** श्री निवास

यह उर्दू फ़िल्म अनिता देसाई के उपन्यास "इन कस्टडी" पर आधारित है। देवन भारत के किसी प्रांतीय कालेज में शिक्षक है। उसे भोपाल में रह रहे मशहूर उर्दू शायर नूर का साक्षात्कार लेने के लिए बुलाया जाता है। परन्तु जब देवन अपने इस महान् नायक को मिलने जाता है तो वह उसे बूढ़ा और शिथिल तथा पिछलगुओं से घिरा हुआ पाता है जो उसे ज्यादा पिला कर मतवाला बना देते हैं। उसे अपनी दोनों पत्नियों द्वारा सताया जाता है जिनमें से बड़ी घरेलू बेगम तथा छोटी एक सुंदर महिला है, जो अपने आपको एक कवयित्री समझती है।

अपने कालेज से रुपया उधार लेकर, देवन एक टेप-रिकार्डर खरीदता है परन्तु वह साक्षात्कार लेने में असफल रहता है; जिस जगह को वह किराए पर लेता है वह एक वेश्यालय होता है। शायर, शेर के बजाए भारी मात्रा में भोजन करने और पीने में ज्यादा दिलचस्पी रखता है और अन्ततः टेप-रिकार्डर टूट जाता है। जब देवन टेप को संपादित करने की कोशिश करता है तो उसे पियक्कड़ों की बे सिर पैर की बातें तथा बडबड़ाने की आवाजों के सिवाए कुछ नहीं मिलता।

देवन एक अन्य साक्षात्कार के लिए पुनः भोपाल आता है, परन्तु शायर की छोटी बेगम उसे बीच में ही रोक लेती है, जो उसे अपनी शायरी रिकार्ड करने के लिए कहती है। टेप-रिकार्डर पर खर्च किए गए रुपए, बीच के खर्चों तथा भोपाल जाने-आने की यात्रा पर हुए खर्च के लिए, लिए गए ऋण से देवन हताश हो जाता है।

अचानक उसे शायर से एक पैकेट मिलता है, जो अपने को मृत्यु के निकट समझता है और अपनी तमाम कृतियां उसे देता है। फ़िल्म शायर की अन्त्येष्टी पर खत्म होती है, जो एक दुःखद अवसर न हो कर एक आनन्दमय मूर्ति के रूप में दिखाई देता है।

MUHAFIZ

Urdu/Colour/125 min.

Producer: Wahid Chowhan. **Director:** Ismail Merchant. **Screenplay:** Anita Desai/Shahrukh Hussain. **Leading/Actor:** Shashi Kapoor/Om Puri. **Leading Actress:** Shabana Azami. **Supporting Actress:** Sushma Seth.

Cameraman: Tarry Pieer. **Audiographer**: Mike Shoring. **Editor**: Roberto Silvi. **Art Director**: Suresh Sawant. **Costume Designer**: Lovleen Bains. **Music Director**: Zakir Hussain/ Ustad Sultan Khan. **Lyricist**: Late Faiz Ahmed Faiz/Late Bhaizaab Lucknowi. **Male Playback Singer**: Hari Haran/ Suresh Wadekar. **Female Playback Singer**: Kavita Krishnamurthy.

This Urdu film is based on Anita Desai's English novel "In Custody." Deven, a teacher in a provincial Indian college, is commissioned to interview a famous Urdu poet, Nur, living in Bhopal. But when he seeks out his great hero, Deven finds him old and broken, surrounded by hangers-on who lead him into drunken excesses, and harassed by his two wives, a homely elder one and a beautiful younger woman, who claims to be a poetess herself.

Borrowing money from his college, Deven buys a tape-recorder, but the interview is a fiasco: the place he has hired turns out to be a brothel, the poet is more interested in consuming heavy quantities of food and drink than in reciting poetry, and finally the tape-recorder breaks down. When Deven tries to edit the tape, all he gets are some drunken, rambling cries and mutters.

Deven returns to Bhopal for another interview, but is intercepted by the yonger wife of the poet who wants him to record her poetry instead. Beset by debts for the money he has spent on the tape-recorder, on intermediaries, and on his journeys to and from Bhopal, Deven is in despair.

Unexpectedly, he receives a package from the poet, who feels himself to be near death and releases all his work into Deven's custody. The film ends on the poet's funeral, which is not a mournful occasion, but one of joyful fulfilment.

नारायम्

मलयालम/रंगीन/130 मिनट
निर्माता: राजू पिलाकट। **निर्देशक:** शशि शंकर। **पटकथा :** जे. पल्लासेरी। **मुख्य अभिनेता:** मुरली। **मुख्य अभिनेत्री:** उर्वशी। **सह अभिनेता:** जगदीश। **सह अभिनेत्री :** शांता देवी। **बाल कलाकार:** बेबी अम्बीली। **कैमरामैन:** शालू जॉर्ज। **ध्वनि आलेखक :** सी.डी. विश्वनाथन। **संपादक:** सुकुमारन्। **कला निर्देशक:** एप्पी पेरिन गोड़े। **वेशभूषा डिज़ाइनर :** एम.एम. कुमार। **संगीत निर्देशक:** जॉनसन। **गीतकार:** पी.के. गोपी। **पार्श्व गायक :** एम.जी. श्रीकुमार। **पार्श्व गायिका:** के.एस. चित्रा।

एक मंदिर के पुजारी दामोदरन नम्बूदिरि की पांच बेटियां हैं। चूंकि लड़कियां अपनी पढ़ाई में होशियार थीं, इसलिए नम्बूदिरि ने जमीन-जायदाद गिरवी रखकर भी उन्हें शिक्षित किया। उसने सोचा था कि जब उन्हें नौकरी मिलेगी तो उनकी सब दु:ख-तकलीफें खत्म हो जाएंगी परन्तु ऐसा नहीं हुआ। चूंकि उसका कोई प्रभाव नहीं था उसकी लड़कियों को कोई नौकरी न मिली। यद्यपि 'लड़कियां पढ़ी-लिखी और सुंदर थीं' फिर भी कोई व्यक्ति उनसे विवाह करने के लिए आगे नहीं आया क्योंकि उनके पिता के पास उन्हें दहेज देने के लिए पर्याप्त धन नहीं था। रोज-रोज़ के तमाशों को खत्म करने के लिए, दो बड़ी बहनों ने आत्महत्या कर ली। तीसरी बेटी ने अरबी पढ़ने का फैसला किया क्योंकि उसने सोचा कि उसे स्थानीय स्कूल या गल्फ़ देशों में कहीं आसानी से नौकरी मिल जाएगी। अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद उसे एक मुस्लिम स्कूल में अरबी अध्यापिका की नौकरी मिल गई।

शेखरन् एक प्रगतिशील तथा निर्भीक लेखक है, जिसने साहित्यिक गतिविधियों के कारण अपनी नौकरी छोड़ दी थी। उसी ने ही गायत्री मेनन को नौकरी दिलवाई थी। शेखरन् और स्कूल का मालिक हाजीयार स्कूल की प्रगति पर नज़र रखते हैं। दोनों ही स्थानीय लोगों में प्रतिष्ठित हैं। हाजी का दामाद एक झक्की आदमी है। उसने स्कूल में अरबी अध्यापक रखवाने के लिए किसी से 75,000/- रु. रिश्वत के तौर पर लिए थे। परन्तु वह यह सारी राशि जुए में हार गया। हाजी और शेखरन् द्वारा लिए गए निर्णय के आगे वह कुछ न कर सका। इसलिए साम्प्रदायिक सहारा लेते हुए यह फैला दिया कि एक हिन्दू महिला अरबी की अध्यापिका है।

समुदाय ने हाजी को इस अध्यापिका को हटाने की मांग की। परन्तु हाजी ने कहा कि अरबी दूसरी भाषाओं की तरह एक भाषा है और इसे कोई भी सीख सकता है। एक अवसरवादी राजनेता चेलाकरन भी अध्यापिका को हटाने का जेहाद छेड़ देता है और यह राजनेता उस अध्यापिका को अपने जाल में फंसाने में सफल हो जाता है। परन्तु शेखरन् अध्यापिका को बचाने के लिए आ जाता है। अत्यधिक निराशा मिलने पर वह अन्तत: स्कूल के बच्चों के लिए तैयार किए गए भोजन में जहर मिला देता है। अन्त में असली दोषी का पता लगा लिया जाता है और साम्प्रदायिक सद्भावना बनाए रखी जाती है।

NARAYAM

Malyalam/Colour/130 min.
Producer: Raju Pilakat. **Director**: Sasi Shankar. **Screenplay** : J Pallassery. **Leading Actor** : Murli. **Leading Actress** : Urvasi. **Supporting Actor** : Jagadeesh. **Supporting Actress** : Santhadevi. **Child Artist** : Baby Ambily. **Cameraman** : Salu George. **Audiographer** : CD Viswanathan. **Editor** : Sukumaran. **Art Director** : Eppi Peringode. **Costume Designer** : MM Kuar . **Music Director** : Johnson. **Lyricist** : PK Gopi. **Male Playback Singer**: MG Sreekumar. **Female Playback Singer** : KS Chitra.

Damoodaran Namboodiri, a temple priest, has five daughters. Since the girls were good at studies, even pledging his land and properties, Namboodiri educated them. When they get jobs, all their misery may come to an end, he thought, but in vain. Since he did not have any influence, his daughters did not get any job. Though the girls were educated and good-looking nobody come forward to marry them, because their father did not have enough wealth to pay as dowry. To put an end to the ongoing trauma, two elder daughters drove themselves to death. The third daughter decided to study Arabic, because she thought she could easily get a job locally or in the Gulf countries. After completion of her studies she managed to get the post of an Arabic teacher in a Muslim school.

Sekharan is a progressive and defiant writer, who had resigned his job to pursue literary activities. It was he who arranged the job for Gayathiri Menon. Sekharan and Hejiyar, the owner of the school, had an eye on the school's progress. Both enjoyed the goodwill of the locals. Haji's son-in-law Azeez was a wayward person. He had taken Rs.75,000 from somebody as bribe for fixing him. Azeez could do nothing against the decision taken by Haji and Sekharan. So he played the communal card on the fact of a Hindu woman teaching Arabic.

The community demanded Haji to sack the teacher. But Haji, said that Arabic was just another language and anybody could learn it. Chelakkadan, an opportunist politician is also roped in to dislodge the teacher and the politician managed to trap her. But Sekharan came to the rescue of the teacher. They ultimately poison the food items prepared for the school children in utter desperation. The public fury turned towards Haji and Sekharan. The real culprits are finally identified in the end and communal harmony is restored.

पतंग

हिन्दी/रंगीन/10 मिनट

निर्माता : संजय सहाय। **निर्देशक :** गौतम घोष। **पटकथा :** गौतम घोष, ए. रशीद खान। **मुख्य अभिनेता :** ओम पुरी। **मुख्य अभिनेत्री** शबाना आज़मी। **सर अभिनेता :** शत्रुघ्न सिन्हा। सह अभिनेत्री फ़रहा खान। **बाल कलाकार:** सईद शफ़ीक। **कैमरामैन :** गौतम घोष। **ध्वनि आलेखक :** रोबिन सेन गुप्ता, अनुप मुकर्जी। **संपादक :** मलय बनर्जी। **कला निर्देशक:** अशोक बोस। **वेशभूषा डिज़ाइनर :** नीलंजना घोष। **संगीत निर्देशक:** गौतम घोष

''पतंग'' विधि तथापि समानांतर घटनाओं के साथ आगे बढ़ती है। इसमें एक कथानक और बहुत से उपकथानक एवं उपाख्यान हैं जो अंततः फ़िल्म की संरचना को एक ही कथासूत्र में बुन देते हैं।

पहली घटना गया के पास छोटे से रेलवे स्टेशन मानपुर की है। ''पतंग'' में मुख्य रुप से रेल अपराधों की परिधि में लोगों के मानव संवेगों के पारस्परिक प्रभावों को दर्शाया गया है। रेल गाड़ियाँ, मालडिब्बे और छोटी-छोटी चोरियां उन लोगों के संबंधों के पृष्ठपट का गठन करती हैं जो एक बस्ती में रहते हैं और जीवन और उसके संघर्ष की निरर्थकता की याद ताज़ा कराते हैं।

मुख्य पात्र जितनी का पुत्र जिसे पतंगों की धुन सवार है, अपने चारों और फैली परिस्थितियों का ही प्रत्यक्ष परिणाम है। मथुरा को हम एक छोटे अपराधी के रुप में पाते हैं जो आस-पास फैले परिवेश से फ़ायदा उठाना चाहता है। हालाँकि मथुरा और जितनी का संबंध गुप्त है, फिर भी स्पष्ट है। अन्य घटना है रेल सुरक्षा बल (आरपीएफ) जिसमें आदर्शवादी रब्बानी, प्रभागीय सुरक्षा आयुक्त है जो मानपुर में जीवन और वहां की परिस्थितियों को बदलने की निरर्थक कोशिशों में लगा हुआ है। अपराधियों, राजनीतिज्ञों, नवधनिकों और नौकरशाही के आपस के संबंध, लगातार उड़ती हुई पतंगों के पृष्ठपट पर प्रकट होते हैं। जितनी और सोमरा, सोमरा और मथुरा, मथुरा और एम.एल.ए., एम.एल.ए. और बैंक मैनेजर, बैंक मैनेजर और उसकी पत्नी महेश्वरी और श्रमिक संघ नेताओं के बीच संबंध लुभावने हैं। रेल सुरक्षा बल कार्मिकों के अंतर्वैयक्तिक संबंध विशेष रुप से मार्मिक हैं। वे समाज में व्याप्त बेचैनी को दर्शाते हैं। यह सब विशेष रुप से सुस्पष्ट और मार्मिक बन जाता है क्योंकि उन्हें एक छोटे शहर और मूक तथा सतत रुप से मंडरा रही मृत्यु के पृष्ठपट से प्रदर्शित किया गया है।

अंत के दृश्य में, सोमरा बलि का बकरा बनने से बच जाता है और पौ फटने के साथ ही वह अपनी माँ की बाहों में अनिच्छा से लौट आता है।

PATANG

Hindi/Idour/100 min

Producer : Sanjay and Durba Sahay. **Director:** Goutam Ghose. **Screenplay:** Goutam Ghose, A. Rasheed Khan. **Heading Actor :** Om Puri. **Leading Actress :** Shabana Azami. **Supporting Actor:** Shatrughan Sinha **Supporting Actress :** Farha Khan **Child Artist:** Syeed Shafiq **Cameraman :** Goutam Ghose **Audiographer:** Rabin Sen Gupta, Anup Mukerjee **Editor :** Malay Benerjee **Art Director :** Ashoke bose **Costume Designer :** Neelanjana Ghose **Music Director :** Goutam Ghose

''Patang'' (The Kite) moves on varied, yet parallel strands. There is a plot and there are sub-plots and episodes, which finally weave into the texture of the film.

The first strand is Manpur, a wayside railway station near Gaya. "Patang" deals mainly with the interplay of human emotions of the people, at the periphery of railway crimes. The trains, the wagons and the pilferages form the backdrop of the relationships of the people, who live in a bustee, reminding one of the futility of life and its struggle.

The protagonist, Somra, son of Jitni, obsessed with kites, is a direct by-product of the circumstances around him. In Mathura, we have a petty criminal trying to make it big in the ambience around. The relationship of Mathura and Jitni is clandestine, yet understood.

The other strand is the Railway Protection Force (RPF) with Rabbani, the idealist Divisional Security Commissioner, making futile attempts to alter the way of life and things at Manpur. The nexus amongst the criminals, politicians, the *nouveau riche* and bureaucracy, all of it unfold against the backdrop of the constant flying of kites.

The relationships, between Jitni and Somra, Somra and Mathura, Mathura and Jitni, Mathura and the MLA, the MLA and the Bank Manager, the Bank Manager and his wife, Maheswari, and the trade union leaders are fascinating. The inter-personal relationships of RPF personnel become particularly poignant. They indicate the malaise of the society. All this become particularly sharp and poingnant because they are revealed against the backdrop of a small town and the mute and constant presence of death.

In the last scene, Somra escape becoming a scapegoat and limps back reluctantly to the arms of his mother as the dawn gradually ascends.

पोंदन माड़ा

मलयालम/रंगीन/120 मिनट

निर्माता: रविन्द्रनाथ **निर्देशक/पटकथा:** टी. वी. चन्द्रन। **मुख्य अभिनेता:** मम्मूटी। **मुख्य अभिनेत्री:** लबोनी बारकर। **सह अभिनेता:** नसीरूदीन शाह। **सह अभिनेत्री:** रेशमी। **कैमरामैन:** वेणु **ध्वनि आलेखक:** बोस। **संपादक:** वेणुगोपाल। **कला निर्देशक:** सी. के. सुरेश। **वेशभूषा डिजाइनर:** वज्रामणि। **संगीत निर्देशक:** जॉनसन।

"पोंदन माड़ा" 20वीं शताब्दी के पांचवे दशक अंतिम वर्षों के मध्य केरल के एक छोटे से गांव की कहानी है। फ़िल्म एक जनजातीय अछूत के जीवन और समय के बारे में है जो बदलते हुए विश्व में स्वयं को विषम परिस्थितियों में पाता है।

पोंदन माड़ा जब युवा था तो मैदानी इलाके में स्थित इस गांव में आया था। यहां वह इस इलाके के सामंत और मुखिया सीमा तम्पूरन से मिलता है जैसाकि गांववासियों द्वारा इंग्लैंड में उसके लम्बे प्रवास के कारण उसे सम्मानपूर्वक पुकारा जाता है। माड़ा, तम्पूरण की सामंतीय एस्टेट में एक खेत-मजदूर के रूप में काम करने लगता है।

अपने पूर्व की पारिवारिक पृष्ठभूमि का बिल्कुल ध्यान न रखते हुए, तम्पूरन और माड़ा एक-दूसरे से मिलते हैं और उन दोनों में एक सम्मानजनक दोस्ती पनपती है। तम्पूरन का जीवन दो हिस्सों में बंटा हुआ है जिसका संतुलन वह बड़े ध्यानपूर्वक बनाए हुए है। उसका पूर्व जीवन इंग्लैंड में गुजरता है जहां उसका विवाह होता है और उसकी एक बेटी भी होती है और दूसरी ओर अपने वर्तमान जीवन में वह एक बड़े सामंतवादी संयुक्त-परिवार का मुखिया है।

तम्पूरन आयरलैण्ड गणतंत्र की सेना में था जिसकी वजह से उसे इंग्लैंड से निकाल दिया जाता है।

फ़िल्म की कहानी बूढ़े माड़ा द्वारा एक युवा लड़की को अपने जीवन के अनुभव सुनाने से आगे बढ़ती है। यह लड़की, जिसके पिता ने अभी हाल ही में तम्पूरन के मेंशन को खरीदा है, माड़ा की दुखभरी कहानी से विचलित हो जाती है। जबरदस्ती से कराई गई अपनी शादी के दुखभरे अनुभवों के साथ-साथ माड़ा के जीवन की कहानी उसे प्रभावित करती है और वह पागल हो जाती है। उसे पता लगता है कि माड़ा उसे अब तक सात समुद्र पार से आई हुई तम्पूरन की अनभिज्ञ बेटी समझता रहा है।

PONTHAN MADA

Malayalam/Colour/120 mins.

Producer: Ravindranath. **Director/ Screenplay:** T.V. Chandran. **Leading Actor:** Mammooty. **Leading Actress:** Laboni Barkar. **Supporting Actor:** Naseeruddin Shah. **Supporting Actress:** Reshmi. **Cameraman:** Venu. **Audiographer:** Bose. **Editor:** Venugopal. **Art Director:** C.K. Suresh. **Costume Designer:** Vajramani. **Music Director:** Johnson.

"Ponthan Mada" is set in the late 1940s. in a small village of Central Kerala. The film is about the life and times of an untouchable tribal, who finds himself at odds with a changing world.

Ponthan Mada strays into this village in the plains as a young man. There he meets the lord and chief of the locality, Seema Thampuran, as he is endearingly called by the villagers referring to his long stay in England. Mada joins Thampuram's feudal estate as a farm hand.

World apart though their backgrounds are, Thampuram and Mada take to each other and a candid and endearing friendship develops between them. Thampuram's life is torn between two worlds which he balances precariously. His earlier life in England where he was married and has a daughter and his present one where he is the typical head of a large, feudal joint family.

Thampuran was with the Irish Republian Army, for which he was expelled from England.

The narative of the film unfolds as Mada, now a desolate old man, recalls his life experiences to a young girl. The girl whose father has newly acquired ownership of Thampuran's mansion, gets increasingly drawn towards Mada's tale of woe. Coupled with her own unhappy experiences over a forced marriage, the story of Mada's identifies with what Mada took her for all the while, the unknown daughter of Thampuran from far beyond the seas.

संबल वांगमा

मणिपुरी/रंगीन/115 मिनट
निर्माता: फ. शोबिता देवी। **निर्देशक/पटकथा लेखक:** के. इबोल शर्मा **मुख्य अभिनेता:** के जॉय कुमार। **मुख्य अभिनेत्री:** एन. पार्वती देवी। **सह अभिनेता:** के जितेन शर्मा। **सह अभिनेत्री:** रानी बाला देवी। **बाल कलाकार:** बिनया देवी। **कैमरामैन:** के बिमल शर्मा। **संपादक:** के. बिमल शर्मा/सुब्रता लहरी। **कला निर्देशक:** किशोर जीत सिंह **संगीत निर्देशक:** के जॉय कुमार **गीतकार:** के. इबोल शर्मा। **पार्श्व गायक:** के . जॉय कुमार

''संबल वांगमा'' (बेंआंड द बैरियर) जॉय और इबेनी की भुला दी गई कहानी है। उनका एक दूसरे के प्रति प्यार, जो उन्हें विवाह सूत्र में बांध देता है, उनके समुदाय के लोगों को अनैतिक-आचरण लगता है, क्योंकि वे चचेरे भाई-बहन थे। परन्तु परिस्थितियों का निर्णय हो चुका था। एक दिन जॉय ने अपने चचेरे भाई इबेनी को अपने प्यार से निराश होकर, एक वृक्ष से लटक कर आत्म-हत्या करने की कोशिश करते हुए देखा था। वह एक शेरनी की तरह लपकी और उसे मरने से बचा लिया। पासा फेंका जा चुका था। परन्तु उसके बाद उन्हें अपने गांव के लोगों का तिरस्कार और दण्ड भुगतना पड़ा। उन्हें पास के एक गांव में भागने के लिए मजबूर होना पड़ा। वहां भी उन्हें कठिनाइयों सहन करनी पड़ी। जब उन्हें इबेनी के पिता की मृत्यु का समाचार मिला, तो उन्होंने घर लौटने का निर्णय लिया। उनके यहाँ का एक पुत्र का जन्म निर्णायक पहलू बना और अंत में वे एक अन्य गांव में जा कर बस गए।

समय गुजरता गया और उनका पुत्र एक सुंदर युवक बन गया, जो कि एक स्थानीय लड़की के प्यार में फंस गया तथा अपने माता-पिता के जीवन को दोहराया। वह अपनी दुल्हन के साथ भाग गया और जॉय तथा इबेनी को मझंधार में छोड़ गया। एक दिन मौत उनके दरवाजे पर आई और जाय मर गई परन्तु गाँव के लोगों ने जॉय को जलाने की अनुमति नहीं दी। मृत्यु की धार्मिक क्रिया को विफल कर दिया गया।

यह कहानी सेराई पहाड़ियों के लिली फूल की दंत-कथा के समान है, जो कि अपने प्राकृतिक स्थान के अतिरिक्त किसी अन्य जगह जीवित नहीं रहता। यह एक प्रेम कथा है। यह एक नज़ाकत की कहानी है जिसे फ़िल्मी रुप में में प्रस्तुत किया गया है। फ़िल्म में मणिपुर के गांव की संस्कृति को अत्यधिक भावकतापूर्ण ढंग से निरुपित किया गया है। फ़िल्म की अपनी लय और गति है।

SAMBAL WANGMA

Manipuri/Colour/115 min.
Producer: Ph. Sobita Devi. **Director/ Screenplay:** K. Ibohal Sharma. **Leading Actor:** Khun Joykumar. **Leading Actress:** N. Parvati Devi. **Supporting Actor:** K. Jiten Sharma. **Supporting Actress:** Ranibala Devi. **Child Artist:** Binaya Devi. **Cameraman:** K. Bimol Sharma. **Editor:** K. Bimol Sharma/Subrata Lahiri. **Art Director:** Kishorjit Singh. **Music Director:** Khun Joykumar. **Lyricist:**

K. Ibohal Sharma. **Male Playback Singer:** Khun Joykumar.

Joy and Ibeni's forgotten story is "beyond the barrier." Their love for each other leading to marriage was considered immoral conduct by their community, because they were cousins. But circumstances had decided. One day, Joy saw her cousin, Ibeni, trying to commit suicide by hanging himself from a tree, out of despair for her love. Like a tigress, she rushed and rescued him from disaster. The die was cast. But then they had to face the scorn and castigation of the village. They were forced to flee to a nearby village. There also they faced difficulties. When the news of Ibeni's father's death reached them, they decided to return home. The birth of a son became a deciding factor and finally they shifted to yet another village.

Days passed by and their son grew into a handsome youth, who in turn fell in love with a local girl and repeated the life of his parents. He fled with his bride, leaving Joy and Ibeni desolate. Death knocked at their door one day and Joy died. But the village did not sanction the burial of Joy. The ritual of death was thwarted.

It is all the legend about the Lily Flower of Seroy Hills, which cannot survive except in its natural habitat. It is a story of love. It is a story of tenderness narrated filmatically. The culture of a Manipur village is revealed with great sensitivity. The film has its own rhythm and pace.

सरदार

हिन्दी / रंगीन / 182 मिनट

निर्माता : फाऊन्डेशन फार फ़िल्म्स आन इंडियाज़ वार आफ इंडिपेन्डेन्स। **निर्देशक :** केतन मेहता। **पटकथा :** विजय तेंदुलकर। **मुख्य अभिनेता:** परेश सवल। **मुख्य अभिनेत्री :** उर्मिजुवेकर। **कैमरामैन :** जहांगीर चौधरी। **ध्वनि आलेखक:** भगतसिंह राठौड़, नितेन्द्र घोष। **संपादक :** रेणु सलूजा। **कला निर्देशक :** समीर चन्दा। **वेशभूषा डिज़ाइनर:** सलीम आरिफ़। **संगीत निर्देशक :** वनराज भाटिया।

यह सरदार वल्लभ भाई पटेल पर हिंदी में बना कथाचित्र है। इसका निर्माण स्वर्गीय एच. एम. पटेल और प्रस्तुतीकरण भारतीय स्वाधीनता संग्राम फ़िल्म फाऊन्डेशन द्वारा किया गया है।

यह जीवनी फ़िल्म 1945 से 1950 तक सरदार के जीवन के पिछले पांच वर्षों पर केंद्रित है, जब वे भारत की स्वाधीनता प्राप्त करने तथा राष्ट्र को एकीकृत करने की मुख्य हस्ती के रूप में राष्ट्रीय मंच पर उतरे। ऐसा लगता है कि सरदार के बिना यह सोचा भी नहीं जा सकता था कि कई सौ देशी राज्यों के टुकड़ों में बंटा हुआ देश और भारत का दु:खद विभाजन कभी एक शक्तिशाली धर्म-निरपेक्ष राज्य के रूप में काम कर सकेगा। इसे सरदार पटेल ने संभव बना दिया। वे गांधीजी और उनके मूल्यों के सच्चे शिष्य थे। 1920 के बारडोली सत्याग्रह से उनमें व्यापक जोश आया। प्रेक्टिस छोड़कर वे गांधीजी से जा मिले और पूरे स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान उनके सच्चे अनुयायी के रूप में काम किया।

भारत की स्वतंत्रता -प्राप्ति के बाद का समय सरदार पटेल का सर्वोत्तम समय माना गया जब सरदार पटेल द्वारा देश की समस्या दर समस्या का बखूबी समाधान किया गया।

यह फ़िल्म, स्वतंत्र भारत को बनाने में सरदार के अद्वितीय योगदान के प्रति एक श्रद्धांजलि है, जोकि ऐसी स्मृति है जो भारत के सामने आज और कल आने वाली समस्या को सुलझाने के लिए हमें हमेशा उनकी याद दिलाती रहेगी।

फ़िल्म में सुप्रसिद्ध अभिनेता परेश रावल को सरदार पटेल के रूप में, अनु कपूर को महात्मा गांधी के रूप में, बेंजामिन गिलानी को जवाहरलाल नेहरू के रूपमें, श्री वल्लभ व्यास को मोहम्मद अली जिन्नाह के रूप में और टॉम आल्टर को जवाहरलाल नेहरू के रूप में दर्शाया गया है। यह फ़िल्म हम सब को शिक्षित करने के साथ हमारा मनोरंजन भी करती है।

SARDAR

Hindi/Colour/182 min.

Producer: Foundation For Films on India's War of Independence. **Director:** Ketan Mehta. **Screenplay** : Vijay Tendulkar. **Leading Actor** : Paresh Rawal. **Leading Actress** : Urmi Juvekar. **Cameraman** : Jehangir Chowdhury. **Audiographer** : Bhagat Singh Rathore, Nitendra Ghosh. **Editor** : Renu Saluja. **Art Director** : Samir Chanda. **Costume Designer** : Salim Arif. **Music Director** : Vanraj Bhatia.

This is a feature film on Sardar Vallabhbhai Patel in Hindi. Produced by late H.M. Patel and presented by The Foundation for Films on India's

War of Independence.

This biographical film concentrates on the last five years of Sardar's life from 1945 to 1950, when he strode on the national scene as a key figure in wresting Indian independence and integrating the country. Without Sardar Patel, it seems unthinkable that the fragmented nature of the country, with its several hundred native states after the tragic partition of India, would have allowed it to function as a strong sovereign state. This was made possible by Sardar Patel. A true disciple of Gandhiji and his values, his baptism of fire was with the Bardoli Satyagraha of the 1920's. Giving up law practice to join Gandhiji, he functioned as Gandhiji's able lieutenant all through the independence movement. The post-independence period of India turned out to be Sardar Patel's finest hour, when problem after monumental problem was solved by him.

This film is a tribute to the Sardar's inestimable contribution to the making of Free India, a memory that can stand us in good stead to face problems of India today and tomorrow.

The film features the well-known actor, Paresh Rawal as Sardar Patel, Anu Kapoor as Mahatma Gandhi, Benjamin Gilani as Jawaharlal Nehru, Sri Vallabh Vyas as Mohamad Ali Jinnah and Tom Alter as Lord Mountbatten. It entertains, as it also educates us all.

सर

हिन्दी/रंगीन/120 मिनट

निर्माता: मुकेश भट्ट। **निर्देशक:** महेश भट्ट। **पटकथा लेखक:** प्रो. जय दीक्षित । **मुख्य अभिनेता:** नसीरूद्दीन शाह। **मुख्य अभिनेत्री:** पूजा भट्ट। **सह अभिनेता:** अतुल अग्निहोत्री, परेश रावल। **कैमरामैन:** प्रवीण भट्ट **ध्वनि आलेखक:** उदय इनामति। **संपादक:** संजय संकला।**कला निर्देशक:** गप्पा चक्रवर्ती।**वेशभूषा डिजाइनर:** अन्ना सिंह। **संगीत निर्देशक:** अनु मलिक। **गीतकार:** कातील शफाई, राहत इंदौरी। **पार्श्व गायक:** कुमार शानु। **पार्श्व गायिका:** अल्का याग्निक। **नृत्य संयोजक:** राजू खान।

एक विख्यात बम्बई के कालेज के मनोविज्ञान के प्रोफेसर तथा परामर्श केंद्र के निदेशक अमर वर्मा को मानसिक तौर पर विकृत तथा समस्याएं पैदा करने वाले लड़के-लड़कियों का उपचार करते समय एक बिना मां की लड़की पूजा के एक असाधारण मामले से निपटना पड़ता है जिसने अपने बचपन से ही अपने पिता के साथ कभी बात नहीं की थी और जो लगभग गूंगी हो गई थी। वह एक पिल्ले को छोड़ कर किसी से प्यार नहीं करती थी जिससे वह एकान्त क्षणों में बात किया करती थी। फिर भी, उसके पिता वेलजी भाई के लिए जो अपराध-जगत का एक खतरनाक सरगना है और घृणा, हिंसा, लालच और अपराध की दुनिया में रहता है, वह उसके असीम प्यार की एक मात्र पात्र है।

पिता अपनी बेटी की उसके प्रति पूर्ण विरक्ति के कारण एक असहाय और दयनीय व्यक्ति हो जाता है। वेलजी ने प्रोफेसर वर्मा के बारे में सुना है और वह सोचता है कि शायद उसके अनुभव और सहानुभूति से कुछ सहायता मिल सके। उसके बाद सौदेबाज़ी करने और उसे फुसलाने के तमाम प्रयत्नों के विफल हो जाने पर वेलजी उसकी सहायता करने का निवेदन करता है। दयालु प्रोफेसर परेशान पिता की पीड़ा से विचलित होकर पूजा की सहायता करने के लिए सहमत हो जाता है और उसे अपने ही पांव पर खड़ा करने की कोशिश करता है। इसके लिए वेलजी के घर पर ही प्रबंध किया जाता है।

फिर भी, वेलजी के रहस्यमय विला में जाने और पूजा को मिलने के बाद प्रोफेसर इस नतीजे पर पहुंचता है कि समस्या बेटी की नहीं है बल्कि यह समस्या पिता की है जिसके लिए रुपये-पैसे और शक्ति की लालसा का उपचार करने की आवश्यकता है। प्रोफेसर, पूजा को घर की चारदीवारी से बाहर निकलने में सफल होता है। जीवन में पहली बार उसे मिट्टी, ताजी हवा, खुले आसमान और आजादी की सांस लेने का अनुभव होता है। अब वह अतुल के प्यार की ओर झुकती है जो वह इससे पहले नहीं कर पाई थी।

अब वह अपने पिता के जेलनुमा घर में वापिस जाने का इरादा छोड़ देती है। फिर भी, वह प्रोफेसर वर्मा के कहने पर घर वापिस जाती है क्योंकि वह कहता है कि जीवन से भागना, समस्याओं का हल नहीं है। वह अब अलग, मजबूत और अपने पर भरोसा करने वाली लड़की बन जाती है, जो अपनी लड़ाई लड़ने के लिए तैयार है। वेलजी उस के घोषित विरोध पर हैरान और आगबबूला होता है तथा "सर" पर हिंसक प्रहार करता है। फिर भी, प्रोफेसर निर्भीक और अविचलित रहता है। वेलजी की दौलत और बाहुबल शक्ति सर की हिम्मत और नैतिक शक्ति का मुकाबला नहीं कर सकती।

अंत में न केवल पूजा तथा अतुल के प्यार तथा सर के अटल विश्वास की जीत होती है बल्कि एक घोर अपराधी वेलजी भाई का भी पूरी तरह कायापलट हो जाता है।

SIR

HINDI/Colour/120 min.
Producer: Mukesh Bhatt. **Director:** Mahesh Bhatt. **Screenplay:** Prof. Jay Dixit. **Leading Actor:** Naseeruddin Shah. **Leading Actress:** Pooja Bhatt. **Supporting Actor:** Atul Agnihotri, Paresh Rawal. **Cameraman:** Pravin Bhatt. **Audiographer:** Uday Inamati. **Editor:** Sanjay Sankla. **Art Director:** Guppa Chakraborty. **Costume Designer:** Anna Singh. **Music Director:** Anu Malik. **Lyricists:** Qateel Shafai, Rahat Indori. **Male Playback Singer:** Kumar Sanu. **Female Playback Singer:** Alka Yagnik. **Choreographer:** Raju Khan.

Amar Verma, a Professor of Pyschology and the Director of the Counselling Centre of a reputed Bombay College, during the course of his routine handling of the mentally disturbed and problem boys and girls, comes across an unusual case of a motherless girl Pooja, who had not talked to her father since her childhood and had become almost dumb. There is nobody whom she loves except a puppy dog she talks to in her lonely moments. However, for her father, Velji Bhai, a dreaded underworld king living in a world of hatred, violence, greed and crime, she is the sole object of boundless love.

The father remains a helpless, pathetic being due to the total estrangement from his daughter.

Velji has heard about Prof. Verma, whose experience and compassion he thinks, may perhaps help. After vain attempts at bullying and coaxing the Professor, Velji begs of him to help. The compassionate Professor, moved by the agony of a suffering father, agrees to help Pooja and make her stand on her own. The 'sittings' are arranged at Velji's house.

The Professor, however, realises, after visiting the mystery-filled Velji Villa and meeting Pooja, that the problem was not with the daughter but with the father, who needed to be cured of his lust for money and power. The Professor, succeeds in bringing Pooja out of the four walls. For the first time she gets the feel of raw earth, fresh air, an open sky and a breath of freedom. She is now free to respond to Atul's love, which she could not do before.

She loathes the idea of returning to her father's prison house. Yet, she has to return for, as Prof tells her that running away from life is no answer to its problems. She becomes a different person, strong and self-assured, ready to fight her own battle. Velji is shocked and furious at her pronounced rebellion and gets violent at the "Sir". The Professor, however, remains undaunted and undeterred Velji's money and muscle power proves no match to "Sir's" courage and moral strength.

The final showdown results not only in a final victory for Pooja and Atul's love and "Sir's" unflinching convictions, but also in a complete metamorphosis of the hardcore criminal, Velji Bhai.

सोप्पनम्

मलयालम/रंगीन/149 मिनट

निर्माता: सागा फिल्म्स **निर्देशक:** पी. जयराज **पटकथा लेखक:** कैतपुरम दमोदरन **मुख्य अभिनेता:** मनोज के. जयन **मुख्य अभिनेत्री:** चिप्पी। **सह अभिनेता:** ओडुविल उन्निकृष्णन। **सह अभिनेत्री:** कवियुर पोन्नमा। **बाल कलाकार:** सोना एन्थनी। **कैमरामैन:** पी. सुकुमार। **संपादक:** बी. लेनिन विजयन। **कला निर्देशक:** पुष्पराज। **वेशभूषा डिजाइनर:** पलनी कस्ट्यूमर **संगीत निर्देशक:** एस. पी. वेंकटेश **गीतकार:** कैतापुरम दामोदरन नम्बूदिरी। **पार्श्व गायक:** के. जे. येशुदास/मनोज मधुर शेष गोपाल। **पार्श्व गायिका:** चित्रा/मंजू। **विशेष प्रभाव सृजक:** बोस।

एक तीर्थ-स्थान पर एक सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ आनंत कृष्णन वारियर को अपने महान शिक्षक राजा के अचानक आने के बारे में पता चलता है। ईश्वर के बाद अगर किसी को माना जाता है तो वे राजा वर्मा ही हैं। जब वे मूकम्बिका देवी के मंदिर में अपनी संगीत साधना की भेंट के लिए जाते हैं तो उस समय उसे अपने पुराने जीवन की याद ताजा होने लगती है।

अपने माता-पिता की मृत्यु के बाद आनन्त कृष्णन अपने एकमात्र अंकल की देख-भाल में रह जाता है और अन्ततः भूख और गरीबी का शिकार हो जाता है। इन मुसीबतों को भूल जाने के लिए, वह संगीत सीखने लगता है ताकि सांत्वना मिल सके।

एक दिन आनन्त कृष्णन अपने शिक्षक के गांव की ओर चल पड़ता है। गांव के मंदिर का पुजारी और मराड़ उसे शिक्षक के साथ मिलाने में ही नहीं बल्कि उसका शिष्य बनाने में भी उसकी सहायता करते हैं।

धीरे-धीरे वह अपने शिक्षक की बेटी को मिलने लगता है और वे एक दूसरे को प्यार करने लगते हैं। आनन्त कृष्णन एक ओर अपने शिक्षक के प्रति उसकी श्रद्धा और दूसरी ओर शादी के बंधन में बंधने की जल्दी के लिए बेटी द्वारा बार-बार की जाने वाली प्रार्थनाओं के कारण होने वाले मानसिक संताप में फंस जाता है। जैसे ही शिक्षक को उनके संबंध के बारे में पता चलता है वह आनन्त कृष्णन को उसी समय निकाल देता है जो अपनी प्रियतमा को मिले बिना ही वहां से चला जाने के लिए बाध्य होता है।

आनन्त कृष्णन देवी मूकम्बिका की शरण में जाता है, जहां वह अपने देवता की प्रशंसा में गीत गाकर अपना समय व्यतीत करता है। पिता के दुर्व्यवहार के कारण बेटी पागल हो जाती है। जब उसे स्वस्थ करने के सभी उपचार असफल हो जाते हैं तो अन्ततः शिक्षक अपनी बेटी को लेकर देवी मूकम्बिका के मंदिर में पहुंचता है। दैवी मौजूदगी में, आनन्त कृष्णन शिक्षक की बेटी को दयनीय और दुखद स्थिति में देखता है। पूर्व में किए गए उसके अभिवचन उसे फिर से याद आ जाते हैं और वह अपने साथ किसी अन्य महिला की निश्चित की गई शादी को अस्वीकार कर देने की उसकी बात को मान लेता है। वास्तव में, मूकम्बिका इस विचित्र शादी की साक्षी थी।

SOOPANAM

Malayalam/Colour/149 min.
Producer: Saga Films. **Director**: P. Jayaraj. **Screenplay**: Kaithapuram Damodaran. **Leading Actor**: Manoj K. Jayan. **Leading Actress**: Chippy. **Supporting Actor**: Oduvil Unnikrishanan. **Supporting Actress**: Kaviyur Ponnamma. **Child Artist**: Seena Antony. **Cameraman**: P. Sukumar. **Editor**: B. Lenin Vijayan. **Art Director**: Pushparaj. **Costume Designer**: Palani Costumer. **Music Director**: S.P. Venkitesh. **Lyricist**: Kaithapuram Damodaran Namboodiri. **Male Playback Singer**: Yesudas/ Manoj Madhura Shesha Gopal. **Female Playback Singer**: Chitra/Manju. **Special Effects Creator**: Bose.

It is at a pilgrim centre, a renowned musician, Anantha Krishnan Warrier comes to know about the unexpected arrival of his one-time great teacher, Raja Raja Varma, who is considered next to God only, when he visited the temple of Goddess Mookambika to offer his musical offerings. At that moment, his mind started the recollection of his past life.

After the demise of his parents, Anantha Krishnan is left to the care of his only uncle and he ultimately becomes a victim of hunger as well as poverty. In order to forget the suffering, he resorted to find solace in music.

One day Anatha Krishnan has set on his journey to the village of his selfchosen teacher. The priest of village temple and Marar help Anantha Krishnan not only to meet the teacher Raja Raja Varma but also to become his student.

Gradually, Anantha Krishnan happenes to meet the daughter of his teacher and love begins to overpower their minds. Anantha Krishnan is racked by mental agony because of his devotion to his teacher on one side and the repeated prayers of the daughter to speed up the bond of matrimony. The moment the teacher comes to know of the affair, immediately he dismisses Anantha Krishnan, who is forced to leave the place, even without meeting his beloved to bid farewell.

Anantha Krishnan rushes to Goddess Mookambika, where he spent his time singing hymns in praise of the deity. Then onwards he became a famous musician. Due to ill treatement by the father, the daughter became insane. Various tretments having failed to cure his daughter, the teacher finally reaches the temple of Goddess Mookambika with her. In her divine presence, Anantha Krishnan happened to see the pitiable and grief-stricken daughter of the teacher. The recollections of her past pleadings overpowered his mind and he accepted her, ignoring the marriage with another woman fixed for him. Mookambika was the witness to a strange marriage indeed.

शून्य थेके शुरू

बंगला/रंगीन/श्याम-श्वेत/127 मिनट
निर्माता: एच. दास/एम. मैत्रा/एम. दास। **निर्देशक/पटकथा लेखक:** अशोक विश्वनाथन। **मुख्य अभिनेता:** धृतिमान चटर्जी। **मुख्य अभिनेत्री:** ममता शंकर। **सह अभिनेता:** एम. विश्वनाथन। **सह अभिनेत्री:** ममता शंकर। **कैमरा मैन:** विवेक बनर्जी। **ध्वनि आलेखक:** चिन्माय नाथ। **संपादक:** महादेव शी। **कला निर्देशक:** मधुमंती मैत्रा/बुद्धदेव बोस। **वेशभूषा डिज़ाइनर:** अशोक विश्वनाथन। **संगीत निर्देशक:** दीपक चौधरी। **पार्श्व गायक:** रशीद हुसैन खान।

19वीं शताब्दी के सातवें दशक का अंतिम भाग पश्चिम बंगाल में अशांति और अनिश्चितता का काल था। डा. भीष्म देव शर्मा और सत्यजीत पायने नाम के दो शिक्षाविद् उस समय भूमिगत कार्यों में लगे हुए थे। वे क्रान्ति के सिद्धांत और व्यवहार की चर्चा करते हैं और इस आंदोलन में कूद पड़ते हैं। परन्तु इस आंदोलन को विफल कर दिया जाता है और डा. शर्मा को पुलिस के जुल्म सहने पड़ते हैं, न्यायिक कार्रवाई भुगतनी पड़ती है और उसे जेल हो जाती है।

जब डा. शर्मा को एक दशाब्दी से भी अधिक समय के बाद जेल से छोड़ा जाता है तो वह स्वयं की परछाई मात्र बन के रह जाता है और अब पूरी तरह से अकेला रह जाता है। शायद अब सत्यजीत पायने नहीं रहते और अब तक यह आंदोलन सौ हिस्सों में बंट गया होता है।

डा. शर्मा एक भिखारी की पोशाक में गांव और नगर में मारा-मारा फिरता है। एक दिन उसे समर गुप्ता पहचान लेता है जो कि उसका विश्वविद्यालय के दिनों में एक पुराना मित्र है। डा. शर्मा को गुप्ता अपने घर ले जाते है जहाँ नगर का शोर-शराबा झांकता तक नहीं और जहां सुंदर शिल्प तथ्यों, उपकरणों और रंगों से जादू की विस्मयकारी दुनिया नज़र आती है।

गुप्ता और उसकी पत्नी त्रिपति तथा उनकी बेटी प्रजना की देख-रेख में शर्मा धीरे-धीरे सामान्य हो जाते हैं। उसमें और गुप्ता में एक सहानुभूति विकसित होती है जो कि अपने ही द्वारा बनाए गए कारपोरेट साम्राज्य में घुटन महसूस करने लगता है।

प्रजना, जो कि अविवाहित लेखिका है, डा. शर्मा की ओर आकर्षित होती है। संस्मरण, वाद-विवाद और संबंध के इस अन्तः नाटक में, प्रजना अपने ही मस्तिष्क में, एक भाषान्तरकार तथा अन्वेषक की जटिल भूमिका निभाती है। वह अपनी प्रिय सहेली शर्मिला के साथ विचार-विमर्श करती है, जो कि अपने ही बारे में दूसरे पक्ष प्रस्तुत करती है। डा. शर्मा को एकल व्यक्ति पार्टी, उदयन के अयोचित प्रवेश से एक बार फिर मस्तिष्क व्यापार के लिए उकसाया जाता है।

तब डा. शर्मा बुरी तरह बीमार पड़ जाते हैं और उनकी दशा बिगड़ती चली जाती है। उसके बिस्तर के पास उसके परिवार के सदस्य, शर्मा, शर्मिला और अपूर्व दास गुप्ता हैं जो कभी प्रजना के बहुत निकट था।

डा. गुप्ता की मृत्यु के पश्चात् डा. शर्मा डाटा कलेक्टर के रूप में पार्ट टाइम करता है और नगर के बाहरी भाग में एक कमरे के मकान में रहने लगता है।

अपने प्रस्थान से पूर्व एक पार्टी में वह वर्तमान के खोखलेपन के मुकाबले अपने भूतकाल के ठोसपन से संतुष्ट होता है। शर्मा और प्रजना, दोनों ही उदासमन से अपने संबंधों की क्षणभंगुरता के बारे में पूरी तरह से जानकार हैं।

खालीपन में शर्मा के कमरे में इधर-उधर टहलते हुए, प्रजना को उसकी अंतरात्मा से यह महसूस होता है कि शर्मा अभी भी उसके साथ हैं। शायद वह अब युवा क्रांतिकारी उदयन के पास जाएगा। वह कई चीजों के बारे में ध्यान-मग्न होती है, जिससे उसे यह ख्याल भी आता है कि शर्मा को शून्य की वापसी से लेकर अभाव और अवसाद की आवश्यकता है।

SUNYA THEKE SURU

Bengali/Colour/Black & White/127 min. **Producers:** H. Das/M. Maitra/M. Das. **Director/Screenplay:** Ashoke Viswanathan. **Leading Actor:** Dhritiman Chatterjee. **Leading Actress:** Mamta Shankar. **Supporting Actor:** M. Viswanathan. **Supporting Actress:** Lily Chakraborty. **Cameraman:** Vivek Banerjee. **Audiographer:** Chinmoy Nath. **Editor:** Mahadeb Shi. **Art Director:** Madhumanti Maitra/Buddhadev Bose. **Costume Designer:** Ashoke Viswanathan. **Music Director:** Dipak Chowdhury. **Male Playback Singer:** Rashid Husain Khan.

The late 1960s, a period of turbulence and uncertainty in West Bengal. Dr. Bhishamdev Sharma and Satyajit Pyne, two academics, who are peripherally involved in the underground activity of the time, discuss theory and practice of revolution and plunge into the movement. But the movement is throttled and Dr. Sharma experiences police burtality, judicial apathy and jail.

When Dr. Sharma is released, more than a decade later, he is but a shadow of his former self, and he is completely alone. Satyajit Pyne is probably no more and the movement has split into a hundred factions.

Wandering in the countryside and in the city, Dr. Sharma is in the garb of a half-crazy beggar. One day he is recognised by Samar Gupta, an old friend from his university days. Dr. Sharma is installed in Gupta's house. Where the sounds of the city do not seep through and beautiful artefacts, appliances and colours create a mysterious world of magic.

Under Gupta's care, as also that of his wife. Tripti, and their daughter, Prajna, Sharma moves towards normalcy. An empathy grows between him and Gupta, who feels suffocated in the corporate empire of his own creation. Prajna, an unmarried authoress, feels drawn towards Dr. Sharma. In an interplay of reminiscences and debates and association, Prajna, assumes the complex role of an interpreter and investigator, all within her own mind. She interacts with her close friend, Sharmila, who in a sense, represents the other side of her own self.

Dr. Sharma is provoked once again into cerebration by the unannounced entry of Udayan, a one-man party.

Then Dr. Gupta falls critically ill and is sinking. At his bedside is his family, Sharma, Sharmila and one Apurba Dasgupta, who was once very close to Prajna.

After Dr. Gupta's death, Dr. Sharma secures a part-time job as a data-collector, and moves over to a one-roomed flat in the outskirts of the city.

At a party on the evening of his departure, he is convinced of the solidity of his past as contrasted with the hollowness of the present. Both Sharma and Prajna are acutely aware of the evanescence of their relationship with sadness.

Wandering in the emptiness of the room where Sharma had stayed, Prajana realizes that Sharma is still with her, at least in soul. Perhaps, he will go to Udayan, the young revolutionary. Her musings are many, including the one that Dr. Sharma needs a return to Zero–nothingness and sadness.

तिरूडा-तिरूडा

तमिल/रंगीन/170 मिनट
निर्माता: एस. श्रीराम **निर्देशक/पटकथा लेखक:** मणिरत्नम **मुख्य अभिनेता:** प्रशान्त। **मुख्य अभिनेत्री:** हीरा **सह अभिनेता:** एस. पी. बालासुब्रह्मण्यिन् **सह अभिनेत्री:** अनु अग्रवाल। **कैमरामैन:** पी.सी. श्रीराम **ध्वनि आलेखक:** श्रीधर। **संपादक:** सुरेश उर्स। **कला निर्देशक:** तोता थरानी **वेशभूषा डिज़ाइनर:** मालिनी श्रीराम। **संगीत निर्देशक:** ए. आर. रहमान। **गीतकार:** वैरा मुतु। **पार्श्व गायक:** मणो। **पार्श्व गायिका:** चित्रा **नृत्य संयोजन:** सुंदरम **विशेष प्रभाव सृजक:** सेतू

सरकार से संबंधित एक हजार करोड़ रुपए कम्प्यूटर प्रणाली द्वारा लगाए गए ताले के एक आयरन सेफ में रखे जाते हैं। इस सेफ को बम्बई से दक्षिण भारत को जाने वाली ट्रेन में रखा जाता है। रास्ते में ट्रेन में घात लगाकर इस आयरन सेफ को लूट लिया जाता है। यह सारा षड्यंत्र लंदन में रह रहे भारतीय, विक्रम द्वारा बम्बई में रहने वाले एक शिपिंग एजेंट अशोक चेलिया से मिलकर बनाया जाता है। वित्त मंत्री इस मामले को एक वरिष्ठ सी.बी.आई. अधिकारी लक्ष्मी नारायण को सौंपते हैं। चेलिया को पकड़ लिया जाता है। वह यह सूचना देता है कि चन्द्रलेखा नाम की औरत के पास कोर्ड नम्बर वाला कम्प्यूटर कार्ड है, जोकि इस आयरन सेफ को खोलने की चाबी है। चन्द्रलेखा, लक्ष्मीनारायण को चकमा देती है और चुपके से भाग जाती है।

अलगू, कादिर और रजती, जो लोगों की छोटी-छोटी सेफ़ तोड़ने जैसे बदनाम कामों में लगे रहते हैं, एक चलती ट्रेन में चढ़ते हैं। वे चंद्रलेखा से मिलते हैं। सी.बी.आई. का जत्था ट्रेन को रुकवाता है और जांच शुरू कराता है। परन्तु चन्द्रलेखा और उसके नए बने दोस्त एक घोड़ा-गाड़ी में भाग जाते हैं। सी.बी.आई. के अधिकारी उनका पीछा करते हैं परन्तु उन्हें सफलता नहीं मिलती।

विक्रम भारत में आ जाता है। वह अशोक को जेल से छुड़वाता है ओर उसे मार देता है। वह अपने आदमियों को साथ लेकर चन्द्रलेखा को ढूंढना शुरू करता है। वह उसे ढूंढ लेता है और उससे कम्प्यूटर कार्ड ले लेता है। अलगू, जो इस कार्ड का मूल्य जानता है, उसे बेवकूफ बनाता है और उसे चुरा लेता है। चन्द्रलेखा सी.बी.आई. को विक्रम की चालों से अवगत कराती है।

जब विक्रम आयरन सेफ को लेकर ट्रेन में जा रहा होता है तो सी.बी.आई. के अधिकारी, अलगू और कादिर उसके प्रयत्न को विफल कर देते हैं और रुपए-पैसे के साथ सेफ को अपने कब्जे में कर लेते हैं। विक्रम झड़प में मारा जाता है। रुपया-पैसा वित्त मंत्रालय को वापिस मिल जाता है।

THIRUDA THIRUDA

Tamil/Colour/170 min.
Producer: S. Sriram. **Director/ Screenplay:** Mani Ratnam. **Leading Actor:** Prashanth. **Leading Actress:** Heera. **Supporting Actor:** S.P. Balasubramaniam. **Supporting Actress:** Anu Agarwal. **Cameraman:**

P.C. Sreeram. **Audiographer**: Sridhar. **Editor**: Suresh Urs. **Art Director**: Thotaatharani. **Costume Designer**: Malini Sriram. **Music Director**: A.R. Rahman. **Lyricist**: Vaira Muthu. **Male Playback Singer**: Mano. **Female Playback Singer**: Chitra. **Choreographer**: Sundaram. **Special Effects Creator**: Sethu

One thousand crore rupees belonging to the Government are stocked in an iron safe with computerised locking system. It is loaded in a train leaving Bombay and proceeding to South India. The train is waylaid and the iron safe is taken away. The entire plot is engineered by Vikram, a London based Indian with the connivance of Ashok Chelliah, a shipping agent living in Bombay. The Finance Minister entrusts the case to Lakshminarayan a senior CBI Officer. Chelliah is arrested. He informs that one Chandralekha is in possession of the coded computer card, which is the key to open the iron safe. Chandralekha hoodwinks Lakshminarayan and escapes.

Alagu, Kadir and Rajathi who are all involved in nefarious activities like breaking small safes of individuals get into a running train. They meet Chandralekha. The CBI Squad stops the train and start checking. but Chandrlekha and her new-found friends escape in a horse-drawn cart. The CBI give them a hot chase in vain.

Vikram comes down to India. He gets Ashok released on bail and kills him. He starts out with his own men to track down Chandralekha. He locates her and takes the computer card from her. Alagu who knows the value of the card fools him and steals it. Chandralekha informs CBI about Vikram's movements.

When Vikram is going away in a train with the iron safe, CBI, Alagu and Kadir foil his attempts and get hold of the safe with money. Vikram is killed in the encounter. The money is restored to the Ministry of Finance.

उत्तरण

बंगला/ रंगीन/82 मिनट

निर्माता: राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम- दूरदर्शन/ निर्देशन **संगीत :** संदीप राय, **कहानी, पटकथा:** सत्यजीत राय। **मुख्य अभिनेता:** सौमित्र चटर्जी। **मुख्य अभिनेता :** शीलालक्ष्मी मुंशी। **सह अभिनेता:** साप्र मेहर। **सह अभिनेत्री :** बीना, **बाल कलाकार :** प्रत्युश बनर्जी। **कैमरामैन :** वरुण अशोक बोस । **संपदक :** दुलाल दत्त। **ध्वनि आलेखक :** सुजीत कुमार। **मैकअप :** अनन्त दास। **वेशभूषा डिज़ाइनर :** लताराय । **संगीत निर्देशक :** संदीप राय।

उच्च वर्ग के रोगियों का उपचार करने वाले कलकत्ता के प्रतिभावान सामान्य चिकित्सक डॉ. निहार सेन गुप्ता को जमशेदपुर की रोटरी क्लब द्वारा भाषण देने के लिए आमंत्रित किया गया है। उनका एक बहुत पुराना दोस्त, जिससे वे पिछले दस वर्षों से नहीं मिले हैं, जमशेदपुर में रहता है और वे उससे मिलने की सोचते हैं।

सेन गुप्ता अपने चालक के साथ गाड़ी में निकलते हैं और राजमार्ग पर कार का टायर फट जाता है। जबकि टायर पलटा जा रहा था सेन गुप्ता को झाड़ियों के पीछे से कराहने की आवाज सुनाई देती है। उसकी उत्सुकता बढ़ जाती है और वे इधर-उधर देखकर पाते हैं कि एक किसान जमीन पर बेहोशी की हालत में पड़ा हुआ है जो स्पष्ट रूप से सांस लेने की बीमारी से ग्रस्त हैं। कोशिश करके सेन गुप्ता किसान से यह पता लगा लेते हैं कि वह पास के गाँव कोदाली का रहने वाला है। सेन गुप्ता अपना चालक को कोदाली भेजकर कुछ लोगों को लाने के लिए भेजते हैं ताकि बीमार व्यक्ति को घर पहुँचाया जा सके।

गाँव से चार व्यक्ति आकर बीमार व्यक्ति को पहचान कर बताते हैं कि वह हलधर है जिसे गांजे की लत है। ''मैं और देर यहाँ नहीं रूक सकता'', सेन गुप्ता ने कहा। ''तुम इसके इलाज के लिए डाक्टर को बुलाओ। उनमें से एक बूढ़े किसान ने कहा'' श्रीमान इसे डाक्टर की आवश्यकता नहीं है। इसे इसी प्रकार की बीमारी चार वर्ष पहले भी हुई थी। दवाईयां इस पर असर नहीं करती है। अंत में इसे ओझा ने ठीक किया था।''

सेन गुप्ता अपनी यात्रा पर चल पड़ते है। चालक कहता है कि जब वह लड़का था उसने एक ओझा को इलाज करते देखा है। वे रोगियों का इलाज बड़ी निर्दयता से करते हैं। सेन गुप्ता कुछ देर सोचकर चालक से गाड़ी को कोदाली गांव को वापिस लौटाने के लिए कहते हैं।

जब झाड़-फूंक चल रही होती है तब डाक्टर साहब पहुंचते हैं। इस दृश्य को देखकर डॉक्टर साहब विचलित हो जाते हैं और हस्तक्षेप करके उसे रुकवा देते हैं। ''हलधर को तुरंत उसके कमरे में ले जाओ।''

कमरे में सेन गुप्ता किसान को साँस लेने में फायदे के लिए सुई लगाते हैं। इसमें उनकी सहायता एक किशोर विधवा करती है जो किसान की बेटी मानसी है।

''क्या मेरे पिता जीवित रहेंगे'' मानसी पूछती है। ''यदि वे जीवित नहीं भी रहते तो मैं तुम्हारे भाई के भविष्य के लिए प्रबंध करूंगा। तुम दोनों कलकत्ता आ जाओ और मैं कोशिश करूंगा कि थोड़े समय पश्चात् तुम नर्स बन जाओगी। इस सबका खर्च मैं उठाऊँगा।'' अब सेन गुप्ता अपनी यात्रा जारी रखने के लिए कहते हैं।

''रात में यदि कुछ हो गया तो क्या करेंगे?'' मानसी पूछती है। ''जिस भी कार्य की जरूरत पड़ेगी उसे करने की तुम्हारे में शक्ति है'' डाक्टर ने उत्तर दिया। मानसी ने अनिच्छा से डाक्टर को विदा किया।

जमशेदपुर में, किसान का इलाज करके समय बर्बाद करने पर सेन गुप्ता को उनके मित्र ने लताड़ा। ढ़ाई बजे प्रात: अतिथि कक्ष में अपने मित्र को नोट लिखते हैं कि उन्हें यह अहसास हो गया है कि उन्होंने जीवन में कभी कोई अच्छा काम नहीं किया हैं। मुझे अच्छा कार्य करने का एक अवसर मिल गया है और कल दस बजे मैं वापिस आऊंगा।

पौ फटने के समय सेन गुप्ता कोदाली पहुँचते है। वे किसान का दरवाजा खटखटाते हैं और मानसी दरवाजा खोलती है। अरे आप, डाक्टर साहब? मुझे झपकी आ गई थी, मुझे अफसोस है। दोनों कमरे के भीतर जाते हैं। किसान मरा पड़ा है। 'हमने आपको बहुत तकलीफ दी है'' मानसी कहती है। कृपया क्षमा करें। सेन गुप्ता मानसी की ओर मुड़कर कहते हैं ''तुम कल्पना नहीं कर सकतीं कि कितना परिवर्तन तुमने मुझ में ला दिया है। मैं अब एक नया आदमी हो गया हूं। तभी सूरज उगता हैं।''

UTTORAN

Bengali/colour/82 min
Producer: NFDC-DOORDARSHAN **Director** : Sandip Ray. **Story/ Screenplay**: Satyajit Ray. **Leading Actor**:Soumitra Chatterjee. **Leading Actress**: Subhalakshmi Munsi. **Supporting Actor**: Sadhu Meher. **Supporting Actress**: Bing **Child Artist**: Pratyush Banerjee.**Cameraman**: Barun Raha **Art Director** Ashok Bose **Editor**: Dulal Dutt. **Audiographer** : Sujit Kumar. **Make-up**: Ananta Das. **Costume Designers** : Lalita Ray. **Music Director**: Sandip Ray Lahiri, Subhalakshmi Munshi.

"Dr. Nihar Sen Gupta, a brilliant General Practitioner of Calcutta, treating only upper class patients, is invited by the Rotary Club of Jamshedpur to give a talk. An old friend of his, whom he has not seen for the last ten years lives in Jamshedpur and he hopes to meet him.

"Sen Gupta sets out in his chauffeur-driven car and has a flat tyre on the highway. While a new tyre is being put in, Sen Gupta hears a growing sound from behind a bush. His curiosity aroused, he investigates and finds a peasant lying on the ground in a comatose state and obviously suffering from great breathing trouble. With effort, Sen Gupta extracts from the man that he belongs to the nearby village of Kodali, Sen Gupta sends his driver in the car to Kodali to bring some men, who could carry the sick man home.

"Four men arrive from the village and identitfy the man as Haladhar, who is addicted to *ganja* "I can't stay any longer" say Sen Gupta. "You get a doctor to treat him." One of the elderly peasants says, "Sir, he doesn't need a doctor. He had the same kind of disease four years ago. Medicines didn't work. Finally he was cured by a witch doctor."

"Sen Gupta continues on the journey. The driver remarks that as a boy he had seen a witch-doctor at work. "They treat the patients mercilessly." Sen Gupta has second thoughts and asks to be driven back to the village of Kodali.

"The doctor arrives when the exorcism is in progress. The sight effects him so much that he intervenes and stops the proceedings. "Haladhar must be taken to his room at once"

In the room, Sen Gupta gives the peasant an injection to ease his breathing. He is helped by a teenage widow, who turns out to be the peasant's daughter, Manashi.

"Will my father live?" asks Manashi. Even if he does not live, I shall fend for you and your brother's future. Both of you can come to Calcutta and I will see to it that you will become a nurse in course of time. I shall bear the cost myself". Now Sen Gupta says he must continue his journey.

What if something happens during the night?" asks Manashi. "You have the strength to do what will be needed." replies the Doctor. Manashi bids a reluctant goodbye.

"In Jamshedpur, Sen Gupta is reprimanded by his friend for wasting his time treating a peasant. At 2.30 a.m. in the guest room, Sen Gupta writes a note to his friend to say that he has realised that he had never done a good deed. "I have found an opportunity to do one and I shall be back by ten tomorrow."

"Sen Gupta arrives in Kodali at crack of dawn. He knocks on the peasant's door. It is opened by Manashi. "It's you. doctor sahib? I had dozed off, I am sorry!" The two enter the room. The peasant lies dead.

"We've given you so much trouble" says Manashi. "Please forgive." Sen Gupta turns to Manshi "You can't imagine what a change you've brought in me." He adds: "I'm a new man now." The sun just then rises!"

विधेयन

मलयालम/रंगीन/112 मिनट
निर्माता: के रवि। **निर्देशक/पटकथा लेखक:** अडूर गोपालाकृष्णन। **मुख्य अभिनेता:** मम्मूटी, एन. आर. गोपकुमार। **मुख्य अभिनेत्री:** सविता आनन्द, तनवी आज़मी। **कैमरा मैन:** एम. सी. रवि वर्मा। **ध्वनि आलेखन:** पी. देवदास, टी. कृष्णानुन्नी **संपादक:** एम मणि। **कला निर्देशक:** एन शिवन **वेशभूषा डिज़ाइनर:** अडूर गोपालाकृष्णन।

फ़िल्म में टोमी की विनाशक जीवन-प्रक्रिया का उल्लेख किया गया है, जो पास के दक्षिण कर्नाटक में बस गया एक साधारण और भोला-भाला केरल का मजदूर प्रवासी है, जिस का जीवन एक भ्रष्ट सनकी और दुष्ट जमींदार भास्कर पाटेलर के साथ विकट रुप में उलझ जाता है। टोमी का उसे "न" न कह सकना, जबकि उसे ऐसा कहना चाहिए था, उसे पाटेलर के आगे पूरी तरह समर्पण करने के लिए मजबूर कर देता है।

टोमी और उसकी पत्नी ओमना वहां बस जाने के लिए आते हैं और जोताई के लिए जंगल की कुछ एकड़ भूमि को अवैध रुप में हथिया लेते हैं। अचानक एक दिन टोमी, भास्कर पाटेलर के सामने पड़ जाता है, जो कि परम्परागत पटेल परिवार में पैदा होने के कारण पटेल के रुप में सम्मानित है। किसी समय पटेल कर वसूल करते थे और कानून लागू करते थे। यह दोस्तोवस्की श्रेणी की कहानी की पृष्ठभूमि है।

पाटेलर, टोमी को डराता-धमकाता है और उसकी पत्नी का बलात्कार करता है। पाटेलर द्वारा टोमी पर जो घोर अत्याचार किए जाते हैं, वे उसके लिए असहनीय बन जाते हैं। गुस्सा आना स्वाभाविक है, परन्तु जीवित रहने की मजबूरी उसे असहाय और विनम्र बना देती है। धीरे-धीरे टोमी, पाटेलर द्वारा किए जाने वाले जुर्म का साथी बन जाता है।

पाटेलर, अपनी पत्नी सरोजा से छुटकारा पाना चाहता है, जो हमेशा उसे सचेत करती रहती है और उस पर नज़र रखती है। टोमी को विश्वास में लेकर, वह उसे मारने की योजना बनाता है। परन्तु यह योजना विफल हो जाती है और इस गड़बड़ी में टोमी बुरी तरह जख्मी हो जाता है।

पाटेलर मंदिर के घाट पर पवित्र मछली समूह पर डाइनेमाइट लगाने की योजना बनाता है। परन्तु डाइनेमाइट नहीं फटता। एक और दिन, पाटेलर एक धनी व्यापारी यूसफ पिचा पर हमला करता है और उसे सड़क के किनारे अधमरा छोड़ देता है। कुट्टाप्पराई के पुत्र और उसकी नौजवान दुल्हन के साथ हुई एक अन्य घटना पाटेलर के शांतप्रिय विरोधियों के सम्मिलित क्रोध को भड़काने का काम करती है। यूसफ पिचा और कुट्टाप्पाराई मिलकर पाटेलर को सबक सिखाने का षड़यंत्र रचते हैं परन्तु उसे मामूली चोटें आती हैं और वह बच जाता है।

अंत में पाटेलर अपनी पत्नी सरोजा का गला दबाकर मार देता है। उसकी मौत को आत्महत्या के मामले मे बदलने की उसकी चाल सफल नहीं होती और पाटेलर भूमिगत हो जाता है। उसका भतीजा उसका अतिथि सत्कार करने के लिए मना कर देता है। पालेटर और टोमी किसी निर्जन स्थान में शरण लेते हैं। वहां एक दिन पाटेलर की प्रतिशोध देवी से भेंट होती है, जिससे उसका बचना मुश्किल था।

टोमी गहरे दुख को सहन करके स्वयं को संभालता है। वह मृत पाटेलर की दृढ़ मुट्ठी में जकड़ी हुई बन्दूक को छीन लेता है और उसे एक गहरे झरने में फैंक देता है।

VIDHEYAN

Malayalam/Colour/112 min.
Producer: K. Ravi. **Director/ Screenplay:** Adoor Gopalakrishnan. **Leading Actors:** Mammootty, N.R. Gopakumar. **Leading Actresses:** Sabita Anand, Tanvi Azmi. **Cameraman:** M.C. Ravi Varma. **Audiographer:** P. Devadas/T. Krishnanunny. **Editor:** M Mani. **Art Director:** N. Sivan. **Costume Designer:** Adoor Gopalakrishanan.

The film traces the fateful course of life of Tommi, a simple and innocent migrant labourer from Kerala in neigbouring South Karnataka, whose life gets inextricably entangled with that of Bhaskara Patelar, a degenerate, whimsical, diabolic landlord. Tommi's inability to say "No" when he should have said it inevitably leads to his total submission and surrender to Patelar.

Tommi and his wife, Omana, arrived as settlers and managed to illegally fence off a couple of acres of jungle land for cultivation. It is by sheer accident that Tommi happened to stray before Bhaskara Patelar, who is revered and feared as a Patel, by virtue of his being born into the traditional Patel family. (Patels at one time used to collect taxes and enforce laws). This is the background of the story with a Doestoveskian range.

Patelar terrorises Tommi into total submission and rapes his wife. The terrible humiliation Tommi suffers at the hands of Patelar is too much for him to bear. The anger is natural, but the need to live makes him meek and submissive. Eventually, Tommi becomes Patelar's accomplice in the crimes he commits.

Patelar decides to do away with his wife Saroja, who is always cautioning him or keeping a watch on him. Taking Tommi into confidence, Patelar hatches a plot to kill her. But the plan misfires and Tommi gets badly wounded in the middle.

Patelar plans to dynamite the horde of holy fish at the temple ghat. But the dynamites fail to explode. Another day, Patelar assaults Yusoof Picha, a wealthy trader and leaves him near dead on the roadside.

Another incident involving Kuttapparai's son and his young bride ignite the combined wrath of Patelar's many peace-loving adversaries. Yusoof Picha and Kuttapparai plot together to bump off Patelar but he escapes with minor injuries.

Patelar finally throttles his wife, Saroja. The attempt to fake the death as a case of suicide fails and Patelar goes underground. A nephew of his refuses hospitality. Patelar and Tommi set out to take refuge in the wilderness. There Patelar meets with his inescapable nemesis one day.

Tommi is overcome by grief, but regains his self. He takes away the gun from the firm grip of the dead Patelar and throws in into the wild water fall.

वो छोकरी

हिंदी/रंगीन/150 मिनट

निर्माता : राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम-दूरदर्शन। **निर्देशक/पटकथा:** शुभांकर घोष। **मुख्य अभिनेत्री :** पल्लवी जोशी। **सह अभिनेता :** परेश रावल/ओम पुरी। **सह अभिनेत्री :** नीना गुप्ता। **बाल कलाकार:** योगिता चड्ढा। **कैमरामैन :** मलय दास गुप्ता। **ध्वनि आलेखक :** समीर एस. राय। **संपादक :** दीपक कपूर। **कला निर्देशक :** अजीत दांडेकर। **वेशभूषा डिज़ाइनर :** सोमा घोष। **संगीत निर्देशक:** सपन जगमोहन।

''छोकरी'' की उम्र 18 और 25 के बीच कुछ भी रही होगी परन्तु हर आदमी उसे ''वो छोकरी'' के नाम से पुकारता था। उसका एक नाम था, परन्तु कोई भी उसके नाम को नहीं जानता था। तीन नटखट छोकरे-दुखु, पाल्टन और पंचु उसे ''दुनु दीदी'' कहते थे।

वह, टोनी नाम के एक लंगड़े कुत्ते के साथ हावड़ा रेलवे स्टेशन के साथ एक पुराने और बेकार पड़े हुए वेगन में रहती थी। तीनों छोकरे उसकी देखभाल करते थे। कुली उसे ''चाहते'' थे परन्तु वह उन्हें भगा देती थी।

वह वहाँ मुख्य तौर पर किसी खास चेहरे को देखने के लिए रहती थी और वह हर रोज़ अपने पिता दिनेश राय की खोज में अधेड़ उम्र के यात्रियों के चेहरे पहचाना करती थी। उसके पिता ने उसकी माँ गीता से विवाह किया था। यह बात उसे तब पता चली जब एक दिन मुख्याध्यापिका ने उसे भविष्य में स्कूल आने के लिए मना कर दिया। यह घटना उनके पिता द्वारा उन्हें छोड़ कर नागपुर में

पार्टी की बैठक में भाग लेने के लिए चले जाने के दो महीने बाद हुई। तुरंत उनकी प्रतिष्ठा, उनका सम्मान तथा सुरक्षा खत्म हो गई। बाद में मां-बेटी को पता चला कि दिनेश ने उन्हें धोखा दिया है जो उन्हें हमेशा के लिए छोड़ कर चला गया है। परन्तु दुनु को अपने पिता की प्यार भरी यादें और उनका ''अप्सरा'' कह कर उसे पुकारना कभी नहीं भूला। उसकी माँ गीता ने कुछ समय तक घरेलू नौकरानी के रूप में काम किया। जल्दी ही उसने घटिया शराब बेचने और पुरानतम पेशे को अपना लिया।

दो वर्ष बाद गीता ने दिनेश को दिल्ली में ढूंढ लिया जहाँ वह एक राजनीतिज्ञ बन गया था। वह उससे मिली परन्तु वह कुछ दिनों के बाद लौट आई। उसे बेहोशी की दवा पिला कर, बिना टिकट गाड़ी में बैठा दिया गया। वह हर तरह से बेहाल कलकत्ता वापिस लौटी। कुछ दिनों के बाद बस्ती के एक कमरे में गीता की हत्या हो गई।

दुनु अब अकेली रह गई थी। एक अधेड़ उम्र के विधुर अनादि मित्रा ने हर तरह से उसकी देख भाल करने की जिम्मेदारी ली। कुछ महीने बाद हृदय गति रूक जाने से उसकी मृत्यु हो गई। एक बार फिर उसकी सुरक्षा खतरे में पड़ गई। परन्तु उसने अपने पिता को मिलने की उम्मीद नहीं छोड़ी। चूंकि वह एक नेता है, इसलिए उसे उम्मीद थी कि वह एक दिन कलकत्ता जरूर आएगा और जब वह उसे ढूंढ लेगी तो वह अवश्य ही उसकी रक्षा करेगा। वह ऐसा सोचती थी।

एक दिन उसका निराशाजनक सपना पूरा हो गया। उसने अपने पिता का फोटो एक समाचार पत्र में देखा और पढ़ा कि वह एक सम्मेलन को संबोधित करने के लिए कलकत्ता आएगा। वह तीन छोकरों के साथ प्लेटफार्म पर उसका इन्तजार करती रही। गाड़ी आई। बहुत से लोग उसका इंतजार कर रहे थे। उन्होंने उसे हार पहनाए और एक कार में उसे लेकर चले गए। उसने उसके पास पहुंचने की बड़ी कोशिश की परन्तु भीड़ के कारण उसके पास न पहुंच सकी।

फिर भी, वह तीनों छोकरों के साथ बैठक स्थान, महाजती हाल में पहुंच गई। हाल खचाखच भरा हुआ था परन्तु उसे मंच के पास नहीं जाने दिया गया। उसने काफी इंतजार किया। अंत में उसके पिता दिनेश वहां आए लोगों ने तालियाँ बजाई। उन्हें मंच पर ले जाया गया। उसने उन्हें जोर-जोर से पुकारा। परन्तु स्वैच्छिक कार्यकताओं और पुलिस ने उसे बाहर कर दिया। दिनेश एकता और चरित्र पर भाषण दिए जा रहा था जबकि उनकी

बेटी "अप्सरा" उर्फ "टुनु" उर्फ "वो छोकरी" को तीन छोकरों के साथ शांति भंग करने के जुर्म में जेल में बंद कर दिया गया।

WOH CHHOKRI

Hindi/Colour/150 min
Producers: NFDC-DOORDARSHAN **Director/Screenplay:** Subhankar Ghosh. **Leading Actress** Pallavi Joshi. **Supporting Actor:** Paresh Rawal/ OmPuri. **Supporing Actress:** Neena Gupta. **Child Artist:** Yogita Chedda **Cameraman:** Moloy Dasgupta. **Audiographer:** Sameer S Ray. **Editor:** Deepak Kapoor. **Art Director:** Ajit Dandekar. **Costume Designer** Soma Ghosh. **Music Director:** Sapan Jagmohan.

The "chhokri's" age was anything between 18 to 25 but all called her "Woh Chhokri". She had a name, but none knew that. The three urchins, Kukhu, Paltan and Panchu called her "Tunu Didi."

She stayed in an old abandoned wagon in the siding of Howrah Railway Station, along with a lame dog, named Tommy. The three urchins looked after her. The coolies "wanted" her, but she chased them away.

She lived mainly to see a particular face and everyday she scrutinised the faces of the middle-aged passengers to discover her father, Dinesh Roy. Her father had not married her mother, Geeta. This revelation came to her one day, when the headmistress prohibited her from attending the school any more. This had happened two months after her father had left for a party meeting in Nagpur and abandoned them. Soon, they lost their status, respectability and security. Later, the mother and daughter came to know that Dinesh had ditched them and disappeared for good. But Tunu had affectionate memories of her father and his calling her, "Apsara." Geeta, her mother, worked as a household maid for a while. Soon she took to cheap liquor and to the oldest profession.

Two years later, Geeta traced Dinesh and went to Delhi, where he had become a politician. She met him but returned after a few days. She had been drugged and left on a train, without a ticket. She returned to Calcutta broke in every way. A few days later, Geeta was found murdered in the bustee room.

Chhokri was alone now. A middle-aged widower, Anadi Mitra, took up the responsibility of looking after her in every way. A few months later he died of heart failure. Security was once again lost. But she hoped against hope of meeting her father. One day he would surely come to Calcutta for he was a big leader. And, when he would find her, he would definitely rescue her. So she thought.

One day her desperate dream was almost fulfilled. She saw his father's photo in a newspaper and read that he would come to Calcutta to address a conference. She waited on the platform with the three urchins. The train came. There were many people waiting for him. They garlanded him and took him away in a car. She tried her best to reach him, but just could not, due to the crowd.

All the same, she reached the Mahajati Sadan Hall, the venue of the meeting with the three boys. The hall was full but she was not allowed to go near the rosturm. She waited for her time. Her father Dinesh came at last. People clapped. He was led to the rostrum. She called him, loudly and louder still. But the volunteers and the police threw her out. Dinesh went on lecturing about integrity and character, while his daughter "Apsara" alias "Tunu" alias "Woh Chhokri" was led into the lock-up with the three urchins for disturbing peace!

कथासार
गैर-कथाचित्र

Synopses:
Non-Feature Films

एड्स

मलयालम/रंगीन/13 मिनट

निर्माता निर्देशक : नूरनाद रामचन्द्रन, **पटकथा लेखक :** एम.के. विवेकानन्दन नायर तथा एम.ई. मेघनाथ, **कैमरामैन:** वी. अरविन्दाक्शन्, **ध्वनि आलेखक :** एस. हुसैन, **ध्वनि आलेखक:** एस. हुसैन, **संपादक :** के. पी. एस. उन्नीकृष्णन। **संगीत निर्देशक :** एम ई मेघनाथ तथा विवेकानन्दन नायर।

ऐसा समझा जाता है कि एड्स की असाध्य बीमारी जिसने सारे विश्व में मानवजाति को भयभीत कर दिया है, की उत्पत्ति अफ्रीकी बंदर से हुई है। कई लोगों से लैंगिक संबंध रखना, समलैंगिकता, एच आई वी वायरेस से दूषित सुईयों और सिरिंजिज को विसंक्रामित किए बिना इस्तेमाल करना तथा एच आई वी से दूषित खून को चढ़ाना आदि ऐसे तरीकें हैं जिनसे एड्स फैलता है। एड्स अब इस देश में भी पहुंच गया है। जीवन साथी को छोड़कर अन्य लोगों से लैंगिक शारीरिक संबंध रोकने से और मैथुन क्रिया करते समय कन्डोम का इस्तेमाल करके इस बीमारी को रोका जा सकता है। यह बीमारी अज्ञान और भय से जुड़कर फैलनी शुरू हो रही है। चूंकि इस बीमारी को रोकने के लिए अभी तक कोई टीका नहीं निकला, इसलिए रोकथाम ही एक ऐसा तरीका है जिसके बारे में लोगों को शिक्षित करने से इस बीमारी से बचा जा सकता है।

नूरनाद रामचन्द्रन का यह दिलचस्प वृत्त-चित्र एक काल्पनिक तरीके से एड्स के अनेक पहलुओं पर ध्यान आकर्षित करता है।

AIDS

Malayalam/Colour/13 min.

Producer/Director : Noornad Ramachandran. **Screenplay Writer** : M.K. Vivekanandan Nair & M.E. Meghnath. **Cameraman** : V. Aravindakshan. **Audiographer** : S. Hussain. **Editors** : KPS Unnithan. **Music Director** : NE Meghanath & Vivekanandan Nair.

This incurable disease that now threatens humankind worldwide is believed to have had its origin from the African monkey. Sexual relations with many people, homosexuality, as of unsterilized needles of syringes infected with HIV virus and transfusion of blood infected with HIV are the ways by which AIDS spreads. AIDS has entered our country. The disease can be prevented by stopping sexual relations with persons other than life-partners and by using condoms during intercourse. It is beginning to spread more so by ignorance and fear. Since no vaccine has been invented so far to cure this disease, prevention is the only vaccine that can be used through educating the masses.

This interesting documentary of Nooranad Ramachandran focusses attention in an imaginative way on several aspects of AIDS. It is an information film with a message.

अनुकंपन

हिंदी/रंगीन/65 मिनट
निर्माता, निर्देशक : बालका घोष, **पटकथा लेखक** : निलोतपाल मजूमदार तथा बालका घोष, **कैमरामैन** : प्रशान्तनु महापात्र, **संपादक** : निलोतपाल मजूमदार, **ध्वनि आलेखक** : चांदीदास मिश्रा, **ध्वनि पुनः रिकार्डिंग** : ज्योति प्रकाश महापात्र।

शब्दशः तौर पर और वैसे भी "अनुकंपन" का अर्थ है "वाईब्रेशन"। उदाहरण के लिए जब घड़ियाल बजता है तो अनुकंपन होती है। इसे और आगे बढ़ाते हुए यह कहा जा सकता है इस फ़िल्म में निर्माता बालका घोष ने रायगढ़ (मध्य प्रदेश) में बहुत कम जाना जाने वाले कथक "घराने" का भली भांति निरूपण किया है जो लोक और शास्त्रीय परम्पराओं के बीच नृत्य चक्रधरसिंह की "कविता" और "परन्स" के संयोजनों पर आधारित हैं। रायगढ़ दरबार के विख्यात नृतक फितुदासजी की पुत्री कुमारी बसंती वैष्नव ने कुछ नृत्य किए हैं।

इस "घराने" की दयनीय स्थिति का अंदाजा इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि जीवित दरबारी बर्मनलाल को अपनी आजीविका के लिए अपने पूर्वजों के नाई के पेशे को फिर से अपनाना पड़ा। यह मध्य प्रदेश सरकार के लिए श्रेय की बात है कि उसने बर्मनलाल को "शिखर सम्मान" (पुरस्कार) प्रदान किया है।

बालका घोष ने स्थानीय कलाकारों, उनके वाद्य यंत्रों और उनके रहन-सहन के ढंग के बारे में उल्लेख किया है और इस फ़िल्म का निर्माण एक वृतचित्र-निर्माता और नर्तकी के रूप में अत्यधिक समानुभूति तथा सूक्ष्मग्राहिता की सच्ची भावना से किया है।

ANUKAMPAN

Hindi/Colour/65 min.
Producer/Director : Balaka Ghosh. **Screenplay** : Nilotpal Majumdar & Balaka Ghosh. **Cameraman** : Prashantanu Mohapatra. **Audiographer** : Chandidas Mishra. **Editors** : Nilotpal Majumdar. **Sound Re-Recordist** : Jyoti Prakash Mohapatra.

"Anukampan" literally and otherwise means the "vibrations" as for instance when a gong strikes a bell. This can be pushed further to say that in this film, the maker, Balaka Ghosh has vibed well with a little known "gharana" of Kathak in Raigarh (Madhya Pradesh). Half-way between folk and classical/traditional, the dances are based on the compositions of Raja Chakradhar Singh's "kabita" and "parans." The daughter of the famous dancer of Raigarh durbar, Phitudasjee, Kumari Basanti Vaishnab has rendered some dances.

The sad plight of this "gharana" can be assessed from the fact that the surviving durbari dancer, Burmanlal, had to go back to the profession of his forefathers, that of a barber, to earn his living. It is a matter of credit to the Madhya Pradesh Government that it has bestowed "Shikar Sanman" (award) on Burmanlal.

Balaka Ghosh focusses on the local artists, their musical instruments, and their way of life and has made this film in the true spirit of a documentarist and as a dancer with great empathy and sensitivity.

बाजार सीताराम

हिंदी, रंगीन, 37 मिनट
निर्माता, निर्देशक : नीना गुप्ता, **पटकथा लेखक:** नीना गुप्ता, **कैमरामैन :** सुशी राजपाल। **ध्वनि आलेखक :** ए.एम. पद्मानाभन्, **संपादक:** रेणु सलुजा, **संगीत निर्देशक :** नीना गुप्ता ।

अपनी अभिनय प्रतिभा से सिनेमा तथा दूरदर्शन दर्शकों को चकाचौंध कर देने वाली नीना गुप्ता ने अब "बाजार सीताराम" में सभी कुछ प्रस्तुत किया है। यह पुरानी दिल्ली की ऐतिहासिक पुरानी गली है, जिसके अपने विशिष्ट नज़ारे और ध्वनियाँ हैं, घरों और दुकानों की अपनी वास्तुकला है और अपने उत्सव और गीत हैं। इस सबके साथ दो प्रेमियों की कहानी का जोड़ा गया है। क्षेत्र की विशिष्टता को छवियों और ध्वनि-पट्टी से उभारा गया है।

इसके साथ ही फ़िल्म में आधुनिक जीवन के प्रभाव मूल्यों में गिरावट, लोगों को उखाड़ने और उनके विसंबंधनों को प्रकट किया गया है। नीना गुप्ता का कहना है कि "यह फ़िल्म मेरे द्वारा बनाई गई है परन्तु इसे केवल मैंने ही नहीं बनाया है। मैं तुम्हें अपना मित्र बनाती हूं, हाथ में हाथ मिलाए अपने साथ लेकर जीवित जीवन की सुंदरता और अनुभवों का भागीदार बनाती हूं।" तकनीकी कर्मीदल के सम्मिलित प्रयत्नों से "बाजार सीताराम" फ़िल्म पर्याप्त सजीव बन गई है, जिससे नीना गुप्ता को काफी समर्थन मिला है।

BAZAR SITARAM

Hindi/Colour/37 min.
Producer/Director : Neena Gupta. **Screenplay Writer** : Neena Gupta. **Cameraman** : Sushi Rajpal. **Audiographer** : A.M. Padmanabhan. **Editor** : Renu Saluja. **Music Director:** Neena Gupta.

Neena Gupta, who has dazzled cine and tele-audiences with her histrionic talents, now reveals a whole world in "Bazar Sitaram". It is a historic old locality of Old Delhi, which has its distinguished sights and sounds, its own architecture of homes and shops, its festivals and songs. To all this is added a story of two lovers. The flavour of the area is evoked by the images and the sound track.

At the same time, the film unfolds the decay of values, uprootment of the people and their alienation under the impact of modern life. As Neena Gupta says "It is a film made by me, but not just me. I make you my friend and take you with me, hand in hand, to share the experiences and the beauty of living life". 'Bazar Sitaram' comes alive through the blending of efforts of the technical crew, which has given Neena Gupta ample support.

बेनेफिट फार हूम एट हूज कास्ट?

अंग्रेजी/रंगीन/30 मिनट

निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेखक: दिनेश लखनपाल। **कैमरा मैन:** धर्म गुलाटी। **ध्वनि आलेखक:** थॉमस वर्गीज। **संपादक:** रमणीक पटेल। **संगीत निर्देशक:** गौतम मुखर्जी

इस फ़िल्म के माध्यम से निर्देशक दिनेश लखनपाल बांध परियोजनाओं के विरुद्ध लगातार होने वाले प्रदर्शनों की खोज करते हैं। वे इस बात का उत्तर ढूंढना चाहते हैं कि सामाजिक कार्यकर्ता और जल विद्युत परियोजनाओं से प्रभावित किसान एक क्यों हो रहे हैं और संघर्ष क्यों छोड़ देते हैं। "किसकी लागत पर किसको लाभ" प्रश्न का उत्तर ढूंढने में वे प्राधिकारियों के विचार जानना चाहते हैं।

BENEFIT FOR WHOM AT WHOSE COST?

English/Colour/30 min.

Producer/Director/Screenplay: Dinesh Lakhanpal. **Cameraman:** Dharam Gulati. **Audiographer:** Thomas Varghese. **Editor:** Ramnik Patel. **Music Director:** Gautam Mukherjee.

Through the medium of the film, the Director, Dinesh Lakhanpal investigates the constant agitation against dam projects. He seeks to answer as to why, social workers and peasants threatened by the hydro-electric projects join hands and conduct campaigns. He explores the viewprints of the authorities in order to answer the question, Benefit for whom, at whose cost.

बिल्डिंग फ्राम बिलो

अंग्रेजी/रंगीन/30 मिनट

निर्माण : डॉ एन. जी. हेगड़े। **निर्देशक :** विश्राम रेवांकर। **कैमरामैन :** भारत नेरकर। **संपादक :** अर्चना पावस्कर।

जैसाकि फ़िल्म के नाम "बिल्डिंग फ्राम बिलो" से संकेत मिलता है, यह एक ऐसी फ़िल्म है जिसमें सभी विकास योजनाओं तथा परियोजनाओं में अधिक से अधिक लोगों को शामिल करने की पुरजोर बात कही गई है। स्वैच्छिक संगठन बी.ए. आई. एफ के प्रधान तथा फ़िल्म के निर्माता डा. एन. जी. हेगड़े कृषि-वन्य उत्पाद तथा बेकार पड़ी भूमि के विकास की विभिन्न योजनाओं में लगे हुए हैं जिन पर राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों द्वारा धन लगाया गया है। उन्होंने तथा निर्देशक विश्राम रेवांकर ने इस प्रेरणाजनक फ़िल्म का सह-निर्माण किया है।

BUILDING FROM BELOW

English/Colour/30 min.

Producer : Dr. N.G. Hegde. **Director:** Vishram Revankar. **Cameraman :** Bharat Nerkar. **Editor :** Archana Pawaskar.

"Building from Below", as the name indicates is a celluloid plea for the involvement of the people at large in all development plants and projects. Dr. NG Hedge president of BAIF, a voluntary organization and producer of the film has been involved with various projects of agro-foresting and wasteland development, founded by national and international agencies. He and the director Vishram Revankanr have collaborated on this inspirational film.

चेतक

हिंदी/रंगीन/16 मिनट
निर्माता : राष्ट्रीय बाल तथा युवा चलचित्र केन्द्र। **निर्देशक/पटकथा लेखक:** वी.जी. सामंत **कैमरामैन :** विपिन सामंत, **संपादक :** ए. के. धूला। **संगीत निर्देशक :** रघुनाथ सेन, **एनिमेटर :** वी. जी. सामंत ।

महाराजा प्रतापसिंह के ऐतिहासिक बहादुर घोड़े चेतक के बारे में किसने नहीं सुना? चेतक एक ऐसा घोड़ा था, जिसे अरब का एक व्यापारी लेकर आया था। यह एक ओजस्वी घोड़ा था जिसे आसानी से नियंत्रित नहीं किया जा सकता था।

मेवाड़ के शूरवीर योद्धा राजा राणा प्रतापसिंह उस समय एक ऐसे घोड़े की तलाश में थे जो कि उनके बल और शक्ति के समान हो। जैसे ही उन्होंने चेतक को देखा वे इस जानवर की ओर आकर्षित हो गए और उसे अपने इस्तेमाल के लिए खरीद लिया। घोड़े के इस नए मालिक ने उसका नाम **चेतक** रखा। फ़िल्म में मालिक और घोड़े के बीच अद्वितीय लगाव दिखाया गया तथा यह भी प्रदर्शित किया गया कि किस प्रकार घोड़ा अपने मालिक के लिए जान दे देता है। यह कहा जाता है कि इस योद्धा राजा ने, जिसने अपने जीवन में एक भी आँसू नहीं गिराया, चेतक की मृत्यु पर जोर-जोर से रोया।

यह कार्टून फ़िल्म चेतक को एक और श्रद्धांजलि है जिसके लिए उदयपुर में एक सुंदर स्मारक बनाया गया है।

CHETAK

Hindi/Colour/16 Min.
Producer : National Centre of Films for Children & Young People (N' CYP). **Director/Screenplay Writer** : V.G. Samant. **Cameraman** : Bipin Samant. **Editor** : A.K. Dhula. **Music Director:** Raghunath Sen. **Animator** : V.G. Samant.

Who has not heard of Chetak, the legendary brave horse of Rana Pratap Singh! Chetak was a horse, which was brought from far off Arabia by a trader, full of vitality that could not be controlled easily.

Rana Pratap Singh, the brave warrior king of Mewar, was just then on the lookout for a horse that can match his own vigour and strength. No sooner he saw Chetak, he was attracted to the animal and acquired it for his personal use. The horse was named Chetak by its new owner.

This film shows the exceptional association between the master and the horse and how the horse gave its life for its master. It is said that warrior king, who never shed a single tear in his life, broke down at the death of Chetak.

This animation film is yet another tribute to Chetak for which a beautiful memorial has been erected in Udaipur.

कलर्स आफ एब्सेंस

अंग्रेजी/रंगीन/30 मिनट
निर्माता : शांता गोखले, अरूण खोपकर, **निर्देशक, पटकथा लेखक:** अरुण खोपकर, **कैमरामैन :** पीयूश शाह, **ध्वनि आलेखक:** ए. एम. पद्मानाभन्, **संपादक:** राजेश परमार, **संगीत निर्देशक :** रजत ढोलकिया, **एनिमेटर :** राम मोहन।

अरुण खोपकर, जिन्होंने पहले बड़ौदा के तीन चित्रकारों (विवान सुंदरम्, नलिनी मालिनी और भूपेन खक्कड़) और नर्तकी लीला सम्पसन पर संवेदनशील कला फ़िल्में बनाई हैं, अब जहाँगीर साबावाला पर फ़िल्म तैयार की है। चित्रकारों के चित्रकार साबावाला भारत में धनचित्रण शैली के प्रामाणिक प्रतिनिधि हैं। अपनी परिपक्व व्यक्तिपरक शैली और चित्राकंन युक्तियों से वे अब धनचित्रण शैली से परे चले गए हैं।

फ़िल्म न केवल साबावाला और उनकी चित्रकलाओं का परिचय कराती है बल्कि उन्हें जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, बम्बई से पेरिस और वापिस स्वदेश लौटने तक के उनके कलात्मक व्यवसाय को भी दर्शाती है। अब वे बम्बई में अपनी पत्नी शीरीन के साथ शांत जीवन व्यतीत कर रहे हैं। डॉम मॉरेस और आदिल जस्सावाला द्वारा साबावाला को समर्पित कविताओं को श्रद्धांजलि के रूप में पढ़ने से फ़िल्म में सजीवता आ गई है। इस फ़िल्म में ध्वनि और रचनाओं का अच्छा मिश्रण हुआ है।

COLOURS OF ABSENCE

English/Colour/30 min.
Producer : Shnata Gokhale/Arun Khopkar. **Director/Screenplay Writer** : Arun Khopkar. **Cameraman** : Piyush Shah. **Audiographer** : A.M. Padmanabhan. **Editors** : Rajesh Parmar. **Music Director** : Rajat Dholakia. **Animator** : Ram Mohan

Arun Khopkar, who has earlier made sensitive art films on three Baroda Painters (Vivan Sundaram, Nalini Malani and Bhupen Khakkar) and also the dancer, Leela Samson, has now turned his attention to Jehangir Sabavala. A painter's painter, Sabavala, is an authentic representative of the Cubist style of painting in India. Through his mature individualistic style and painterly devices he has now gone beyond Cubism.

The film not only introduces Sabavala and his superb paintings but also traces his artistic career from Sir J.J. School of Art in Bombay to Paris and back home. Now he lives a serene life with his wife Shireen in Bombay. The film is enlivened with poems dedicated to Sabavala by Dom Mores and Adil Jèssawala, who read them out by way of homage. Tones and textures blend very well in this film.

डेथ आफ ए प्रोडिगल सन

हिन्दी/अंग्रेजी/श्याम-श्वेत/28 मिनट
निर्माता: फ़िल्में तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे **निर्देशक/पटकथा लेखक:** महेश तोटातिल। **मुख्य अभिनेता:** उदय चौहान। **मुख्य अभिनेत्री:** मीरा रानाडे। **सह अभिनेता:** मीनाज खोदैजी। **सह अभिनेत्री:** अर्चना, अपसना, शलाका। **कैमरामैन:** प्रदीप कुमार पोखरेल। **ध्वनि आलेखक:** देवाशीष मिश्रा। **संपादक:** बेनी बेनेडिक्ट

एक व्यक्ति की छोटी उम्र मे ही मृत्यु हो जाती है। वह जानता है कि उसकी मृत्यु होने वाली है। उसके इस ज्ञान से उसे अपनी मृत्यु का सामना अलग तरीके से- स्वीकरण के तरीके से करना पड़ता है। फ़िल्म में उसके अंतिम दिनों के कुछेक सुंदर तथा नाजुक और दुःखद क्षणों को दर्शाने का प्रयत्न किया गया है।

DEATH OF A PRODIGAL SON

Hindi/English/Black & White/28 min. **Producer:** Film & Television Institute of India. **Director/Screenplay:** Mahesh Thottathil. **Leading Actor:** Uday Chauhan. **Leading Actress:** Meera Ranade. **Supporting Actor:** Minaz Khodaiji. **Supporting Actresses:** Archana/Apasna/Shalaka. **Cameraman:** Pradeep Kumar Pokharel. **Audiographer:** Debashish Mishra. **Editor:** Benny Benedict.

A man dies at an early age. He knows that he is going to die. This knowledge makes him to face the death in a different way, the way of affirmation. The film is an attempt to look into some of the beautiful at the same time fragile and sad moments from his last days.

लद्दाख-लाइफ अलांग द इण्डस

अंग्रेजी/रंगीन/45 मिनट

निर्माता/निर्देशक : बप्पा रे/नृ-वैज्ञानिक सलाहकार-डा. के.एस. सिंह और डा. रिज़वी **कैमरा** : बरुण राह। **ध्वनि आलेखक** : बप्पा रे, **संपादक** : रतिन बोस ।

लद्दाख का जीवन प्रकृति के निकट का जीवन है, जहां मानव और पर्यावरण के बीच एक नाजुक संतुलन बना हुआ है। 60,000 वर्ग किलोमीटर भूमि-क्षेत्र पर फैले हुए लद्दाख वासियों ने इस कठिन पर्वत मरुस्थल में अपने जीवन को उसके अनुसार ढाल लिया है। दूर-दराज के क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद उन्होंने यहां बसर करना सुकर बना लिया है और एक समृद्ध समाजिक- आर्थिक तथा सांस्कृतिक इतिहास का निर्माण किया है। अपने पुराने सिल्क रुट पर होने के कारण आज लद्दाख में प्रथाएं बदल रही हैं।

LADDAKH-LIFE ALONG THE INDUS

Enlish/Colour/45 min.

Producer/Director : Bappa Ray. **Cameraman** : Barun Raha. **Audiographer** : Bappa Ray. **Editor** : Rathin Bose.

Ladakhi life is a life close to nature, where a delicate balance exists between man and his environment. Scattered over an area of 60,000 sq. kms. the Ladakhis have adapted to life in this harsh mountain desert. Despite isolation they have managed to survive and have evolved a rich socio-economic and cultural history. Because of its Position on the ancient Silk Route, Ladakh today is a melting pot of traditions.

Our film follows the Indus, the lifeline of Ladakh, and looks briefly at the various communities that have over the centuries settled along its banks.

मैहर राग

बंगला/रंगीन/65 मिनट
निर्माता : सुनील शानबाग **निर्देशक** : अरुनभ भट्टाचार्य **कैमरामैन** : के. यू. मोहनन् **ध्वनि आलेखक** : इन्द्रजीत नियोगी **संपादक** : भाविक ठाकुर।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में, घराना संगीत एक शैली है। फिर भी, घराना हमेशा ही उस स्थान को कहते हैं जहां मास्टर या प्रवर्तक रहता था और शिक्षा देता था - जो घराना के संगीतज्ञों के लिए एक पवित्र स्थान होता था। परन्तु जब मास्टर की मृत्यु हो जाती है तो ऐसे स्थान के साथ क्या होता है?

''मैहर राग'' में मध्य प्रदेश के एक कस्बे मैहर को दर्शाया गया है जो एक राजा की छोटी सी स्टेट है, जहां रवि शंकर तथा अली अकबर खान के गुरू अलाउद्दीन खान पिछले 50 वर्षों से भी अधिक समय से रह रहे हैं और काम कर रहे हैं।

''अलाउद्दीन की अदृष्ट मौजूदगी अब धुंधली पड़ गई है। परन्तु उसकी शिक्षा, विश्वास, गुरू के प्रति निष्ठावान ओर संगीत में उत्कृष्ट नवीनता जैसी, उसकी सम्पति की खोज से शीर्ण आश्रय के बिखरे प्रतिबिंबों, घटी शिक्षा, खत्म हो गए अनुयायियों का पता चलता है और विश्व के समकालीन शास्त्रीय संगीत की व्यापक समीक्षा होती है।''

MAIHAR RAAG

Bengali/Colour/65 min.
Producer : Sunil Shanbag. **Director** : Arunabh Bhattacharya. **Cameraman** : K.U. Mohanan. **Audiographer** : Indrajit Neogi. **Editor** : Bhavik Thakore.

In Indian classical music, gharana refers to the style of music. Yet a gharana is always named after the place, where the master or the founder lived and builds a sacred space for musicians of the gharana. But what happens to such a place, when the master is gone?

''Maihar Raag'' looks at the town of Maihar in Madhya Pradesh, once a tiny princely state, where Allaudin Khan, the guru to Ravi Shankar and Ali Akbar Khan, lived and worked for more than 50 years.

Allaudin's unseen presence looms large. But what begins as a search for his legacyof learning, faith, loyalty to one's guru, and of brilliant innovation in music uncovers haunting images of crumbling patronage, devalued learning, a lost disciple, and becomes a larger critique of the world of contemporary classical music.

मोक्ष

बंगला/रंगीन/ 84 मिनट
निर्देशक : पंकज बुटालिया। **कैमरा** : पीयूश शाह। **संपादक** : समीर जैन। **ध्वनि** : पंकज बुटालिया। **सहायक निर्देशक** : सुजाता नरूला। **निर्माता** : पंकज बुटालिया

सिनेमा की यह महानता है कि वह अधिकांश ऐसे अनभिज्ञ स्थानों और ऐसे व्यक्तियों के जीवन के गुप्त रहस्यों का पर्दाफ़ाश करता है जिन पर कोई संदेह नहीं करता। परन्तु यह सब फ़िल्म निर्माता पर निर्भर करता है। पंकज बुटालिया ऐसे ही फ़िल्म-निर्माताओं में से एक हैं- जो कि एक विद्वान, फ़िल्म सोसायटी के सक्रिय और वृत्त-चित्र निर्माता हैं।

इस फ़िल्म में, बुटालिया ने तीर्थस्थान-वृन्दावन पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है, जो कि 16 वीं शताब्दी में चैतन्य द्वारा अपने गीतों और कविताओं से चलाई गई वैष्णव शैली से प्रभावित है। वृन्दावन में एक बंगाली आश्रम है, जो रुढ़िवादी परिवारों की विधवाओं का अंतिम आश्रय गृह है।

छायाकार भुटालिया ने पीयूश शाह के सृजनात्मक समर्थन और सहायता से पांच चुनी गई विधवाओं के शून्य जीवन का चित्रण किया है।

Bengali/ Colour/ 84 min

Director/Producer Pankaj Butalia; **Camera:** Piyush Shah; **Editor** : Sameera Jain; **Sound** : Pankaj Butalia; **Assistant Director:** Sujata Narula;

The greatness of Cinema is that it unlocks secrets of Life at most unlikely places and among unsuspected people. But that depends on the film-maker. Pankaj Butalia is one such- an academic, film society activist and documentary film -maker.

In this film, Butalia has turned his attention to the pilgrimage centre-Brindavan, permeated with the Vaishnavite cult started in the 16th century by Chaitanya through his song-poems. In Vrindavan there is a Bengali ashram, the home (last resort) for widows from orthodox familes.

With creative support and help of Piyush Shah, the cinematographer, Butalia delves into the lonely lives of five selected widows.

आर्किड्स आफ मणिपुर

मणिपुरी/रंगीन/28 मिनट

निर्माता: तोम्चू सिंह। **निर्देशक:** अरिबम श्याम शर्मा। **कैमरामैन:** चित्रेश्वर शर्मा, शरत चन्द्र शर्मा। **ध्वनि आलेखक:** शांतिमो शर्मा। **संपादक:** उज्जवल नंदी। **संगीत निर्देशक:** अरिबम श्याम शर्मा। **पार्श्व गायिका:** ए. गायित्री देवी, थोइनु देवी।

मणिपुर की पहाड़ियों का क्षेत्र घाटी से कहीं अधिक बड़ा है। पहाड़ियों का सुंदर वन विभिन्न प्रकार के आर्किड पोधों से सजा हुआ है और मणिपुर को "गार्डन आफ आर्किड्स" कहा जा सकता है।

मणिपुर की भूमि और जलवायु आर्किड वृक्षों की वृद्धि के लिए बहुत सहायक है। दक्षिण-पूर्व एशिया में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के आर्किड पोधों का सत्तर प्रतिशत मणिपुर में मिलता है। मणिपुर की किस्मों के आर्किड वृक्ष बहुत प्रसिद्ध हैं और सारे विश्व में इनकी बहुत मांग है।

मणिपुरी वासियों के लिए आर्किड के फूल कोई साधारण फूल नहीं है। उनको प्यार किया जाता है, उनकी देखभाल की जाती है और उनका आदर किया जाता है और मणिपुरी वासियों की प्रथा और संस्कृति में उनका विशेष स्थान है।

मणिपुर सरकार का वन विभाग आर्किड को अपने प्राकृतिक निवास स्थान में संरक्षित रखने के लिए आवश्यक कार्यवाई कर रहा है,

ORCHIDS OF MANIPUR

Manipuri/Colour/28 min.

Producer: Tomchou Singh. **Director:** Aribam Shyam Sharma. **Cameraman:** Chitreshwar Sharma/Sharat Chandra Sharma. **Audiographer:** Shantimo Sharma. **Editor:** Ujjal Nandy. **Music Director:** Aribam Shyam Sharma. **Female Playback Singer:** A. Gayatri Devi/Thoinu Devi.

The area of the hills of Manipur is larger than that of the Valley. The beautiful forest of the hills is adored with various varieties of orchids and Manipur may be described as the "Garden of Orchids." The soil and climate of Manipur is very conducive to the growth of orchids. Seventy per cent of the varieties of orchids available is South-East Asia are found in Manipur. The Manipuri varietis are very popular and much in demand all over the world.

The orchids are not ordinary flowers to the Manipuris. They are loved, cared for and respected, and have a special place in the tradition and culture of the Manipuris.

The Forest Department of the Government of Manipur is taking up steps for preservation of the orchids.

सन्डे

हिंदी/रंगीन/61 मिनट

निर्माता : राष्ट्रीय बाल तथा युवा चलचित्र केन्द्र, **निर्देशक/पटकथा लेखक:** पंकज अडवानी, **सह अभिनेता :** देवन भजानी, श्री वल्लभ व्यास, कुरुश देबू, **सह अभिनेत्री:** दीना पाठक, रतना पाठक शाह, **बाल कलाकार:** इमाद दलाल, **कैमरामैन :** मनोज नायर, **ध्वनि आलेखक :** सतीश पी. एम., **संपादक:** पंकज अडवानी, देवाशीष गुहा। **संगीत निर्देशक :** रजत ढोलकिया।

"नेवर ऑन ए सन्डे" यह एक पुरानी फ़िल्म के गीत की पंक्ति है। लेकिन रविवार के ही दिन त्रिकोणीय परिवार का पिता अपनी व्यावसायिक यात्रा से घर वापिस लौट रहा है। माँ समुद्र किनारे बम्बई के उपनगर में अपने घर में उसका स्वागत करने की प्रतीक्षा कर रही है। लेकिन बच्चा सन्डे को उत्तेजक रूप से बिताने के लिए बहुत अधिक उत्सुक है।

लेकिन जब रेलगाड़ी गंतव्य स्थान पर पहुंचती है तो पिता सोता रह जाता है। माँ और लड़का भौचक्के हो जाते हैं। जब रेलगाड़ी चल पड़ती है और पिता गाड़ी से नहीं उतरता है तब आमोद-प्रमोद शुरू होता है। बच्चों और युवा लोगों के लिए इस फ़िल्म के निर्देशक पंकज अडवानी ने इस घिसी-पिटी घटना से रोलर-कोस्टर सवारी के आगे के कथाक्रमों को, गाड़ियों और कारों, रोड रोलरों और मोटर साइकिलों, पीछा करने और छोड़ देने, प्रहसन और जादू, निकास और प्रवेश भागों से निर्मित किया है। एक भुलक्कड़ दादी और एक बूढ़ा चालक, एक शरारती चल टिकट परीक्षक और एक मसखरा अन्य लोगों के अलावा तब तक फ़िल्म को सजीव बनाए रहते हैं जब तक कि कल्पनात्मक रूप से बनाई गई यह फ़िल्म चरमोत्कर्ष पर नहीं पहुंच जाती और तीन मूल पात्रों का पुनर्मिलन नहीं हो जाता है।

SUNDAY

Hindi/Colour/61 min.

Producer: National Centre of Films for Children & Young People (N'CYP). **Director/Screenplay Writer** : Pankaj Advani. **Supporting Actors** : Devan Bhajani Shrivallabh Vyas, Kurush Debbo. **Supporting Actresses** : Dina Pathak, Ratna Pathak Shah. **Chile Artist** : Imaad Dalal. **Cameraman** : Manoj Nair. **Audiographer** : Satheesh P.M. **Editors** : Pankaj Advani, Debashish Guha. **Music Director** : Rajat Dholokia.

"Never on a Sunday." So runs an old film song. But it is on a Sunday that the father in a three-cornered family is returning home after a business trip. The mother is looking forward to receiving him at their sea-side home in the suburbs of Bombay. But it is the kid, who is all agog and looks forward to an exciting Sunday.

But then, the father oversleeps, when the train reaches the station where he should get down. The mother and the son are bewildered when the train resumes its journey, without the father getting down. Then starts the fun.

Out of this trite incident, Pankaj Advani, the Director of this film for children and young people, has built up a roller-coster ride with the next sequences devoted to trains and cars, road-rollers and motor bikes, chases and misses, slapstick and magic, exits and entrances. And an absent-minded grandmother and an old driver, a naughty travelling ticket examiner and a clown among others enliven the film till the climax and reunion of the three principals in this imaginively treated film.

तावीज़

हिन्दी/रंगीन/11 मिनट
निर्माता: राजीव मोहन (आसंग -प्राडक्शन्स/ फ़िल्म प्रभाग), **निर्देशक:** पुरुषोत्तम बर्डे: **कहानी:** वीरेन्द जैन/ **पटकथा लेखक तथा संवाद:** सतीश भटनागर/ **कैमरा:** समीर अतालये/ **ध्वनि:** सुरेश राणे/ **पुन: रिकार्डिंग:** बी.एन.शर्मा/ **निर्माण कार्यकारी अधिकारी:** संजीव कुमार श्रीवास्तव।

रामलाल और असलम पक्के दोस्त हैं। रामलाल का विवाह सुधा से हो जाता है। असलम नई नौकरी के लिए पुणे चला जाता है।

रामलाल के दोस्त उसे उसके विवाह पर बधाई देते हैं। परन्तु कोई भी विवाहित जीवन के बारे में उसे कुछ नहीं बताता। उनकी पहली वर्षगांठ से पूर्व ही उनकी एक बेटी पैदा होती है। अब भी एक उत्सव है परन्तु अब भी असलम के सिवाय जिसने उसे पहले से सचेत किया था, उसे परिवार नियोजन के बारे में कोई नहीं बताता।

अगले 12 वर्षों के दौरान, रामलाल और सुधा के चार और बच्चे पैदा हो जाते हैं, परन्तु वे उनका पालन-पोषण नहीं कर सकते। रामलाल की फैक्ट्री में हड़ताल है और इस पर भी घर खाली करने के लिए उसे नोटिस भी मिलता है।

अब, रामलाल अपने दोस्त की सलाह को मानता है और अपनी वर्तमान स्थिति के बारे में उसे पत्र लिखता है। असलम उसके लिए तुरंत एक नौकरी का प्रबंध करता है और उसे पुणे बुला लेता है।

रामलाल अपने दोस्त के छोटे और सुखी परिवार को देखता है और अपने सभी नव विवाहित दोस्तों

को परिवार नियोजन के बारे में सलाह देने का निर्णय लेता है।

TAVEEZ

Hindi/Colour/11 min.
Producer: Rajeev Mohan, Films Division. **Director:** Purshottam Berde. **Screenplay:** Satish Bhatnagar. **Cameraman:** Samir Athalye. **Audiographer.** Suresh Rane. **Editor:** Arun Naik. **Music Director:** Purshottam Berde.

Ramlal and Aslam are best of friends. Ramlal gets married to Sudha. Aslam leaves for Pune with a new job offer.

Ramlal's friends felicitate him on his marriage, but nobody enlightens about married life. Before their first marriage anniversary, a baby girl is born. This is also a celebration, but even now, nobody makes him aware of family planning, except for Aslam, who had warned him.

In the next 12 years, Ramlal and Sudha have four more children, but they cannot look after them. Ramlal's factory is on a strike and on top of that they receive a notice to vacate the house.

Now, Ramlal remembers his friends's advice and writes a letter to him about his present state. Aslam immediately arranges a job for him and calls him over to Pune.

Ramlal sees his friends's small, happy family and decides to advise all his newly married friends on family planning.

द स्पलेन्ड्योर आफ गढ़वाल एण्ड रूपखंड

अंग्रेजी/रंगीन/27 मिनट

निर्माता: गढ़वाल मण्डल विकास निगम, **निर्देशक/पटकथा लेखक:** विक्टर बनर्जी। **ध्वनि आलेखक:** कुलदीप सूद। **संपादक :** शिवानी घोष, सुजाता नरुला। **संगीत निर्देशक :** बुद्धो गांगुली।

विक्टर बनर्जी की दिलचस्पी जितनी कैमरे के सामने है उतनी ही कैमरे के पीछे भी है – और वे न केवल एक निर्देशक हैं बल्कि एक छायाकार भी हैं। उन्होंने कैमरा के साथ अपना प्रथम प्रयास फ़िल्म "वेयर नो जर्नी एन्ड्स" में किया जो कि भारतीय रेलवे के लिए बनाई गई फ़िल्म है। वह उनका दूसरा गैर-कथाचित्र है जो उन्होंने स्वयं बनाया है। उनका घर चूंकि लैन्ड्योर कैन्टोनमेंट (मसूरी के पास) में है और चूंकि वे गढ़वाल की पहाड़ियों को चाहते हैं, उन्होंने स्थानीय जनता की पहचान बनाने के साथ-साथ ट्रैकिंग पर इस फ़िल्म का निर्माण किया है।

विक्टर बनर्जी ने रूपकुंड लेक के बारे में प्रचलित पौराणिक तथा दंतकथाओं पर ध्यानकर्षित किया है। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार, जब तक किसी व्यक्ति की इस झील को "देखने की इच्छा" न हो तब तक वह, घोर प्रयत्न करने के बावजूद भी उसके पास नहीं पहुंच सकता। एक पुरातन कथा है कि किस तरह एक बार 300 यात्री तबाह हो गए, क्योंकि उन्होंने किसी निषेधाज्ञा का उल्लंघन किया था। उनके फटे-पुराने बिखरे हुए भगवा कपड़े और हड्डियां अब भी वहां देखी जा सकती हैं।

इस फ़िल्म में एकमात्र "ट्रेकर" द्वारा रूपकुंड तक पहुंचने की दो साहसिक कोशिशों को दर्शाया गया है जो बर्फ खिसकने के कारण विफल रहती हैं। कुंठित होकर वह केवल सहस्त्रताल तक ही जाता है, जिसे 100 झीलों की भूमि कहते हैं, परन्तु वह एक और कोशिश करने का पक्का इरादा रखता है। भगवान शिव के क्षेत्र में बनाई गई यह साहसी फ़िल्म है जिसकी चोटियों पर उनका त्रिशूल दूर से खड़ा दिखाई देता है।

THE SPLENDOUR OF GARHWAL & ROOPKUND

English/Colour/27 min.

Producer: Garhwal Mandal Vikas Nigam. **Director:/Screenplay Writer** : Victor Banerjee. **Audiographer** : Kuldeep Soood. **Editors** : Shibani Ghosh, Sujata Narula. **Music Director** : Buddho Ganguly.

Victor Banerjee loves to be as much behind the camera as before itand not only as Director, but as cinematographer as well. He made his debut with the camera in "Where No Journeys End" a film for the Indian Railways. This is his second non-feature, which he has shot himself. With a home at Landour Cantonment (near Mussorie) and with his love for the Garhwal mountains, he has made this film on trekking and beyond, with much identification with the locale.

Victor Banerjee has focussed on the myth and legend of the Roop Kund Lake. According to local belief, unless one is "destined" to see the lake, one will not be able to reach it, even after the strenuous climb. There is a hoary story of how once 300 pilgrims perished because they had violated some injuction. Their tattered saftron clothes and bones can still be seen.

In this film, the two valiant attempts of a lone "trekker" to reach Roop Kund end up in vain due to avalanches. And in frustration he goes only upto Sahasra Tal, the land of 100 lakes, but is determined to attempt once more This is an adventure film in the domain of Lord Shiva, with the peaks of Trishul dominating from afar.

द विमेन बिट्रेड

हिंदी (उपशीर्ष अंग्रेजी में)/रंगीन/40 मिनट
निर्माता: सेहजो सिंह तथा अनवर जमाल, **निर्देशक तथा डिज़ाइन:** सेहजो सिंह, **संपादक:** रेणु सलूजा। **कैमरामैन** : जुगल देवता, **ध्वनि आलेखक:** नीलकंठ, **सम्पर्क तथा अनुवाद** : प्रबल माहतो, लाडो जोन्को, **अनुसंधान परामर्शदाता:** मणिमाला, **वाचक** : अनिता कंवर। **अनुसंधान परामर्शदाता:** मणिमाला। **वाचक:** अनिता कंवर

''द विमेन बिट्रेड'' भारत में सिंहभूम (बिहार) तथा पुरुलिया (बंगाल) में डाइनों की खोज पर एक वृत्तचित्र है।

''डाइन'' शब्द औरत के प्रति घृणा, भय और शक का विश्वव्यापी पर्याय है। डाइनों की खोज केवल बोलने वाली प्रतिमा ही नहीं है। भारत की गरीब से गरीब तथा सर्वाधिक पिछड़े हुए जनजातीय समुदायों की सैंकड़ों महिलाओं के लिए यह जीवन प्रजननक्षम है और जिसे हर रोज का डर बना हुआ है।

''द विमेन बिट्रेड'' फ़िल्म में 'जनजातीय समुदाय के अन्दर से ही डाइन की खोज के विरोध में संघर्ष का जोरदार मामला प्रस्तुत किया गया है। इस फ़िल्म में उन्हें केवल निष्क्रिय शिकार के रुप में ही चित्रित नहीं किया गया है। फ़िल्म में भारत में असन्तुलित विकासशील नीतियों, पर्यावरण संबंधी अधोगति, समिति क्षेत्रों में रहने वाले गरीब की बिगड़ती हुई हालत और डाइनों के खोज की चलन की कड़ियों को जोड़ा गया है। इस फ़िल्म में यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार गरीबी के विरुद्ध लोगों का गुस्सा, अपने समाज की सबसे कमजोर सदस्या--महिला, विशेषत: विधवा, पर उतारा जाता है। सरकार की पूर्ण उदासीनता तथा उनके साची नागरिकों की भावशून्यता के होते हुए भी उनमें से कोई न कोई अपने आप खड़ा होता है और सदियों पुराने अंध-विश्वास और अज्ञान के विरुद्ध संघर्ष करता है।

फ़िल्म मे माहतो, हो तथा संथाल समुदायों से संबंधित तीन व्यक्तियों की कहानी को चित्रित किया गया है, जो यह जानते हैं कि यह लड़ाई असमान है, शत्रु अनेक हैं और बहुत शक्तिशाली हैं। फिर भी वे उनका मुकाबला उतने ही निश्चय के साथ करते हैं जितना कि वे किसी उम्मीद में जिंदा रहते हैं

THE WOMEN BETRAYED

Hindi (Subtitled in English/Colour/40 min.
Producer: Sehjo Singh & Anwar Jamal. **Director & Design** : Sehjo Singh. **Cameraman** : jugal Debta. **Audiographer**: Neel Kanth. **Editors**: Reno. **Liaison & Translation**: Prabal Mahto, Lado Jonko. **Research Consultant** : Manimala. **Narrator** : Anita Kanwar.

''The Women Betrayed'' is a documentary on witch-hunting in India in Singhbhum (Bihar) and Purulia (Bengal).

The witch is the universal synonym for hatred, fear, and suspicion of women. Witch-hunting is not a mere figure of speech. For hundreds of women in the poorest and most marginalised tribal socieities in India, it is a living, potent, everyday threat.

The film, ''The Women Betrayed'' builds a strong case for a struggle against witch-hunting from within the tribal community. It does not portray them as mere passive victims. The documentary draws linkages between lopsided developmental policies in India, environmental degradation, worsening situation of the marginal poor and the practice of witch-hunting. It explains, how people's anger against poverty, is transferred on to the weakest members of their own community the women, especially the widows. Some of them stand up and fight against centuries of superstition and ignorance, on their own in the face of complete indifference of the government and the apathy of their fellow-citizens.

The film documents the stories of three individuals belonging to Mahto, Ho and Santhal communities, who know the fight is unequal, the enemies are too many and too powerful. Yet they fight, as surely as they live with hope'.

टाईमलेस इंडिया

अंग्रेजी/रंगीन/25 मिनट

निर्माता/निर्देशक: जफर हई, **केमरामैन:** आर. एम. राव, **ध्वनि आलेखक :** कुलदीप सूद। **संपादक :** पी.जी. सुपरे, मुन्ना रिज़वी। **संगीत निर्देशक :** उस्ताद सुलतान खान, जाकिर हुसैन।

''टाईमलेस इंडिया'' भारत के इतिहास और संस्कृति के कुछेक पहलुओं को ढूंढने और उन्हें एकीकृत करने का एक प्रयास है। इस फ़िल्म में महान् स्मारकों की ओर ध्यान केन्द्रित किया गया है। ये पुरातन नगर, शाश्वत धार्मिक कृत्य और त्यौहार हैं। फ़िल्म में भारत के लिए सदियों पुरानी यूरोपीय अभिरूचि के बारे में विस्तार से निरूपण किया गया है जो कि मसालों के व्यापार से शुरू होती है और जो एक महान साम्राज्यिक डिज़ाइन में समाप्त होती है, जिसकी नकल हमारे उन्नत आधुनिक नगरों में की गई है।

इस फ़िल्म की शूटिंग लद्दाख जैसे दूर-दराज़ के क्षेत्रों सहित समस्त भारत के विभिन्न स्थानों में हुई है। इस फ़िल्म का निरूपण अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात अभिनेता माईकल यॉर्क ने किया है तथा इसके संगीत का संयोजन तबला मर्मज्ञ जाकिर हुसैन तथा उस्ताद सुलतान खान ने किया है।

TIMELESS INDIA

Enlish/Colour/25 min.

Producer/Director : Zafar Hai. **Cameraman** : R.M.Rao. **Audiographer** : Kuldip Sood. **Editors:** P.G. Supare, Munna Rizvi. **Music Director** : Ustad Sultan Khan, Zakir Hussain.

''Timeless India'' is an attempt to capture some aspects of India's history and culture and mould them into an integrated whole. The focus is on the great monuments. The ancient cities, and the timeless rituals and festivities.

The film also dwells on the centuries-old European interest in India that started with the spice trade and ended with the grand imperial design that first forged some of our now thriving modern cities.

The film has been shot in various locations all over India, including remote regions like Ladakh. The narration is by the internationally known actor Michael York and the music has been composed by tabla virtuoso, Zakir Hussain and Ustad Sultan Khan.

ट्रेजडी ऑफ एन इंडियन फार्मर

अंग्रेजी/रंगीन/6 मिनट

निर्माता, निर्देशक : मुरली नायर, **कहानी/पटकथा लेखक :** कृष्णा पिल्लै की कविता, मुरली नायर, **कैमरामैन:** राधाकृष्णन, **संपादक :** संजीवा सूद, **कला निर्देशक :** त्रिलोचन, **वेशभूषा डिज़ाइनर:** मुरली नायर, **संगीत निर्देशक :** देवदास नाइक। **ध्वनि आलेखक :** करनैल सिंह। **कलाकार :** एम.आर. गोपकुमार, श्तेला राजा, शशिचरन नायर, लाल तथा अजीत।

"भारतीय किसान की त्रासदी" को कौन नहीं जानता? मानसून से लेकर गुलामी तक, नौकरशाही से लेकर राजनीति के दबावों तक की परिस्थितियों से घिरा वह क्लासिकल त्रासदी में यूनान के त्रासदी चरित्र के समान है।

मांटेज कम्यूनिकेशंस के मुरली नायर की इस अत्यधिक लघु फ़िल्म में उस निर्धन किसान के दुखों की गहनता को दर्शाया गया है, जिसने केले का पेड़ इस आशा के साथ लगाया है कि "पृथ्वी के फल" को वह अपने परिवार के साथ मिलकर खाएगा लेकिन उसकी किस्मत में ऐसा नहीं लिखा था क्योंकि वह असामी काश्तकार था। केले का गुच्छा उसे भूस्वामी को सौंपना पड़ा, जिसे अब भी जमींदार के नाम से पुकारा जाता है। परिणामत: परिवार की आशाओं पर पानी फिर जाता है और वे केले की मिठास को चखने से वंचित रह जाते हैं जिसकी उन्होंने उम्मीद की थी। एक छोटी त्रासदी, जो सारे देश में लाखों बार दोहराई जाती है।

TRAGEDY OF AN INDIAN FARMER

English/Colour/6 min.

Producer/Director : Murali Nair. **Story/Screenplay** : Krishna Pillai's poem, Murali Nair. **Cameraman** : Radhakrishnan. **Audiographer** : Karnail Singh. **Editor**: Sanjeeva Sood. **Music Director** : Devdas Naik. **Art Director** : Thrilochan. **Costume Designer** : Murali Nair. **Cast** : M.R. Gopakumar, Stella Raja, Sashidharan Nair, Lal & Ajitha.

Who does not know the "tragedy" of the Indian farmer? A captive of circumstances, ranging from the monsoon to bondage, from bureaucracy to pressures of politics, he is like a tragic Greek character in the Classical Tragedy.

Reduced to the most minimal, the film by Murli Nair of Montage Communications highlights the intensity of the unhappiness of poor farmer, who had planted a banana tree and he had hoped to eat the "fruits of the earth," thereof with the family. But he was not fated to do so, because he was just a tenant farmer. He had to surrender the banana bunch to the local Zamindar, lord of the land, even now called so. Result: The hopes of the family are shattered and they cannot taste the sweetness of the banana fruit for which they had aspired. A minor tragedy, repeated million-fold all over the country.